दण्ड विधान

उपन्यासकार

दिवाकर

१

राव वीरेन्द्रसिंह राजस्थान के पुराने ताल्लुकेदार थे। ताल्लुका समाप्त हो चुका था उनका, परन्तु धन-सम्पत्ति की उनके पास कमी न थी। जयपुर से लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर उनका एक बहुत बड़ा फार्म था और उसी के निकट उनका पत्थरो का खदाना था, जिसमे से बढ़िया किस्म का पत्थर निकलता था। यह पत्थर भवनो के निर्माण मे काम आता था और भारत के विभिन्न नगरो को भेजा जाता था। उससे उन्हे पर्याप्त आय थी।

राव साहब की कोठी स्टेशन-रोड पर थी। वह और उनकी पत्नी उसी कोठी मे रहते थे। उनकी मात्र एक कन्या थी साधना, जो दिल्ली-विश्वविद्यालय मे एम० ए० की छात्रा थी और आई० पी० कॉलेज के छात्रावास मे रहती थी।

राव साहब राज्य-सभा के सदस्य रह चुके थे। राव साहब राष्ट्रीय आन्दोलनों मे भाग लेकर कई बार जेल-यात्रा भी कर चुके थे। उसी के फलस्वरूप राष्ट्रीय सरकार बनने पर वह राज्य-सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे। जिन दिनों वह दिल्ली मे रहते थे, साधना की उच्च शिक्षा चल रही थी। राज्य-सभा की सदस्यता का कार्य-काल समाप्त होने पर वह जयपुर चले आए थे और साधना को छात्रावास में प्रविष्ट करा दिया था।

राव साहब अपनी पत्नी के साथ सिनेमा देखने गए थे। सिनेमा से लौटते समय राव साहब की पत्नी ने कहा, "चलिए बाजार से कुछ सामान लेते चले। कल साधना आ रही है। कुछ मिठाई और नमकीन ले ले। कल जन्म-दिन है उसका। शहर की उसकी कुछ सहेलियाँ आएंगी उससे मिलने।"

"चलो, ले लो, जो लेना चाहो।" कहकर राव साहब ने ड्राइवर को गाडी बाजार की ओर ले चलने को कहा।

बाजार से मिठाइयाँ और नमकीन लेकर राव साहब और उनकी पत्नी कोठी पर लौट आए। दोनों ने एक साथ बैठकर भोजन किया और ड्राइङ्गरूम मे आकर बैठ गए। साधना की मम्मी ने कहा, "साधना गाड़ी पर सवार हो गई होगी साधना के डैडी। उसकी गाड़ी कितने बजे जयपुर पहुचेगी ?"

"पौने आठ बजे का समय है गाडी के आने का। हम स्टेशन चलेगे साधना को लेने के लिए। हमने ड्राइवर को बोल दिया है, समय पर गाडी निकालने के लिए।"

"साधना कल इक्कीस की होकर बाईस मे लगेगी साधना के डैडी। यह अन्तिम वर्ष है ना उसकी पढ़ाई की ? इसके पश्चात उसका विवाह कर देंगे।"

"क्यों ? इतनी शीघ्रता क्या है शादी करने की है ? क्या साधना भार मालूम दे रही है तुम्हे ?" कहकर राव साहब मुस्कुरा दिए।

"कैसी बात करते है आप ? साधना भार लगेगी हमे ? वही तो हमारी आँखो का तारा है। फिर भी लडकी की शादी तो करनी ही होती है। कोई अच्छा लड़का नजर आए तो ध्यान रखिए।"

"सब ध्यान है साधना की मम्मी ! साधना के लिए अच्छा वर न मिलेगा ? समय आने पर···।" राव साहब यह कह ही रहे थे कि तभी उन्हे बराडे मे तीन अपरिचित व्यक्ति अपनी ओर को आते दिखलाई दिए। उन तीनो के मुख पर चादर के ढाटे बंधे थे, जिससे उन्हे पहिचाना नही जा सकता था।

राव साहब ने खडे होकर आगे बढ़ते हुए कहा, "कौन हो तुम लोग ?"

तब तक वे उनके निकट आ गए और उनमे से एक राव साहब को एक ओर धकेल कर उनकी पत्नी की दिशा मे बढ गया। उसके हाथ में

रिवाल्वर था। उसने दन-दन-दन तीन फायर उनकी पत्नी पर किये और वह सोफे पर ढुलक गईं। इसके पश्चात उस आदमी ने उन्हें वहाँ से उठाकर ले जाने का प्रयास किया और इस प्रयास में उसके मुख पर बन्धी चादर की फेंट ढीली पडने से उसका चेहरा राव साहब की पत्नी को दिखाई दे गया, परन्तु उसने तुरन्त ही उसे फिर कस कर बांध लिया था।

राव साहब ने इस बीच अपने नौकरों को पुकारा और वे सब अन्दर को दौड़े तो वे तीनों व्यक्ति अपनी जान बचकर वहाँ से भाग लिए।

चौकीदार लपक कर उनके पीछे दौड़ा तो उस आदमी ने, जिस के हाथ मे रिवाल्वर था, चौकीदार पर फायर किया। गोली चौकीदार के पैर में गली और वह फर्श पर गिर गया।

वे तीनों आदमी दौडते हुए कोठी से वाहर निकल गए।

राव साहब ने अपनी पत्नी के निकट जाकर उन्हें संभाला और उनका सिर अपनी गोद मे रख लिया तो उन्होंने आँखें खोल कर राव साहब की ओर देखा। उनके मुख से अस्फुट स्वर निकला, "आपने पहिचाना वह कौन था ?"

'वह कौन था साधना की मम्मी ? तुमने पहिचान लिया उसे ?"

"हां साधना के डैडी। मैंने······।" वह कुछ बतला न पाईं और अचेत होकर राव साहब की गोद मे ढुलक गईं। वह फिर एक शब्द भी न बोल पाईं। उनकी आँखों से दो बूद आंसू ढुलक पड़े।

तब तक इधर-उधर के कुछ लोग कोठी पर एकत्रित हो गए। किसी ने सिविल हॉसपिटल को फोन किया और वहा से एम्बुलेंस गाड़ी आ गई।

राव साहब की पत्नी और चौकीदार को सिविल हॉसपिटल ले जाया गया।

राव साहब की पत्नी की दशा हॉसपिटल तक जाते-जाते पर्याप्त गम्भीर हो गई। क्षण-प्रति-क्षण उनके बचने की आशा क्षीण होती जा

रही थी। डाक्टर ऑन ड्यूटी ने उनकी दशा देखकर सिविलसर्जन को सूचित किया और सिविलसर्जन ने पहुंचने मे विलम्ब न किया।

उन्हे तुरन्त ऑपरेशन-थियेटर मे ले जाया गया। सिविलसर्जन ने ऑपरेशन करके गोली बाहर निकाली। घाव साफ किया और उसके टांके लगाए।

जिस समय उन्हे बाहर लाया गया तो राव साहब ने डाक्टर की ओर निराश दृष्टि से देखा, मानो पूछा, 'क्या हुआ डाक्टर साहब ?'

डाक्टर ने उनकी मौन भाषा को समझ कर कहा, "ऑपरेशन सफल रहा। गोली निकाल कर घाव को टाके लगा दिए है। आप चिन्ता न करे।"

डाक्टर के यह सब कहने पर भी राव साहब के अशान्त मन और मस्तिष्क को सात्वना प्राप्त न हुई। वह निराश और हताश दृष्टि से सिविलसर्जन की ओर देखते रहे।

राव साहब की पत्नी को प्रथक वार्ड मे ले जाया गया। राव साहब भी निजीव से स्ट्रेचर के पीछे-पीछे उसी वार्ड मे चले गए। वहा जाने पर डाक्टर ने साधना की मम्मी के लिए रक्त और ग्लूकोज की व्यवस्था की। उनका भली प्रकार निरीक्षण किया। श्वास-प्रवाह ठीक था। इस-लिए आक्सीजन देने की आवश्यकता न समझी। दो नर्स और एक डाक्टर उनकी देख-रेख के लिए छोड़ दिए।

राव साहब अशान्त मन और चितित दशा मे खड़े थे। उनकी दुनियां देखते-ही-देखते उजड़ गई थी। उनके दिल की धड़कने बढ़ी हुई थी और चित्त अशान्त था। सोच रहे थे, यह क्या हुआ।

राव साहब के अपनी पत्नी को लेकर हॉसपिटल चले जाने के पश्चात उनका चचेरा भाई भवानीसिह कोठी पर आया तो उसे एक नौकर ने इस दुर्घटना की सूचना दी। यह सूचना प्राप्त कर वह अपना माथा ठोक कर रह गया। उसकी आँखों के सामने अंधकार छा गया और वह कुछ देर हताश सा वही फर्श पर बैठा रहा। फिर कुछ सभल

कर उसने नौकर से पूछा, "भाभी को कहां ले गए है भय्या ? "

नौकर ने उसे बतलाया कि राव साहब अपनी पत्नी को सिविल हॉस-पिटल ले गए है। यह सूचना प्राप्त कर भवानीसिंह सिविल हॉसपिटल की ओर लपका। कुछ दूर पैदल चलने पर उसे एक रिक्शा मिल गई।

जिस समय भवानीसिंह हॉसपिटल पहुंचा तो साधना की मम्मी का ऑपरेशन हो चुका था और उन्हे वार्ड में ले जाया जा चुका था। उसने रोते हुए कमरे में प्रवेश किया और जा कर राव साहब से लिपट गया। उसने भर्राई आवाज मे राव साहब से पूछा, "यह सब क्या हुआ भय्या ? ऐसा हमारा कौन शत्रु था जिसने यह नीच कार्य किया ?"

राव साहब ने भवानीसिंह को सात्वना देकर कहा, "इस समय कुछ न पूछो भवानी सिंह ! तुम्हारी भाभी की दशा ठीक नही है। वह भगवान के हाथों मे है। वही रक्षक है इस समय। मैं कुछ नहीं बता सकता कि यह क्या हुआ।"

डाक्टर ने उनके निकट आकर कहा, "आप लोग यहां बाते न करें राव साहब ! बहुत सीर्यस-केस है। उचित हो, यदि आप लोग यहाँ से बाहर चले जाए।"

राव साहब और भवानीसिंह बाहर वरांडे मे आ गए। भवानी सिंह ने पूछा, "डाक्टर क्या कहता है भय्या ?"

राव साहब ने भावनीसिंह का प्रश्न मानो सुना ही नही। सिविल सर्जन द्वारा ऑपरेशन के सफल होने की बात कही जाने पर वह किसी प्रकार अपनी मनस्थिति को ठीक करने का प्रयास कर रहे थे, परन्तु अभी-अभी डाक्टर ने जो कहा कि बहुत सीर्यस केस है, उससे वह फिर उद्विग्न हो उठे। वह भवानीसिंह को वहीं खडा छोड़ कर अन्दर चले गए। उन्होंने देखा साधना की मम्मी को रक्त और ग्लूकोज दिया जा रहा था। श्वांस लेने में कठिनाई न हो इसलिए आक्सीजन की भी व्यवस्था कर दी गई थी। अपनी पत्नी की यह दशा देखकर राव साहब की आंखें भर आईं और आसू बरस पड़े। उनका सिर चकराने लगा

श्रौर पिंडलियां कांपने लगीं।

डाक्टर की राव साहब पर दृष्टि गई, तो वह उनके निकट श्राकर बोला, "राव साहब! श्राप मेरे साथ श्राइए। श्राप यहाँ रहेंगे तो श्राप की दशा खराब हो जाएगी।" यह कहकर वह उन्हे दूसरे कमरे मे ले गया श्रौर उन्हे एक गोली खिलाकर कहा, "श्राप यहाँ पलग पर लेट जाए कुछ देर के लिए।"

राव साहब चिन्तानिमग्न पलंग पर बैठ गए। कुछ देर मे उन्हें घुमेर सी श्राने लगी श्रौर वह लेट गए। उन्हे नीद श्रा गई। सम्भवत: उन्हे डाक्टर ने नीद की गोली दी थी।

भवानीसिह कुछ देर बाहर वरांडे मे खड़ा रहकर राव साहव के कमरे मे चला गया। उस समय राव साहब को नीद श्रा गई थी। वह पलग के बराबर रखे स्टूल पर बैठ गया। बहुत चिन्तित श्रौर व्याकुल दिख रहा था वह।

इस घटना की सूचना पुलिस को मिली तो एस० पी० रणधावा स्वयं घटनास्थल पर गया। वहाँ चौकीदार से दुर्घटना के विषय में साधारण सूचना प्राप्त कर सिविल हॉसपिटल गया। जिस समय वह वहाँ पहुचा तो राव साहब को नीद श्रा गई थी। वह भवानीसिंह को श्रपने साथ लेकर कमरे से बाहर श्राया श्रौर उससे ज्ञात किया, "क्या तुम उस समय कोठी पर ही थे भवानीसिंह जब यह दुर्घटना घटी थी?"

"जी नहीं रणधावा साहब! जिस समय मैं कोठी पर पहुचा तो भय्या भाभी को लेकर हॉसपिटल श्रा चुके थे। जब मैं यहाँ श्राया तो भाभी का श्रॉपरेशन हो चुका था श्रौर उन्हे वार्ड मे लाया जा चुका था।" भवानीसिंह ने बतलाया।

"तुम्हें इस दुर्घटना की सूचना कैसे मिली? क्या राव साहब ने कोई श्रादमी भेजा था तुम्हारे पास?" रणधावा ने पूछा।

"भय्या को इतना होश कहाँ रहा था रणधावा साहब? भय्या की दशा तो श्रभी भी ठीक नहीं है। डाक्टर ने सम्भवत: नींद की गोली खिला

कर उन्हें सुला दिया है। मैं फारम से पांच बजे कोठी पर आया था। उस समय मुझे चौकीदार ने बतलाया था कि भय्या भाभी सिनेमा गए हुए है। यह जानकर मैं बाजार चला गया। वहां से लौटने मे मुझे आठ बज गए। कोठी पर आया तो ज्ञात हुआ कि वहाँ यह दुर्घटना घट गई।" भवानीसिह ने बतलाया।

"क्या वे लोग, जिन्होंने यह वरादात की, कुछ माल-असबाब भी उठाकर ले गए है कोठी से ?" रणधावा ने पूछा।

"मुझे इस विषय में कुछ भी जानकारी नहीं है रणधावा साहब। भय्या से अभी इस विषय मे कुछ भी बात करने का अवसर कहां था ? उनकी तो अपनी ही दशा ठीक नही है। परमात्मा किसी प्रकार भाभी की प्राण-रक्षा कर दे, तब इस विषय मे कुछ बात करूंगा।"

बात ठीक भी थी भवानीसिह की। जब उसकी भाभी मृत्यु और जीवन के मध्य झूल रही थी तो वह इस नगण्य विषय पर बाते कैसे कर सकता था। वह समय ही नही था अन्य कोई बात करने का।

रणधावा कुछ सोचता हुआ आगे बढ गया और उस कमरे में गया जिसमे साधना की मम्मी अचेत पड़ी थीं। डाक्टर और दो नर्सें उनके निकट खड़े थे। उसने डाक्टर को अपने निकट बुलाकर धीरे से पूछा, "इस समय कैसी दशा है रोगी की ?"

डाक्टर ने बतलाया, "ऑपरेशन सफल अवश्य हो गया है, परन्तु घाव ऐसे स्थल पर है कि दिल की धडकन किसी भी समय रुक सकती है। दुर्बलता इतनी अधिक है कि अभी हम निश्चित रूप से रोगी के विषय मे आपको कुछ नही बता सकते। डाक्टर की अपनी सामर्थ के अनुसार हर सम्भव उपाय किया जा रहा है इन्हे बचाने का, परन्तु फिर भी जब तक चेतना न लौटे इन्हे खतरे से बाहर नही माना जा सकता। अभी स्थिति ठीक नही है।"

रणधावा ने डाक्टर से अन्य कोई प्रश्न न किया। वह कमरे से बाहर निकल आया। वह कुछ सोचता हुआ एक बार फिर भवानीसिह

की ओर को मुड़ा, परन्तु फिर लौट गया। सोचा, समय नष्ट करना व्यर्थ होगा। राव साहब यदि नींद से जग भी गए तो उनसे कुछ पूछने का उपयुक्त अवसर नही था। यही सब सोच कर वह अपनी जीप में जा बैठा और चला गया।

भवानीसिंह कुछ देर बाहर वराडे मे घूमता रहा। फिर अन्दर जा कर राव साहब की बैड के निकट पड़े स्टूल पर बैठ गया, परन्तु बैठा न रह सका। वह फिर बाहर आया और अपनी भाभी के कमरे में जाकर उसने उनकी दशा देखी। वही एक ओर खड़ा रहकर कुछ देर देखता रहा और फिर बाहर आकर वरॉडा पार करके लॉन मे बाहर निकल आया।

ठण्ड बहुत अधिक थी उस दिन। लॉन की घास ओस से भीगती जा रही थी और बरफीली हवा चल रही थी। वहा खड़ा रहना संभव न था। वह फिर वरॉडे में चला आया। थोडा आगे बढकर भाभी के कमरे के सामने रुक गया। कुछ देर खड़ा रहकर अन्दर गया। भाभी की दशा मे कोई परिवर्तन दृष्टिगोचर न हुआ। वह उसी प्रकार मौन पलंग पर पडी थीं। डाक्टर और नर्सें उनके पास खड़ी थी। उनके चेहरों पर गम्भीरता का भाव था, जिसे वह सहन न कर पाया और कमरे से बाहर चला आया।

कुछ देर वरांडे मे घूमता रहा और फिर राव साहब के कमरे में जाकर स्टूल पर बैठ गया। राव साहब, उसने देखा, नीद मे कुछ बड़-बड़ा रहे थे। वह क्या कह रहे थे, वह समझ न पाया। उसे यह सब बहुत भयावह प्रतीत हो रहा था। उसके चित्त मे व्यग्रता थी। अकेले स्टूल पर बैठे रहना सम्भव न हुआ तो वह फिर वहा से निकल कर भाभी के कमरे मे जाकर दीवार के सहारे चुपचाप खड़ा हो गया। वह एक टक अपनी भाभी की दशा देख रहा था। उसने एक बार साहस करके डाक्टर से पूछा, "डाक्टर! अब कैसी दशा है भाभी की?"

डाक्टर ने उत्तर मे मात्र इतना ही कहा, "अभी कुछ नहीं कहा जा

सकता इस विषय में ।"

भवानीसिंह ने लम्बी सांस ली और कमरे से बाहर निकल आया। वह निराशा मे डूबा हुआ था। चिन्तानिमग्न वह वहां से राव साहब के कमरे में गया तो देखा वह उस समय उठकर बैठे हुए थे। उन्होंने भवानीसिंह से पूछा, "तुम अपनी भाभी के कमरे में होकर आए भवानी सिंह ? कैसी दशा है तुम्हारी भाभी की ? उन्होंने आंखें खोल दी नां ! हमे कुछ चक्कर सा आ गया था। हमने बहुत भयानक स्वप्न देखा। हमें किसी ने झंझोड़ डाला। हमारी आँखें खुल गईं।"

भवानीसिंह ने साहस बटोर कर कहा, "भाभी की दशा अभी ठीक नही है भय्या ! आपकी दशा को देखकर डाक्टर ने आपको नीद की गोली दे दी थी। आपको नीद आ गई थी।"

साधना की मम्मी की दशा ठीक नही है, यह जानकर राव साहब बैठे न रह सके। वह तुरन्त उस कमरे में गए जहा उनकी पत्नी का उपचार हो रहा था। उन्होने देखा, उनकी दशा मे कोई परिवर्तन न था। उन्हे मात्र एक परिवर्तन दिखाई दिया कि उनका श्वास-प्रवाह तीव्र हो गया था। यह देखकर उन्हे आश्चर्य हुआ। उन्होंने आगे बढ़ कर साधना की मम्मी के मस्तक पर हाथ रखकर देखा। माथा ठंडा था। उन्होंने डाक्टर की ओर देखा, मानो उनकी दशा के विषय मे ज्ञात करना चाहते थे।

डाक्टर राव साहब को कमरे से बाहर ले आया। उसने कहा, "आपकी पत्नी की दशा गम्भीर है राव साहब ! हम लोग हर सम्भव औषधि दे चुके है, परन्तु उनकी अचेतनता भंग नही हुई। आप इस समय कमरे से बाहर ही रहे तो उचित होगा।"

डाक्टर की बात सुनकर राव साहब के दिल पर भीषण आघात हुआ और वह वही वरांडे मे मस्तक पर हाथ रखकर बैठ गए।

भवानीसिंह ने उनकी यह दशा देखी तो वह लपक कर उनके पास आया और उन्हें सहारा देकर उस कमरे में ले गया, जिसमें वह

पहले लेटे हुए थे।

राव साहब ने आतुर दृष्टि से भवानी सिंह की ओर देखकर कहा, "भवाना सिंह! अपना सब कुछ समाप्त हो गया। तुम्हारी भाभी अब बचेगी नहीं।"

"यह न कहो भय्या! मेरा मन कहता है कि वह अवश्य ठीक हो जाएंगी। आप निराश न हों। उनको चेतना लौट आएगी। डाक्टर लोग बड़ी संलग्नता से कार्य कर रहे है। वे निराश नहीं है अभी। आपको भी आशा रखनी चाहिए।" भवानीसिंह ने कहा।

राव साहब पर कटे पक्षी के समान पलंग पर ढुलक गए।

डाक्टरों का हर प्रयत्न असफल सिद्ध हुआ। प्रात.काल चार बजे साधना की मम्मी ने दम तोड दिया। राव साहब यह समाचार प्राप्त कर अचेत हो गए। भवानीसिंह की भी बुरी दशा थी। उस समय तक एस०पी० रणधावा फिर हॉसपिटल मे आ गया था। उसे डाक्टरों इत्यादि की रिपोर्ट लेनी थी।

राव साहब की पत्नी का शव परीक्षण के पश्चात उनकी कोठी पर लाया गया।

दिल्ली वश्वविद्यालय शरदकालीन अवकाश के लिए बडे दिन के अवसर पर पंद्रह दिन के लिए बन्द हो रहा था। छात्र-छात्राएं, जो छात्रावासों मे रह रहे थे, अपने घरों को लौटने की तैयारी मे सलग्न थे। अपने-अपने माता-पिता, भाई-बहन तथा अन्य सम्बन्धियों से मिलने की आकांक्षा सभी के मन में प्रबल थी।

साधना ने अपनी मम्मी को फोन पर सूचित कर दिया था कि वह रात्रि की गाड़ी से जयपुर आ रही है। फोन करके उसने अपना पर्स उठाया और चादनीचौक जाने के लिए स्कूटर पकड़ा।

फोन पर बाते करते समय साधना की मम्मी ने उसे कुछ चीजे लाने को कह दिया था, वे उसने बाजार से क्रय कीं और उसके पश्चात छात्रावास लौटी। छै बज रहे थे। उसने चपरासी को बुलाकर अपना सामान पैक कराया। यात्रा का सब सामान ठीक करके वह बराबर के कमरे में अपनी सहेली के पास चली गई। वह भी अपनी यात्रा की तय्यारी कर रही थी।

साधना ने पूछा, "तुम कब तक लौट आओगी कमल ?"

"लेटेस्ट सेकिंड ऑव जनवरी साधना ! तुम भी आ जाओगी ना तब तक तो ?"

"बाई ऑल मीन्स।" कहकर साधना मुस्कुरा दी।

"तुम अवश्य आ जाओगी ना ?"

"मै दो तक अवश्य आ जाऊंगी। तुम मेरे साथ जयपुर चलो। एक दिन वहां स्टे करके बम्बई चली जाना। मम्मी ने फोन पर कहा भी था कि तुम आओ तो तुम्हें अपने साथ लेती आना।" साधना ने कहा।

"मम्मी को मेरा प्रणाम कहना साधना ! इस समय उनकी आज्ञा का पालन करना सम्भव न होगा। मैंने डैडी को लिख दिया है।" कमल ने कहा।

साधना सध्या समय ट्रेन टाइम से कुछ समय पूर्व स्टेशन पहुंची। कुली से अपना सामान लिवाकर अन्दर प्लेटफार्म पर ले गई और उसे ट्रेन के कम्पार्टमेण्ट मे रखाया। सीट रिजर्व थी उसकी। सामान ऊपर की बर्थ पर रखाकर नीचे की बर्थ पर बिस्तर लगवा लिया और आराम मे अपनी बर्थ पर बैठ गई। ठण्ड बहुत अधिक थी उस दिन, इस लिए खिड़कियाँ सब बन्द करा दीं।

लगभग पांच मिनट पश्चात एक युवक ने उस कम्पार्टमेण्ट मे प्रवेश

किया। उसने अपनी रिजर्व्ड बर्थ का नम्बर खोजा। उसने देखा उसकी बर्थ पर एक महिला अपना बिस्तर बिछाए आराम से बैठी थी। उसने बाहर जाकर एक बार फिर ध्यान से अपना बर्थ-नम्बर देखा और अंदर आकर साधना से कहा, "आपने अपना बिस्तर भूल से मेरी रिजर्व्ड बर्थ पर लगा लिया है देवीजी! सम्भवतः आपने इस साधारण सी बात पर ध्यान देने की आवश्यकता अनुभव नहीं की। चलिए कोई बात नही है। मै अपना बिस्तर आपकी सीट पर लगा लेता हूं। आप अपना बिस्तर वही लगा रहने दे।"

साधना ने बर्थ पर लगी रिजर्वेशन चिट देखी और मन मे अपनी भूल के लिए लज्जा अनुभव करते हुए कहा, "क्षमा करना श्रीमान! मैं भूल से आपकी असुविधा का कारण बनी। आप इस बर्थ पर आना चाहे तो प्रसन्नतापूर्वक आ जायें। मै उधर शिफ्ट कर जाती हूं। आपको कष्ट नही होना चाहिए।"

'असुविधा या कष्ट की कोई बात नहीं है श्रीमतीजी! आप इतना सूचित करने का कष्ट करे कि आपका रिजर्वेशन किस स्टेशन तक के लिए है।" युवक ने पूछा।

"मै जयपुर जा रही हूं। सीट भी वही तक के लिए रिजर्व्ड है।" साधना ने बतलाया।

"तब तो कोई कारण ही नहीं रहा किसी प्रकार की असुविधा का। मुश्किल आसान कर दी आपने। मुझे भी जयपुर ही जाना है।" कहकर युवक ने अपना बिस्तर दूसरी बर्थ पर खोल दिया। सामान ऊपर की बर्थ पर लगाया और आराम से बिस्तर पर बैठ गया। एक कम्बल पैरों पर डालता हुआ बोला, "आज ठण्ड बहुत अधिक है। हवा इतनी तीक्षण है कि बदन मे घुसने का प्रयास कर रही है। मार्ग मे आते हुए थरथरी छूटने लगी। चन्द रुपए के लोभ मे मैने टैक्सी न लेकर स्कूटर ले लिया। सारा बदन बर्फ हो गया।"

साधना मुस्कुरा दी युवक की बात सुनकर। उसने कहा, "ठण्ड का

तो मौसम ही है महाशय जी। वैसे इसमें कोई संदेह नही कि आज इस वर्ष की शीत-ऋतु का सबसे ठण्डा दिन है। ज्ञात होता है कही पहाड़ों पर हिमपात हुआ है। इसी लिए हवा इतनी तीक्षण हो उठी है।"

"अनुमान ठीक है आपका। शिमला और कश्मीर मे हिमपात हुआ है।" युवक ने कहा।

"आपके पास वस्त्र कम हो तो मेरे पास एक स्पेयर कम्बल है। आप वह ले ले।"

"धन्यवाद! वस्त्रों की कमी नही है। वास्तविकता यह है कि ठण्ड स्त्रियों को कम और पुरुषों को अधिक सताती है। सम्भवतः आप इसी लिए ठण्ड का मेरी अपेक्षा कुछ कम अनुभव कर रही है।" युवक ने कहा।

"यह बात आपने किस आधार पर कही? स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा अधिक ठण्ड लगनी चाहिए क्योकि वे पुरुषों की अपेक्षा अधिक कोमल होती है। सहनशक्ति की भी उनमे कमी होती है।" साधना ने कहा।

"यह तर्क का विषय नही है। प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता है? आपसे अधिक वस्त्र मेरे पास हैं और फिर भी मै ठण्ड मे सिकुड रहा हूं। आपके पास मेरी अपेक्षा वस्त्र भी कम है और फिर भी आप अपना कम्बल मुझे देने को उद्यत है। यदि आप इस प्रत्यक्ष सत्य को अस्वीकार करें तो मैं सहर्ष अपने शब्द वापस लेने को उद्यत हूं।" कहकर युवक मुस्कुरा दिया।

साधना ने विषय बदल कर कहा, "कष्ट न हो तो कृपया चाय वाले को दो कप चाय बोल दीजिए।"

अनिल ने चाय वाले यो दो कप चाय का आर्डर दिया और साधना की ओर देखकर कहा, "स्त्रियों मे सवेदना पुरुषों की अपेक्षा अधिक पाई जाती है। मेरे बिला कहे ही देखिए आपने मेरी आवश्यकता का अनुभव कर लिया। पुरुषों मे इतनी सवेदना कम देखने में आती है। ठीक

है न यह बात ?"

साधना युवक की बात सुनकर मुस्कुरा दी। उसने उसके हाथ से एक कप लेकर सिप किया।

"आप जयपुर मे कहा जाएंगी ?" युवक ने पूछा।

"मेरे डैडी का नाम राव वीरेन्द्र सिह है। हमारी कोठी स्टेशन-रोड पर है। वहीं जाना है मुझे।" साधना ने सक्षिप्त परिचय दिया।

"अच्छा-अच्छा, आप राव वीरेन्द्र सिह जी का सुकन्या है। वही ना जो गत वर्ष तक राज्य-सभा के सम्मानित सदस्य थे। गत वर्ष ही तो उनका कार्य-काल समाप्त हुआ है। उन्हे कौन नही जानता ? जयपुर में ही क्या उनसे दिल्ली का भी कौन व्यक्ति अपरिचित होगा ?" युवक ने कहा।

"जी वही। क्या आपका परिचय है डैडी से ?" साधना ने प्रसन्न मुद्रा मे पूछा।

"वहुत सक्षिप्त सा। एक बार उन्होने दिल्ली-विश्वविद्यालय के एनुवल फक्शन पर एक मूजिक-कान्फ्रेस की अध्यक्षता की थी। उसी समय मुझे उनके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।" युवक ने कहा।

"क्या आप थे उस कान्फ्रेस मे ? अच्छा आयोजन था।" साधना ने कहा।

"बहुत सुन्दर। मेरा एक मित्र मुझे वहां ले गया था। उसी ने साधारण परिचय कराया था राव साहब से।" युवक ने कहा।

चाय पीकर दोनो ने अपनी-अपनी प्यालिया चाय वाले को लौटा दी। अनिल ने उसका पेमेट कर दिया। फिर साधना से कहा, "दिल्ली आप किसी कार्य से आई होंगी अथवा किसी अपने निकट के सम्बन्धी के यहां गई होंगी।"

"जी नही। मैं आई नहीं, रहती ही दिल्ली मे हूं। दिल्ली विश्व-विद्यालय मे हिन्दी एम० ए० की अंतिम वर्ष की छात्रा हूं। आइ० पी० कॉलेज के छात्रावास मे रह रही हूं। पढ़ाई के ही कारण मे डैडी के

साथ जयपुर न जा पाई थी।" साधना ने बतलाया।

"ओह! तो आप छुट्टियों मे जयपुर जा रही है। तब तो दस-पन्द्रह दिन रहेगी जयपुर मे।" युवक ने पूछा।

"जी हां। पहली जनवरी को लौटूगी।" साधना ने बतलाया।

ट्रेन छूटने का समय हो गया था। युवक ने घड़ी देखी और खिड़की से बाहर झाका। उसी समय गार्ड तथा ऐंजिन की विसिल्स का स्वर कानो मे आया और कुछ ही क्षण पश्चात ट्रेन चल पड़ी। ट्रेन ने दिल्ली-स्टेशन छोड़ दिया।

अनिल बोला, "क्या मै आपका नाम जानने की धृष्टता कर सकता हूं? कुछ अनुचित न समझे तो बताने की कृपा करे।"

"आप आवश्यकता से अधिक औपचारिकता बरत रहे है। नाम ज्ञात करने मे धृष्टता की क्या बात है? मुझे साधना कहते है।"

युवक बोला, "नाम तो बहुत सुन्दर और सुसंस्कृत है आपका, परन्तु ...।" कुछ कहता हुआ वह मौन हो गया। मन मे आई बात उसने मन में ही दबा ली।

साधना ने पूछा, "परन्तु क्या? आप चुप क्यों हो गए? मन मे आई बात को न कहना उचित नही। कहिए आप क्या कहना चाहते है।"

युवक बोला, "बिना आपकी आज्ञा प्राप्त किए वह बात जो मन मे आई थी, उसे कहना उचित न था। अब आपने आज्ञा दे दी है तो कहने में संकोच न करूंगा। मेरा तात्पर्य था कि नाम तो आपका बहुत सुन्दर और सुसस्कृत है, परन्तु आपको प्राप्त करने वाले को इसके-लिए पर्याप्त साधना करनी होगी।"

साधना युवक की बात सुनकर कुछ शरमा सी गई, परन्तु तुरन्त ही उसने मुस्कुरा कर कहा, "आपने बहुत गहन अर्थ लगाया मेरे नाम का और भविष्यवाणी भी कर डाली। क्या आप भी दिल्ली-विश्वविद्यालय के ही छात्र है?"

"हूं नही, था कुछ वर्ष पूर्व। मैंने दिल्ली-विश्वविद्याल से इङ्गलिश

लिटरेचर विषय लेकर एम० ए० पास किया था।" युवक ने बतलाया।

"क्या मै भी आपका नाम जान सकती हूं ?" साधना ने पूछा।

युवक ने कहा, "मेरा नाम नितान्त सूक्ष्म है, परन्तु है बहुत व्यापक। मुझे अनिल कहते है। यह तो आप मानेगी ना कि विश्व मे बहुत कम ही स्थान ऐसे होने सम्भव है जहा अनिल न हो और जहां यह नही है वहां जीवन का अस्तित्व असम्भव है। ठीक है ना मेरी बात ?"

अनिल की बात सुनकर साधना का दिल गुदगुदा उठा। वह युवक की बातो मे रुचि ले रही थी। उसे अनिल से बाते करने मे आनन्द आ रहा था।

अनिल बोला, "आप हिन्दी मे एम० ए० कर रही है। साहित्य मे आपकी रुचि होनी स्वाभाविक ही है। क्या आप बतलाएंगी कि आपकी अधिक रुचि गद्य मे है अथवा पद्य मे ? मेरे विचार से आपकी पद्य में अधिक रुचि होगी।"

"आपका अनुमान ठीक ही है। मेरी रुचि पद्य मे ही विशेष है।" साधना ने कहा।

"तब तो आपने कवितायें भी अवश्य लिखी होंगी। काव्य-प्रेमी काव्य-रचना का प्रयास न करे यह सम्भव नही है।" अनिल ने कहा।

"कोई विशेष तो नही। कुछ जोड़-तोड़ करने का प्रयास अवश्य किया है कभी-कभी, परन्तु कुछ बन नही पाया।" साधना ने कहा।

उसी समय गाड़ी के ऐन्जिन ने बिसिल दी और उसकी चाल कुछ धीमी हो गई। अनिल ने घड़ी देखी। बोला, "देखिए साधना जी! बातों-बातो मे कितना समय पलक मारते निकल गया। अलवर आ गया प्रतीत होता है।"

"अरे सच!" कहकर साधना ने अपनी घड़ी देखी।

गाडी प्लेटफार्म पर जाकर रुकी। अनिल ने दो कप चाय का आर्डर दिया और चाय लेकर एक कप साधना की ओर बढ़ा दिया। साधना ने कप लेने मे कोई आपत्ति न की। दोनों ने चाय पीकर कप

चाय वाले को लौटा दिये।

गाड़ी पाच मिनट पश्चात चल पड़ी। अनिल ने कहा, "कॉलेज-टाइम मे विशेष रूप से साहित्य के विद्यार्थी अधिकांश कवि तथा लेखक होते है साधना जी ! कॉलेज छोड़ने के पश्चात उनकी यह साधना क्षीण होने लगती है।"

"क्या आपकी भी अपने कॉलेज-टाइम में कविता करने में रुचि रही है ?" साधना ने पूछा।

"मेरी रुचि वास्तव में कविता लिखने में रही है। झूठ नहीं बोलूंगा आपसे। यदि आप अपनी कोई कविता सुनाएं तो मैं भी आपको एक-दो पंक्तियां सुनाने का साहस करूंगा। आपको अपनी कविता सुनाकर मेरी झेप खोलनी होगी।" अनिल ने कहा।

साधना ने कहा, "आप मुझे बाध्य कर रहे है। वास्तविकता यह है कि मैंने जो प्रयास किए है, उनमें सुनाने योग्य कुछ भी नही है। मेरी कविता सुनाने की अपेक्षा सुनने मे अधिक रुचि है।"

"आपकी वह बात मानने योग्य नही है। क्षमा करेंगी आप मुझे मेरे इस स्पष्ट कथन के लिए। कविता सुनने की रुचि मात्र उनमे होती है जो कविता लिखते नही। लिखने वाला सर्वदा अपनी कविता सुनाने के लिए व्याकुल रहता है। ठीक है ना मेरी बात ? सुनाइए आप। मैं कविता का पोस्टमार्टम करने वाला आलोचक नहीं हूं, भावुक श्रोता हूं। आप अपनी बर्थ से उठकर इधर मेरी बर्थ पर आने का कष्ट करें, अन्यथा गाडी की गडगडाहट और खटर-पटर में आपके मधुर स्वर और भावपूर्ण कविता का रसास्वादन करना मेरे लिए कठिन हो जाएगा।" अनिल ने कहा।

साधना प्रसन्न मन मुस्कुराती हुई अनिल की बर्थ पर जा बैठी। वह जब भी कोई नई कविता लिखती थी तो उसके मन में यह प्रबल आकांक्षा रहती थी कि वह उसे किसी सहृदय व्यक्ति को सुनाए। उसे अनिल एक सहृदय कविता-प्रेमी प्रतीत हुआ। इसीलिए उसे अनिल की

बर्थ पर जाकर बैठने मे सकोच न हुआ। उसने एक ही दिन पूर्व एक कविता लिखी थी, जो उसके अन्तर से उठ कर कण्ठ मे भर गई। बोली, "साधारण तुकबन्दी है, सुन कर उपहास न करना आप। यह कविता नही, प्रयास मात्र है। आप बाध्य कर रहे है, इस लिए सुना रही हूं।"

अनिल बोला, "साधना जी, कवि बाध्य होकर सुनाता ही नही है, लिखता भी बाध्य होकर ही है। जब कोई भाव कवि के मन में आता है और वह उसे अपने मन और हृदय मे बांधकर रखने मे असमर्थ हो जाता है तो वह उसे बाहर निकालने के लिए बाध्य हो जाता है। कवि के मन से निकला हुआ वही भाव कविता का रूप धारण करता है। यदि कवि उस भाव को बाहर न निकाले तो वह विक्षिप्त हो जाए।"

अनिल की बात सुनकर साधना को हंसी आ गई। उसने कहा, "आपने तो कविता की परिभाषा को ही नवीन रूप प्रदान कर दिया। वैसे है कुछ-कुछ ऐसी ही बात। जब कोई बात मन मे आती है तो उसे व्यक्त करने के लिए मन छटपटाने सा लगता है। देखिए, एक अपनी नवीनतम रचता सुनाती हू आपको। शायद आप को पसद आए।"

साधना ने एक गीत आरम्भ किया। बहुत ही मधुर और भावपूर्ण गीत था। प्राजल भाषा, प्रेमासिक्त भाव और कलात्मक अभिव्यक्ति। इन सब से अधिक मधुर स्वर था साधना का जिसने अनिल को मंत्र-मुग्ध कर दिया। उसके हृदय में मधुर रस की धारा बह चली। वह बोला, "आपके अन्तर और कण्ठ में सरस्वती निवास करती है। आपका मात्र भाषा, भाव और अभिव्यक्ति पर ही अधिकार नही है, कण्ठ-स्वर भी आपका बहुत मधुर है। आपकी कविता इस मधुर स्वर मे सुनकर आत्मा प्रसन्न हो गई।"

"कही भी तो नही। आप व्यर्थ बना रहे है मुझे। मेरी इस तुकबन्दी की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा न करे। मुझे लिखनी ही कहा आती

है कविता ? कुछ प्रयास कर लेती हूं कभी-कभी । क्या सचमुच आपको मेरा गीत पसंद आया ?" साधना ने पूछा ।

"मैने कभी किसी की व्यर्थ प्रशंसा नही की साधना जी ! किसी की व्यर्थ प्रशंसा करना मेरे स्वभाव के विपरीत बात है । आपका यह गीत भाषा, भाव और कला तीनों दृष्टि से श्रेष्ठ है । आप अपनी इस रचना के लिए मेरा हार्दिक बधाई की पात्री है । मैं यह बात मात्र प्रशसा के लिए नही कह रहा ।" अनिल ने कहा ।

अपने गीत की सराहना सुनकर साधना गद्-गद् हो गई । उसकी आत्मा प्रसन्न हो गई । उसने कहा, "अब आप सुनाइए अपनी कोई कविता । मेरी कविता की आप पर्याप्त प्रशसा कर चुके ।"

अनिल ने कहा, "अब तो कुछ सुनानी ही होगी साधना जी ! आपकी कविता ने मुझे कविता सुनाने की प्रेरणा प्रदान की है ।" यह कहकर अनिल ने एक कविता सुनानी आरम्भ की । उसके स्वर मे मादकता थी ।

साधना नेत्र बन्द किये मौन बैठी कविता सुन रही थी । उसने कविता का एक पद् सुनकर साधुवाद कहा और उसी मुद्रा मे बैठी सुनती रही । साधना की मनोरम मूर्ति अनिल के मन मे उतरती जा रही थी । उसका रूप अनिल के नेत्रों मे बस गया था । वह उस मनोहर आभा को देखकर ठगा सा रह कर मौन हो गया । उसकी कविता मौन हो गई ।

साधना ने नेत्र खोल कर देखा अनिल एक टक उसकी ओर देख रहा था । उसने पूछा, "आपने कविता-पाठ करना बन्द क्यों कर दिया ? आप इस प्रकार क्या देख रहे है ? आपकी कविता तो अभी समाप्त नहीं हुई । कविता के दो पद् शेष है अभी ।"

"मैं अपनी कविता के मानव-हृदय पर होने वाले प्रभाव को देख रहा था साधना जी ! परन्तु आपको यह कैसे ज्ञात हुआ कि इस कविता के अभी दो पद् और शेष है ? क्या आप ज्योतिष-शास्त्र की भी ज्ञाता है ?" अनिल ने पूछा ।

"आप कविता के मानव-मन पर होने वाले प्रभाव का अंकन कैसे करते है अनिल जी ? मैं जोतिष-शास्त्र की ज्ञाता नही हू । मैने यह कविता नवम्बर-मास के एक धर्म-युग के अंक मे पढी थी । कविता मुझे बहुत पसंद आई थी, इसलिए मैने कण्ठस्थ कर ली थी । आपकी काव्य-साधना विद्यार्थी-जीवन के उपरान्त भी अबाध गति से प्रवाहित है, यह अत्यन्त हर्ष की बात है ।" साधना ने कहा ।

अनिल ने कहा, "कविता का प्रभाव आंकने के लिए अनिल की दृष्टि श्रोता के हृदय-कक्ष मे प्रवेश करने का प्रयास करती है साधना जी ! वह दृष्टि श्रोता के मन-मन्दिर मे स्थापित होने वाली उस भाव-मूर्ति को देखती है जो उसके मानस को उस समय मुग्ध किए हुए होती है । मेरी प्रभाव आकने की यही रीति है । मेरी साधना निश्चय ही गतिवान है । गतिवान न होती तो अनायास ही साधना जी से भेट कैसे हो जाती ? ठीक है न यह बात ?"

साधना मुस्कुरा दी अनिल की बात सुनकर । उसने पूछा, "आपने मेरे मन-मन्दिर मे कौन सी भाव-मूर्ति देखी ?"

"यह रहस्य की बात है साधना जी ! इस रहस्य का उद्घाटन करके मैं अपनी अनुभूति को नष्ट नहीं करूंगा । ठीक है ना ?" अनिल ने कहा ।

"मैने आपकी अन्य कविताए भी पढी है अनिल जी ? उनमे से मुझे कई कविताएं याद है ।" साधना ने कहा ।

"उनमें से कोई कविता सुनाइए साधना जी ! आपके कण्ठ से मुखरित होकर मेरी कविता और मधुर हो उठेगी । आपका स्वर-माधुर्य सराहनीय है ।" अनिल ने कहा ।

साधना ने अनिल की एक कविता का पाठ किया । उसे सुनकर अनिल आनन्दविभोर हो गया । पाठ समाप्त कर साधना बोली, "आपकी कविता मे हृदय और मन को आलोडित करने की शक्ति है । मैं जब इन्हें गुनगुनाती हूं तो दिल गुदगुदाने लगता है । ये कोमल-

कोमल शब्द आप कहा से चुनकर लाते है ? लगता है जैसे पुष्प-वाटिका के कोमल पुष्प चुनकर आप माला मे पिरोह देते है।"

साधना के मुख से अपनी कविता की प्रशंसा सुनकर अनिल के मुख पर प्रसन्नता का भाव झलक उठा। उसने विशेष दृष्टि से साधना की ओर देखा। साधना अनिल को बहुत सुन्दर प्रतीत हुई। उसने कहा, "यह माला मै अपनी कविता की साधना देवी के गले में डालने के लिए गूथता हूं साधना जी ! आपको मेरी माला मोहक प्रतीत हुई, इसके लिए आपका लाख-लाख धन्यवाद। क्या सचमुच आपको पसन्द है मेरी यह माला ?"

"बहुत। कला के प्रति मेरा बचपन से आग्रह रहा है अनिल जी और कविता से विशेष प्रेम।"

"अन्य किस-किस कला मे आपकी रुचि है ?" अनिल ने पूछा।

"संगीत और नृत्य मे।" कहकर साधना कुछ लजा सी गई।

कुछ देर मौन रहकर दोनो एक दूसरे की ओर देखते रहे। फिर साधना ने पूछा, "आप जयपुर में कितने दिन रहेगे ?"

"मै मात्र एक दिन के लिए जयपुर आया हूं साधना जी ! एक आवश्यक कार्य है मुझे। कल प्रातः काल के प्लेन से दिल्ली लौट जाऊगा।" अनिल ने बतलाया।

"इतना शीघ्र ! क्या मात्र जयपुर को छूकर लौटने के लिए ही आए है आप ? ऐसा क्या आवश्यक कार्य है यहाँ आपको ?" साधना ने अनिल से पूछा।

"कुछ ऐसा ही काम है साधना जी ! मुझे कल हर दशा मे दिल्ली पहुच जाना है। मेरा एक विदेशी व्यापारी आने वाला है। उसी के एक आवश्यक कार्य के लिए मैं जयपुर आया हूं।" अनिल ने कहा।

साधना ने अनिल के कार्य के विषय में अधिक कुछ पूछना उचित न समझा।

प्रातः गाड़ी जयपुर-स्टेशन पर पहुची तो साधना ने खिड़की से

बाहर मुंह निकाल कर प्लेटफार्म पर देखा। वह सोच रही थी कि उसके डैडी-मम्मी स्टेशन पर आएगे। उसकी मम्मी ने यही कहा था फोन पर कि वह स्टेशन पर आएंगी। उन्हे प्लेटफार्म पर न पाकर साधना कुछ उदास सी हो गई। पहले जब कभी भी वह जयपुर आई थी तो उसके डैडी मम्मी प्लेटफार्म पर आते थे। यह प्रथम अवसर था कि वे नहीं आए।

अनिल साधना के मनोभाव को समझकर बोला, "राव साहब और साधना जी की मम्मी नही आए उन्हे रिसिव करने। यही बात है ना साधना जी ! किसी विशेष कारण वश न आ पाए होगे वे लोग। आप चिन्ता न करे। मैं आपको आपकी कोठी पर पहुचाकर अपने काम पर चला जाऊंगा।"

अनिल ने दो कुलियों को बुलाकर सामान ट्रेन से नीचे उतरवाया और दोनो प्लेटफार्म से बाहर आए। बाहर आकर साधना ने देखा उसकी गाड़ी खड़ी हुई थी। उसका ड्राइवर साधना को देखकर उनके निकट आया और उसने साधना का सामन उठाकर गाड़ी की डिग्गी में रख दिया।

साधना ने अनिल से कहा, "आइए अनिल जी ! गाड़ी मुझे काठी पर छोडकर आपको आपके स्थान पर छोड आएगी।"

अनिल ने कहा, "इस समय आप जाएं साधना जी ! मै संध्या-समय आपसे भेट करूंगा। आप विश्वास रखें, मै आपसे भेट किए बिला वापस न जाऊंगा।"

साधना ने गाड़ी मे बैठ कर अनिल को नमस्कार किया। गाड़ी चल पड़ी।

अनिल ने अपना सामान एक टैक्सी मे रखवाया और शहर की दिशा में चला गया।

३

अनिल संध्या समय राव वीरेन्द्र सिंह की कोठी पर पहुंचा तो उसने देखा वहाँ शोक छाया हुआ था। कोठी के नौकर-चाकर सब उदास मुद्रा में थे। वातावरण मे निस्तब्धता व्याप्त थी। साधना की मम्मी की मृत्यु का समाचार उसे मिल चुका था। इस समाचार से उसे गम्भीर ठेस पहुची थी।

अनिल ने कोठी में प्रवेश किया और वरांडे की ओर बढने लगा तो सामने ही उसकी भेंट भवानीसिह से हुई। उसने पूछा, "आपको किससे मिलना है ?"

"साधना जी से।" अनिल ने उत्तर दिया।

"कल संध्या समय यहाँ एक भयंकर दुर्घटना घटी थी। आज प्रातः साधना की मम्मी का स्वर्गवास हो गया। साधना बिटिया की तबियत ठीक नही है। आज उसका मिलना कठिन होगा। आप कल किसी समय आएं तो उचित होगा।" भवानीसिंह ने कहा। फिर पूछा, "आप कहाँ से पधारे है ?"

"इस समय तो यही से आ रहा हूं, परन्तु रहता मैं दिल्ली मे ही हूं। उनकी माताजी की मृत्यु का समाचार मुझे ज्ञात हो चुका है। इसी लिए संवेदना व्यक्त करने इधर आया हूं।" अनिल ने कहा।

साधना ड्राइङ्गरूम मे अकेली उदास बैठी थी। उसने अनिल को कोठी मे प्रवेश करते हुए देख लिया था। जब वह भवानीसिह के पास रुका और उससे बाते करके लौटने लगा तो वह बाहर आई और उसने धीरे से पुकारा, "अनिल बाबू।"

अनिल ने घूम कर देखा, साधना उसके निकट आ पहुची थी। करुणा की साक्षात प्रतिमा। आंखे डबडबाई हुई। प्रातः उसके चेहरे

पर जो अ्रभा थी वह उस समय नितान्त लुप्त थी। उसकी यह दशा देखकर अ्रनिल का मन भारी हो गया। उसका कांतिविहीन मुख दयनीय प्रतीत हो रहा था, मानो उसका स्नेह, उसकी ममता, उसका प्यार उससे छिन गया था। वह उस समय अ्रनिल को चिन्ता, व्यग्रता, उद्विग्नता, कलान्तता की साक्षात प्रतिमा स्वरूप अ्रपने समक्ष दिखलाई दी। वह उसी स्थान पर रुक कर साधना की अ्रोर देखता रहा।

साधना ने निकट आ्राकर कहा, "अ्रनिल जी ! अ्रनर्थ हो गया। मेरी मम्मी नही रही। उनकी किसी नीच ने हत्या कर दी।" यह कहकर उसके नेत्र भल्ल से बरस पडे।

"यह सब मुझे ज्ञात हो चुका है साधना जी ! मेरे एक मित्र ने मुझे इस दुर्घटना की सूचना दी तो मै स्तब्ध रह गया। इससे भयंकर घटना अ्रौर क्या घट सकती है ? बहुत बड़ा अ्रनर्थ हुआ्रा।" अ्रनिल ने सहानुभूतिपूर्वक कहा।

"अ्रन्दर आ्राइए। यहां कैसे खडे रह गए आ्राप ?" साधना ने उससे कहा।

अ्रनिल साधना के साथ अ्रन्दर ड्राइङ्गरूम में चला गया अ्रौर भावनीसिह बाहर बागीचे की दिशा मे चला गया। दोनों अ्रन्दर जाकर सोफे पर बैठे तो अ्रनिल ने पूछा, "राव साहब की तबियत कैसी है साधना जी ?"

"गुम-सुम से हो गए है कुछ। किसी से कोई बात नही कर रहे।" साधना ने बतलाया।

"उनकी यह दशा होनी स्वाभाविक ही है साधना जी ! यह साधारण घटना नहीं है। जीवन-संगिनी का इस प्रकार बिछोह हो जाना हृदयविदारक घटना है। क्या मै उनके दर्शन कर सकता हूं ?"

"आ्राइए, अ्रन्दर चलते है। सम्भव है आ्राप से कुछ बातें करे। अ्रभी तक उन्होंने किसी से कोई बात नहीं की। चचा भवानीसिह से भी कोई बात नहीं की। अ्रभी कुछ देर पूर्व एस० पी० रणधावा आ्राए थे, उनसे

भी बाते करने को मना कर दिया ।" साधना ने बतलाया ।

अनिल साधना के साथ अन्दर राव साहब के कमरे मे गया । राव साहब नितान्त मौन शोकग्रस्त अवस्था में अकेले आरामकुर्सी पर बैठे थे । कुछ विक्षिप्त जैसी स्थिति थी उनकी । उन्होने साधना और अनिल की ओर देखा और देखते रहे कुछ क्षण तक । फिर साधना से अनिल की ओर संकेत करके पूछा, "यह कौन है साधना ? मैंने पहिचाना नही इन्हे । देखा तो है मैंने कभी । स्मरण नहीं कर पा रहा कि कब और कहा देखा है ।" फिर कुछ सोचकर अनिल से कहा, "कही दिल्ली में तो भेट नहीं हुई आप से ?"

साधना को संतोष हुआ कि अनिल को देखकर उसके डैडी इतना बोले तो । उन्होने बातें करने को एकदम मना नही कर दिया ।

अनिल एक कुर्सी खिसकाकर राव साहब के निकट बैठता हुआ बोला, "आपका अनुमान ठीक है राव साहब ! मैंने दिल्ली मे ही आपके दर्शन किए थे । मै आपके पास अपने एक मित्र के साथ आपकी कोठी पर गया था । उन दिनों आपके पिताजी का मर्डर-केस चल रहा था । याद आया आपको ?"

साधना को आश्चर्य हुआ कि अनिल को उसके परिवार की इतनी पुरानी घटनाओं की भी जानकारी थी । संतोष भी हुआ यह जानकर ।

राव साहग बोले, "तुम्हे साधना ने बतलाया बेटा कि कल सध्या-समय लगभग आठ बजे कुछ गुण्डे हमारी कोठी में घुस आए और उन्होने साधना की मम्मी की हत्या कर दी । उन हत्यारों ने उन पर गोलियां दाग दी । आज प्रात· चार बजे उनका प्राणान्त हो गया ।" यह कह कर राव साहब विह्वल हो गए । उनकी आंखे डबडबा आई ।

अनिल यह सुनकर कुछ देर मौन रहा । फिर पूछा, "इधर जयपुर आने पर आपकी किसी से शत्रुता तो नही हो गई थी राव साहब ? इस प्रकार के काम शत्रुता के कारण होते है । मेरे विचार से वे गुण्डे डकैत या लुटेरे नही थे । यदि वे डकैत या लुटेरे होते तो कोठी से आभूषण

इत्यादि ले जाने का प्रयास करते।"

"यह सब करने का उन्हें अवसर नही मिला। गोलियों की आवाज सुनकर हमारे नौकर-चाकर इधर दौड पड़े। उस स्थिति मे उन्होंने यहा से भाग जाना ही उचित समझा।"

"जिस समय यह घटना घटी, उस समय अथवा उससे घंटा दो घण्टा पूर्व कोई बाहर का आदमी तो कोठी पर नही आया था ?" अनिल ने उनसे पूछा।

"उस समय कोठी के कर्मचारियों के अतिरिक्त यहा अन्य कोई व्यक्ति नहीं था। उससे कुछ देर पूर्व क्या, उस दिन प्रात· से ही कोई बाहर का व्यक्ति कोठी पर नही आया था।"

अनिल के प्रश्नो को सुनकर साधना आश्चर्य मे डूबती जा रही थी। अनिल को राव साहब के पास लाते समय उसका विचार मात्र यही था कि वह उनसे उनकी तबियत के विषय मे पूछेगा, परन्तु अनिल के प्रश्नों की दिशा ही दूसरी थी। उसे अनिल पर्याप्य समझदार और उपयोगी व्यक्ति प्रतीत हुआ।

अनिल ने पूछा, "मुझे नारंग ने बतलाया था कि आपके पिता जी के मर्डर-केस मे उनके चचाजाद भाई को आजन्म कारावास तथा उन के दो लड़कों को तीन-तीन वर्ष के कारावास का दण्ड मिला था।"

अनिल की यह बात सुनकर साधना ने विशेष ध्यान से अनिल की ओर देखा। राव साहब ने बतलाया, "यही हुआ था बेटा!"

"इसका मतलब, आपके चचा के वे दोनों लड़के जिन्हें तीन-तीन वर्ष की सजा हुई थी, कारागृह से मुक्त हो गए होगे। क्या वे अपनी पुरानी शत्रता निकालने के लिए यह हत्या नहीं कर सकते ?" अनिल ने कहा।

अनिल की बात सुनकर राब साहब एक क्षण के लिए स्तब्ध से रह गए। फिर संयत होकर बोले, "करने को वे लोग कर भी सकते है बेटा, परन्तु केवल अनुमान के आधार पर मैं उनके नाम कैसे ले सकता हूं ?

यदि मैंने उनका नाम लिया तो पुलिस-अधिकारी कहेंगे कि मैं उनके नाम अपनी पुरानी शत्रुता के अधार पर ले रहा हूं। यह उचित न होगा। फिर एक बात और भी है। यदि वे गुण्डे वे ही थे तो उन्हें साधना की मम्मी की हत्या न करके मेरी हत्या करनी चाहिए थी। उनकी शत्रुता मुझसे थी, साधना की मम्मी से नहीं।"

राव साहब की इस बात में वजन था। अनिल कुछ देर मौन रह कर कुछ सोचता रहा। फिर बोला, "इसका मतलब आपको उन लोगो पर संदेह नही है।"

राव साहब ने अनिल की बात का कोई उत्तर न दिया। अनिल ने भी अन्य कोई प्रश्न करना उचित न समझा। वह साधना के साथ बाहर ड्राइङ्गरूम मे आकर बैठ गया।

साधना ने पूछा, "क्या आपका कल दिल्ली लौट जाने का प्रोग्राम निश्चित है ? आप यहां जिस कार्य से आए थे वह हो गया ?"

अनिल ने कहा, "काम तो अभी पूरा नहीं हुआ साधना जी, फिर भी मेरा मौर्निग-प्लेन से दिल्ली लौटना निश्चित है। मुझे खेद है कि मै रुक नहीं सकता, परन्तु मै सध्या के प्लेन से जयपुर लौट आऊंगा। आप मुझे एरोड्रम पर मिलना।"

साधना अनिल की बात सुनकर आश्चर्यचकित रह गई। उसने पूछा, "आप सचमुच संध्या को लौट आएगे ? क्या आप मेरे ही लिए वापस आएंगे ?"

"आना ही होगा साधना जी ! आपकी मम्मी के हत्यारे का पता तो लगाना ही होगा।" अनिल ने कहा।

"क्या आप वास्तव में मम्मी के हत्यारों को खोजने मे हमारी सहायता कर पाएगे ? क्या यह सम्भव होगा आपके लिए ?" साधना ने उत्सुकता से पूछा।

"प्रयत्न करना मनुष्य का कर्त्तव्य है। सफलता मिलनी न मिलनी परत्मात्मा के आधीन है। मेरे पुलिस के कुछ विशिष्ट व्यक्तियों से

घनिष्ट सम्बन्ध है। उसके आधार पर मुझे विश्वास है कि मै कुछ कर पाऊंगा। मेरी यह बात मात्र अपने तक सीमित रखना। किसी भी अन्य व्यक्ति को इसका सकेत न देना, अपने डैडी को भी नही।" अनिल ने गम्भीरता पूर्वक कहा, "नही दोगी ना !"

"आपने मुझ मे जो विश्वास व्यक्त किया है उसका हर दशा में निर्वाह होगा। इसका निर्वाह करना मेरा कर्त्तव्य और मेरी आवश्यकता है। यदि आप मम्मी के हत्यारों को पकड़वाने मे हमारे सहायक हुए तो मैं आपकी आजीवन आभारी रहूंगी।" साधना ने उतनी ही गम्भीरता से उत्तर दिया।

"मेरे कार्य को मेरे कर्त्तव्य तक ही सीमित रहने दो साधना जी ! उस पर आभार मानने का बोझ न डालो। इससे कर्त्तव्य का महत्व नष्ट हो जाएगा। ठीक है ना ! लौटना तो मुझे दो तीन दिन पश्चात था, परन्तु अब कल ही लौटना होगा। मिलना अवश्य। मै प्रतीक्षा करूंगा।" अनिल ने कहा।

"मै आपको निश्चित समय पर वहां मिलूंगी। इसके विषय में किसी को कोई संकेत प्राप्त न होगा, आप विश्वास रखे।" साधना ने कहा।

जब ये बाते चल रही थी तभी भवानीसिंह ड्राइङ्गरूम मे आ गया। वह अनिल के सामने सोफे पर बैठा तो साधना ने उसका परिचय देते हुए कहा, "आप मेरे चचा भवानीसिंह जी है।"

अनिल ने खड़ा होकर भवानीसिंह को प्रणाम किया और फिर बैठते हुए पूछा, "क्या आप भी उस समय कोठी पर नही थे चाचाजी, जब यह दुर्घटना घटी ? इतनी भयकर घटना कैसे इस प्रकार अनायास ही घट गई ?"

"यदि मैं कोठी पर होता तो क्या कोई गुण्डा इस प्रकार कोठी मे प्रवेश करने का साहस कर पाता ? बदमाशों की हड्डी-पसलिया बराबर कर देता। मैं यहां होता तो क्या वे इस प्रकार इतना भयंकर काण्ड

करके भाग जाते ?" यह कहते हुए भवानीसिंह का चेहरा तमतमा उठा और वह क्रोध से अपने हाथों की मुट्ठिया खोलने-भीचने लगा। उसकी भुजाएं फड़कने लगी।

अनिल ने कहा, "चाचा जी ! आप राव साहब से शत्रुता रखने वाले व्यक्तियों को तो जानते होगे। सम्भव है उनमें से किसी ने शत्रुता निकालने के लिए यह कार्य किया हो।"

"कुछ समझ मे नही आ रहा भय्या कि यह कार्य किसने किया। भय्या की तो किसी से भी शत्रुता नही है। ऐसे देवता आदमी किस से शत्रुता करेंगे ? भय्या तो हर किसी के काम आने वाले है। मेरे विचार से तो वे कोई डकैत ही थे जो आए तो कोठी पर लूटने के लिए ही थे, परन्तु चौकीदारो के उधर दौड पडने के कारण कुछ कर नही पाए।" भवानीसिंह ने कहा।

अनिल ने साधना की ओर देखकर आंखे झुका लीं। उसने उससे अन्य कोई प्रश्न न किया।

भवानीसिंह ने पूछा, "क्या तुम जयपुर के ही रहने वाले हो भय्या ?"

"मैं जयपुर का रहने वाला नही हूं चाचाजी ! पटना का नाम तो आपने सुना होगा। जिस प्रकार जयपुर राजस्थान की राजधानी है, उसी प्रकार पटना बिहार की राजधानी है। मैं दिल्ली विश्वविद्यालय मे रिसर्च कर रहा हूं। शरदकालीन छुट्टियों में जयपुर की सैर करने चला आया था।" अनिल ने बतलाया।

साधना अनिल के इस कथन से समझ गई कि अनिल ने चचा भवानीसिंह को अपना सही परिचय नहीं दिया। उसने अपने विषय मे उससे कुछ भी किसी से कहने के लिए मना कर दिया था। वह चुपचाप बैठी उनकी बाते सुन रही थी।

"अच्छा-अच्छा तो तुम दिल्ली विश्वविद्यालय मे बिटिया के साथ पढ़ रहे हो। वहां किसी होस्टल मे रहते होगे।" भवानीसिंह ने कहा।

'जी हा ।" संक्षिप्त सा उत्तर देकर अनिल उठ खड़ा हुआ। उसने साधना की ओर देखकर कहा, "अच्छा साधना जी ! अब आज्ञा दीजिए। मुझे रात्रि की गाडी से अजमेर जाना है। एक दो दिन अजमेर रहकर वहीं से दिल्ली लौट जाऊंगा।"

साधना ने खडी होकर कहा, "चलिए, बाहर तक चलती हूं मै भी आपके साथ।"

साधना और अनिल कोठी से बाहर आए। साधना ने पूछा, "आप यहा किस कार्य से आए थे अनिल जी ?"

"मैं कुछ विदेशी व्यापारियों को जवाहिरात सप्लाई करता हूं साधना जी ! उन्ही की खोज मे मैं जयपुर आया था। इसी काम की बदौलत मेरे कुछ पुलिस-अधिकारियो से अच्छे सम्बन्ध हो गए है। उन से हमे इस कार्य मे पर्याप्त सहायता प्राप्त होगी।" अनिल ने कहा।

साधना ने अधिक कुछ ज्ञात न किया। उसने कहा, "मै कल सध्या-समय आपकी एरोड्रम पर प्रतीक्षा करूंगी। आप आएंगे ना ?"

"अवश्य आऊगा साधना जी ! न आना होता तो व्यर्थ आपसे क्यों कहता ? आपने तो कहा नही था मुझे आने के लिए। यह कार्य मै स्वप्रेरणा से ही कर रहा हूं। ठीक है ना !" अनिल ने कहा।

साधना ने आशापूर्ण दृष्टि से अनिल की ओर देखा। उसे लगा जैसे अथाह जल मे डूबती हुई के लिए विधाता ने तिनके का सहारा प्रदान किया था। उसने अपने दोनो हाथ जोड़ कर अनिल को नमस्कार करते हुए विदा दी।

अनिल आगे बढ गया। साधना कोठी के अन्दर चली गई।

अनिल ने कुछ दूर जाकर रिक्शा पकडी और जौहरी बाज़ार गया। नानकचन्द जौहरी जयपुर का माना हुआ जवाहिरात का व्यापारी था। उससे अनिल ने पहले भी कई बार माल खरीदा था। वह उसके पास पहुंचा तो नानकचन्द थली छोड़कर उठ खड़ा हुआ। उसने अनिल की पूरी आवभगत की और अपने निकट थली पर बिठाया।

अनिल ने पूछा, "कहो भाई नानकचन्दजी ! कैसा काम-धन्धा चल रहा है आपका ?"

"धन्धा क्या चल रहा है बाबूजी, बिकवाली तो एकदम ठप्प हो गई । राजे-महाराजे और ताल्लुकेदार अब माल खरीदते नही, बेचते हैं। उनका माल खरीद-खरीदकर कहा तक तिजोरिया भरता रहूं ?" नानकचन्द ने कहा ।

"माल निकलने की अब चिन्ता न करो नानकचन्द जी ! अपन ने एक मोटा जरिया बना लिया है । लाख, दो लाख, चार लाख का जो मोटा माल हाथ लगे फौरन ले लो । अपन के पास एक करोड़ों पति विलायती व्यापारी फंस गया है ।" अनिल ने कहा ।

अनिल की बात सुनकर नानकचन्द की बाछे खिल गई । उसे अपनी डूबी हुई रकमे उभरती दिखाई दी ।

अनिल ने पूछा, "कुछ मोटा माल हो तो दिखाओ नानकचन्दजी ! व्यापारी भारत आया हुआ है । इन दिनों कलकत्ते मे है । दस-पन्द्रह दिन मे कलकत्ते से दिल्ली आएगा । सब माल का नकद करा दूंगा ।"

नानकचन्द ने कहा, "अनिल बाबू ! दो हार है हमारे पास । आप देखेंगे तो मन प्रसन्न हो जाएगा । मुह मागे दाम रखा लेना अपने कस्टेमर से ।"

"वह सब तो देख लिया जाएगा नानकचन्दजी ! हार दिखाइए कैसे है । अगर मतलब के हुए तो सौदा हुआ ही समझना । दस-पन्द्रह दिन मे नकद गिन लेना । इस बार लाखो में खिलवा दूंगा सेठ । बस यह ध्यान रहे कि मतलब के माल की कमी न हो ।" अनिल ने कहा ।

यह सुनकर नानकचन्द के हर्ष का पारावार न रहा । उसने कहा, "माल की क्या कमी बाबूजी ? करोडो का माल भरा पडा है तिजोरियों में । जिन हारों का मैने आपसे जिक्र किया है, वे दिल्ली में ही पड़े हुए है ।"

"दिल्ली में कहा रहता है आपका माल ? पहले बतला देते तो जय-

पुर आने की परेशानी ही न उठानी पडती।" अनिल ने कहा।

"चलिए, इसी बहाने आपके दर्शन हो गए। दिल्ली किनारी-बाजार मे भिक्खीमल जैन, वहा के माने हुए जौहरी है। दोनों हार उन्ही के पास रखे हुए है। मैं पर्चा लिख देता हू आपको। वह दिखला देंगे। एक ताल्लुकेदार की पत्नी के हार है, बेशकीमती।" नानकचन्द ने बतलाया।

अनिल नानकचन्द से भिक्खीमल जैन के नाम पर्चा लेकर अपने निवास स्थान पर गया। रात्रि के दस बजे थे उस समय। भोजन करके पलंग पर लेटा तो उसे साधना की स्मृति हो आई। ट्रेन मे उसके साथ सफर करती हुई साधना और उस साधना के रूप-रंग और चाल-ढाल मे कितना अन्तर आ गया था जिससे अभी चन्द घण्टे पूर्व वह उसकी कोठी से विदा लेकर आया था। चेहरा कितना मलिन और आभा अनायास ही कैसी विलुप्त हो गई थी।

अनिल को पर्याप्त देर से नीद न आई और आई तो वह तभी खुली जब एलार्म ने उसके कान पर टिकटिकी देनी आरम्भ की। वह पलंग से उठ खड़ा हुआ और यात्रा की तैयारी कर ठीक समय पर एरोड्रम जा पहुंचा।

दिल्ली पहुंचकर वह सीधा भिक्खीमल जैन के पास गया। उसने नानकचन्द जौहरी का पर्चा भिक्खीमल जैन को दिया। उसे पढकर भिक्खीमल जैन का चेहरा खिल उठा। उसने अनिल से कहा, "बाबू जी ! आपको हमने पहले कभी मार्कीट मे नहीं देखा।"

"मै मार्कीट मे बहुत कम आता हूं जैन साहब ! व्यापारी स्वयं मेरे पास पहुंच जाते है। आपके पास तो मैं नानकचन्द जी के कहने से चला आया हूं।" यह कहकर अनिल ने भिक्खीमल जैन को दिल्ली के बड़े-बडे जौहरियो के नाम गिनाकर कहा, "ये सब अपना माल बिकवाने के लिए मेरे पास आते है। मैं माल हिन्दुस्तान के व्यापारियों को नही बेचता। उनसे सिर्फ खरीदता हू। मेरे ग्राहक सब विदेशी है।"

"तो आपको माल कहाँ दिखाना होगा बाबू जी ?"

"अशोका होटल। आप उसी को मेरा कार्यालय समझें। वहां आकर आप जिस बैरे से मेरा नाम लेगे, वही आपको मेरे कमरे पर छोड़ जाएगा। किसी प्रकार की कठिनाई नही होगी आपको।" अनिल ने कहा और चलने के लिए उठने लगा।

"ऐसी क्या शीघ्रता है बाबू जी ? बैठिए थोड़ी देर। हमे भी सेवा का अवसर दीजिए।"

अनिल बैठता हुआ बोला, "हम राजस्थान और मध्यप्रदेश के व्यापारियों का करोड़ों का माल बेचते है। जहाँ तक होता है हम मोटा ही माल वेचना पसन्द करते है। छोटा माल बेचने मे हमारी क्या दलाली बनेगी ? परिश्रम दोनो के लिए बराबर करना होता है।"

भिक्खीमल जैन ने अनिल की खूब खातिर की। घंटेवाले हलवाई के यहा से मिठाई और नमकीन मगवाकर दावत दी। अनिल ने कहा, "हमारा एक ग्राहक कलकत्ते से लौटने वाला है। परमात्मा ने चाहा तो हम आपके दोनों हार उसे भिडा देंगे। आपको मुंह मागे दाम मिलेंगे। हमार ग्राहक सौदेबाजी नही करता। हमारा दस प्रतिशत कमीशन होगा। यह समझ ले आप।"

"दस नही बीस प्रतिशत देगे हम आपको। माल निकलना चाहिए।"

"नहीं-नही जैन साहब ! हमारा डीलिग बहुत फेयर होता है। हम दस प्रतिशत से एक कौडी अधिक नही लेगे। आप जो हमें अधिक देना चाहते है वह हमारे ग्राहक के मूल्य मे कम कर देना। हम धोखे का व्यापार नही करते। इसी लिए हमारा ग्राहक सीधा हमारे पास आता है। जिस ग्राहक को हमने एक बार माल दे दिया, वह कभी दूसरे के पास नही गया। यह रिकार्ड है हमारा।" अनिल ने सगर्व कहा।

"आपकी सूचना प्राप्त होते ही माल आपके कमरे पर पहुंच जाएगा।" भिक्खीमल जैन ने कहा।

भिक्खीमल जैन के यहा से अनिल अशोका होटल गया। वहा उसने अपनी गत तीन दिन की डाक देखी। उसमे जो आवश्यक पत्र थे, उनके

उत्तर लिखे और फिर अटैची लेकर नीचे उतर आया। उस समय तीन बज चके थे, इस लिए टैक्सी लेकर सीधा एरोड्रम गया।

साधना अनिल को विदा करके अन्दर कोठी मे जाकर अपने कमरे में चली गई। वह अनिल के विषय मे सोच रही थी। उसने जो बातें उसके डैडी से की उनसे स्पष्ट था कि उसका सदेह उसके दादा की हत्या से सम्बद्ध उन चचाओं पर था जिन्हे उस केस मे दण्डित किया गया था और अब वे कारावास से मुक्त हो चुके थे।

साधना ने अपने मन मे सोचा कि यह सम्भव तो है कि उन्ही लोगो ने कुछ षडयंत्र रचा हो, परन्तु यदि यह सत्य है तो उन्होने डैडी की हत्या क्यों नहीं की ? उन्हे डैडी की हत्या करनी चाहिए थी।

उस दिन रात्रि मे साधना बहुत देर तक जगती रही। नीद नही आई उसे। एक दो बार वह अपने डैडी के कमरे मे गई। वहाँ भवानीसिंह भी था उनके पास। वह राव साहब को सात्वना देने का प्रयास कर रहा था, परन्तु यह मौखिक सांत्वना से भरने वाला घाव नही था जो राव साहब के दिल पर हुआ था। उन्होंने भवानीसिंह से कहा, "भवानीसिंह ! तुम जाकर आराम करो। तुम भी जाओ साधना ! मुझे अकेला छोड दो। मेरा मन बहुत अशान्त है।"

भवानीसिंह और साधना कमरे से बाहर चले आए। साधना अपने कमरे मे चली गई और भवानीसिंह अपने कमरे मे।

दूसरे दिन प्रातः से ही साधना संध्या समय ऐरोड्रम पर जाने के विषय में सोचने लगी। उसे वहाँ जाने के विषय में किसी को संकेत नही देना

था। यही सोचती हुई वह वरांडे में घूमती हुई बाहर निकल कर गैराज की ओर चली गई। उनका ड्राइवर मानसिंह गैराज के सामने खटिया पर बैठा था। वह साधना को आती देखकर खड़ा हो गया।

साधना ने कहा, "मानसिंह! हमे साढ़े चार बजे अपनी एक सहेली के यहाँ जाना है, गाड़ी निकाल लेना।"

"बहुत अच्छा बीबी जी!" मानसिंह ने उत्तर दिया।

साधना मानसिह से यह कहकर कोठी मे लोट गई और समय की प्रतीक्षा करने लगी।

लगभग चार बजे जब मानसिंह ने गाड़ी गैराज से बाहर निकाली तो भवानीसिंह कोठी के बाहर पोर्टिगो के निकट खड़ा था। उसने मानसिह से पूछा, "क्या भय्या कहीं जा रहे है?"

मानसिंह ने कहा, "जी नहीं, बीबीजी अपनी किसी सहेली के यहाँ जाएंगी।"

भवानीसिंह ने मानसिंह से अन्य कोई प्रश्न न किया। वह सीधा साधना के कमरे में गया और उससे पूछा, "कही जा रही हो बेटी?"

साधना ने उत्तर दिया, "ऐसे ही जरा अपनी एक सहेली के पास जा रही हूं चाचा जी। अकेली पडे-पड़े मन जाने कैसा हो रहा है। वहाँ जाने से मन कुछ ठीक सा हो जाएगा।"

भवानीसिह ने कहा, "अभी इस प्रकार घूमना-फिरना उचित न होगा बेटी! कोई देखेगा तो क्या कहेगा कि कल ही तो इसकी मम्मी का प्राणान्त हुआ है और आज यह घूमती फिर रही है।"

भवानीसिंह की बात सुनकर साधना को अपनी मम्मी की स्मृति हो आई। उसकी आखों में आँसू आए। उसने भवानीसिह की बात का कोई उत्तर न दिया। बात ठीक थी, परन्तु वह तो इस आशा को लेकर जा रही थी कि अनिल हत्यारों की खोज करने मे उसकी सहायता करेगा। दुनियाँ कुछ भी समझे और कुछ भी कहे, वह अपनी मम्मी के हत्यारे की खोज में अनिल की सहायता अवश्य प्राप्त करेगी। अनिल उसी के

लिए तो आ रहा था और उसने उसे वचन दिया था एरोड्रम पर मिलने का। वह अपने वचन का पालन अवश्य करेगी।

साधना ने अपना पर्स उठाया और वह बाहर जाकर कार मे बैठ गई। ड्राइवर ने गाडी स्टार्ट कर दी। भवानीसिंह को साधना का इस प्रकार जाना भला न लगा।

साधना ने गाड़ी के कोठी से बाहर निकलने पर ड्राइवर से कहा, "मानसिंह! मुझे हवाई अड्डे पर चलना है। गाडी थोडा आगे जाकर उस दिशा मे मोड लेना। मेरे वहाँ जाने की बात किसी को ज्ञात न हो, डैडी को भी नही।"

"नही-नही बीबी जी! एसा कैसे होगा भला? किसी को कानों-कान भी पता न चलने दूंगा।" ड्राइवर ने कहा।

गाडी हवाई अड्डे पर पहुची। साधना गाडी से उतर कर हवाई जहाज के आने की प्रतीक्षा करने लगी। जहाज ठीक समय पर आया। साधना की आँखे जहाज पर केन्द्रित थी। जहाज से यात्री उतर कर नीचे आए। साधना ने देखा अनिल जहाज से उतर कर बाहर आ रहा था। उसे देखकर अनायास ही साधना की आँखों मे प्रकाश उतर आया। आखिर क्यों? वह समझ न पाई।

अनिल की दृष्टि अपनी प्रतीक्षा मे खड़ी साधना पर गई तो उसके चेहरे पर प्रसन्नता का भाव झलकने लगा। वह लम्बे-लम्बे डिग भरता हुआ साधना के निकट आ गया।

साधना के मुरझाए हुए चेहरे पर आशा की झलक दिखाई दी। उसने कहा, "आप आ गए अनिल बाबू! मुझे विश्वास था कि आप अवश्य आएंगे।"

"वचन दिया था आपको? आता कैसे नहीं साधना जी? आपके अनुरोध पर मै यहाँ रुक नही पाया, यह क्या कम अपराध था मेरा?" अनिल ने कहा।

"आप यह 'आप आप' की रट लगाकर मुझे लज्जित कर रहे है।

है ? यदि प्रथक से न हो तो संभव है तुम्हारी मम्मी का कोई ऐसा फ्रंट पोज हो जिसमें वे हार आगए हों।" अनिल ने कहा।

"प्रथक से तो उनका कोई फोटोग्राफ नही है डैडी के पास। मैं मम्मी का एलबम देखूंगी। यदि उसमे कोई पोज़ ऐसा हुआ, जिसमे उन हारो का फोटो आ गया हो तो कल लाकर आपको दिखा दूंगी।" साधना ने कहा।

"इस काम को आवश्यक समझकर करना साधना! इससे मम्मी की हत्या के कारण का पता चलना संभव है। संभव है उन हारों के चोर ने ही तुम्हारी मम्मी की हत्या की हो। यह कार्य बहुत सावधानी से करना। किसी को इसका आभास न मिले कि तुम अलबम किस अभिप्राय से देख रही हो।" अनिल ने कहा।

"मै पूर्ण सावधानी बरतूंगी अनिल!" साधना ने कहा।

तभी महाराज ने तीन चार प्लेटों मे ढेर सा खाने का सामान लाकर मेज पर लगा दिया। उसे देखकर साधना को हंसी आ गई। उसने कहा, "इतने सब खाने के सामान का क्या बनेगा अनिल ?"

अनिल ने साधना को हंसते देखा तो उसका मन प्रसन्न हो गया। कल से प्रथम बार यह हास्य की पुट उसने साधना के चेहरे पर देखी थी। उसने कहा, "आज प्रातः से मैने कुछ नहीं खाया साधना, तुम विश्वास करोगी ? एक जगह ज़रा सा नाश्ता अवश्य लिया था। समय ही नहीं मिला खाने का। सारा दिन दौड-भाग मे निकल गया। होटल जाकर कुछ आवश्यक पत्रों के उत्तर लिखे और साडे तीन बज गए। बस तुरन्त कमरे को ताला लगाकर हवाई अड्डे के लिए चल पड़ा। जहाज चलने से ठीक दो मिनिट पहले वहां पहुचा। भय था कि कही तुम नाराज न हो जाओ।"

"मेरे नाराज होने का आपको इतना भय क्यों था अनिल ?"

"ज्ञात नहीं क्यों था साधना! मन ने यही कहा था कि यदि मैं जयपुर न पहुंचा तो तुम क्या सोचोगी। मैंने सोचा था कि यदि पहले

ही वचन का पालन न हुआ तो तुम्हारे मन मे मेरे प्रति क्या धारणा बनेगी ?" अनिल ने कहा ।

"आपको भूख लगी है । पहले आप कुछ लें अनिल ! आपको मेरे कारण भूखों रहना पड़ा ।" साधना ने कहा ।

"वह भूख तो तुम्हें हवाई अड्डे पर खड़ी देखते ही गयाब हो गई थी साधना ! अब तो………।"

"लीजिए लीजिए कुछ । मुझे बनाने का प्रयास न कीजिए ।" कहकर साधना ने एक प्लेट उठाकर अनिल के सामने कर दी और अनिल ने उसमे से एक बर्फी उठाली । दोनों चाय-नाश्ता लेने लगे । अनिल ने चपरासी को ड्राइवर के लिए भी चाय-नाश्ता ले जाने के लिए कहा ।

साधना बोली, "आप हर बात को इतनी गहराई से सोचते और देखते है कि मानो आप कोई पुलिस के आफीसर हों । हर बात की जितनी छानबीन आप करते है उतनी पुलिस अधिकारी भी नही करते । आपने डैडी से भी इसी प्रकार की बाते की थी । क्या आपके पुलिस अधिकारियो से वास्तव में घनिष्ट संबन्ध है ?"

"पहले न भी रहे हों साधना ! अब तो तुम्हारे काम के लिए घनिष्टता बढ़ानी ही होगी । यदि मात्र संबन्धों से काम न चला तो पुलिस की नौकरी कर लूगा । वैसे रणधावा मेरे मित्र है । मैं उनसे इस काम में पूर्ण संलग्नता बरतने को कहूंगा ।" अनिल ने कहा ।

"कृपया अवश्य कहना उनसे । वह चाहें तो हत्यारों को बहुत शीघ्र पकड़ सकते है ।"

"मैं अभी कह देता हूं उनसे । उन्हें यहीं बुलवा लेता हूं तुम्हारे सामने ।" यह कहकर अनिल ने एक नम्बर डायल किया । बोला, "रणधावा साहब ! मैं अनिल बोल रहा हूं । एक मिनट के लिए कष्ट करिए । राव वीरेन्द्र सिह जी की सुपुत्री साधना देवी मेरे पास बैठी हुई है । आपसे कुछ आवश्यक बातें करनी है ।"

साधना आश्चर्यचकित रह गई यह बात सुनकर । उसे हर्ष भी हुआ

यह जानकर कि वास्तव मे अनिल ने जो कहा था वह सत्य था। उसके पुलिस अधिकारियों से घनिष्ट संबन्ध हैं। उसकी सहायता से वह अपनी मम्मी के हत्यारों की खोज कराने मे सफल होगी।

अनिल ने कहा, "रणधावा साहब आ रहे हैं साधना !"

"सच अनिल !" साधना ने कहा।

"झूठ बोलूगा तुमसे ? रणधावा मित्र हैं अपने। वह हमारा यह जरा सा काम न करेंगे। हम उनके लाख काम आते है। उनकी पत्नी हमें बहुत मानती है। वह कुछ ची-पटाख करेंगे तो उनके कान खिंचवा दूंगा उनसे। ठीक है न साधना !" अनिल ने कहा।

साधना अनिल की बात सुनकर मुस्कुरा दी। उसके रूप मे निखार आ गया। उसके मन में आशा का संचार हुआ। उसने आशापूर्ण दृष्टि से अनिल की ओर देखकर कहा, "रणधावा साहब चाहे तो बहुत कुछ कर सकते है। उनके हाथ मे जयपुर का संपूर्ण पुलिस-तन्त्र है।"

"करेंगे कैसे नही साधना ! अनिल के पास उनकी चाबी जो है। अनिल अपना काम निकालना खूब जानता है।" अनिल ने कहा।

इस बार साधना की मुक्त हसी छूट गई। वही हंसी जो अनिल ने रेल के डिब्बे मे देखी थी। उसका रूप उभार खाकर बिखरने के लिए आतुर हो उठा। उसके मुरझाए गालों पर सुर्खी दौड़ गई। उसने कहा, "आप बड़ी लच्छेदार बाते करते हैं अनिल !"

"मैं केवल बाते ही नही करता साधना ! मेरे काम भी मजेदार होते है। तुम अनिल को पर्याप्त समझदार आदमी पाओगी। तुमने मुझे पसद करने मे कोई भूल नही की है। ठीक है ना ! अभी तुमने मेरी बाते ही सुनी है। काम देखोगी तो आश्चर्यचकित रह जाओगी।" अनिल ने कहा।

साधना ने मुस्कुरा कर कहा, "मियां मिट्ठू बन रहे है आप। वैसे मेरा मन कह रहा है कि मैने वास्तव मे कोई भूल नही की। यदि की भी है तो उसे निभाने को सर्वदा उद्यत रहूगी। भूल से भयभीत होकर

भागूगी नही।"

अनिल ने साधना के दोनों हाथ अपने हाथों मे लेकर कहा, "भागोगी तो तब, जब मै तुम्हे भागने दूंगा साधना। मेरी इतनी लम्बी साधना व्यर्थ जाने वाली नही है।"

उसी समय एक जीप कोठी के सामने आकर रुकी। जीप से रणधावा साहब नीचे उतरे। अनिल ने बाहर जाकर रणधावा को रिसीव किया और उसे अपने साथ ड्राइङ्गरूम मे लिवा लाया। साधना की ओर संकेत करके कहा, "आपने इन्हे पहले कभी नही देखा होगा।"

"देखा तो वास्तव मे नहीं।" रणधावा ने कहा।

"राव वीरेन्द्र सिह जी की सुपुत्री साधना देवी। दिल्ली विश्वविद्यालय मे एम० ए० फाइनल की छात्रा। परसों जब मै दिल्ली से जयपुर आरहा था तो अनायास ही रेल कम्पार्टमेंट मे आपसे भेट हो गई। हमारा रिजर्वेशन एक ही डिब्बे मे था। आप जानते है मैंने भी एम० ए० दिल्ली विश्वविद्यालय से ही किया है। कल ज्ञात हुआ कि इनकी मम्मी की किसी ने हत्या कर दी। मैं चाहता हूं कि आप उनकी हत्या करने वालों को पकडने मे विशेष दिलचस्पी ले।"

"बहुत ही उलझा हुआ केस है अनिल बाबू! लगभग दो माह पूर्व इनकी मम्मी के दो जवाहिरात के हार चोरी चले गए थे। उनके चोर का भी अभी तक कुछ पता नही चला है। कई जौहरियों के यहां छापे मारे, परन्तु हार बरामद न हुए। अब यह हत्या हो गई। कठिनाई यह है कि राव साहब किसी भी व्यक्ति पर संदेह व्यक्त नहीं कर रहे। वह किसी का नाम ले तो पुलिस हाथ डाले।" रणधावा ने कहा।

"यह काम अब टालमटोल से नहीं चलेगा रणधावा साहब! साधना देवी मेरे विश्वविद्यालय की छात्रा है। आपने इनके काम मे लापरवाही बरती तो मुझे भाभी से आपके कान गर्म कराने होगे, यह ध्यान रखिए।" अनिल ने कहा।

"परमात्मा के लिए यह न कर बैठना अनिल बाबू! हम साधना

क्या यह बात उचित है ?" साधना ने कहा ।

"उचित न होने पर भी जब तक आप मेरे नाम के पीछे लगी 'बाबू' की पूछ को तोड़कर नही फेंक देगी तब तक मुझे यह औपचारिकता बरतनी ही होगी । आप मेरी इस पूछ को काट कर मुझे बन्दर से मनुष्य बना दे तो मैं भी आपको 'आप' न कहकर 'तुम' कहने का साहस करूगा । क्या आप समझती है कि मुझे यह औपचारिकता प्रिय है ? मुझे यह औपचारिकता इस लिए बरतनी पडी कि कहीं आप 'तुम' कहने पर अपना अपमान अनुभव न करने लगे ।"

"आप मेरा अपमान कर पाएगे अनिल, इस बात की मन गवाही नहीं दे रहा । जिस अभागी के लिए आप प्रात: दिल्ली जाकर सध्या को लौट आए, उसका अपमान करेंगे आप ? मैं कल्पना भी नही कर सकती इस बात की । सच पूछे तो आप मुझे जब 'आप' कहते है तो मुझे वह अपना अपमान प्रतीत होता है । मुझे 'आप' शब्द में दूरी नजर आती है ।"

"तुमने मेरे अन्दर ऐसी क्या विशेष बात देखी साधना जो एक ही दिन के परिचय मे तुम मुझे अपने इतना निकट समझने लगी ।" अनिल ने पूछा ।

"मैंने आपके अन्दर मात्र यह देखा अनिल कि आपको देखकर मेरे मन पर जो असहनीय भार रखा हुआ था, वह दूर हो गया । आपको देखने से पूर्व मुझे लग रहा था कि जैसे मैं किसी अथाह सागर मे डूबने वाली हूं । मेरी रक्षा सम्भव नहीं है । आपको देखकर मुझे लगा जैसे समुद्र की लहरो ने मुझे सुरक्षित लाकर किनारे पर खड़ी कर दिया । इस समय मै अनुभव कर रही हूं कि मेरे पैरों के नीचे जमीन है, अथाह सागर नहीं । आपको देखकर मेरे मन की घबराहट काफूर हो गई । आप देख नहीं रहे अनिल कि मैं ठीक से श्वांस ले पा रही हूं, मेरा दम घुट नही रहा ।" साधना ने कहा ।

अनिल ने साधना का हाथ अपने हाथ मे लेकर कहा, "साधना !

तुम्हारे विश्वास को कभी ठेस नहीं लगेगी। भयभीत न होना तनिक भी। तुम्हारी मम्मी के हत्यारे बचकर नही जाने पाएगे।"

दोनो एरोड्रम से बाहर आये तो अनिल ने देखा साधना की गाड़ी सामने खडी थी। उसे देखकर अनिल ने सकपका कर कहा, "तुम अपनी गाड़ी पर आई हो साधना? मैने तुम्हे इस रहस्य को गुप्त रखने को कहा था। तुम्हारे ड्राइवर के द्वारा क्या यह बात अन्य लोगों के कानों तक न पहुचेगी?"

"आप चिन्ता न करें। मानसिंह मम्मी का बहुत विश्वासपात्र ड्राइवर है। मम्मी की हत्या से जो आघात इसे पहुचा है, वह अन्य किसी को नही पहुंचा। कल इसने सारा दिन कुछ नहीं खाया। आज प्रातः मैं बड़ी कठिनाई से इसे खाना खिला पाई थी।" साधना ने बतलाया।

"तुम बहुत समझदार हो साधना।" अनिल ने कहा।

"समझदारी सब तो मिट्टी में मिल गई अनिल! मम्मी की इस प्रकार हत्या कर दी गई और हमे यह भी ज्ञात नहीं है कि हत्या किसने की, क्यों की?" साधना ने कहा।

"मन भारी न करो। हत्यारे बहुत शीघ्र बन्दी बना लिए जायेंगे। पुलिस उन्हे छोड़ेगी नहीं। हत्यारों की मनोकामना पूर्ण न होगी। खेद यही है कि मम्मी को लौटाकर नहीं लाया जा सकता। वह हमे छोड़कर चली गई।" यह कहते हुए साधना ने देखा अनिल का कण्ठ अवरुद्ध हो गया था।

"क्या आपको विश्वास है कि पुलिस हत्यारों की खोज मे सफल हो जाएगी?"

"विश्वास न होता तो क्या मै तुम्हारा मन रखने के लिए यह बात कहता साधना? हत्यारे निश्चित रूप से पकड़े जाएंगे और उन्हे उनके कुकर्म का फल मिलेगा। इस काम मे विलम्ब न होगा।" अनिल ने कहा। उसके कथन में साधना ने निश्चयात्मकता की ध्वनि पाई।

अनिल और साधना गाड़ी मे बैठ गए। अनिल ने ड्राइवर को वह

स्थान बतलाया जहां उसे जाना था। गाड़ी चल पड़ी।

"कल जयपुर-मार्केट से आपको कुछ जवाहिरात प्राप्त हुए?" साधना ने पूछा।

"मिले तो है कुछ साधना! परन्तु अभी उनकी मुझे अपने पारखी से परख करानी है।" अनिल ने कहा।

"आप दिल्ली मे रहते कहां है अनिल?" साधना ने पूछा।

"अशोका होटल में।" अनिल ने सरल स्वभाव से कह दिया।

साधना मुस्कुरा दी अनिल की बात सुनकर। उसने कहा, "होटल तो यात्रियों के चन्द दिन ठहरने का स्थान होता है अनिल! होटल में क्या नियमित रूप से रहा जाता है? कही मकान भी तो होगा आपका।"

"मै भी तो अभी यात्री ही हूं। यात्रा कर रहा हूं। मकान बनाने की अभी स्थिति ही कहा आई है जीवन मे। अकेले आदमी का क्या मकान?" अनिल ने कहा।

गाडी अनिल के निर्दिष्ट स्थान पर पहुंची तो उसने ड्राइवर को एक कोठी के सामने गाडी खडी करने को कहा और ड्राइवर ने गाड़ी रोक दी।

"आओ साधना!" अनिल ने एक ओर का द्वार खोल कर बाहर निकलते हुए कहा और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसे सावधानी से नीचे उतारा। दोनों गाड़ी से उतर कर कोठी के ड्राइङ्गरूम में गए। अनिल ने साधना को सोफे पर बिठाया।

साधना ने पूछा, "क्या आप यहां अकेले ही रहते हो अनिल?"

"अब मै अकेला कैसे हूं साधना? क्या हम तुम दो नहीं है?"

"नही वैसे, मैंने पूछा।" साधना ने कहा।

"यह मेरी नही, मेरे एक मित्र की कोठी है। वह अपने बाल-बच्चों के साथ सैर-सपाटे के लिए गया हुआ है। मैं जयपुर आकर यहीं ठहर जाता हूं।" यह कहकर अनिल ने पुकारा, "रामदीन! महाराज को बोलो चाय बनाकर लाए। हमारी अटैची में कुछ नाश्ते का सामान है,

उसे निकाल कर प्लेट में लगा दे।"

कुछ ही देर पश्चात चाय मेज पर आ गई। साधना ने चाय बना कर एक प्याला अनिल के सामने रखा और एक अपने सामने। फिर बोली, "अनिल! मैंने सुना है कि ये जौहरी लोग चोरी का माल भी बेचते है?"

"यह काम मात्र जौहरी ही नही करते साधना! न्यूनाधिक सभी लोग करते है। मैं जब अपने किसी ग्राहक को कोई चीज देता हूं तो इस बात का विशेष ध्यान रखता हूं कि वह चोरी की न हो, परन्तु तुमने यह बात क्यों पूछी?" अनिल ने पूछा।

"ऐसे ही बस।" साधना ने बात स्पष्ट न की।

अनिल ने कहा, "जो बात मन मे आई है, उसे कह डालो साधना! मन में आई बात स्पष्ट न करने पर मन का भार मन में बना रहता है।"

साधना ने बतलाया, "एक मास पूर्व मम्मी के हार चोरी चले गए थे। डैडी ने उनकी पुलिस में रिपोर्ट भी कराई थी, परन्तु अभी तक उनका कही खोज नही मिला। मैंने सोचा, क्योंकि आप जवाहिरात का काम करते है, इसलिए सम्भव है कही आप की दृष्टि उन पर पड जाए। क्या यह सम्भव नहीं है?"

"सम्भव क्यो नही है साधना! तुम इतनी महत्वपूर्ण बात को छिपाए ले रही थी। यह तुमने बहुत उपयोगी बात बतलाई। सम्भव है उन हारों की चोरी से तुम्हारी मम्मी की हत्या का कुछ सम्बन्ध हो। तुम्हारी मम्मी के वे हार कितने मूल्य के होंगे?" अनिल ने पूछा।

"वे हार ग्यारह लाख के हैं अनिल! एक चार लाख का और दूसरा सात लाख का। चार लाख का हार मम्मी के पीहर का था और सात लाख का हार उन्हे बड़ी अम्मा ने चढाया था।" साधना ने बतलाया।

"साधना! क्या तुम्हारे पास उन हारों का कोई फोटोग्राफ नहीं

साधना प्रसन्न होकर बोली, "महाराज ! आप बहुत अच्छा खाना बनाते है। सभी चीजे बहुत अच्छी बनी है। इतना अच्छा खाना हमने पहले कभी नही खाया।"

"ये सब बाबू जी की पसन्द की चीजें हैं। मैंने सोचा, जब ये चीजें इन्हे पसन्द है तो आपको भी अवश्य पसन्द आएंगी।" महाराज ने कहा।

"हमे ये सब चीजे बहुत पसन्द आई महाराज ! जब ये सब तुम्हारे बाबू जी को पसन्द हैं तो हमें पसन्द क्यों न आतीं ?" साधना ने कहा।

महाराज प्रसन्न होकर बोला, "आप बड़े घर की बेटी है ना ! बाबूजी डर रहे थे कि कही कोई चीज आपको पसन्द न आए और बाबूजी का रिश्ता पक्का न हो। बाबू जी ने सब चीजे चख-चख कर देख ली है आपके आने से पहले। किसी चीज में कोई कमी नहीं लगी इन्हे ?"

"नही-नहीं महाराज ! तुम्हारे बाबू व्यर्थ डर रहे थे। हमारे यहाँ ऐसा बढिया खाना कहाँ बनता है ? रिश्ता पक्का ही समझो तुम।" साधना ने कहा।

महाराज प्रसन्न होकर अन्दर चला गया। दोनों ने भोजन किया और उसके पश्चात ड्राइङ्गरूम मे आगए। अनिल ने पूछा, "कल तुम अपनी कोठी पर देर से पहुंची तो किसी ने कुछ पूछा तो नही साधना ? किसी को कोई संदेह तो नहीं हुआ।"

"कुछ विशेष नही। चचा भवानीसिह ने इतना अवश्य कहा था, 'साधना ! इतनी देर तक बाहर न रहा करो। साढ़े नौ बज रहे है। मैंने कह दिया, सहेली के यहाँ कुछ देर हो गई। उठने ही नही दिया कम्बख्त ने !"

"तुम्हारे चचा भवानीसिंह तो फार्म पर रहते है ना ! अभी तक गए नहीं वह वहाँ ?" अनिल ने पूछा।

"डैडी की तबियत ठीक नही है। चाचाजी को उन्होंने अपने पास रोक लिया है। क्या आप डैडी से भेंट करेंगे अनिल ?" साधना ने पूछा।

"अभी उनसे मिलने से कोई लाभ न होगा साधना ! जब वह पुलिस को ही कुछ नही बतला रहे तो मुझे क्या बतलाएंगे ? तुम हारों वाला फोटोग्राफ लाई ?"

साधना ने पोर्टफोलियो से दो फोटोग्राफ निकाल कर अनिल को दिखाए । अनिल ने उन्हे ध्यानपूर्वक देखा । फिर पूछा, "क्या तुम इन्हे मेरे पास छोड सकती हो साधना ?"

"आपके लिए तो मै इन्हे लाई ही हूं अनिल ! ये मम्मी के शादी के समय के फोटोग्राफ है । उनके विशेष एलबम से निकाल कर लाई हूं ।" साधना ने बतलाया ।

"मेरे पास एक विदेशी व्यापारी आया है । वह कुछ कीमती हारो का ग्राहक है । उसी के लिए मै उस दिन जयपुर आया था । इससे पूर्व भोपाल भी गया था । दिल्ली के व्यापारियों के पास भी जो हार उपलब्ध है, वे मैने उसे दिखाने के लिए मंगाए है । बहुत मुमकिन है उन हारों में कोई व्यापारी तुम्हारी मम्मी के हार भी ले आए ।" अनिल ने कहा ।

अनिल फोटोग्राफ को बहुत ध्यान से देख रहा था ।

साधना ने पूछा, "आप इतने ध्यान से इन चित्रों में क्या देख रहे है ?"

साधना की बात सुनकर अनिल ने उसकी ओर देखा । फिर कहा, "साधना ! तुम्हारी मम्मी का यह चित्र ठीक उसी आयु का प्रतीत होता है, जिसमे इस समय तुम चल रही हो । यदि तुम्हे ये ही वस्त्राभूषण पिन्हा कर तुम्हारा फोटोग्राफ ले लिया जाए तो उस चित्रण में और इस चित्र मे अन्तर खोजना कठिन हो जाएगा ।"

अनिल की बात सुनकर साधना की आँखे डबडबा आईं । उसने अपना सिर अनिल की छाती से लगा दिया । अनिल ने रूमाल से साधना की आँखे पोछ दीं ।

साधना ने कहा, "आपने ठीक कहा अनिल ! मेरी शक्ल मम्मी की

शक्ल से बहुत मिलती है। कल रात्रि में मैं घंटों शीशे के सामने खडी होकर मम्मी की स्मृति मे अश्रु ढुलकाती रही।"

"तुम दिल्ली कब जाओगी साधना ?" अनिल ने पूछा।

"मन तो नहीं हो रहा दिल्ली जाने का, परन्तु डैडी कह रहें है कि मुझे जाना चाहिए। न जाने पर दो वर्ष की पढाई की हानि हो जाएगी। चाचा जी का भी यही मत है। ऐसी स्थिति मे मै पहली जनवरी को जाने का विचार कर रही हूं।" साधना ने बतलाया।

अनिल मौन बना कुछ सोचता रहा।

"आप सोचते बहुत है अनिल ? जब मै कोई बात कहती हूं तो आप कुछ सोचने लगते है।" साधना ने कहा।

अनिल मुस्कुरा दिया साधना की बात सुनकर। बोला, ""नही साधना ? ऐसी कोई विशेष बात नही है। मै यही सोचने लगता हूं कि परमात्मा ने तुम्हें किस आपत्ति में फंसा दिया। परन्तु सब ठीक हो जाएगा। कल रात्रि में जब तुम यहाँ से चली गई तो मैं रणधावा साहब के पास गया था। वह हत्यारों की खोज मे जुटे है।"

जब ये बाते चल रही थी तभी चपरासी ने सूचना दी, "सानियाल साहब आए है।"

"सानियाल साहब कौन है ?" साधना ने पूछा।

"सानियाल साहब जयपुर की पुलिस के गुप्तचर विभाग के डी० एस० पी० है। कल रणधावा साहब से मिलकर मैं इनके पास होता हुआ आया था।" यह कहकर अनिल ड्राइङ्गरूम से बाहर गया। कुछ देर बाहर खडा रहकर उससे कुछ बाते कीं और फिर उसे अपने साथ लेकर अन्दर आया। उसने महाराज को बुलाकर चाय लाने को कहा और साधना का उसे परिचय देते हुए कहा, "राव साहब की सुपुत्री साधना देवी से मिलिए सानयाल साहब ! आप दिल्ली विश्वविद्यालय मे एम० ए० फाइनल की छात्रा है।"

सानयाल ने खड़ा होकर साधना को नमस्कार किया। साधना ने

भी खड़ी होकर सानयाल को नमस्कार किया। उसके पश्चात सानयाल ने कहा, "कल आप इन्ही के विषय में बातें कर रहे थे ना! मैं इस समय राव साहब के ही पास से आ रहा हूं। उनके भाई भवानीसिह भी वहीं थे। समझ मे नही आ रहा कि राव साहब को क्या हो गया है। न वह किसी का नाम लेते है और न किसी प्रश्न का स्पष्ट उत्तर देते है। ऐसी स्थिति मे हम क्या करे? मुद्दई सुस्त और गवाह चुस्त वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।"

"क्या भवानीसिंह जी भी किसी पर सदेह व्यक्त नहीं कर रहे?" अनिल ने पूछा।

"भवानीसिंह ने तीन-चार व्यक्तियों के नाम लिखाए थे। हमने उन लोगों से पूछताछ की, परन्तु वे मतलब। इस प्रकार के काम ऐसे व्यक्ति नहीं कर सकते जैसे व्यक्तियों के उन्होंने नाम लिखाए है।" सानियाल ने कहा।

"आपने राव साहब के उन चचाजाद भाइयों के विषय मे नहीं पूछा जिनका हाथ उनके पिताजी की हत्या मे था। वे जेल से बाहर आ चुके है। मेरे विचार से इस हत्या मे उनका हाथ होना सम्भव है।" अनिल ने कहा।

"मैं स्वयं भी इसी दिशा मे सोच रहा हूं अनिल बाबू! परन्तु वे अकेले यह काम करने का साहस नहीं कर सकते। मैने परसों उदयपुर फोन करके उनके विषय में जानकारी प्राप्त की थी। कल मुझे सूचना मिली है कि वे उदपुर मे नही है। वे वहाँ से कहीं बाहर गए हुए है। अभी यह ज्ञात नहीं हो पाया कि वे कहाँ हैं।" सानियाल ने बतलाया।

"उदयपुर मे क्या है उनका? क्या वे उदयपुर में रहते है?" अनिल ने पूछा।

"हम लोग उदयपुर के ही मूल निवासी है अनिल!" साधना ने बतलाया।

"अच्छा-अच्छा, यह बात है। तो वे अपने घर पर नही है।"

जी के काम मे तनिक भी लापरवाही नही बरतेगे। हमने अपनी कठि-नाई बतलाई है आपको। वैसे हम हत्यारों की खोज में पूरी तरह संलग्न है। आप अपनी भाभी को मेरे पीछे न लगा देना, वरना हमारा घर मे जाना भी हराम हो जाएगा।" रणधावा ने कहा।

"अब आपको इस काम मे जुट जाना है रणधावा साहब! अभी हम भाभी जी से कुछ नहीं कहेगे, परन्तु यदि आपने काम मे ढील की तो हमे साधना देवी के काम के लिए भाभी जी की शरण लेनी होगी। हमने इन्हे वचन दे दिया है कि रणधावा साहब इनकी मम्मी के हत्यारों को बहुत शीघ्र पकड़ लेगे।" अनिल ने कहा।

"साधना देवी निश्चिन्त रहे। इनकी मम्मी के हत्यारों की खोज मे ढील नही बरती जाएगी। हमने राव साहब की कोठी के चारों ओर अपने गुप्तचरों का जाल विछा दिया है। राव साहब के फार्म और पत्थरों के खदाने की भी निगरानी की जा रही है।" रणधावा ने सूचना दी।

अनिल ने साधना से कहा, "लीजिए साधना देवी! हमने रणधावा साहब से सब कुछ खोलकर कह दिया है। अब आप चिन्ता न करे। यदि इन्होने काम मे ढील की तो इनकी चाबी हमारे पास है।"

"उस चाबी का प्रयोग करने की आवश्यकता न होगी आपको अनिल बाबू! परन्तु आपने अभी तक अपनी भाभी की अंगूठी का हीरा उनके पास नही पहुंचाया है। याद है ना आपको? वह कई बार पूछ चुकी है। कही ऐसा न हो कि आप उनके पास जाएं हमारे कान खिचवाने और वहा आपके कानों की शामत आजाए।" रणधावा ने कहा।

अनिल अपने कानो पर हाथ रख कर बोला, "हीरा हम एक की जगह दो भिजवा देगे रणधावा साहब, परन्तु अपने कानो पर आँच नहीं आने देगे। ये कान अब किसी दूसरे की अमानत बन चुके है।"

रणधावा मुस्कुराकर बोला, "लगता है आपके कानों पर साधना देवी ने अधिकार कर लिया है अनिल बाबू! ठीक है ना यह बात?"

"अनुमान ठीक भी हो सकता है आपका, परन्तु यदि ऐसा हुआ तो

साधना देवी इन कानो पर वह अत्याचार नहीं करेगी जो भाभी आपके कानों पर करती है। अधिकार का दुरुपयोग करने की मैं इनसे आशा नहीं रखता। क्यों साधनाजी ? अपने विश्वविद्यालय की छात्रा होने के नाते, मुझे यह आशा तो आपसे रखनी ही चाहिए ना !" अनिल ने कहा।

साधना अनिल और रणधावा के उपहास मे आनन्द ले रही थी। उसका दिल गुदगुदा रहा था। अब उसके मन मे विश्वास हो गया था कि अनिल हत्यारों को पकड़वाने मे सफल होगा।

रणधावा के जाने पर अनिल ने साधना से कहा, "लो साधना ! तुम्हारा यह काम हमने कर दिया। तुम विश्वास रखो कि रणधावा साहब हत्यारों को बहुत शीघ्र पकड लेंगे। तुम्हारी मम्मी के जो हार चोरी गए है, उन्हे भी मैं शीघ्र खोज निकालने का प्रयास करूंगा।"

साधना खड़ी होकर बोली, "अब आज्ञा दो अनिल ! मुझे चलना चाहिए। देर होने के कारण डैडी चिंतित होंगे।"

"कल किस समय आओगी साधना ?" अनिल ने पूछा।

"लगभग बारह बजे तक।" साधना ने कहा।

"भोजन यही करना।" अनिल ने कहा।

"जैसा आप कहे।" कहकर साधना उठ खड़ी हुई।

अनिल साधना को बाहर गाडी में बिठा कर आया।

दूसरे दिन प्रातः अनिल ने महाराज से कहा, "महाराज ! आज बहुत बढ़िया खाना बनाना है। जिस चीज की आवश्यकता हो बाजार से जाकर ले आओ। कुछ अच्छे-अच्छे फल भी ले आना। सेव, अगूर जो

भी मिल ।" यह कहकर उसने एक सौ रुपए का नोट उसे दिया।

महाराज हंसकर बोला, "इतने रुपयों का क्या होगा बाबू ? "

"जितने लगें, लगा लेना और जो कुछ तुम्हें अच्छे-से-अच्छा बनाना आता हो, बना लेना। कोई कमी न रहे किसी चीज में ।" अनिल बोला ।

"कौन-कौन आ रहे है बाबू ? कितने आदमियों का भोजन होगा ?" महाराज ने पूछा ।

"वह जो कल आई थीं ना ! बहुत बडे घर की लड़की है । बस वही आएंगी । ऐसा खाना बनाना कि वह यह न कहे कि हमारे महाराज को खाना नही बनाना आता । समझ गए ना !"

महाराज मुस्कुराता हुआ चला गया । अपनी आवश्यकता का सामान बाजार से लाकर उसने अपना कार्य आरम्भ कर दिया ।

अनिल महाराज को कई बार खाना बनाते समय देखने रसोई-घर मे गया । उसकी उत्सुकता देखकर महाराज ने पूछा, "बात पक्की हो गई बाबू जी ?"

"पक्की ही समझो महाराज ! तुम बढ़िया खाना बनाओगे तो बिलकुल पक्की हो जाएगी । सोचेगी कि इतना अच्छा खाना बनाने वाला महाराज अन्यत्र कहा मिलेगा ?"

सवा ग्यारह बजे तक महाराज ने खाना बना कर तैयार कर लिया। उसने खाना बनाने मे अपने सम्पूर्ण कौशल का प्रयोग किया । दस-बारह सब्जियां, तीन चार प्रकार के रायते, मीठी और नमकी सोंठ । चार-पांच मिठाइयां बाजार से ले आया था। उसके साथ कुछ नमकीन । मखानों की खीर और भी जाने क्या-क्या बनाया ? केवल पूडियां उतारनी शेष रह गईं । उसने अनिल को सूचित किया, "बाबू ! सब कुछ तैयार है । पूडियां उनके आने पर उतारूंगा, जिससे ठण्डी न हों ।"

"ऐसा करो महाराज ! तुमने जो कुछ बनाया है उसमें से जरा-जरा सा एक प्लेट पर रख लाओ । मैं उनका नमक, मिर्च, मसाला देख लेता हू। कोई आइटम ठीक न हुआ तो उसे मेज पर न लाना। समझ गए

ना !" अनिल ने कहा ।

महाराज एक बड़ी प्लेट पर सब चीजे जरा-जरा सी ले आया । अनिल ने सब को चख कर देखा । सभी स्वादिष्ट बनी थी । बोला, "महाराज ! सब ठीक है । अब बात पक्की होने मे जरा देर न लगेगी । उनकी यही सबसे बड़ी शर्त थी कि हमारे महाराज को खाना बहुत अच्छा बनाना आना चाहिए । वह काम तुमने कर दिया । बाकी सब मैं देख लूंगा ।"

महाराज मुस्कराता हुआ अन्दर चला गया ।

ठीक बारह बजे साधना की गाड़ी अनिल की कोठी के सामने आकर रुकी । साधना कार से उतरी । अनिल ने उसे रिसीव किया और अन्दर लिवाकर लाया । दोनों सोफों पर बैठ गए । अनिल बोला, "तुम ठीक समय पर आईं साधना ! हमारा महाराज अभी-अभी तुम्हारे विषय मे पूछ रहा था ।"

तभी महाराज ने वहा आकर पूछा, "खाना लगादूं बाबू ?"

"लगा दो महाराज ! साधना जी को भूख लगी होगी । जल्दी करो ।" अनिल ने कहा ।

महाराज ने अन्दर जाकर टेबिल पर खाना लगाया और फिर अनिल को आकर सूचना दी । अनिल और साधना डाइनिंगरूम मे गए । साधना की दृष्टि टेबिल पर गई तो वह बोली, "यह सब आपने क्या किया अनिल ? इतना सब कौन खाएगा ? इतने खाने का क्या होगा ?"

अनिल बोला, "तुमने ही तो कहा था साधना जी कि यदि तुम्हें हमारे महाराज का खाना पसन्द आजाएगा तो हमारी बात पक्की हो जाएगी । ये तो बहुत कम चीजे बनाई हैं हमारे महाराज ने । बनाना तो यह और भी जाने क्या-क्या जानते है । जरा खाकर देखना हमारे महाराज कितना स्वादिष्ट भोजन बनाते है ।"

साधना और अनिल भोजन करने लगे । महाराज ने साधना के सामने हाथ जोड़ कर पूछा, "कोई कमी तो नही रही बबुवाइनजी ?"

कहकर अनिल गम्भीर हो गया। उसने कहा, "उनकी खोज करना आवश्यक है सानियाल साहब ! सम्भव है वे इन दिनों जयपुर आए हुए हों। उनका वहाँ न होना आपके संदेह की पुष्टि करता है।" अनिल ने कहा।

महाराज ने मेज पर चाय-नाश्ता लगा दिया। तीनों चाय पीने लगे। उसी समय फोन की घंटी बजी। अनिल ने रिसीवर उठाकर बात की और कहा, 'सानियाल साहब मेरे पास है।'

सानियाल ने पूछा, "किसका फोन था ?"

"रणधावा साहब का। आप यहाँ से सीधे उनके पास चले जायें। उन्होंने किसी आवश्यक कार्य के लिए आपको याद किया है।" अनिल ने कहा।

चाय लेकर सानियाल उठ खड़ा हुआ। अनिल उसके साथ बाहर तक गया। बाहर जाकर अनिल ने कहा, "हमारा अनुमान ठीक निकला सानियाल साहब ! आपने जिन लोगों के लिए उदयपुर फोन किया था, वे जयपुर मे हैं। एक गुप्तचर ने अभी-अभी यह सूचना रणधावा साहब को दी है। आप उनका पता-ठिकाना ज्ञात करले। मैं भी एक बार उन्हे एक नजर से देख लेना चाहता हूं।"

"सच अनिल बाबू ! समरसिंह और वीरसिंह जयपुर में है ! तब तो निश्चित रूप से इस हत्या मे उनका हाथ है।" सानियाल ने कहा।

"अभी इन लोगों पर हाथ डालने की आवश्यकता नही है। यह काम ये दोनों बिना किसी ऐसे व्यक्ति की सहायता के नही कर सकते जो राव साहब का विश्वस्थ व्यक्ति है। इनकी गतिविधियो पर गुप्त रूप से दृष्टि रखनी होगी। तभी असल हत्यारे का पता चलेगा।" अनिल ने कहा।

"मैं समझ रहा हूं अनिल बाबू !" कहकर सानियाल अपनी जीप पर जा बैठा। जीप चली गई और अनिल अपने ड्राइङ्ग रूम मे वापस लौट आया।

साधना ने कृतज्ञतापूर्ण स्वर में कहा, "अनिल ! आप मेरे लिए कितना कष्ट सहन कर रहे है। अपने सब कामों को तिलांजलि देकर आप मेरे काम में संलग्न

अनिल मुस्करा दिया साधना की बात सुनकर। बोला, "मैंने यही तो कहा था साधनाजी कि तुम्हे प्राप्त करना सरल कार्य नही है। तुम्हें प्राप्त करने वाले को पर्याप्त साधना करनी होगी। परन्तु इस साधना मे मुझे कोई कष्ट नहीं हो रहा, तुम सच जानो। स्वेच्छा से किए गए काम में कष्ट कैसा ? तुमने बाध्य तो नहीं किया मुझे यह सब करने के लिए। वास्तविकता यह हैं साधना कि मुझे इस प्रकार के काम करने में आनन्द आता है और पूर्ण आनन्द उस दिन प्राप्त होगा जिस दिन मैं मम्मी के हत्यारों को पुलिस के हवाले करा दूंगा।" अनिल ने कहा।

साधना अनिल के निकट होकर बोली, "आप कितने अच्छे हैं अनिल ! इस सकट की घड़ी मे यदि मुझे आपका सहारा प्राप्त न होता तो ज्ञात नहीं मेरी क्या दशा होती। उस दिन कोठी पर आकर जब मैंने मम्मी का शव आगन मे रखा देखा था तो मैं उसे देखते ही अचेत होकर गिर गई थी। मुझे सुधि न रही थी अपनी। मेरी आँखों के समक्ष अधकार छा गया था। उस समय मेरी कुछ भी समझ मे न आ रहा था कि अब क्या होगा।"

अनिल ने गम्भीर वाणी में कहा, "साधना ! संकट-काल में ही मनुष्य के धैर्य की परीक्षा होती है। भयभीत न होना तनिक भी। तुम्हारी कमर के पीछे अनिल का फौलादी हाथ है। हत्यारों को अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता प्राप्त न होगी। वे निश्चित रूप से बहुत शीघ्र पकड़ लिए जाएंगे।"

साधना ने पूछा, "हत्यारों का लक्ष्य क्या हो सकता है अनिल ?"

"उनका लक्ष्य क्या है, इस विषय मे मैं अभी कुछ नही बतला सकता साधना ! सम्भव है मैं बहुत शीघ्र निष्कर्ष पर पहुंच जाऊं। तुम चिन्ता न करो किसी बात की।" अनिल ने कहा।

साधना ने घड़ी देखकर कहा, "अब आज्ञा लूगी अनिल ! पर्याप्त समय हो गया ।"

"कैसे कहूं साधना ! मन तो करता नही कि तुम यहाँ से जाओ, परन्तु अधिकार भी क्या है तुम्हे रोकने का ?" अनिल ने कहा ।

"अधिकार की क्या बात कही आपने अनिल ! वह तो आपने उतना बना लिया है जितना कोई बनाने का साहस भी न कर पाता, परन्तु विवश हूं मैं इस समय । यह आप भी जानते है कि मुझे जाना ही होगा ।"

अनिल गद्-गद् हो गया साधना की बात सुनकर। उसने पूछा, "कल किस समय आओगी साधना ?"

"जिस समय आप कहे ।" साधना ने कहा ।

"दो बजे के लगभग ठीक रहेगा ना ? तब तक मैं यहाँ लौट आऊंगा। कल प्रात: किसी काम से जाना है मुझे। उस काम मे बारह बजने संभव है ।" अनिल ने कहा ।

"जो आज्ञा ।" साधना ने खडी होकर कहा ।

"आज्ञा नही साधना, अनुरोध ।" अनिल ने कहा ।

साधना रोमांचित हो उठी । वह अनिल की शालीनता और प्रखर बुद्धि-बल पर मुग्ध थी । अनिल का व्यवहार कितना शिष्ट था उसके प्रति। उसने मधुर दृष्टि से अनिल की ओर देखकर कहा, "अनिल ! आपके शब्द-शब्द में साहित्य की पुट और वीणा की झंकार है । कितनी सरस और भावपूर्ण बाते करते है आप। मन मुग्ध हो जाता है आपकी बातें सुनकर । जी चाहता है सुनती ही रहूं आपकी बातें ।"

अनिल साधना के साथ बाहर उसकी कार तक गया। साधना कार में जा बैठी । उसने कहा, "कल ठीक दो बजे ।"

"बाई बाई ।" अनिल ने कहा ।

साध्ना की गाडी चली गई । अनिल अन्दर आया तो महाराज ने निकट आकर पूछा, "बात पक्की हो गई बाबू !" वह बहुत प्रसन्न था।

यह प्रश्न करता हुआ।

"बिलकुल पक्की महाराज ! तुम्हारे भोजन की वह बहुत प्रशसा कर रही थी। कह रही थी कि इतना स्वाष्टि भोजन उन्होंने पहले कभी नहीं खाया। फिर बतलाओ, इतना अच्छा भोजन करके भी बात पक्की करके न जातीं।"

महाराज की आत्मा प्रसन्न हो गई। वह नाचता हुआ रसोई की ओर चला गया।

अनिल भी बहुत प्रसन्न था। वह एक गीत गुनगुनाता हुआ सोफे पर लेट गया और कितनी ही देत तक गुनगुनाता रहा। फिर अचानक उसे जाने क्या याद आया और वह कपड़े बदल कर महाराज से बोला, "हम कुछ काम से जा रहे हैं। ग्यारह बजे तक लौटेगे।" कहकर कोठी से बाहर निकल गया।

राव साहब पर अपनी पत्नी के आकसमिक निधन का गम्भीर प्रभाव हुआ था। वह विक्षिप्त से हो गये थे। तीन दिन से उन्होंने कुछ खाया-पिया नहीं था। उनकी किसी से भी बातें करने मे कोई रुचि नही रही थी। इस बीच साधना ने बहुत आग्रह करके उन्हे एक दो बार चाय अवश्य पिला दी थी।

भवानीसिंह ने उन्हें लाख धीरज बंधाने का प्रयास किया, परन्तु सब व्यर्थ। उनके मन को किसी भी प्रकार शान्ति प्राप्त न हो पाई। उनकी पुतलियों में हर समय अपनी पत्नी की आकृति झूलती रहती। वह उसी के ध्यान मे निमग्न अपने पलंग पर लेटे रहते। उस समय कोई भी

वहाँ जाकर उनका ध्यान भंग करता तो उन्हें उससे कष्ट होता। एकान्त उन्हे प्रिय हो गया था।

साधना अनिल के पास से लौटी तो भवानीसिंह बाहर बराड़े मे घूम रहा था। साधना को आती देख, वह वही ठहर गया। उसे साधना का इस प्रकार घूमना पसंद न था। उसने कहा, "साधना!"

"जी चाचा जी!" साधना ने निकट आकर कहा।

"साधना, हद कर दी तुमने। भय्या ने सुबह से एक प्याला चाय तक नहीं ली और तुम इस प्रकार घूमती फिर रही हो। आओ, भय्या के पास चलो। वह कुछ खाएं-पिएंगे नही तो क्या होगा? तुमने देखा नही, वह कितने दुर्बल हो गए है।" भवानीसिंह ने कहा।

साधना भवानीसिंह की बात का कोई उत्तर न देकर उसके साथ अन्दर राव साहब के कमरे मे गई और उनके पलग की पट्टी पर जा कर बैठ गई।

भवानीसिंह ने कहा, "भय्या! इस प्रकार कैसे होगा? आप कुछ खाएं-पिएंगे नहीं तो मेरा और साधना का क्या होगा? भाभी का साया हमारे सिर से उठ गया। क्या आप भी हमे अनाथ कर देना चाहते है?"

राव साहब ने निराश दृष्टि से साधना और भवानीसिंह कि ओर देखा। उन्होने देखा साधना की आंखें डबडबाई हुई थी और भवानी सिंह की आँखो से आँसुओं की झड़ी लगी थी।

साधना बोली, "चाचा जी ठीक कह रहे हैं डडी! आप हमारी ओर देखिए। हमें तो अब आपका ही सहारा है। एक कप चाय बना लाऊं आपके लिए? चाय लेकर आपका मन कुछ ठीक होगा।"

राव साहब ने कुछ साहस बटोरने का प्रयास किया। वह बोले, "बना लाओ बेटी।" और यह कहकर फिर आंखे बन्द कर ली।

साधना चाय बनाने चली गई।

राव साहब आँखें बन्द किए हुए ही बोले, "भवानीसिंह! तुम्हारी भाभी हमे छोड़कर चली गई। वह अब लौटकर नहीं आएंगी। उनके

हत्यारों को यदि फासी भी हो गई तो उससे क्या होगा ? रणधावा साहब कहते है, मै किसी का नाम लू । तुम ही बतलाओ, मैं किसका नाम लू । मैंने हत्यारो को देखा था, परन्तु मैं पहचान नही सकता उन्हे उन्होंने अपने मुह छिपाए हुए थे ।"

भवानीसिंह बोला, "भय्या ! दिल में बस यही मलाल रह गया कि उस समय मैं यहाँ नही था । मैं यहा होता तो उन गुण्डों को कच्चा ही चबा जाता । पुलिस लगी हुई है उनकी खोज मे । वह उन्हे अवश्य खोज निकालेगी । भाभी की आत्मा की शान्ति के लिए हत्यारों का पकडा जाना आवश्यक है ।"

राव साहब ने कहा, "भवानीसिंह ! हमने अपने पिता जी के हत्यारो को दण्डित कराया था, परन्तु अब हममें वह साहस नही रहा । तुम जो उचित समझो करो । हमें लगता है, हम अब अधिक दिन जीवित नही रह पाएंगे । कम्बख्त हत्यारों ने हमारा दिल मसोस कर रख दिया ।"

साधना एक कप चाय और दो टोस्ट मक्खन लगाकर ले आई । भवानीसिंह ने राव साहब को सहारा देकर पलग पर बिठाया । साधना ने उन्हें आग्रह करके दो टोस्ट खिला दिए और वह फिर पलग पर लेट गए । फिर तकिए का सहारा लेकर उन्होंने साधना की ओर देखा । बोले, "साधना बेटी ! ज्ञात नहीं वे कौन पापी थे जो तुम्हारी मम्मी को हमसे छीन कर ले गए । उनकी हत्या करके, मेरी समझ में नही आ रहा, उन्हे क्या मिला ? तुम्हारी मम्मी ने उनकी क्या हानि की थी ? उस देवी पर गोलियां चलाने के लिए ज्ञात नहीं उनके हाथ कैसे उठे ? उन कम्बख्तों के वे हाथ गल जाएगे साधना बेटी, जिन्होंने उन पर गोलिया चलाईं ।"

"अवश्य गल जाएंगे भय्या ! भाभी जैसी सती साध्वी देवी पर गोली चलाकर उनकी हत्या करने वाले नीचों को नर्क में भी स्थान नहीं मिलेगा । वे तिल-तिल होकर गलेंगे । उनके बदन में कीड़े पड़ेंगे । भग-

वान उन्हें उनकी करनी का दण्ड अवश्य देगा।" भवानीसिंह ने कहा।

जब भवानीसिंह यह बात कह रहा था तभी पुलिस की जीप ने कोठी में प्रवेश किया और वह पोर्टिगो में आकर रुकी। जीप से रणधावा को उतरता देखकर भवानीसिंह बाहर गया और उसे अंदर लिवाकर लाया। रणधावा को देखकर राव साहब पलंग से उठने लगे तो उसने कहा, "आप लेटे रहिए राव साहब! मैं इधर बैठ रहा हूं। आपको कष्ट करने की आवश्यकता नही हैं।" यह कहकर वह एक सोफे पर बैठ गया।

साधना उठकर बाहर चली गई और कुछ देर पश्चात एक प्लेट में कुछ नाश्ता तथा एक कप चाय लेकर अन्दर आई। भवानीसिंह ने मेज रणधावा के सामने सरका दी और साधना ने उस पर चाय नाश्ता रख दिया।

रणधावा ने राव साहब की ओर देखकर कहा, "आपने अपनी यह क्या दशा बनाली राव साहब? इतने साहसी होकर भी यह क्या कर रहे है आप? अपने से शत्रुता रखने वाले व्यक्तियों पर दृष्टि डालकर देखिए, आपको समझने में विलम्ल न होगा कि आपकी पत्नी की हत्या किसने की। यह कार्य किसी डकैत अथवा लुटेरे का किया हुआ नहीं है। क्या वास्तव में आपको किसी भी व्यक्ति पर तनिक भी संदेह नहीं है? विचित्र बात है।"

राव साहब बोले, "यदि मुझे किसी व्यक्ति पर सदेह होता तो क्या मैं अभी तक मौन रह सकता था रणधावा साहब? साधना की मम्मी के हत्यारे को मैं सहन करता? मैं उसके अपने हाथ से दो टुकड़े कर डालता, परन्तु व्यर्थ किसी पर संदेह करके किसी निरपराध व्यक्ति को फंसा देना मेरे स्वभाव के विरुद्ध बात है। मैं सत्य कह रहा हूं आपसे कि मेरा किसी ऐसे व्यक्ति पर संदेह नहीं है जो यह जघन्य अपराध कर सकता है। मेरी बुद्धि ही काम नही दे रही कि मैं आपको बता सकू कि

यह कार्य कौन कर सकता है ।"

रणधावा ने भवानीसिंह से कहा, "भवानीसिंह ! तुमने जिन लोगों के नाम हमें लिखाए थे उनसे हमने पूछ-ताछ करके देख ली। उन नामों में कोई तथ्य नहीं है । वे लोग यह काम करने का साहस नही कर सकते । क्या तुम्हें अन्य किसी व्यक्ति पर सदेह नही है ? राव साहब को न सही, तुम्हें तो संदेह होना ही चाहिए कुछ लोगों पर । तुम इनके हर समय साथ रहते हो । इनके पास आने-जाने वालों को तुम भली प्रकार समझते हो ।"

भवानीसिंह बोला, "मुझे उन व्यक्तियों के अतिरिक्त, जिनके मैंने आपको नाम लिखाए है, अन्य किसी पर सदेह नही है रणधावा साहब ! समझ मे नही आ रहा कि वे कौन हत्यारे थे जिन्होने अकारण भाभी के प्राण ले लिए ।"

रणधावा बोला, "तुम कैसी बच्चों जैसी बाते करते हो भवानी-सिंह ! अकारण भी कही कोई किसी की हत्या करके अपने गले में फासी का फदा लटकाता है ? इस प्रकार की हत्याएं किसी पुरानी शत्रुता अथवा लोभ-लालच कारण की जाती है । तुम राव साहब के निकटतम व्यक्ति और पुत्र के समान विश्वस्त हो । तुमसे इनका कुछ भी गुप्त नही है । हमें संदेह है कि इस हत्या मे समरसिह और धीरसिह का हाथ है । संभव है वे यहा राव साहब से बदला लेने आए हो और गोली चलाने मे सिद्धहस्त न होने के कारण, गोलियां राव साहब को न लग के इनकी पत्नी को जा लगी हों ।"

रणधावा साहब की बात सुनकर राव साहब बोले, " आपका यह अनुमान गलत है रणधावा साहब ! हत्यारो ने अपने रिवाल्वर का लक्ष्य साधना की मम्मी को ही बनाया था। उन्होने मुझ पर एक भी गोली नही दागी ।"

भवानीसिंह बोला, "अपने संदेह की पुष्टि के लिए आप समरसिंह और धीरसिंह से पूछ-ताछ कर सकते है एस० पी० साहब ! वैसे मेरा

उन पर संदेह नही है। उन्हे मालूम है कि यहाँ भवानीसिंह बैठा हुआ है और मेरे रहते उनके परिन्दे भी इधर पर नही मार सकते। उन की रूह फना होती है मेरी शक्ल देखकर।"

"तुम थे कहां उस समय कोठी पर जब यह काण्ड हुआ ? तुम्हारे यहां न होने की उन्होंने कही से सूचना प्राप्त कर ली होगी। वैसे वे जानते ही है कि तुम फार्म पर रहते हो। उस दिन तो तुम अनायास ही घटना के कुछ देर पश्चात यहा आगए थे।" रणधावा ने कहा।

भवानीसिंह बोला, "आप पूछ-ताछ करके अपनी शका का निवारण कर लें। आपके मन मे यह शंका हमारे पुराने केस के कारण उत्पन्न हुई है। मै उन लोगो की वर्तमान टूटी हुई परिस्थिति से परिचित हूं। इसीलिए मेरी धारणा है कि वे अपनी इस आर्थिक कठिनाई के समय में ऐसा कार्य करने का दुस्साहस नही कर सकते।"

राव साहब बोले, "एस० पी० साहब ! समरसिंह और धीरसिंह, इसमें संदेह नही कि हमारे शत्रु रहे हैं और हमने उन्हे दण्डित कराया था। उन्होंने पिता जी की हत्या की थी। हम लोगों मे ऐसी घटनायें घटती रहती है, परन्तु मुझे ऐसी एक भी घटना स्मरण नहीं है जिसमें पुरुषो के वैमनस्य को लेकर किसी स्त्री की हत्या की गई हो। समरसिंह और धीरसिंह मेरे परिवारिक भाई है। इस परिवार का रक्त कभी किसी इस परिवार के सदस्य को किसी स्त्री की हत्या करने के लिए उत्साहित नही कर सकता। हम लोग मात्र अपनी ही नहीं, शत्रुओं की स्त्रियों की भी रक्षा करते रहे है। हम इतने नही गिर गए है कि अपनी ही मां, बहन, बेटी, बहनो और भाभियों की हत्याएं करने लगे। यह बात मैं सोच भी नही सकता। मेरे विचार से इस कार्य में समरसिंह और धीरसिंह का हाथ नही है।"

राव साहब की बात सुनकर रणधावा उठ खड़ा हुआ। उसने उनसे और कुछ कहना या पूछना उचित न समझा और वह कमरे से बाहर चला आया। साधना और भवानीसिंह उसकी जीप के पास तक उसे

छोड़ने आए। रणधावा अपनी जीप पर बैठ कर चला गया।

रणधावा के चले जाने पर भवानीसिंह और साधना राव साहब के पास आए। कुछ देर उनके पास बैठकर वे अपने-अपने कमरे में आराम करने चले गये।

साधना एकान्त में अपने पलंग पर लेटी बहुत देर तक अनिल के विषय मे सोचती रही। उसने अपने मन में कहा, 'अनिल का विचार ठीक था कि मुझे कोई रहस्य अपने डैडी पर प्रकट नहीं करना चाहिए।"

दूसरे दिन साधना ने राव साहब को बाध्य कर कुछ खाना खिलाया। भोजन करके वह दो चार मिनट बराडे मे घूमे-फिरे भी और अपने कमरे मे जाकर पलंग पर लेट गए। उन्हे नीद सी आ गई।

साधना ने घड़ी देखी, एक बज चुका था। वह अनिल को दो बजे आने का वचन देकर आई थी, इसलिए तुरन्त वस्त्र बदले और चलने को उद्यत हुई तो देखा सामने से भवानीसिंह आ रहा था। साधना ठिठक कर वहीं खड़ी हो गई।

भवानीसिंह ने निकट आकर पूछा, "साधना बेटी! भय्या ने कुछ खाया ?"

"जी चाचा जी! वह अभी-अभी कुछ खाकर सो गए है।" साधना ने बतलाया।

"तुम आज कहीं जाना नही बेटी! मै कई दिन से फार्म पर नहीं गया हू। जरा देख आता हूं जाकर कि वहां क्या हो रहा है। भय्या की तबियत ठीक नहीं है। उनके पास किसी-न-किसी का रहना आवश्यक है।" भवानीसिंह ने कहा।

भवानीसिंह की बात सुनकर साधना अन्दर-ही-अन्दर उद्विग्न हो उठी, परन्तु ऊपर से उसने कोई विरोध न किया। उसने कहा "आप हो आइए फार्म पर। मैं कही नही जा रही चाचाजी।"

भवानीसिंह निश्चिन्त होकर बाहर चला गया। उसकी जीप बाहर खड़ी थी। वह उस पर बैठा और गाड़ी स्टार्ट कर दी।

साधना ने घड़ी देखी। दो बजने में दस मिनट शेष थे। वह राव साहब के कमरे में गई। वह सो रहे थे। साधना चुपचाप बाहर आने लगी तो राव साहब की आंखे खुल गईं। उन्होंने धीरे से पुकारा, "साधना बेटी! कहीं जा रही हो क्या?"

"जी डैडी!" साधना ने लौटकर कहा, "जरा अपनी सहेली के पास तक जा रही हूं। कल कह आई थी उससे आने के लिए।"

"देर न करना बेटी!" राव साहब ने कहा।

"बहुत शीघ्र लौट आऊंगी डैडी! आपके लिए कुछ फल लेती आऊंगी बाज़ार से।" यह कहकर साधना कमरे से बाहर निकल गई और गाडी लेकर अनिल की कोठी पर पहुची।

अनिल ने साधना की गाडी अपनी कोठी के सामने रुकती देखी तो वह ड्राइङ्गरूम से बाहर निकल कर साधना के पास गया और उसे बाहर की गैलरी से अन्दर के कमरे मे लिवाकर ले गया। उससे कहा, "तुम कुछ देर यहाँ बैठो साधना! मैं एक आदमी से बाते कर रहा हूं। उससे बाते करके मैं शीघ्र इधर आता हूं। बुरा तो नहीं मानोगी ना इसके लिए?"

साधना मुस्करा दी अनिल की बात सुनकर। बोली, "इसमे बुरा मानने की क्या बात कही आपने? आप बात करे उनसे। मै आराम से बैठती हूं यहां।"

अनिल के जाने पर साधना आराम से पलग पर बैठ गई। उसने देखा, कमरे के एक कोने मे तबला, वीणा इत्यादि साज रखे थे। उसने अपने मन में कहा, 'अनिल मात्र कवि ही नही, गायक भी है।' उसका मन प्रसन्न हो गया यह सब देखकर। वह कमरे से बाहर निकल कर अन्दर रसोई-घर में महाराज के पास गई और उससे बातो-बातों मे ज्ञात कर लिया कि अनिल मात्र गायक ही नहीं नृत्य-कला में भी प्रवीण है। उसने साधना को यह भी बतला दिया कि वह कोठी अनिल की ही है। उससे यह सब ज्ञात करके वह कमरे में लौट

आई और पलग पर लेट गई। वह मंत्र-मुग्ध थी उस समय।

अनिल जिस व्यक्ति से बातें कर रहा था, उससे बातें समाप्त कर अन्दर साधना के पास आया तो उसने देखा वह पलंग पर लेटी एक गीत गुनगुना रही थी। अनिल कुछ क्षण चुपचाप खडा रहकर उस गुनगुनाहट को सुनता रहा। तभी साधना की दृष्टि उस पर पड गई और वह उठकर बैठती हुई बोली, "चोरी !"

"किस चीज की साधना ?" अनिल ने निकट जाकर पूछा।

"मेरी गुनगुनाहट की। की है ना आपने !" साधना ने मुस्कराते हुए कहा।

अनिल साधना के पास पलंग पर बैठ गया। साधना ने पूछा, "वह आदमी चला गया, जिससे आप बातें कर रहे थे ?"

"चला गया कम्बख्त। एक घण्टा खराब कर दिया।"

"आप केवल कवि नही, श्रेष्ठ गायक और नृत्यकार भी है अनिल !"

"यह तुमसे किसने कहा साधना ?" अनिल ने पूछा।

"आपके इस कमरे ने।" साधना ने कहा।

अनिल साधना की बात सुनकर मुक्त हसी हंस पड़ा। बोला, "अरे वाह ! साधना वाह ! तुमने तो मुझे जाने क्या-क्या बना दिया। लगता है तुम इस कमरे के चक्कर मे आगई। संगीत के साज-सामान ने तुम्हे भ्रमित कर दिया। तुमने इन सबका सम्वन्ध अपनी कविता कामिनी की कल्पना सें जोड कर मुझे गायक और नृत्यकार मान लिया। तुम भूल ही गई जो मैंने तुम्हें बतलाया था कि यह कोठी मेरे एक मित्र की है, जो वाहर गया हुआ है। मेरा वह मित्र वास्तव मे इन सभी कलाओं मे निपुण है। वह आएगा तो मैं तुम्हारा उससे परिचय कराऊंगा।"

"जी नही, मुझे कमरे ने कोई धोखा नही दिया। मैंने महाराज से सब कुछ ज्ञात कर लिया है। अब झूठ बोलने से काम नहीं चलेगा।" साधना ने कहा। वह अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा मे थी।

"संगीत मे तो तुम्हारी भी दक्ष्यता कम नही है साधना जी ! सच

है ना ! बहुत अच्छा गाती हो तुम । तुम्हारा स्वर बहुत मधुर है ।" अनिल बोला ।

"यह बात किसने कही आपसे ?" साधना ने पूछा ।

"कहता कौन साधना ! मैंने तुम्हारा संगीत स्वयं अपने कानों से सुना है । इकतारा तुम्हारा प्रिय साज है । है ना यह बात ? झूठ तो नहीं बोल रहा ना मैं ?" अनिल ने कहा ।

"आप झूठ बोलने में भी प्रवीण हैं अनिल ! असत्य को सत्य कह-लाना चाहते है मुझसे । बाते ऐसी बानते हैं कि झूठ भी सत्य प्रतीत होने लगता है ।" कहकर लाधना रोमांचित हो उठी ।

"अच्छा बतलाओ साधना, गतवर्ष विश्वविद्यालय की संगीत-प्रति-योगिता मे प्रथक पुरस्कार किसने प्राप्त किया था ? 'मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, दूसरा न कोई' गीत किसने गाया था ? वह साधना ही थी ना ?" अनिल ने कहा ।

साधना ने मुस्कुराकर पलके झाँपलीं । बोली, "वह तो एमेच्योर्स की प्रतियोगिता थी अनिल ! उस संगीत को दक्ष्यता कहेंगे आप ? वह तो ऐसे ही गा दिया था मैंने !"

"प्रोफेशनल्स भी आरम्भ में एमेच्योर्स ही होते है साधना ! कला की श्रेष्ठता का इससे क्या सम्बन्ध ? लाओ, वीणा उठा लाओ और सुनाओ मीरा का वह पद् । उसी पर मुग्ध होकर तो मैंने तुम्हे प्रथम पुरस्कार दिया था । तुम्हारी यह मनोरम मूर्ति उसी दिन मेरे हृदय-कक्ष की अमूल्य निधि बन गई थी ।" अनिल ने कहा ।

साधना ने विस्फारित नेत्रो से अनिल की ओर देखकर कहा, "आपने अनिल !" कहकर देर तक साधना अग्रिल की ओर देखकर अपने मस्तिष्क में पुरानी स्मृति का ताना-बाना बुनती रही । अनिल की आकृति अपने स्मृति-पटल पर उतारती रही । फिर अनायास ही उसका हृदय-कमल खिल गया और उसकी आभा साधना के नेत्रों से छलक पड़ी । उसके कपोल लाल हो गए ।

अनिल ने साधना का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "क्या अनिल अपनी साधना से झूठ बोलने का साहस करेगा कभी ? झूठ तो नहीं बोल रहा है ना अनिल ? पलंग पर आलती-पालती मार कर बैठो और नेत्र बन्द करके वह मीरा का पद् सुनाओ। मैं वीणा बजाऊंगा।" कहकर अनिल वीणा उठा लाया और स्वर साधना आरम्भ किया।

साधना का मधुर स्वर वायुमण्डल में भरने लगा ? अनिल तपस्वी के समान वीणा पर साधना कर रहा था। साधना तन्मय हो गई थी। फिर अनायास ही साधना के साथ अनिल का कंठ-स्वर भी फूट पडा। साधना, अनिल और वीणा का स्वर-संगम बन गया। गंगा, यमुना और सरस्वती एक धारा में प्रवाहित हुईं। अनिल साधना की मनोरम मूर्ति को निहार रहा था। बहुत सुन्दर लग रही थी साधना।

संगीत समाप्त होने पर अनिल ने कहा, "साधना ! बहुत मधुर स्वर है तुम्हारा। मैं तुम्हारे इस स्वर पर उसी दिन बलिहारा गया था जिस दिन मैंने सुना था। तुम्हारे कण्ठ मे सरस्वती निवास करती है। बहुत प्यारा गाती हो तुम।"

"आप व्यर्थ ही प्रशंसा के पुल बाँध रहे हैं। मुझे आता ही क्या है? यह तो ऐसे ही आपके कहने पर गा दिया मैंने।" सकुचाते हुए साधना ने कहा।

"कला की प्रशंसा ऐसे ही कभी नही की जाती है साधना ! तुम वास्तव में बहुत अच्छा गाती हो। मैंने तुम्हे ट्रेन में देखते ही पहिचान लिया था। तुम मुझे नहीं पहिचान पाईं। पहिचान भी कैसे पातीं ? विशेषता ही क्या थी मुझ मे ? परिचय भी विशेष क्या था ? मात्र तुम्हें प्रथम पुरस्कार देना तो कोई बात नहीं थी क्योंकि वह तो तुम्हारा अधिकार ही था।" अनिल ने कहा।

"मुझे लज्जित कर रहे हैं आप। क्या सचमुच आपने मुझे उसी दिन पहिचान लिया था ? यदि पहिचान लिया था तो बतलाया क्यों नहीं ? आज तक छिपाये क्यों रहे इस रहस्य को आप ?"

"पहिचानता कैसे नहीं साधना ? पहिचानने का तो मेरा काम ही है। नित्य ही मूल्यवान हीरों की परख करता हूं। मात्र हीरों की ही नही साधना, मैं अपराधियों को भी खूब पहिचानता हूं। मेरी नजर के सामने आकर अपराधी बच नही सकता।" अनिल ने कहा।

"क्या मैं भी अपराधिनी हूं आपकी दृष्टि में ? मेरा अपराध ?" साधना ने पूछा।

"अपराध तो तुमने निश्चित रूप से किया है साधना, परन्तु अपराध है मधुर। यह अपराध किये तुम्हे एक वर्ष व्यतीत हो चुका। अपराध करके तुम फरार हो गईं। उस दिन अचानक ट्रेन में दिखाई दी और मेरी आँखों ने तुम्हे पहिचान कर बन्दिनी बना लिया। झूठ तो नहीं है इसमें कुछ ?" अनिल ने कहा।

"आपकी आंखे बड़ी विचित्र हैं अनिल ! ये अपराधी को मात्र पहिचानती ही नही सीधा बन्दी बना लेती है। अब इस अपराधिनी के लिए क्या दण्ड-विधान है आपका ?" साधना ने पूछा।

"अपराध पर्याप्त गम्भीर है साधना ! आजन्म कारावास से कम क्या व्यवस्था सम्भव है ? परन्तु क्योंकि अपराध मधुर है, इसलिए कारावास में तुम्हारे साथ व्यवहार भी मधुर होगा। तुम्हारी हर प्रकार की सुख-सुविधा का ध्यान रखा जायेगा। कारावास में तुम्हे कोई कष्ट न होगा। कविता, संगीत और नृत्य की सब सुविधाये प्राप्त होंगी। तुम्हारा बन्दीगृह मन-मन्दिर के अन्दर होगा। स्वीकार है यह व्यवस्था ?" अनिल ने पूछा।

"अर्थात् मुक्ति की कोई आशा नहीं रही ?" साधना ने कहा।

अनिल ने गर्दन हिला कर कहा, "यह सम्भव नहीं है साधना ! यदि तुमने अब भागने का प्रयास किया तो मेरी ये आँखे तुम्हे फिर पकड़ लायेगी और दण्ड कड़ा हो जाएगा। तब मन-मन्दिर से हृदय-कक्ष में स्थानातरित कर दी जाओगी। स्थिति स्पष्ट है। तुम पर्याप्त समझदार हो। एम० ए० फाईनल की छात्रा हो। समझाने की आवश्यकता

नहीं है तुम्हें ।"

'इसका मतलब, मुझे आजन्म कारावास का दण्ड सहन करने के लिए उद्यत रहना चाहिए । इससे मुक्ति का कोई मार्ग नही रहा अब।" साधना ने कहा ।

"अभी न्यायाधीष को निर्णय देने में कुछ समय लगेगा । निर्णय के दिन तक के लिए तुम्हे हम अपनी जमानत पर मुक्त करते है । तब तक तुम्हें समय-समय पर न्यायालय मे आते रहना होगा ।" अनिल ने कहा ।

"आपका दण्ड-विधान बहुत कठोर है अनिल ! एक अबोध बालिका पर इतना अन्याय क्या उचिय है आपकी दृष्टि मे ?" साधना ने कहा ।

'यह कठोरता नही न्यायप्रियता है साधना जी ! वैसे मैं तुम्हें विश्वास दिला सकता हू कि तुम्हे इस कारावास मे आनन्दानुभूति होगी । इस कारावास की यही विशेषता है ।" अनिल ने कहा ।

"आपने एक सीधी-सादी निरपराध लड़की को फंसा लिया अनिल । अब मुझे आजन्म कारावास का दण्ड सहन करना होगा ।"

"फसा तो हमने अवश्य लिया है साधना जी, परन्तु निरपराधिनी को नही । क्या तुमने कोई ऐसा आपराधी देखा है जो स्वयं को अपराधी मानता हो । अपराध अपनी दृष्टि से नहीं न्यायाधीश की दृष्टि से देखा जाता है ।" अनिल ने कहा ।

"मेरा क्या अपराध है आपकी दृष्टि में ?" साधना ने पूछा ।

"अपराध एक नही अनेक है साधना जी ! कौन-कौन से अपराध गिनाऊं ? तुम्हारा जन्मजात अपराध तुम्हारा यह रूप है जो दृष्टा को विक्षिप्त कर देता है । इससे भयंकर अपराध तुम्हारा मधुर स्वर और उस पर संगीत की पैनी धार । अर्थात्-दुधारी तलवार बन गई तुम । यानी तुम्हारे समक्ष आने वाले की मृत्यु । इन सब से प्रखर अपराध है तुम्हारी नृत्य-कला मे प्रवीणता·········।"

साधना ने खड़ी होकर अनिल के मुख पर अपना हाथ रखते हुए

कहा, "बस-बस, बहुत अपराध गिना दिये। दण्ड दे डालो अब। जब फंस ही गई हूं और मुक्त होना सम्भव ही नहीं रहा तो दण्ड से क्या भयभीत होना ? आप अब जैसे और जिस रूप में रखेंगे, रहना होगा। अन्य चारा ही क्या है ?" कहकर साधना हंस पड़ी ।

अनिल का हाथ अनायास ही आगे बढ़ कर साधना की कमर पर जा गिरा और साधना सिमट कर उसके निकट आ गई। अनिल ने कहा, "साधना ! बन्दिनी तुम नहीं, मैं हूं तुम्हारा। तुम्हे स्मरण हो आया होगा, प्रतियोगिता के पश्चात गीत सुनाकर जब मैं स्टेज से नीचे आया था तो तुमने हस्ताक्षर कराने के लिए अपनी नोटबुक मेरे हाथ में दी थी। उस समय मैंने एक क्षण तुम्हारी ओर देखकर तुमसे तुम्हारा नाम पूछा था।"

"अब मुझे सब कुछ स्मरण हो आया अनिल! आपने मुझसे यह भी पूछा था कि मै किस की लड़की हूं और मैंने आपको डैडी का नाम बतलाया था। मुझे खेद है कि मैं आपको पहिचान न पाई।"

अनिल ने साधना के गाल पर हलकी सी थपकी देकर कहा, "तुम मुझे बहुत अच्छी लगी थीं साधना ! इस बीच मैं एक बार अपने एक मित्र के साथ तुम्हारी कोठी पर गया था। तुमने मुझे चाय पिलाई थी, परन्तु पहिचान नहीं पाई थी। मैं तुम्हारे डैडी से कुछ बातें करके चला आया था।"

"उस समय मैंने आपको सचमुच नहीं पहचाना था। यदि पहिचान लेती तो क्या बातें नहीं करती ?" साधना ने कहा।

"अब तुम स्वयं देख लो साधना, कितना पुराना और गम्भीर अपराध है तुम्हारा। अपराध करके भागीं और स्वयं आकर फंस गई। हमने तो नही फंसाया ना तुम्हे ?"

साधना ने घड़ी देखी। पांच बज रहे थे। वह खड़ी होती हुई बोली, "अब आज्ञा दो अनिल ! डैडी से मै शीघ्र लौटने को कह कर आई थी।"

अनिल ने साधना के साथ बाहर जाकर उसे उसकी गाड़ी में बिठला दिया।

साधना मार्केट से कुछ फल लेकर अपनी कोठी पर पहुंची। उसी समय भवानीसिंह की जीप वहां आई। भवानीसिंह ने जीप से उतर कर साधना से पूछा, "क्या मेरे यहाँ से जाने पर तुम भी कोठी से चली गई थी साधना ? भय्या के पास कोई नहीं रहा था ?"

साधना ने फलों के थैले सीट से उठाकर अन्दर ले जाने को मानसिंह से कहकर भवानीसिंह को उत्तर दिया, "मैं डैडी के लिए कुछ फल लेने गई थी चाचाजी।"

"अच्छा-अच्छा। मैं कह रहा था, ये फल चपरासी से मंगवा लेतीं और स्वयं भय्या के पास रहतीं। इस समय उनके पास किसी-न-किसी का रहना नितान्त आवश्यक है। देख नहीं रहीं कितने दुर्बल हो गए हैं वह।" भवानीसिंह ने कहा।

"चपरासी को फल लाने आते कहां है चाचाजी ? आप यहाँ होते तो मैं न जाती।" साधना ने कहा।

"चलो कोई बात नही। फल लाना तो वे वास्तव मे नही जानते। गले-सड़े उठा लाते है।"

"इसीलिए मैं स्वयं चली गई।" कह कर साधना अन्दर रावसाहब के पास चली गई।

भवानीसिंह ने जीप गैराज में खड़ी की। वहीं मानसिंह ड्राइवर खड़ा था। उससे पूछा, "साधना कहां गई थी मानसिंह ?"

"बाजार तक गई थीं। कुछ फल लाई हैं बड़े साहब के लिए।" मानसिंह ने उत्तर दिया।

भवानीसिंह ने और कुछ न पूछा। वह कोठी से बाहर निकला और एक रिक्शा लेकर बाजार की ओर चला गया।

७

साधना की छुट्टिया समाप्त हुईं। पहली जनवरी आगई। उसे उसी दिन रात्रि की गाड़ी से दिल्ली जाना था। भवानीसिंह ने सीट का रिजर्वेशन करा दिया था। साधना ने प्रातः दिल्ली फोन मिलाकर अनिल से बातें की थी। उसने स्टेशन पर उसे रिसीव करने के लिए आने को कह दिया था।

राव साहब का मन अभी कुछ ठीक नहीं था, परन्तु नियमित रूप से खाना-पीना आरम्भ कर दिया था। अब वह पर्याप्त ठीक थे पहले की अपेक्षा। साधना ने कहा, "डैडी! आपको अकेला छोड़ने का मन नहीं हो रहा। मैं सोच रही थी कि कुछ दिन की विश्वविद्यालय से छुट्टी लेकर आपके पास बनी रहती।"

"यह तो ठीक है बेटी! परन्तु तुम्हारा स्टडी का भी तो यही समय है। इस समय तुमने छुट्टी ले ली तो परीक्षा कैसे दे पाओगी? अंतिम वर्ष है तुम्हारा एम०ए० का। भवानीसिंह तो है ही मेरे पास। यह फारम से नित्य संध्या समय यहा आ जाया करेगा। मैंने कह दिया है इससे।" राव साहब ने कहा।

"तुम जाओ साधना! मन लगाकर पढ़ना। भय्या की चिन्ता न करना। मैं नियमित रूप से संध्या-समय फारम से यहाँ आ जाया करूंगा। भय्या अब ठीक है। पढ़ाई की हानि करना ठीक नही है। एक बार पढाई छूट जाने पर फिर उसमें मन लगाना कठिन हो जाता है।" भवानी सिंह ने कहा।

बात ठीक थी उसकी। स्टडी का क्रम एक बार टूटने पर, फिर कंटीन्यू करने में पर्याप्त कठिनाई सामने आती है। यह साधना भी सम-

भती थी। इसी लिए उस समय मन न होने पर भी वह दिल्ली जाने को उद्यत हो गई थी।

साधना अपने कमरे मे जाकर सामान पैक कराने लगी। अपना सामना पैक कराकर वह राव साहब के कमरे में आ बैठी। बोल' "डैडी! मेरे सिर पर हाथ रखकर कहिए कि आप मेरी अनुपस्थिति मे अपने भोजन के विषय मे अव्यवस्था न बरतेंगे। आप अपने स्वास्थ्य का पूरा-पूरा ध्यान रखेंगे।"

राव साहब ने साधना को दुलारते हुए कहा, "पगली कही की। असावधानी क्यों बरतूंगा? तुम चिन्ता करना किसी बात की। अपनी पढ़ाई में मन लगाना। अच्छी डिवीजन आनी चाहिए। खाना तो खाना ही होगा मुझे। अपने लिए नही तो तुम्हारे और भवानीसिंह के लिए खाना होगा। मैं तुम्हे बेसहारा कैसे छोड़ सकता हूं?"

ट्रेन-टाइम होने पर साधना का सामान भवानीसिंह ने गाड़ी में रखाया और उसे स्टेशन छोड़ने गया। प्लेटफार्म पर जाकर सामान कम्पार्टमेंट में लगवाया। फिर कहा, "अब मैं जाऊं साधना बेटी? रास्ते मे सावधानी से जाना। भय्या की चिन्ता न करना। पढाई मे मन लगाना। कुछ ही दिन की तो बात रह गई है अब। परीक्षा समाप्त होने पर आ ही जाओगी तुम।"

"आपके रहने पर चिन्ता की कोई बात नही है चाचाजी! फिर भी डैडी की दशा देख कर मन जाने का नहीं हो रहा था। संध्या समय आप फारम से कोठी पर आने मे देर न करना। रात्रि मे डैडी को अकेला न छोड़ना। मुझे भय है कि कहीं हत्यारे फिर किसी दिन आकर डैडी पर हमला न कर दे।" साधना ने कहा।

"मुझे स्वयं ध्यान है बेटी! तुम चिन्ता न करो किसी बात की. निश्चिन्त होकर दिल्ली जाओ।" भावनीसिंह ने कहा।

भवानीसिंह के जाने पर साधना ने अपना बिस्तर बर्थ पर फैला लिया। उसने देखा दूसरी बर्थ पर किसी अन्य यात्री का सामान रखा

हुआ था, परन्तु यात्री कोई नहीं था उस पर।

गाडी छूटने का समय निकट आता जा रहा था। गार्ड ने विसिल दी और हरी बत्ती दिखाई। ऐंजिन ने विसिल दी और गाड़ी मोशन में आ गई। गाडी के मोशन मे आने पर साधना ने देखा एक व्यक्ति उस कम्पार्टमेट की ओर लपका और उसने गाड़ी का डंडा पकड कर कम्पार्टमेट प्रवेश किया।

साधना के आश्चर्य का पारावार न रहा, जब उसने निश्चय से पहिचाना कि आने वाला व्यक्ति कोई अन्य नही, उसका अपना अनिल था। वह बर्थ से उठ कर उसकी ओर बढ़ गई। उसके दोनो हाथ अपने हाथों मे लेकर कहा, "अनिल! आप तो प्रात. दिल्ली मे थे। आपने वही से फोन किया था ना मुझे ?"

"था तो दिल्ली मे ही साधना, परन्तु आना आवश्यक हो गया।" अनिल ने कहा।

दोनों बर्थ पर आ बैठे। साधना बोली, "आप कभी-कभी बड़ी विचित्र बाते करते है अनिल! कही जयपुर से ही तो फोन नहीं किया था आपने ?" कहकर वह हंस पड़ी। उसे ध्यान ही न रहा कि फोन अनिल ने नही स्वय उसी ने अशोका होटल में किया था।

अनिल को हसी आगई साधना की बात पर। उसने साधना को अपने निकट करके कहा, "साधना! फोन मैंने किया था या तुमने ?" यह कहकर अनिल ने प्लेन का टिकट साधना के सामने डाल कर कहा, "मैं तुमसे गलत बात क्यों कहता साधना ? मेरा जयपुर आने का कोई विचार नही था। तुम आ ही रही थी दिल्ली। मैं प्लेटफार्म पर आकर तुम्हे रिसीव करता, परन्तु काम ही कुछ ऐसा आवश्यक सामने आ गया कि मुझे आना ही पडा।"

अनिल साधना की सरलता पर मुग्ध था। साधना ने पूछा, "ऐसा क्या आवश्यक काम निकल आया आपको जो इस प्रकार आना पडा ? काम हो गया आपका जिसके लिए आप आए थे ?"

"हो जाएगा काम भी। तुम यह बतलाओ, राव साहब ठीक हैं ना! भोजन इत्यादि करने लगे या नही।" अनिल ने पूछा।

"पहले की अपेक्षा काफी ठीक है। फिर भी अकेलापन तो अनुभव करेंगे ही मेरे आने पर। डैडी को अकेला छोड़ने का मन नही हो रहा था। चचा भवानीसिंह नित्य संध्या समय फारम से कोठी पर आ जाया करेंगे। मै इस लिए चली आई कि यदि स्टडी एक बार छूट जाती तो छूट ही जाती बस।" साधना ने कहा।

"यह तुमने ठीक सोचा साधना! तीन महीने पश्चात परीक्षाएं आरम्भ हो जाएंगी। अन्तिम वर्ष है तुम्हारी स्टडी का। समय नष्ट नही करना चाहिए था।" अनिल ने कहा।

"यही सोच कर मैंने आने का विचार लिया अनिल।" साधना ने कहा।

अनिल ने विषय बदल कर कहा, "साधना! तुम्हारी मम्मी की हत्या का समाचार प्राप्त कर चचा भावनीसिंह के पिता जयपुर नही आए। आए थे क्या?"

"वह बहुत वृद्ध है अनिल! फिर भी परसों आए थे बेचारे। बहुत दुखी थे।" साधना ने बतलाया।

"क्या वह उदयपुर मे ही रहते हैं?" अनिल ने पूछा।

"हमारा घरबार सब वही तो है अनिल! हमारी ही हवेली मे रह रहे है। दादाजी की हत्या के पश्चात डैडी ने वह हवेली उन्ही को दे दी थी। उस केस में उन्होंने और चचा भवानीसिंह ने डैडी का पूरा-पूरा साथ निभाया था। हम लोग करते भी क्या उस हवेली का? खाली पड़ी थी। मैंने तो कभी देखी भी नही है वह। डैडी बतलाया करते हैं कि वह तीन मंजिल की शानदार हवेली है।" फिर जाने क्या ध्यान आया साधना को। बोली, "चाय लोगे अनिल?"

अनिल मुस्कुरा दिया साधना की बात सुनकर। उसने कहा, "स्टेशन आने दो। वहां चाय भी ले लेंगे। क्या चलती गाड़ी मे ही

चाय पिलाम्रोगी मुझे ?"

"चाय मेरे पास है ग्रनिल ! महाराज जी ने थरमस में भर दी थी।" यह कहकर वह उठी ग्रौर बास्केट से थरमस निकाल कर ग्रनिल को चाय दी। एक कप स्वयं भी ली। दोनों चाय पीने लगे।

साधना बोली, "ग्रनिल ! चचा भवानीसिंह के कोठी पर रहते समरसिंह ग्रौर धीरसिंह वहां ग्राने का साहस नही कर पाएंगे। मुझे डैडी की चिन्ता थी। चचा के वहां रहने पर ग्रब चिन्ता का कोई कारण नही रहा। मम्मी की हत्या करने के विषय में ग्रापका संदेह समरसिंह ग्रौर धीरसिंह पर ही तो है ना !"

"चलो ठीक किया तुमने साधना ! तुम राव साहब की सुरक्षा की व्यवस्था कर ग्राईं। ग्रपने डैडी को कोठी से इधर-उधर न जाने के लिए कह ग्राई हो ना ! यह ग्रावश्यक बात थी।"

"जो-जो बाते ग्रापने कहने को कही थी, वे सब मैंने समझा कर उनसे कह दी थी। उन्होंने वचन दिया है कि वह कोठी से बाहर कहीं नही जाएंगे। वैसे भी उनका इन दिनों कही जाने ग्राने में मन नहीं है।" साधना ने कहा।

"तुम राव साहब की चिन्ता न करो। मैं रणधावा ग्रौर सानियाल साहब को बोल ग्राया हूं। जो हो गया, वह ग्रनजाने मे हो गया। ग्रब राव साहब की ग्रोर कोई ग्रांख भरकर भी नही देख सकता। हत्यारे भी शीघ्र पकड़ लिए जाएंगे।" ग्रनिल ने कहा।

साधना बोली, "ग्रनिल ! ग्राप कोई बात कहते है तो मै समझ लेती हूं कि वह हो गई। मेरे मन में तुरन्त विश्वास हो जाता है। ग्रब ग्रापने यह बात कही तो मन मे निश्चय हो गया कि डैडी सुरक्षित है। यह क्या बात है ? मुझे यह विश्वास क्यों हो जाता है ?"

ग्रनिल ने साधना का सिर ग्रपनी छाती से लगाकर कहा, "साधना ! विश्वास का सम्बन्ध मन से है। मेरी बात तुम्हारे मन को छू जाती है, इसी लिए तुम्हे विश्वास हो जाता है। तुम राव साहब की चिन्ता न

आई और पलंग पर लेट गई। वह मंत्र-मुग्ध थी उस समय।

अनिल जिस व्यक्ति से बातें कर रहा था, उससे बाते समाप्त कर अन्दर साधना के पास आया तो उसने देखा वह पलंग पर लेटी एक गीत गुनगुना रही थी। अनिल कुछ क्षण चुपचाप खडा रहकर उस गुनगुनाहट को सुनता रहा। तभी साधना की दृष्टि उस पर पड़ गई और वह उठकर बैठती हुई बोली, "चोरी!"

"किस चीज की साधना?" अनिल ने निकट जाकर पूछा।

"मेरी गुनगुनाहट की। की है ना आपने!" साधना ने मुस्कराते हुए कहा।

अनिल साधना के पास पलंग पर बैठ गया। साधना ने पूछा, "वह आदमी चला गया, जिससे आप बाते कर रहे थे?"

"चला गया कम्बख्त। एक घण्टा खराब कर दिया।"

"आप केवल कवि नहीं, श्रेष्ठ गायक और नृत्यकार भी है अनिल!"

"यह तुमसे किसने कहा साधना?" अनिल ने पूछा।

"आपके इस कमरे ने।" साधना ने कहा।

अनिल साधना की बात सुनकर मुक्त हसी हंस पड़ा। बोला, "अरे वाह! साधना वाह! तुमने तो मुझे जाने क्या-क्या बना दिया। लगता है तुम इस कमरे के चक्कर मे आगईं। संगीत के साज-सामान ने तुम्हे भ्रमित कर दिया। तुमने इन सबका सम्बन्ध अपनी कविता कामिनी की कल्पना से जोड़ कर मुझे गायक और नृत्यकार मान लिया। तुम भूल ही गईं जो मैंने तुम्हे बतलाया था कि यह कोठी मेरे एक मित्र की है, जो बाहर गया हुआ है। मेरा वह मित्र वास्तव में इन सभी कलाओं मे निपुण है। वह आएगा तो मैं तुम्हारा उससे परिचय कराऊंगा।"

"जी नहीं, मुझे कमरे ने कोई धोखा नही दिया। मैने महाराज से सब कुछ ज्ञात कर लिया है। अब झूठ बोलने से काम नहीं चलेगा।" साधना ने कहा। वह अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा मे थी।

"सगीत मे तो तुम्हारी भी दक्ष्यता कम नही है साधना जी! सच

है ना ! बहुत अच्छा गाती हो तुम । तुम्हारा स्वर बहुत मधुर है ।" अनिल बोला।

"यह बात किसने कही आपसे ?" साधना ने पूछा।

"कहता कौन साधना ! मैंने तुम्हारा संगीत स्वयं अपने कानों से सुना है। इकतारा तुम्हारा प्रिय साज है। है ना यह बात ? झूठ तो नही बोल रहा ना मैं ?" अनिल ने कहा।

"आप झूठ बोलने में भी प्रवीण है अनिल ! असत्य को सत्य कहलाना चाहते है मुझसे। बाते ऐसी बानते है कि झूठ भी सत्य प्रतीत होने लगता है।" कहकर लाधना रोमांचित हो उठी।

"अच्छा बतलाओ साधना, गतवर्ष विश्वविद्यालय की संगीत-प्रतियोगिता में प्रथक पुरस्कार किसने प्राप्त किया था ? 'मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, दूसरा न कोई' गीत किसने गाया था ? वह साधना ही थी ना ?" अनिल ने कहा।

साधना ने मुस्कुराकर पलकें झॉपलीं। बोली, "वह तो एमेच्योर्स की प्रतियोगिता थी अनिल ! उस संगीत को दक्ष्यता कहेंगे आप ? वह तो ऐसे ही गा दिया था मैंने !"

"प्रोफेशनल्स भी आरम्भ मे एमेच्योर्स ही होते हैं साधना ! कला की श्रेष्ठता का इससे क्या सम्बन्ध ? लाओ, वीणा उठा लाओ और सुनाओ मीरा का वह पद्। उसी पर मुग्द्ध होकर तो मैंने तुम्हे प्रथम पुरस्कार दिया था। तुम्हारी यह मनोरम मूर्ति उसी दिन मेरे हृदय-कक्ष की अमूल्य निधि बन गई थी।" अनिल ने कहा।

साधना ने विस्फारित नेत्रों से अनिल की ओर देखकर कहा, "आपने अनिल !" कहकर देर तक साधना अनिल की ओर देखकर अपने मस्तिष्क में पुरानी स्मृति का ताना-बाना बुनती रही। अनिल की आकृति अपने स्मृति-पटल पर उतारती रही। फिर अनायास ही उसका हृदय-कमल खिल गया और उसकी आभा साधना के नेत्रों से छलक पडी। उसके कपोल लाल हो गए।

अनिल ने साधना का हाथ अपने हाथ मे लेकर कहा, "क्या अनिल अपनी साधना से झूठ बोलने का साहस करेगा कभी ? झूठ तो नहीं बोल रहा है ना अनिल ? पलंग पर आलती-पालती मार कर बैठो और नेत्र वन्द करके वह मीरा का पद् सुनाओ। मैं वीणा बजाऊंगा।" कहकर अनिल वीणा उठा लाया और स्वर साधना आरम्भ किया।

साधना का मधुर स्वर वायुमण्डल में भरने लगा ? अनिल तपस्वी के समान वीणा पर साधना कर रहा था। साधना तन्मय हो गई थी। फिर अनायास ही साधना के साथ अनिल का कंठ-स्वर भी फूट पडा। साधना, अनिल और वीणा का स्वर-सगम बन गया। गंगा, यमुना और सरस्वती एक धारा मे प्रवाहित हुईं। अनिल साधना की मनोरम मूर्ति को निहार रहा था। बहुत सुन्दर लग रही थी साधना।

संगीत समाप्त होने पर अनिल ने कहा, "साधना! बहुत मधुर स्वर है तुम्हारा। मैं तुम्हारे इस स्वर पर उसी दिन बलिहारा गया था जिस दिन मैंने सुना था। तुम्हारे कण्ठ में सरस्वती निवास करती है। बहुत प्यारा गाती हो तुम।"

"आप व्यर्थ ही प्रशसा के पुल बॉध रहे हैं। मुझे आता ही क्या है? यह तो ऐसे ही आपके कहने पर गा दिया मैंने।" सकुचाते हुए साधना ने कहा।

"कला की प्रशंसा ऐसे ही कभी नही की जाती है साधना! तुम वास्तव में बहुत अच्छा गाती हो। मैंने तुम्हें ट्रेन में देखते ही पहिचान लिया था। तुम मुझे नहीं पहिचान पाईं। पहिचान भी कैसे पाती ? विशेषता ही क्या थी मुझ में ? परिचय भी विशेष क्या था ? मात्र तुम्हें प्रथम पुरस्कार देना तो कोई बात नहीं थी क्योंकि वह तो तुम्हारा अधिकार ही था।" अनिल ने कहा।

"मुझे लज्जित कर रहे हैं आप। क्या सचमुच आपने मुझे उसी दिन पहिचान लिया था ? यदि पहिचान लिया था तो बतलाया क्यों नही ? आज तक छिपाये क्यो रहे इस रहस्य को आप ?"

"पहिचानता कैसे नहीं साधना ? पहिचानने का तो मेरा काम ही है। नित्य ही मूल्यवान हीरों की परख करता हूं । मात्र हीरों की ही नही साधना, मैं अपराधियों को भी खूब पहिचानता हूं। मेरी नजर के सामने आकर अपराधी बच नही सकता।" अनिल ने कहा ।

"क्या मैं भी अपराधिनी हूं आपकी दृष्टि में ? मेरा अपराध ?" साधना ने पूछा।

"अपराध तो तुमने निश्चित रूप से किया है साधना, परन्तु अपराध है मधुर। यह अपराध किये तुम्हें एक वर्ष व्यतीत हो चुका। अपराध करके तुम फरार हो गईं। उस दिन अचानक ट्रेन में दिखाई दी और मेरी आँखों ने तुम्हे पहिचान कर बन्दिनी बना लिया। झूठ तो नही है इसमें कुछ ?" अनिल ने कहा।

"आपकी आंखें वडी विचित्र हैं अनिल ! ये अपराधी को मात्र पहि-चानती ही नही सीधा बन्दी बना लेती है। अब इस अपराधिनी के लिए क्या दण्ड-विधान है आपका ?" साधना ने पूछा।

"अपराध पर्याप्त गम्भीर है साधना ! आजन्म कारावास से कम क्या व्यवस्था सम्भव है ? परन्तु क्योंकि अपराध मधुर है, इसलिए कारावास में तुम्हारे साथ व्यवहार भी मधुर होगा। तुम्हारी हर प्रकार की सुख-सुविधा का ध्यान रखा जायेगा। कारावास मे तुम्हें कोई कष्ट न होगा। कविता, संगीत और नृत्य की सब सुविधायें प्राप्त होंगी। तुम्हारा बन्दीगृह मन-मन्दिर के अन्दर होगा। स्वीकार है यह व्यवस्था ?" अनिल ने पूछा।

"अर्थात् मुक्ति की कोई आशा नहीं रही ?" साधना ने कहा।

अनिल ने गर्दन हिला कर कहा, "यह सम्भव नही है साधना ! यदि तुमने अब भागने का प्रयास किया तो मेरी ये आँखें तुम्हे फिर पकड़ लायेंगी और दण्ड कड़ा हो जाएगा। तब मन-मन्दिर से हृदय-कक्ष में स्थानांतरित कर दी जाओगी। स्थिति स्पष्ट है। तुम पर्याप्त समझ-दार हो। एम० ए० फाईनल की छात्रा हो। समझाने की आवश्यकता

नहीं है तुम्हे।"

'इसका मतलब, मुझे आजन्म कारावास का दण्ड सहन करने के लिए उद्यत रहना चाहिए। इससे मुक्ति का कोई मार्ग नहीं रहा अब।" साधना ने कहा।

"अभी न्यायाधीष को निर्णय देने मे कुछ समय लगेगा। निर्णय के दिन तक के लिए तुम्हे हम अपनी जमानत पर मुक्त करते है। तब तक तम्हे समय-समय पर न्यायालय में आते रहना होगा।" अनिल ने कहा।

"आपका दण्ड-विधान बहुत कठोर है अनिल ! एक अबोध बालिका पर इतना अन्याय क्या उचिय है आपकी दृष्टि में ?" साधना ने कहा।

'यह कठोरता नहीं न्यायप्रियता है साधना जी ! वैसे मै तुम्हे विश्वास दिला सकता हू कि तुम्हें इस कारावास मे आनन्दानुभूति होगी। इस कारावास की यही विशेषता है।" अनिल ने कहा।

"आपने एक सीधी-सादी निरपराध लड़की को फंसा लिया अनिल। अब मुझे आजन्म कारावास का दण्ड सहन करना होगा।"

"फसा तो हमने अवश्य लिया है साधना जी, परन्तु निरपराधिनी को नही। क्या तुमने कोई ऐसा आपराधी देखा है जो स्वयं को अपराधी मानता हो। अपराध अपनी दृष्टि से नहीं न्यायाधीश की दष्टि से देखा जाता है।" अमिल ने कहा।

"मेरा क्या अपराध है आपकी दृष्टि में ?" साधना ने पूछा।

"अपराध एक नहीं अनेक है साधना जी ! कौन-कौन से अपराध गिनाऊं ? तुम्हारा जन्मजात अपराध तुम्हारा यह रूप है जो दृष्टा को विक्षिप्त कर देता है। इससे भयंकर अपराध तुम्हारा मधुर स्वर और उस पर संगीत की पैनी धार। अर्थात्-दुधारी तलवार बन गई तुम। यानी तुम्हारे समक्ष आने वाले की मृत्यु। इन सब से प्रखर अपराध है तुम्हारी नृत्य-कला में प्रवीणता.........।"

साधना ने खड़ी होकर अनिल के मुख पर अपना हाथ रखते हुए

कहा, "बस-बस, बहुत अपराध गिना दिये। दण्ड दे डालो अब। जब फंस ही गई हूं और मुक्त होना सम्भव ही नहीं रहा तो दण्ड से क्या भयभीत होना ? आप अब जैसे और जिस रूप में रखेंगे, रहना होगा। अन्य चारा ही क्या है ?" कहकर साधना हंस पड़ी।

अनिल का हाथ अनायास ही आगे बढ़ कर साधना की कमर पर जा गिरा और साधना सिमट कर उसके निकट आ गई। अनिल ने कहा, "साधना ! बन्दिनी तुम नहीं, मैं हूं तुम्हारा। तुम्हे स्मरण हो आया होगा, प्रतियोगिता के पश्चात गीत सुनाकर जब मैं स्टेज से नीचे आया था तो तुमने हस्ताक्षर कराने के लिए अपनी नोटबुक मेरे हाथ में दी थी। उस समय मैंने एक क्षण तुम्हारी ओर देखकर तुमसे तुम्हारा नाम पूछा था।"

"अब मुझे सब कुछ स्मरण हो आया अनिल! आपने मुझसे यह भी पूछा था कि मै किस की लड़की हूं और मैंने आपको डैडी का नाम बतलाया था। मुझे खेद है कि मैं आपको पहिचान न पाई।"

अनिल ने साधना के गाल पर हलकी सी थपकी देकर कहा, "तुम मुझे बहुत अच्छी लगी थीं साधना ! इस बीच मैं एक बार अपने एक मित्र के साथ तुम्हारी कोठी पर गया था। तुमने मुझे चाय पिलाई थी, परन्तु पहिचान नहीं पाई थीं। मैं तुम्हारे डैडी से कुछ बाते करके चला आया था।"

"उस समय मैंने आपको सचमुच नहीं पहचाना था। यदि पहिचान लेती तो क्या बातें नहीं करती ?" साधना ने कहा।

"अब तुम स्वयं देख लो साधना, कितना पुराना और गम्भीर अपराध है तुम्हारा। अपराध करके भागी और स्वयं आकर फंस गई। हमने तो नहीं फंसाया ना तुम्हें ?"

साधना ने घड़ी देखी। पांच बज रहे थे। वह खड़ी होती हुई बोली, "अब आज्ञा दो अनिल ! डैडी से मैं शीघ्र लौटने को कह कर आई थी।"

अनिल ने साधना का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "क्या अनिल अपनी साधना से झूठ बोलने का साहस करेगा कभी ? झूठ तो नही बोल रहा है ना अनिल ? पलंग पर आलती-पालती मार कर बैठो और नेत्र बन्द करके वह मीरा का पद् सुनाओ। मैं वीणा बजाऊंगा।" कहकर अनिल वीणा उठा लाया और स्वर साधना आरम्भ किया।

साधना का मधुर स्वर वायुमण्डल में भरने लगा ? अनिल तपस्वी के समान वीणा पर साधना कर रहा था। साधना तन्मय हो गई थी। फिर अनायास ही साधना के साथ अनिल का कंठ-स्वर भी फूट पडा। साधना, अनिल और वीणा का स्वर-संगम बन गया। गंगा, यमुना और सरस्वती एक धारा मे प्रवाहित हुईं। अनिल साधना की मनोरम मूर्ति को निहार रहा था। बहुत सुन्दर लग रही थी साधना।

संगीत समाप्त होने पर अनिल ने कहा, "साधना! बहुत मधुर स्वर है तुम्हारा। मैं तुम्हारे इस स्वर पर उसी दिन बलिहारा गया था जिस दिन मैंने सुना था। तुम्हारे कण्ठ में सरस्वती निवास करती है। बहुत प्यारा गाती हो तुम।"

"आप व्यर्थ ही प्रशंसा के पुल बाँध रहे है। मुझे आता ही क्या है? यह तो ऐसे ही आपके कहने पर गा दिया मैंने।" सकुचाते हुए साधना ने कहा।

"कला की प्रशंसा ऐसे ही कभी नहीं की जाती है साधना! तुम वास्तव में बहुत अच्छा गाती हो। मैंने तुम्हे ट्रेन मे देखते ही पहिचान लिया था। तुम मुझे नहीं पहिचान पाईं। पहिचान भी कैसे पातीं? विशेषता ही क्या थी मुझ में? परिचय भी विशेष क्या था? मात्र तुम्हे प्रथम पुरस्कार देना तो कोई बात नहीं थी क्योंकि वह तो तुम्हारा अधिकार ही था।" अनिल ने कहा।

"मुझे लज्जित कर रहे हैं आप। क्या सचमुच आपने मुझे उसी दिन पहिचान लिया था? यदि पहिचान लिया था तो बतलाया क्यों नहीं? आज तक छिपाये क्यों रहे इस रहस्य को आप?"

"पहिचानता कैसे नही साधना ? पहिचानने का तो मेरा काम ही है। नित्य ही मूल्यवान हीरों की परख करता हूं। मात्र हीरों की ही नही साधना, मैं अपराधियों को भी खूब पहिचानता हूं। मेरी नजर के सामने आकर अपराधी बच नही सकता।" अनिल ने कहा।

"क्या मैं भी अपराधिनी हूं आपकी दृष्टि में ? मेरा अपराध ?" साधना ने पूछा।

"अपराध तो तुमने निश्चित रूप से किया है साधना, परन्तु अपराध है मधुर। यह अपराध किये तुम्हें एक वर्ष व्यतीत हो चुका। अपराध करके तुम फरार हो गईं। उस दिन अचानक ट्रेन में दिखाई दी और मेरी आँखों ने तुम्हे पहिचान कर बन्दिनी बना लिया। झूठ तो नही है इसमे कुछ ?" अनिल ने कहा।

"आपकी आंखे बड़ी विचित्र हैं अनिल ! ये अपराधी को मात्र पहि-चानती ही नही सीधा बन्दी बना लेती है। अब इस अपराधिनी के लिए क्या दण्ड-विधान है आपका ?" साधना ने पूछा।

"अपराध पर्याप्त गम्भीर है साधना ! आजन्म कारावास से कम क्या व्यवस्था सम्भव है ? परन्तु क्योंकि अपराध मधुर है, इसलिए कारावास में तुम्हारे साथ व्यवहार भी मधुर होगा। तुम्हारी हर प्रकार की सुख-सुविधा का ध्यान रखा जायेगा। कारावास में तुम्हें कोई कष्ट न होगा। कविता, संगीत और नृत्य की सब सुविधायें प्राप्त होंगी। तुम्हारा बन्दीगृह मन-मन्दिर के अन्दर होगा। स्वीकार है यह व्यवस्था ?" अनिल ने पूछा।

"अर्थात् मुक्ति की कोई आशा नही रही ?" साधना ने कहा।

अनिल ने गर्दन हिला कर कहा, "यह सम्भव नहीं है साधना ! यदि तुमने अब भागने का प्रयास किया तो मेरी ये आँखे तुम्हे फिर पकड लायेंगी और दण्ड कड़ा हो जाएगा। तब मन-मन्दिर से हृदय-कक्ष में स्थानांतरित कर दी जाओगी। स्थिति स्पष्ट है। तुम पर्याप्त समझ-दार हो। एम० ए० फाईनल की छात्रा हो। समझाने की आवश्यकता

नहीं है तुम्हे ।"

"इसका मतलब, मुझे आजन्म कारावास का दण्ड सहन करने के लिए उद्यत रहना चाहिए। इससे मुक्ति का कोई मार्ग नही रहा अब।" साधना ने कहा।

"अभी न्यायाधीष को निर्णय देने में कुछ समय लगेगा । निर्णय के दिन तक के लिए तुम्हें हम अपनी जमानत पर मुक्त करते है। तब तक तुम्हे समय-समय पर न्यायालय मे आते रहना होगा।" अनिल ने कहा।

"आपका दण्ड-विधान बहुत कठोर है अनिल ! एक अबोध बालिका पर इतना अन्याय क्या उचिय है आपकी दृष्टि में ?" साधना ने कहा।

'यह कठोरता नहीं न्यायप्रियता है साधना जी ! वैसे मैं तुम्हे विश्वास दिला सकता हू कि तुम्हे इस कारावास मे आनन्दानुभूति होगी। इस कारावास की यही विशेषता है।" अनिल ने कहा ।

"आपने एक सीधी-सादी निरपराध लड़की को फंसा लिया अनिल। अब मुझे आजन्म कारावास का दण्ड सहन करना होगा।"

"फंसा तो हमने अवश्य लिया है साधना जी, परन्तु निरपराधिनी को नही। क्या तुमने कोई ऐसा आपराधी देखा है जो स्वयं को अपराधी मानता हो। अपराध अपनी दृष्टि से नहीं न्यायाधीश की दष्टि से देखा जाता है।" अनिल ने कहा।

"मेरा क्या अपराध है आपकी दृष्टि में ?" साधना ने पूछा।

"अपराध एक नहीं अनेक है साधना जी ! कौन-कौन से अपराध गिनाऊं ? तुम्हारा जन्मजात अपराध तुम्हारा यह रूप है जो दृष्टा को विक्षिप्त कर देता है। इससे भयंकर अपराध तुम्हारा मधुर स्वर और उस पर संगीत की पैनी धार। अर्थात्-दुधारी तलवार बन गई तुम। यानी तुम्हारे समक्ष आने वाले की मृत्यु। इन सब से प्रखर अपराध है तुम्हारी नृत्य-कला में प्रवीणता.........।"

साधना ने खड़ी होकर अनिल के मुख पर अपना हाथ रखते हुए

कहा, "बस-बस, बहुत अपराध गिना दिये। दण्ड दे डालो अब। जब फंस ही गई हूं और मुक्त होना सम्भव ही नहीं रहा तो दण्ड से क्या भयभीत होना ? आप अब जैसे और जिस रूप में रखेंगे, रहना होगा। अन्य चारा ही क्या है ?" कहकर साधना हस पड़ी।

अनिल का हाथ अनायास ही आगे बढ़ कर साधना की कमर पर जा गिरा और साधना सिमट कर उसके निकट आ गई। अनिल ने कहा, "साधना ! बन्दिनी तुम नहीं, मैं हूं तुम्हारा। तुम्हे स्मरण हो आया होगा, प्रतियोगिता के पश्चात गीत सुनाकर जब मैं स्टेज से नीचे आया था तो तुमने हस्ताक्षर कराने के लिए अपनी नोटबुक मेरे हाथ मे दी थी। उस समय मैंने एक क्षण तुम्हारी ओर देखकर तुमसे तुम्हारा नाम पूछा था।"

"अब मुझे सब कुछ स्मरण हो आया अनिल! आपने मुझसे यह भी पूछा था कि मै किस की लड़की हू और मैंने आपको डैडी का नाम बतलाया था। मुझे खेद है कि मै आपको पहिचान न पाई।"

अनिल ने साधना के गाल पर हलकी सी थपकी देकर कहा, "तुम मुझे बहुत अच्छी लगी थीं साधना ! इस बीच मैं एक बार अपने एक मित्र के साथ तुम्हारी कोठी पर गया था। तुमने मुझे चाय पिलाई थी, परन्तु पहिचान नहीं पाई थी। मैं तुम्हारे डैडी से कुछ बातें करके चला आया था।"

"उस समय मैंने आपको सचमुच नहीं पहचाना था। यदि पहिचान लेती तो क्या बातें नहीं करती ?" साधना ने कहा।

"अब तुम स्वयं देख लो साधना, कितना पुराना और गम्भीर अपराध है तुम्हारा। अपराध करके भागी और स्वयं आकर फस गई। हमने तो नही फंसाया ना तुम्हें ?"

साधना ने घड़ी देखी। पांच बज रहे थे। वह खड़ी होती हुई बोली, "अब आज्ञा दो अनिल ! डैडी से मै शीघ्र लौटने को कह कर आई थी।"

अनिल ने साधना के साथ बाहर जाकर उसे उसकी गाड़ी में बिठला दिया।

साधना मार्केट से कुछ फल लेकर अपनी कोठी पर पहुंची। उसी समय भवानीसिंह की जीप वहां आई। भवानीसिंह ने जीप से उतर कर साधना से पूछा, "क्या मेरे यहाँ से जाने पर तुम भी कोठी से चली गई थी साधना ? भय्या के पास कोई नही रहा था ?"

साधना ने फलों के थैले सीट से उठाकर अन्दर ले जाने को मान-सिंह से कहकर भवानीसिंह को उत्तर दिया, "मैं डैडी के लिए कुछ फल लेने गई थी चाचाजी।"

"अच्छा-अच्छा। मैं कह रहा था, ये फल चपरासी से मंगवा लेती और स्वयं भय्या के पास रहतीं। इस समय उनके पास किसी-न-किसी का रहना नितान्त आवश्यक है। देख नही रही कितने दुर्बल हो गए है वह।" भवानीसिंह ने कहा।

"चपरासी को फल लाने आते कहां है चाचाजी ? आप यहाँ होते तो मैं न जाती।" साधना ने कहा।

"चलो कोई बात नही। फल लाना तो वे वास्तव में नही जानते। गले-सड़े उठा लाते हैं।"

"इसीलिए मैं स्वयं चली गई।" कह कर साधना अन्दर रावसाहब के पास चली गई।

भवानीसिंह ने जीप गैराज में खड़ी की। वहीं मानसिंह ड्राइवर खड़ा था। उससे पूछा, "साधना कहां गई थी मानसिंह ?"

"बाजार तक गई थीं। कुछ फल लाई है बड़े साहब के लिए।" मानसिंह ने उत्तर दिया।

भवानीसिंह ने और कुछ न पूछा। वह कोठी से बाहर निकला और एक रिक्शा लेकर बाजार की ओर चला गया।

७

साधना की छुट्टिया समाप्त हुई । पहली जनवरी आगई । उसे उसी दिन रात्रि की गाड़ी से दिल्ली जाना था । भवानीसिंह ने सीट का रिजर्वेशन करा दिया था । साधना ने प्रातः दिल्ली फोन मिलाकर अनिल से बातें की थी । उसने स्टेशन पर उसे रिसीव करने के लिए आने को कह दिया था ।

राव साहब का मन अभी कुछ ठीक नहीं था, परन्तु नियमित रूप से खाना-पीना आरम्भ कर दिया था । अब वह पर्याप्त ठीक थे पहले की अपेक्षा । साधना ने कहा, "डैडी ! आपको अकेला छोड़ने का मन नही हो रहा । मैं सोच रही थी कि कुछ दिन की विश्वविद्यालय से छुट्टी लेकर आपके पास बनी रहती ।"

"यह तो ठीक है बेटी ! परन्तु तुम्हारा स्टडी का भी तो यही समय है। इस समय तुमने छुट्टी ले ली तो परीक्षा कैसे दे पाओगी ? अंतिम वर्ष है तुम्हारा एम०ए० का । भवानीसिंह तो है ही मेरे पास । यह फारम से नित्य संध्या समय यहां आ जाया करेगा । मैंने कह दिया है इससे ।" राव साहब ने कहा ।

"तुम जाओ साधना ! मन लगाकर पढ़ना । भय्या की चिन्ता न करना । मैं नियमित रूप से संध्या-समय फारम से यहां आ जाया करूंगा । भय्या अब ठीक है । पढाई की हानि करना ठीक नहीं है । एक बार पढ़ाई छूट जाने पर फिर उसमें मन लगाना कठिन हो जाता है ।" भवानी सिंह ने कहा ।

बात ठीक थी उसकी । स्टडा का क्रम एक बार टूटने पर, फिर कंटीन्यू करने मे पर्याप्त कठिनाई सामने आती है । यह साधना भी सम-

झती थी। इसी लिए उस समय मन न होने पर भी वह दिल्ली जाने को उद्यत हो गई थी।

साधना अपने कमरे मे जाकर सामान पैक कराने लगी। अपना सामना पैक कराकर वह राव साहब के कमरे मे आ बैठी। बोल" "डैडी! मेरे सिर पर हाथ रखकर कहिए कि आप मेरी अनुपस्थिति मे अपने भोजन के विषय मे अव्यवस्था न बरतेंगे। आप अपने स्वास्थ्य का पूरा-पूरा ध्यान रखेंगे।"

राव साहब ने साधना को दुलारते हुए कहा, "पगली कही की। असावधानी क्यों बरतूंगा? तुम चिन्ता करना किसी बात की। अपनी पढ़ाई मे मन लगाना। अच्छी डिवीजन आनी चाहिए। खाना तो खाना ही होगा मुझे। अपने लिए नही तो तुम्हारे और भवानीसिंह के लिए खाना होगा। मैं तुम्हे बेसहारा कैसे छोड़ सकता हूं?

ट्रेन-टाइम होने पर साधना का सामान भवानीसिंह ने गाड़ी में रखाया और उसे स्टेशन छोड़ने गया। प्लेटफार्म पर जाकर सामान कम्पार्टमेंट मे लगवाया। फिर कहा, "अब मैं जाऊं साधना बेटी? रास्ते में सावधानी से जाना। भय्या की चिन्ता न करना। पढाई में मन लगाना। कुछ ही दिन की तो बात रह गई है अब। परीक्षा समाप्त होने पर आ ही जाओगी तुम।"

"आपके रहने पर चिन्ता की कोई बात नही है चाचाजी! फिर भी डैडी की दशा देख कर मन जाने का नहीं हो रहा था। संध्या समय आप फारम से कोठी पर आने में देर न करना। रात्रि में डैडी को अकेला न छोड़ना। मुझे भय है कि कहीं हत्यारे फिर किसी दिन आकर डैडी पर हमला न कर दें।" साधना ने कहा।

"मुझे स्वयं ध्यान है बेटी! तुम चिन्ता न करो किसी बात की। निश्चिन्त होकर दिल्ली जाओ।" भावनीसिंह ने कहा।

भवानीसिंह के जाने पर साधना ने अपना बिस्तर बर्थ पर फला लिया। उसने देखा दूसरी बर्थ पर किसी अन्य यात्री का सामान रखा

हुआ था, परन्तु यात्री कोई नहीं था उस पर।

गाडी छूटने का समय निकट आता जा रहा था। गार्ड ने विसिल दी और हरी वत्ती दिखाई। ऐंजिन ने विसिल दी और गाडी मोशन में आ गई। गाडी के मोशन मे आने पर साधना ने देखा एक व्यक्ति उस कम्पार्टमेट की ओर लपका और उसने गाडी का डंडा पकड़ कर कम्पार्टमेट प्रवेश किया।

साधना के आश्चर्य का पारावार न रहा, जब उसने निश्चय से पहिचाना कि आने वाला व्यक्ति कोई अन्य नही, उसका अपना अनिल था। वह बर्थ से उठ कर उसकी ओर बढ गई। उसके दोनो हाथ अपने हाथों मे लेकर कहा, "अनिल! आप तो प्रात: दिल्ली में थे। आपने वहीं से फोन किया था ना मुझे?"

"था तो दिल्ली में ही साधना, परन्तु आना आवश्यक हो गया।" अनिल ने कहा।

दोनों बर्थ पर आ बैठे। साधना बोली, "आप कभी-कभी वड़ी विचित्र बाते करते है अनिल! कही जयपुर से ही तो फोन नही किया था आपने?" कहकर वह हंस पडी। उसे ध्यान ही न रहा कि फोन अनिल ने नही स्वयं उसी ने अशोका होटल मे किया था।

अनिल की हसी आगई साधना की बात पर। उसने साधना को अपने निकट करके कहा, "साधना! फोन मैंने किया था या तुमने?" यह कहकर अनिल ने प्लेन का टिकट साधना के सामने डाल कर कहा, "मैं तुमसे गलत बात क्यों कहता साधना? मेरा जयपुर आने का कोई विचार नही था। तुम आ ही रही थी दिल्ली। मैं प्लेटफार्म पर आकर तुम्हे रिसीव करता, परन्तु काम ही कुछ ऐसा आवश्यक सामने आ गया कि मुझे आना ही पड़ा।"

अनिल साधना की सरलता पर मुद्ध था। साधना ने पूछा, "ऐसा क्या आवश्यक काम निकल आया आपको जो इस प्रकार आना पडा? काम हो गया आपका जिसके लिए आप आए थे?"

"हो जाएगा काम भी। तुम यह बतलाओ, राव साहब ठीक हैं ना! भोजन इत्यादि करने लगे या नही।" अनिल ने पूछा।

"पहले की अपेक्षा काफी ठीक है। फिर भी अकेलापन तो अनुभव करेंगे ही मेरे आने पर। डैडी को अकेला छोड़ने का मन नही हो रहा था। चचा भवानीसिह नित्य संध्या समय फारम से कोठी पर आ जाया करेंगे। मै इस लिए चली आई कि यदि स्टडी एक बार छूट जाती तो छूट ही जाती बस।" साधना ने कहा।

"यह तुमने ठीक सोचा साधना! तीन महीने पश्चात परीक्षाएं आरम्भ हो जाएंगी। अन्तिम वर्ष है तुम्हारी स्टडी का। समय नष्ट नही करना चाहिए था।" अनिल ने कहा।

"यही सोच कर मैंने आने का विचार लिया अनिल।" साधना ने कहा।

अनिल ने विषय बदल कर कहा, "साधना! तुम्हारी मम्मी की हत्या का समाचार प्राप्त कर चचा भावनीसिंह के पिता जयपुर नही आए। आए थे क्या?"

"वह बहुत वृद्ध है अनिल! फिर भी परसों आए थे बेचारे। बहुत दुखी थे।" साधना ने बतलाया।

"क्या वह उदयपुर मे ही रहते है?" अनिल ने पूछा।

"हमारा घरबार सब वही तो है अनिल! हमारी ही हवेली में रह रहे हैं। दादाजी की हत्या के पश्चात डैडी ने वह हवेली उन्ही को दे दी थी। उस केस में उन्होंने और चचा भवानीसिंह ने डैडी का पूरा-पूरा साथ निभाया था। हम लोग करते भी क्या उस हवेली का? खाली पड़ी थी। मैंने तो कभी देखी भी नही है वह। डैडी बतलाया करते है कि वह तीन मंजिल की शानदार हवेली है।" फिर जाने क्या ध्यान आया साधना को। बोली, "चाय लोगे अनिल?"

अनिल मुस्कुरा दिया साधना की बात सुनकर। उसने कहा, "स्टेशन आने दो। वहां चाय भी ले लेंगे। क्या चलती गाड़ी में ही

चाय पिलाओगी मुझे ?"

"चाय मेरे पास है अनिल ! महाराज जी ने थरमस में भर दी थी ।" यह कहकर वह उठी और बास्केट से थरमस निकाल कर अनिल को चाय दी । एक कप स्वयं भी ली । दोनों चाय पीने लगे ।

साधना बोली, "अनिल ! चचा भवानीसिंह के कोठी पर रहते समरसिंह और धीरसिंह वहां आने का साहस नही कर पाएंगे । मुझे डैडी की चिन्ता थी । चचा के वहां रहने पर अब चिन्ता का कोई कारण नही रहा । मम्मी की हत्या करने के विषय में आपका संदेह समरसिंह और धीरसिंह पर ही तो है ना !"

"चलो ठीक किया तुमने साधना ! तुम राव साहब की सुरक्षा की व्यवस्था कर आईं । अपने डैडी को कोठी से इधर-उधर न जाने के लिए कह आई हो ना ! यह आवश्यक बात थी ।"

"जो-जो बाते आपने कहने को कही थी, वे सब मैंने समझा कर उनसे कह दी थी । उन्होंने वचन दिया है कि वह कोठी से बाहर कही नही जाएंगे । वैसे भी उनका इन दिनों कही जाने आने में मन नही है ।" साधना ने कहा ।

"तुम राव साहब की चिन्ता न करो । मैं रणधावा और सानियाल साहब को बोल आया हूं । जो हो गया, वह अनजाने में हो गया । अब राव साहब की ओर कोई आंख भरकर भी नही देख सकता । हत्यारे भी शीघ्र पकड़ लिए जाएंगे ।" अनिल ने कहा ।

साधना बोली, "अनिल ! आप कोई बात कहते है तो मैं समझ लेती हूं कि वह हो गई । मेरे मन में तुरन्त विश्वास हो जाता है । अब आपने यह बात कही तो मन मे निश्चय हो गया कि डैडी सुरक्षित है । यह क्या बात है ? मुझे यह विश्वास क्यों हो जाता है ?"

अनिल ने साधना का सिर अपनी छाती से लगाकर कहा, "साधना ! विश्वास का सम्बन्ध मन से है । मेरी बात तुम्हारे मन को छू जाती है, इसी लिए तुम्हें विश्वास हो जाता है । तुम राव साहब की चिन्ता न

करो। इस षडयंत्र मे समरसिंह और धीरसिंह के अतिरिक्त भी कोई व्यक्ति सम्मिलित है। उस पर निगरानी रखी जा रही है। सानियाल साहब तुम्हारी मम्मी के चोरी गए हारों की तलाश कर रहे है। उस चोरी मे समरसिह और धीरसिंह सम्मिलित मालूम नही देते। जिस व्यक्ति ने वे हार चुराए हैं, उसी ने इस षडयंत्र में समरसिह और धीरसिंह को सम्मिलित कर तुम्हारी मम्मी की हत्या कराई है। उस व्यक्ति पर तुम्हारी मम्मी को संदेह रहा होगा। इसी लिए उसने इस भय से कि कही तुम्हारी मम्मी उसका नाम पुलिस के सामने न खोल दें, उनकी हत्या करा दी।"

साधना आश्चर्यचकित रह गई अनिल की बात सुनकर। उसने कहा, "आप बात को बहुत गहराई से सोचते है। लगता है परमात्मा ने आपको हमारी सहायता के लिए ही भेजा है। यदि यह बात न होती तो उस दिन अनायास ही आपसे मेरी भेट क्यों हो जाती? यदि आप मुझे न मिल गए होते तो इस बीच मैं कितनी चिंतित और असुरक्षित होती। समझ में नही आ रहा कि मेरी उस स्थिति मे क्या दशा होती।"

"सुबह तुम्हारे फोन के पश्चात मुझे रणधावा साहब का फोन मिला था। उन्होंने फोन पर एक सूचना दी थी, जिसे प्राप्त कर मेरा जयपुर आना आवश्यक हो गया था साधना!"

"रणधावा साहब ने आपको क्या सूचना दी थी? क्या कुछ उन्होंने मेरे विषय मे कहा था आपसे?"

"तुम समरसिंह और धीरसिंह को तो पहचानती हो ना!" अनिल ने पूछा।

"खूब पहिचानती हूं। अपने केस के दौरान मैंने उन्हें कई बार न्यायालय में देखा था। पुलिस उन्हें हर पेशी पर न्यायालय में पेश करती थी।" साधना ने बतलाया।

"अलवर-स्टेशन आ रहा है। वे दोनों वहां प्लेटफॉर्म पर मिलेंगे। तुम उन्हें अन्दर से ही देख लेना।" अनिल ने कहा।

साधना चकित रह गई यह बात सुनकर। उसके आश्चर्य का पारावार न रहा। उसने अभी तक यह सोचा भी न था कि अनिल दिल्ली से मात्र उसी की सुरक्षा के लिए आया था। उसने पूछा, "वे लोग यहाँ किस लिए आए है अनिल ?"

"यह सब तुम्हें स्वय ज्ञात हो जाएगा।" अनिल ने कहा।

गाडी अलवर स्टेशन पर रुकी तो अनिल ने अपने चेस्टर की जेब से रिवाल्वर निकाल कर हाथ मे लिया और इस अन्दाज से डिब्बे के द्वार पर जा खड़ा हुआ जिससे उस पर दृष्टि डालने वाले को उसका रिवाल्वर स्पष्ट दिखलाई दे जाए।

साधना खिड़की से झाँक रही थी। उसकी दृष्टि प्लेटफार्म पर इधर-उधर जाने वाले यात्रियो पर थी। वह उनमें समरसिह और धीर सिंह की खोज कर रही थी। कुछ ही क्षण पश्चात उसने देखा दो आदमी उस कम्पार्टमेण्ट के सामने आकर प्लेटफार्म पर खड़े हो गए। उनकी दृष्टि अनिल पर थी। साधना को पहचानने मे विलम्ब न हुआ कि वे समरसिंह और धीरसिंह ही थे।

गाडी जितनी देर स्टेशन पर रुकी, वे वही खडे रहे। दोनों ने परस्पर कुछ बाते भी की, परन्तु कम्पार्टमेण्ट की ओर कदम बढाने का साहस न हुआ, क्योंकि अनिल के हाथ का रिवाल्वर उनकी दृष्टि के समक्ष था। अनिल ने उन्हें देखकर रिवाल्वर को कुछ इस अन्दाज से खोला-भेडा कि जिससे वे उसे भली प्रकार देख कर खतरे को समझ ले और किसी दुस्साहस का विचार न करे।

साधना स्थिति की गम्भीरता को समझ गई। वह एकटक उनकी ओर देख रही थी। उसने सोचा, इसका मतलब उन्हें उसके उस ट्रेन और उस कम्पार्टमेण्ट में यात्रा करने का पूर्व ज्ञान था। उनका वहां आना भी किसी नेक इरादे से सम्भव नही था। तो क्या वे उसकी हत्या करने के विचार से आए थे। नि.संदेह वे इसी लिए आए थे।

जब गाडी चली तो वे निराश स्थिति में पीछे की ओर चल दिए

और अवसर देखकर एक कम्पार्टमेण्ट में प्रवेश कर गए। उन्हे गाड़ी में सवार होते देख, साधना भयभीत हो गई।

अनिल कम्पार्टमेण्ट का द्वार बन्द कर, साधना के पास आ बैठा। उसने साधना के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "अब समझ गईं मेरा जयपुर आना क्यों आवश्यक हो गया था ? यही था मेरा आवश्यक काम। इसी की रणधावा साहब ने मुझे सूचना दी थी। यह काम न होता तो मै मौरिंग में तुम्हे स्टेशन पर रिसीव करता।"

साधना अभी भी स्तम्भित सी थी। वह एक टक अनिल के चेहरे पर देख रही थी। उसके मुख से निकला, "आप न आते तो सम्भवतः मैं दिल्ली न पहुच पाती अनिल ! मेरा शव ही दिल्ली पहुचता। इन लोगों को मेरी यात्रा की पूर्व सूचना थी। ये लोग मेरी हत्या करने के विचार से यहां आये थे।"

"अभी गए कहाँ है वे लोग साधना ! वे दिल्ली तक हमारे साथ चलेगे। बहुत पक्के इरादे से आए है, परन्तु तुम चिन्ता न करो जरा भी। अनिल के रहते किसकी सामर्थ है जो तुम्हारा बाल भी बीका कर सके। ये लोग मेरे शिकजे मे फस कर चकनाचूर हो जाएंगे। इनका नामोनिशान भी शेष न रह पाएगा।" अनिल ने कहा।

साधना की आंखो मे कृतज्ञता के आंसू उभर आए। वह सकरुण वाणी मे बोली, "अनिल ! आप एक असहाय लड़की के सहारा बने है।" यह कहते हुए उसका कण्ठ अवरुद्ध हो गया।

अनिल ने साधना को बाहुओ में भर कर कहा, "यह क्या कहने लगी साधना ? मेरे रहते तुम असहाय कैसे हो ? स्वप्न मे भी कभी यह विचार मन में न लाना।" कहकर अनिल ने बातो की दिशा बदल कर कहा, "आज हम तुम्हे अपने मित्र नारंग का डास दिखाएगे। बहुत अच्छा डासर है। नारंग का नाम तो सुना होगा न तुमने ? इण्डिया फेम का आर्टिस्ट है। राव साहब भी उससे भली भाँति परिचित है। वह आज दिल्ली आ रहा है।"

"वह तो बम्बई के रहने वाले है ना ! गत वर्ष रीगल पर उनका शो था। मैं डैडी के साथ गईदेखने थी। वह वास्तव में बहुत अच्छा डास करते है।" साधना ने कहा।

"कल भी रीगल पर ही उनका वेरायटी शो है। उनकी पत्नी शकुन्तला भी बहुत अच्छा डास करती है, परन्तु तुमसे अच्छा नहीं।" अनिल ने कहा।

"मुझे डांस करना कहाँ आता है अनिल ! मै तो ऐसी ही कुछ···।"

"यह बात नहीं है साधना ! तुम नृत्य में जो भावभंगिमाएं प्रदर्शित करती हो वे अच्छे-अच्छे डांसरों के नृत्य में मिलनी दुर्लभ है। मेरी परख को तुम चुनौती नहीं दे सकती।" अनिल ने कहा।

गाड़ी निश्चित समय पर दिल्ली पहुंची। अनिल ने दो कुलियों को बुलाकर बिस्तर प्लेटफार्म पर उतरवाए। फिर इधर-उधर देखा। समर सिंह और धीरसिंह उनसे कुछ दूरी पर खड़े थे। अनिल ने साधना से कहा, "देख रही हो साधना ! वे सामने समरसिंह और धीरसिंह ही हैं ना ! बेचारों के मन की बात मन मे रह गई। इन्हे अपना पराक्रम दिखाने का अवसर नही मिला, परन्तु इरादा पक्का करके चले है घर से। कुछ करके दिखाने की तमन्ना है दिल मे। इसी लिए दिल्ली तक तशरीफ़ लाए है। हौसले अभी पस्त नही हुए है इनके।" अनिल ने कहा।

साधना उन्हें देखकर कुछ सहम सी गई, परन्तु तुरन्त ही उसने अपने अन्दर साहस बटोरा और मुस्कुरा दी जरा। उसे अनिल की सुरक्षा पर पूर्ण विश्वास था। वह जानती थी कि अनिल के रहते वे उसकी कोई हानि न कर पाएगे।

"साधना ! इन लोगों को तुम्हारे इस ट्रेन से दिल्ली आने की जानकारी थी। इन्होंने प्लान बनाया था अलवर आकर ट्रेन में सवार होने का।" यह कहकर अनिल ने कुलियों पर सामान उठवाया और फर्स्ट-क्लास गेट की ओर चल दिया। साधना को उसने कुलियों और अपने

बीच में कर लिया।

कुछ दूर आगे जाने पर अनिल ने घूमकर देखा तो समरसिंह और धीरसिंह, कुछ अन्तर से, उनके पीछे-पीछे आ रहे थे। उनकी दृष्टि साधना पर थी। अनिल और साधना आगे बढते गए। उन्होने गेट पार किया और टैक्सी-स्टेण्ड की ओर चल दिए। अनिल ने एक बार फिर घूमकर देखा। वे दोनों प्लेटफार्म के पोर्टिगो मे रुक गए थे।

अनिल ने एक टैक्सी मे अपना सामान रखाकर ड्राइवर से कहा, "अशोका होटल चलो।"

टैक्सी चल पड़ी। मार्ग मे साधना कुछ न बोली। सोचती रही कि समरसिंह और धीरसिंह को उसकी यात्रा की सूचना किसने दी। संभव है इन्होंने चचा भवानीसिंह को स्टेशन पर उसकी सीट का रिजर्वेशन कराते देख लिया हो और उनके रिजर्वेशन कराके लौटने पर रिजर्वेशन-क्लर्क से यह सब ज्ञात कर लिया हो। बात समझ मे न आई फिर भी।

होटल जाकर साधना ने अनिल से कहा, "अनिल! ये लोग निश्चित रूप से मेरा पीछा कर रहे थे। इनका इरादा मेरी हत्या करने का था। इन्हे मेरे इस ट्रेन से आने की पूर्व जानकारी थी।"

"अब इसमे संदेह का कोई कारण नही रहा साधना! ये लोग उस दिन भी जयपुर में ही थे जिस दिन तुम्हारी मम्मी की हत्या की गई थी। मैंने अपना सन्देह तुम्हारे डैडी पर लगभग स्पष्ट ही व्यक्त कर दिया था, परन्तु उनकी प्रतिक्रिया विपरीत दिशा में हुई। फिर भी यह बात उनकी ठीक है कि यदि ये लोग अपनी पुरानी शत्रुता का बदला लेने के विचार से कोठी पर गए होते तो तुम्हारी मम्मी की हत्या न करके तुम्हारे डैडी की हत्या करते। इसका मतलब यह हुआ कि ये मूर्ख किसी अन्य चतुर व्यक्ति के हाथों मे खेल रहे है।"

"वह व्यक्ति कौन हो सकता है अनिल?" साधना ने पूछा।

"वह व्यक्ति कौन हो सकता है, यह मैं अभी नही वतला सकता, परन्तु यह निश्चित है कि वह राव साहब के निकटतम सम्पर्क का

व्यक्ति है। भेद खुल जाएगा उसका भी।" अनिल ने कहा।

"अब आप जयपुर कब जायेंगे ?" साधना ने पूछा।

"क्या तुम्हे कोई विशेष काम है जयपुर मे ?" अनिल पूछा।

"नही, ऐसे ही पूछा लिया मैंने।" साधना ने कहा।

"मैं तुम्हे वर्तमान परिस्थिति मे अकेली छोड़कर जयपुर नहीं जा सकता साधना ? देख नही रही हो कितनी भयंकर स्थिति है इस समय। ये दोनों तुम्हारे पीछे लगे है। इन्हे तुमको समाप्त करने के लिए भेजा गया था।" अनिल ने कहा।

"मुझे भय लग रहा है अनिल ! ज्ञात नही क्या होने वाला है। जब से मैंने उन्हे देखा है, मन बहुत उद्विग्न है। उद्विग्नता मात्र अपनी ओर से नही है, डैडी की ओर से भी है।"

"यह क्यों साधना ? क्या तुम्हे अपने अनिल पर विश्वास नहीं है ?" अनिल ने कहा।

"यह न कहो अनिल ! आपके अतिरिक्त विश्वास करने के लिए अन्य है ही कौन साधना के पास ? साधना अपना विश्वास खो सकती है, तुम्हारा नहीं अनिल !"

"तब पूरी तरह निश्चिन्त रहो। आज पहले इन कुत्तो की अक्ल दुरुस्त कराता हूं, फिर अन्य कोई काम करूंगा। इनके तुम्हारा इस प्रकार पीछा करने से स्पष्ट है कि षडयन्त्रकारी अपने कार्य की सिद्धि के लिए उतावला हो उठा है। यह उतावलापन उसके लिए विनाशक सिद्ध होगा और हमें हत्यारे को पकड़वाने मे सफलता प्राप्त होगी।" यह कहकर अनिल ने बैल बजाकर बैरे को बुलवाया और नाश्ते का आदेश दिया।

साधना धीरे-धीरे अपने अन्दर साहस बटोर रही थी। वह मुस्कुराने का प्रयास कर रही थी।

अनिल ने कहा, "अब देखा तुमने साधना ! तुम कितनी बड़ी साधना के पश्चात प्राप्त होने वाली चीज हो ? तुम्हे प्राप्त करना सरल कार्य नही है ना ! तुम्हे प्राप्त करना, सर्प से मणि छीन लेने के समान

है। ठीक है ना मेरी बात ?"

"आपने वास्तव में मेरे लिए स्वयं को विपत्ति में फंसा लिया है अनिल ! अब ये लोग आपसे भी शत्रुता रखने लगेंगे। आपका अक्सर जयपुर जाना-आना रहता है।" साधना ने कहा।

अनिल हंस पड़ा साधना की बात सुनकर। उसने साधना से कहा, "यह साधारण सी बात है साधना ! अनिल इस शत्रुता की चिन्ता नही करता। यदि किसी व्यक्ति को विपत्तियों से खेलने में ही मजा आता हो तो उसे तुम क्या कहोगी ?"

अनिल की साहसपूर्ण बात सुनकर साधना मुग्ध हो गई। उसने अनायास ही कह दिया, "उसे मैं अपना देवता कहूंगी अनिल ! और क्या कह सकती हूं मैं उसे ?"

"विपत्तियों के अन्दर से गुजर कर जो वस्तु प्राप्त की जाती है साधना, वह बहुत प्यारी लगती है। गुलाब के पुष्प को प्राप्त करने के लिए पहले उसके कांटों से जूझना होता है। वही सब तो कर रहा हूं मैं।" अनिल ने कहा।

बैरा चाय-नाश्ता लेकर आ गया। उसने सब सामान मेज पर लगा दिया। दोनों नाश्ता लेने लगे। अनिल ने पूछा, "जानती हो साधना, इस समय समरसिंह और धीरसिंह कहाँ होंगे ?"

"मैं यह सब कैसे जान सकती हूं अनिल ? यहीं कहीं शहर में घूम-फिर रहे होंगे।" साधना ने कहा।

"वे इस समय कहीं विश्वविद्यालय के इर्द-गिर्द चक्कर लगा रहे होंगे तुम्हारी खोज में। सम्भव है तुम्हारे होस्टल के निकट तुम्हारी प्रतीक्षा मे खडे हों। पहले मैं उन्हीं को ठिकाने लगवाता हूं।"

चाय-नाश्ते के पश्चात अनिल ने खड़ा होकर फोन का रिसीवर उठाकर एक्सचेज से एस० पी चौहान का नम्बर माँगा और उससे बातें कीं। उसने कहा, "मैं अनिल बोल रहा हूं। चौहान साहब आज जयपुर से आते समय अलवर-स्टेशन पर मुझे दो गुण्डे दिखलाई दिए। वे एक

लड़की का पीछा कर रहे थे। आप वीरेन्द्र और सितारा को कनाटप्लेस, यूनाइटेड काफीहाउस के सामने भेज दे। मैं उनकी उन गुण्डों से भेंट करा दूगा। जरा खासी मरम्मत करा दीजिए उनकी।"

साधना अनिल के पुलिस-अधिकारियों के साथ इतने घनिष्ट संबंधों को देखकर आश्चर्यचकित थी। प्रसन्न भी थी मन मे कि अनिल समरसिह और धीरसिंह की मरम्मत करायेगा, जो उसकी हत्या करने के विचार से उसका पीछा कर रहे थे। उसके मन में प्रसन्नता की गुदगुदी सी उठने लगी।

रिसीवर फोन पर रखकर अनिल ने साधना से कहा, "चलो, चलते हैं साधना! पहले तुम्हारे समरसिह और धीरसिंह का प्रबन्ध कर दे, फिर तुम्हे नारंग से मिलाने ले चलेगे।"

साधना ने साडी बदली और चलने को उद्यत हो गई। अनिल और साधना नीचे आये, एक टैक्सी ली और अनिल ने ड्राइवर को कनाट प्लेस चलने को कहा।

टैक्सी कनाटप्लेस पहुंचकर यूनाइटेड काफी हाऊस के सामने पहुंची तो अनिल ने उसे वही रुकने को कहा। टैक्सी रुकने पर अनिल और साधना टैक्सी से उतर कर यूनाइटेड काफीहाउस की ओर बढ़े। वीरेन्द्र और सितारा काफीहाउस के सामने खड़े थे।

अनिल ने वीरेन्द्र और सितारा को एक ओर ले जाकर उनसे कहा, "चलो तुम्हे उन गुण्डों को दिखा देता हूं। सावधानी से काम लेना। उनके पास कुछ शस्त्र होने सम्भव हैं।"

"आप चिन्ता न करे। जरा दिखला भर दे मुझे। फिर मैं सब देख लूगा।" वीरेन्द्र ने कहा।

अनिल, साधना, वीरेन्द्र और सितारा टैक्सी में आकर बैठ गए। अनिल ने ड्राइवर को टैक्सी दिल्ली विश्वविद्यालय ले चलने को कहा। ड्राइवर ने गाडी स्टार्ट की और कुछ देर पश्चात वह विश्वविद्यालय के कैम्पस में पहुंच गया। वहां पहुंचने पर अनिल ने ड्राइवर को गाड़ी मन्दी

चाल से चलाने और पूरे कैम्पस का राउण्ड लेने का आदेश दिया। गाडी आर्ट-फैक्लटी, पुस्तकालय तथा विभिन्न कॉलिजों का राउण्ड लेकर बाहर आई। अनिल को समरसिंह और धीरसिंह कहीं दिखाई न दिये तो अनिल ने ड्राइवर को आई० पी० कॉलेज की दिशा में चलने का आदेश दिया।

टैक्सी पहाडी से सीधी मेडेन्स होटल के सामने जाकर आई० पी० कॉलेज की ओर मुड़ने लगी तो अनिल की दृष्टि पान की दुकान पर खडे दो व्यक्तियों पर गई। उसने ड्राइवर को गाड़ी मेडेन्स होटल के अन्दर ले जाकर पार्क करने को कहा।

गाड़ी रुकने पर अनिल वीरेन्द्र और सितारा को अपने साथ लेकर गेट की दिशा मे गया और पान की दूकान पर खड़े दो व्यक्तियों की ओर संकेत करके कहा, "देख रहे हो वीरेन्द्र! वे दो आदमी जो सामने पान की दुकान पर खड़े हैं, इनमे जिसने सूट पहना हुआ है, वह समरसिंह है और कुर्त्ता पायजामा वाला धीरसिंह। समझ गये ना! काम ठीक मेरे आदेशानुसार होना चाहिए। शेष सब मैंने चौहान साहब को बोल दिया है।"

"आप चिन्ता न करें। मैं अभी सब ठीक किये देता हूं।"

साधना टैक्सी में बैठी सोच रही थी कि यह दुबला पतला लड़का वीरेन्द्र और यह नाजुक सी लड़की सितारा समरसिंह और धीरसिंह का क्या कर पायेंगे, परन्तु वह जानती थी कि उन्हे एस० पी० चौहान ने भेजा था, इसलिए उनकी पुश्त पूरा पुलिस-तंत्र था। वह चुपचाप नाटक की दर्शक बनी गाड़ी में बैठी थी। उसके मन मे उस समय पर्याप्त शाति थी, उद्विग्नता न थी। अनिल की कार्यकुशलता मे उसका पूर्ण विश्वास था। एक आस्था जन्म ले चुकी थी अनिल में।

अनिल वीरेन्द्र को समझा और दिखा कर टैक्सी के निकट आया। उसने वीरेन्द्र से पूछा, "नारंग बम्बई से आ गये वीरेन्द्र?"

"बारह बजे तक आ जाएंगे। ओबराय होटल के बारह नम्बर

कमरे में मिलेंगे। 'उन्होंने अपने आर्टिस्टों के ठहराने का प्रबन्ध वही किया गया है।" वीरेन्द्र ने बताया।

"तुम लोग अब अपने काम पर जाओ वीरेन्द्र! हम चलते है। जैसा कुछ हो हमें ओबराय होटल मे सूचना देना। हम पहले अशोका होटल जाएंगे और फिर ओबराय।" अनिल ने कहा।

वीरेन्द्र और सितारा पान की दूकान की दिशा मे चले गए, जहाँ समरसिंह और धीरसिंह खडे थे। अनिल ने ड्राइवर को अशोका होटल चलने का आदेश दिया।

टैक्सी होटल से निकल कर कश्मीरीगेट की दिशा मे बढ चली। साधना ने कहा, "आपने पुलिस अधिकारियो से वास्तव मे बहुत अच्छे सम्बन्ध बनाए हुए है। आपके तनिक से सकेत पर पुलिस के इतने बडे-बडे अधिकारी आपको सहयोग देने को उद्यत हो जाते है। यह क्या बात है अनिल ?"

"मेरा काम ऐसा है साधना! हीरे-जवाहिरात के काम मे बडी धाधली चलती है। बेहद चोरी-डकैती का माल इधर-उधर होता है। यदि मैं इन लोगो से सम्बन्ध बनाकर न रखू तो कही भी धर लिया जाऊ। अभी जैसे मुझे अपने एक व्यापारी को कुछ कीमती हार खरीदवाने है। इस काम के लिए मै महीनों से जयपुर, भोपाल और बम्बई के चक्कर लगाता फिर रहा हूं। खुदा न खास्ता यदि उन हारों मे तुम्हारे चोरी गए हार निकल आएं और उस समय पुलिस मौके पर आधमके तो फंस सकता हूं ना मैं ? ऐसी परिस्थितियो से बचने के लिए मुझे इनसे सम्बन्ध बनाने आवश्यक है। उस समय ये लोग ही मेरी रक्षा करते है। ये जानते हैं कि अनिल कभी कोई गलत काम नही करता। समझ गई ना !" अनिल ने कहा।

"समझी।" साधना ने सरल भाव से कहा।

"अब पहले होटल चलकर खाना खायेंगे। तुम्हे भूख लगी होगी। खाना खाकर नारंग से मिलने होटल ओबराय चलेंगे। तब तक वह

आ भी जाएगा ।" यह कहकर अनिल ने अपनी घड़ी देखी । ग्यारह बज चुके थे उस समय ।

साधना के मन मे नारंग डासर को देखने और उससे परिचय प्राप्त करने की उत्कण्ठा थी । प्रसिद्ध कलाकारो, गायकों, चित्रकारों, कवियों तथा साहित्यकारों से भेंट करने के लिए वह सर्वदा लालायित रहती थी । नारग की ख्याति देशव्यापी हो चुकी थी । उसने कहा, "नारंग से मिलकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी । वह निश्चय ही ख्यातिप्राप्त श्रेष्ठ नृत्यकार है ।"

अनिल ने कहा, "आज समरसिंह और धीरसिंह दोनो की तबियत प्रसन्न हो जाएगी साधना ! उनकी सब गुण्डागर्दी निकाल दी जाएगी ।"

साधना मुस्कुरा कर बोली, "आपने पहलवान ही ऐसे जबरदस्त भेज दिए है उनकी तबियत दुरुस्त करने के लिए अनिल ! डेढ पसली के वीरेन्द्र और एक पसली की सितारा समरसिह और धीरसिंह जैसे हाथी के बच्चों से खूब निपटेगे ।"

साधना की बात सुनकर अनिल हंस पड़ा । उसने साधना के कथन का अभिप्राय समझ कर कहा, "वीरेन्द्र हलका-फुलका अवश्य है साधना, परन्तु है बिच्छू का बच्चा । उसका काटा पानी नही मांगता और वह लड़की सितारा, जो उसके साथ है, उसकी तो बस बात ही न पूछो । उसे तुम साँप की माँवसी समझना ।"

साधना मुस्करा दी अनिल की बात सुनकर ।

गाडी अशोका होटल में पहुंची । अनिल और साधना गाड़ी से उतर कर ऊपर अपने कमरे मे चले गए ।

साधना प्रसन्न थी । समरसिंह और धीरसिंह को देखकर प्रातः उसके मन मे जो चिन्ता और भय व्याप्त हो गया था, वह समाप्त हो चुका था । अब कोई दुश्चिन्ता नहीं थी उसके मन में । अनिल के पास वह स्वयं को पूर्ण सुरक्षित समझ रही थी ।

अनिल ने बैरे को बुलाकर खाने का आदेश दिया।

साधना कमरे से बाहर निकल कर रेलिंग के पास जा खडी हुई। सुहावना मौसम था। धीमी हवा के झकोरों मे उसके बाल हौले-हौले उड रहे थे। दृश्य सुहावना प्रतीत हो रहा था। वहाँ कुछ देर खड़ी रहकर वह इठलाती हुई अन्दर आई तो देखा अनिल के हाथ मे उसकी मम्मी का चित्र था। वह बड़े ध्यान से उन हारों को देख रहा था, जो चित्र मे झलक रहे थे।

साधना अनिल से सठकर उसके निकट आ खडी हुई। उसने पूछा, "क्या देख रहे हो अनिल ?"

"इन हारों को देख रहा हूं साधना! कल मेरे पास हीरे-जवाहिरातो के कई हार आने वाले है। तुम पहिचान तो लोगी ना अपनी मम्मी के हारों को ?"

साधना मुस्कुरा दी अनिल की बात सुनकर। उसने कहा, "पहिचानूगी नही उन्हे ? मम्मी मेरे हर जन्म-दिन के अवसर पर उन्हें मुझे पहनाया करती थी। मेरे हजारो बार के देखे हुए है। नजर के सामने आते ही पहिचान लूगी।"

बैरा खाना लेकर आ गया। उसने सब समाज मेज पर लगा दिया और दोनों भोजन करने लगे।

वीरेन्द्र और सितारा मेडेस होटल से निकलकर पान की दूकान की दिशा मे बढ गये। वीरेन्द्र ने वहां जाकर समरसिंह और धीरसिंह को देखा और समरसिह के कधे पर हाथ रखकर कहा, "भाई समरसिंहजी!

आप यहा कहा ? उदयपुर से कब आना हुआ आपका ?"

इतना सही नाम और उदयपुर से आने की बात सुनकर समरसिंह ने बडे ध्यान से वीरेन्द्र की ओर देखा, परन्तु पहचान नही पाया। पहचानता भी कैसे, पहले कभी देखा तो था नही। फिर भी उसने पहचानने का प्रयास किया।

वीरेन्द्र मुस्कुरा कर बोला, "शायद पहचान नही पाए भाई समरसिंह जी! एक वर्ष से अधिक हो गया भेट हुए। भेंट भी साधारण। मेरा नाम वीरेन्द्र है। आपने और हमने एक साथ बैठकर चाय पी थी उदयपुर मे। याद आया अब ? मैं उदयपुर की सैर करने गया था।"

अब समरसिंह कैसे कहता कि उसने उसे पहचाना नही। वह अब भी याद करने का प्रयास कर रहा था। उसने कहा, "आज ही आया हू भाई वीरेन्द्र जी! मैने सचमुच आपको अभी तक नही पहचाना। इस भूल के लिए क्षमा चाहता हूं।"

समरसिंह की बात सुनकर वीरेन्द्र हस पडा। बोला, "वाह भाई समरसिंह जी! आप हमे इतना शीघ्र भूल गये। हम जिसे एक बार देख लेते है, आजीवन नही भूलते। चाहे क्षणिक भेट ही क्यो न हो ? यह आप के छोटे भाई धीरसिंह ही तो है ना। जब हमारी आपसे भेट हुई थी, यह भी आपके साथ थे।" यह कहकर वह धीरसिंह की ओर मुड़ा और उससे पूछा, "क्यो भाई धीरसिह जी ? क्या आपने भी नही पहचाना हमें ?"

धीरसिंह ने झेंप मिटाने के लिए ऐसे ही कह दिया, "पहचान लिए भाई वीरेन्द्र जी! हम लोगों ने स्टार होटल मे चाय पी थी ना ?"

"होटल का नाम तो मुझे स्मरण नही रहा। हा चाय अवश्य पी थी एक साथ बैठकर। आइये चाय पिलाएं आपको। यहाँ कैसे खड़े हैं आप ? किसी के आने की प्रतीक्षा है क्या ?"

समरसिंह ने वीरेन्द्र को प्रभावित करने के लिये कहा, "हमारे भाई राव वीरेन्द्रसिंह जी यहा राज्य-सभा के सदस्य थे ना!"

"हां हाँ, यह तो आपने उदयपुर मे भी बतलाया था। उनकी लड़की साधना यहा आई० पी० छात्रावास मे रहती है। मेरी यह बहन साधना की क्लास फैलो हो तो है। शायद उसी से मिलना होगा ना आपको।" वीरेन्द्र ने कहा।

"जी हा! उसी से जरा मिलना है। सोचा, जब उदयपुर से आए है तो मिलते ही चले। वरना वह कहेगी कि चचा दिल्ली आये और मिलकर भी नही गए।" समरसिंह ने कहा।

"जब आये है तो मिलकर जाना ही चाहिए। चलिये पहले चाय-नाश्ता लीजिए। साधना से भी मिलवा देगे आपको। लडकियो के छात्रावास मे जाने मे आपको कठिनाई होगी। मेरी बहन बुला लायेगी साधना को।" वीरेन्द्र ने कहा।

समरसिंह यह सुनकर मन मे प्रसन्न हुआ। उसने सोचा, यह ठीक रहेगा। इस लडकी को अपने साथ ले जाकर साधना को बाहर बुलवा लेगे। उसने कहा, "चाय का कष्ट न करिये वीरेन्द्र जी! चाय-नाश्ता तो हम लोग अभी लेकर चले है होटल से। आज हमे लौटना भी है।"

"आइए, आइए। आपसे कब-कब भेट होगी समरसिंह जी। चाय लेकर चले जाइये। मुझे तो अपने ऑफिस जाना है। मै बहन को आपके साथ भेज दूगा।" वीरेन्द्र ने कहा

समरसिंह यह सुनकर और भी प्रसन्न हुआ कि वीरेन्द्र चाय लेकर अपने ऑफिस चला जायेगा। उसकी बहन उनके साथ रहेगी। वह साधना को छात्रावास से बाहर बुला लायेगी। यह विचार कर वह वीरेन्द्र के साथ चल दिया। वीरेन्द्र उन्हे मेडेस के रेस्ट्राँ मे ले गया।

रेस्ट्रा मे जाकर चारो एक मेज पर बैठे। वीरेन्द्र ने चाय-नाश्ते का आदेश दिया।

सितारा खडी होकर बोली, "भय्या वीरेन्द्र! मैं जरा यूरीनल हो आऊं। अभी आई।" यह कहकर वह उठकर अन्दर चली गई और उसने कोतवाली को फोन मिलाकर चौहान को समरसिह और धीरसिंह

के मेडेस होटल-रेस्ट्राँ में होने की सूचना दी। यह सूचना देकर वह रेस्ट्रा में आई और वीरेन्द्र के निकट की कुर्सी पर बैठ गई।

बैरे ने चाय-नाश्ता लाकर मेज पर लगा दिया और चारों चाय नाश्ता लेने लगे। वीरेन्द्र ने खाने का काफी सामान मंगा लिया था। उसे देखकर समरसिंह ने कहा, "भाई वीरेन्द्र जी, आपने तो नाश्ता क्या भोजन का ही प्रबन्ध कर दिया।"

वीरेन्द्र बोला, "बात यह है समरसिंह भय्या! हमारा ऑफिस ऐसी जगह है जहाँ खाने को कुछ नही मिलता और संध्या के छै बजे तक वहा ड्यूटी देनी पडती है। इसलिए मै हैव्वी नाश्ता करके जाता हू। यह नाश्ता करके संध्या तक के लिए निश्चिन्त हो जाता हूं।"

नाश्ता चल रहा था। वीरेन्द्र की दृष्टि बाहर पोर्टिगो पर थी। तभी उसने देखा पुलिस की जीप वहां आकर रुकी और उसके तुरन्त पश्चात्त एक पुलिस इन्सपेक्टर ने चार कास्टेबिल्स के साथ रेस्ट्राँ मे प्रवेश किया।

इन्सपेक्टर ने एक नजर से सब टेबिल्स देखी और फिर वीरेन्द्र की टेबिल पर आकर पूछा, "तुम लोगो मे समरसिह और धीरसिह कौन है?"

वीरेन्द्र ने खड़ा होकर कहा, "आपको धीरसिंह और समरसिह जी से क्या काम है दारोगाजी? यह आपके सामने भाई समरसिंह जी बैठे है और इनकी बगल मे भाई धीरसिह जी। कहिये क्या काम है इनसे?"

इन्सपेक्टर ने सिपाहियों से कहा, "देखते क्या हो? हथकड़ियां डालो इन बदमाशों के हाथो मे और जीप मे ले जाकर बिठलाओ। गुण्डे कही के। लडकियों का पीछा करते है। आज सब गुण्डागर्दी झाड़ दी जायेगी इन बदमाशो की।"

"यह आप क्या कह रहे है इन्सपेक्टर साहब? ये लोग गुण्डे नही, सम्मानित व्यक्ति है राजस्थान के। इनके भाई राज्य-सभा के सदस्य रह चुके है। राव वीरेन्द्रसिह जी का नाम सुना होगा आपने, ये उन्ही के भाई है। दिल्ली का बच्चा-बच्चा उनके नाम से परिचित है। ये

लोग लड़कियों का पीछा नही कर सकते ।" वीरेन्द्र ने कहा ।

"हाँ हाँ, सुन लिया हमने । हम सब जानते है । हमारा काम ही ऐसे गुण्डों को ठीक करना है । इन गुण्डो को तुम सम्मानित व्यक्ति कहते हो । क्या नाम है तुम्हारा ? तुम्हे भी ठीक करना होगा ।" यह कहकर इन्सपेक्टर ने सिपाहियों से कहा, "डालो हथकडियां और ले चलो इन्हे कोतवाली । देख क्या रहे हो ?"

वीरेन्द्र बोला, "यह आप क्या कह रहे है इन्सपेक्टर साहव ! इन्हे अपनी भतीजी से मिलने जाना है। वह आई० पी० कॉलेज के छात्रावास मे रहती है । मेरी बहन की क्लास फैलो है । आप चाहे तो मेरी बहन से ज्ञात कर सकते हैं उसके विषय मे । मैं असत्य नही कह रहा, ये लोग बहुत ऊंचे घराने के है ।"

"कोतवाली मे जाकर सब पता चल जायेगा कि ये कितने ऊंचे घराने के है । तुम खुद भी शायद किसी महाराजा की औलाद हो । अगर तुमने और जियादा जुबान चलाई तो तुम्हें भी इनके साथ चलना होगा ।" इन्सपेक्टर ने कहा ।

वीरेन्द्र चुप हो गया । सिपाहियों ने समरसिंह और धीरसिंह के हाथों मे हथकडिया डाल दी और उन्हे रेस्ट्राँ से बाहर ले जाकर जीप मे विठा लिया । जीप चली गई ।

रेस्ट्रा का मैनेजर वीरेन्द्र को पहचानता था । उसने उसके निकट आकर पूछा, "यह क्या किस्सा था वीरेन्द्र जी ?"

"कोई विशेष नही था मैनेजर साहब ! ये लोग किसी लडकी के पीछे लगे हुए थे । पुलिस पकड कर ले गई । वस यही माजरा है ।" कहकर वीरेन्द्र हंस पड़ा ।

इन्सपेक्टर समरसिंह और धीरसिंह को कोतवाली ले गया । वहां ले जाकर उन्हे चौहान के सामने पेश किया गया ।

चौहान ने कहा, "इन वदमाशों को हवालात मे ले जाकर बन्द कर दो और इनसे पूछो कि ये दिल्ली किस लिए आये है ।"

इन्सपेक्टर समरसिंह और धीरसिंह को अन्दर लिवाकर ले गया। वहां उनकी खासी पिटाई की गई और उनसे दिल्ली आने का कारण पूछा गया तो उन्होने बतलाया कि वे अपनी भतीजी साधना से मिलने जा रहे थे। वह दिल्ली विश्वविद्यालय मे पढती है।

इन्सपेक्टर ने यह बात चौहान को बतलाई तो उसने कहा, "यह बात इनसे लिखाकर उस पर दोनो के हस्ताक्षर ले लो। पिटाई जरा अभी कम हुई है इनकी। थोडी और होनी चाहिये। यह सब करके इन्हें हवालात मे बन्द कर दो।"

इन्सपेक्टर ने अन्दर जाकर पहले समरसिंह और धीरसिह से वह कागज लिखाया जो चौहान ने कहा था। उस पर दोनो के हस्ताक्षर लेकर उस दिन की तारीख डलवाई और फिर उनकी अच्छी खासी मरम्मत करके उन्हे हवालात मे बन्द कर दिया।

वीरेन्द्र और सितारा मेडेन्स होटल से कोतवाली जाकर चौहान से मिले तो उसने उन्हे समरसिह और धीरसिह की पिटाई का वृतान्त सुनाकर, वह कागज जो समरसिह और धीरसिह से लिखाया था, देकर कहा, "यह कागज अनिल बाबू को दे देना और उन्हे बतला देना कि उनकी खासी मरम्मत करा दी गई है। दोनो हवालात मे बन्द है।"

वीरेन्द्र ने कागज लेकर घडी देखी। एक बजकर बीस मिनट हुए थे। फिर ओबराय होटल फोन करके ज्ञात किया कि अनिल वहा पहुचा अथवा नही। अनिल ने स्वयं उसका फोन रिसीव किया और उसे ओबराय होटल बुलाया।

चौहान ने वीरेन्द्र से कहा, "तुम मिल आओ अनिल बाबू से जाकर। फिर मुझे आकर बतलाना कि इनका क्या किया जाए।"

वीरेन्द्र और सितारा पुलिस की जीप लेकर ओबराय होटल गए। वहाँ नारंग के कमरे मे अनिल और साधना दोनों ही बैठे हुए थे। अन्य कोई व्यक्ति नही था।

अनिल ने पूछा, "क्या कुछ कर आए वीरेन्द्र ?"

वीरेन्द्र ने वह कागज, जो चौहान ने उसे दिया था, अनिल को देकर कहा, "खासी मरम्मत करा दी है दोनों की। इस समय दोनों हवालात मे बन्द है। चौहान साहब ने पूछा है कि अब उनका क्या किया जाए। आप कहे तो उनका चालान कटाकर उन्हे जेल भेज दे, या फिर जैसा आप कहे, वैसा किया जाए।"

साधना को अनिल का प्रत्येक कार्य आवश्यकता से अधिक आश्चर्य मे डालने वाला लगता था। समरसिंह और धीरसिंह को इस प्रकार पकडवा कर उनकी पिटाई कराना कम आश्चर्य की बात नही थी उसके लिए। उसकी समझ मे कुछ न आया।

अनिल ने कागज साधना को देखकर कहा, "यह कागज रणधावा साहब के काम आएगा साधना! अब तो तुम्हे शका नही रही ना कि समरसिंह और धीरसिह के दिल्ली आने का क्या प्रयोजन था? उनका प्यार उमडा पड रहा है अपनी भतीजी से मिलने के लिए। तुमसे मिलने के लिए वेताब है वे दोनो। अब तुम स्वय समझ सकती हो कि राव साहब और चचा भवानीसिंह कितनी भयंकर गलतफहमी मे है। है ना गलत-फहमी मे? हमारा अनुमान ठीक निकला ना! हमने पहले ही दिन इन दोनों पर सदेह प्रकट किया था।"

साधना आश्चर्यचकित दृष्टि से अनिल की ओर देख रही थी। फिर मुस्कुरा कर बोली, "सचमुच आपका अनुमान सही निकला अनिल! जिन्हे आपने प्रथम दिन अपराधी समझा था, उनके विषय मे डैडी और चचा को अभी तक किंचित मात्र भी सन्देह नही है। वे यह सोच ही नही रहे कि ये लोग यह कार्य करने का साहस भी कर सकते है।"

अनिल ने कहा, "इन दोनों के अतिरिक्त हमारा एक अन्य व्यक्ति पर भी संदेह है, जिसके सकेत पर यह षडयंत्र रचा गया है। वह इनसे भी भयकर छिपा हुआ रुस्तम है। क्षमा करना साधना! मै उसका नाम तुम्हे अभी नही बता पाऊगा।"

साधना मुस्कुरा दी अनिल की बात सुनकर। उसने कहा, "न

वतलाएं आप उस व्यक्ति का नाम । मुझे करना भी क्या है उसके नाम को जानकर ? उसका नाम जानकर भी मै आपकी क्या सहायता करने में समर्थ हूगी ।"

वीरेन्द्र ने पूछा, "प्रदीप जी नही आए अभी ?"

"वह अपनी पत्नी के साथ मार्केटिंग के लिए गए है । आते ही होगे। तुम चौहान साहब के पास जाओ । उनसे कहना कि उन्हे जेल भेजने की आवश्यकता नही है । थोडी और मरम्मत करके छोड दिया जाए । उनसे कह दे कि यदि वे दिल्ली में रुके तो उन्हे जेल भेज दिया जाएगा। तुम होशियरी से उन पर यह जाहिर करना कि उन्हे चौहान ने तुम्हारे कहने पर छोडा है। तुम उन्हे जयपुर जाने वाली गडी मे बिठला आना । समझ गए मेरा मतलब ?" अनिल ने कहा ।

वीरेन्द्र और सितारा के चले जाने पर अनिल ने साधना से कहा, "साधना ! अपना वीरेन्द्र निकला ना करामती लडका ? देखा तुमने इस डेढ पसली के लडके ने उन हाथी के बच्चो को कैसी मात दी । यह खेल शारीरिक शक्ति का नही, मस्तिष्क की शक्ति का है ।"

साधना प्रसन्न थी उस समय । समरसिह और धीरसिंह की पिटाई होने के समाचार ने उसके उद्विग्न मन को शाति प्रदान की थी । तभी उसे कुछ ध्यान आया । उसने अनिल से पूछा, "यह प्रदीप जी कौन है जिनके विषय मे वीरेन्द्र पूछ रहा था ?"

"प्रदीप नारंग का बचपन का नाम है साधना ! हम लोग जब आपस मे बाते करते है तो बचपन के नामो से ही एक दूसरे को सम्बोधित करते है ।" अनिल ने बतलाया ।

"क्या आपका भी बचपन का नाम कुछ और है ?" साधना ने पूछा ।

इससे पूर्व कि अनिल साधना की बात का उत्तर देता, कमरे का द्वार खुला और नारंग तथा शकुन्तला ने कमरे मे प्रवेश किया । नारंग की दृष्टि अनिल पर गई तो उसके हर्ष का पारावार.न रहा । उसने आगे बढ़कर अनिल की कौली भरकर कहा, "अनिल ! तुम तो जैसे खो ही

गए थे। बहुत दिन पश्चात आज भेंट हो रही है। मैं इधर जब भी दिल्ली आया तो मैंने तुम्हारी खोज की, परन्तु ज्ञात हुआ कि तुम बाहर गए हुए हो। तुम्हारी भाभी नित्य ही तुम्हें याद कर लेती हैं। यह तुम्हारे नृत्य और संगीत की सबसे बडी प्रशसक है।"

अनिल ने शकुन्तला को नमस्कार किया।

शकुन्तला ने साधना की ओर सकेत करके पूछा, "यह हीरा कहां से चुराया है अनिल ? सुना है आजकल तुम हीरे के जबरदस्त पारखी बन गए हो। हमने बम्बई के जौहरी-बाजार में तुम्हारे नाम की ख्याति सुनी है।"

'आपकी यह बात गलत है भाभी ! मैं क्या चोरी करता हू किसी की ? यह पेशा तो आप लोगों का है। आपने नारंग की चोरी की तो नारंग ने आपको बन्दिनी बना लिया। नारंग हमसे चतुर और अनुभवी है। इसलिए इन्होने आपको बन्दिनी बनाने मे एक क्षण न लगाया। आप पर इनकी नजर पडी और आप गिरफ्तार कर ली गई।" यह कहकर अनिल ने साधना की ओर देखकर कहा, "हम नारंग से कम अनुभवी थे इस लिए यह हमे चकमा देकर भाग निकली और डेढ़ वर्ष तक फरार रही। बहुत परेशान किया हमे, परन्तु कब तक करती परेशान? अभी जब हम जयपुर जा रहे थे तो यह हमारी नजर मे फंस गई। मजेदार बात देखिए भाभी ! यह हमारी चोरी करके फरार हुई और फिर भूल ही गए हमे। इन्हे याद ही न रहा कि इन्होंने कभी हमारी चोरी भी की थी। परन्तु हमारी तो चोरी हुई थी। हम कैसे भूल सकते थे इन्हे ? हमने देखा और पहिचान लिया अपने चोर को।"

साधना अनिल की लच्छेदार बात सुनकर मन-ही-मन मुग्ध थी। वह मुस्कुरा रही थी ये बाते सुनकर। इस प्रकार की बातें सुनने का उसे यह प्रथम अवसर प्राप्त हुआ था।

शकुन्तला ने आगे बढकर साधना को अपनी बाहुओ मे भर लिया। उसे बहुत अच्छी लग रही थी साधना। उसने मुस्कुराते हुए कहा, "तम

बहुत झूठे हो अनिल ! मैं तुम्हारी बात का विश्वास नही कर सकती। हीरा भी कही किसी की चोरी करता है। वह तो स्वय ही तुम सरीखे चोरों द्वारा चुरा लिया जाता है।"

"आप तो यह कहेगी ही भाभी ? चोर-चोर मौसेरे भाई बन जाते है, परन्तु आपको हमारी नजर की दाद देनी होगी। आपने देखा, हमारी नजर कितनी पैनी है। हमारी नजर से बचकर भाग जाना सरल काम नही है। एक-न-एक दिन पकड ही लिया जाता है अपराधी। कहा तक बचा-बचा फिर सकता है वह ?" अनिल ने कहा।

नारंग ने पूछा, "जयपुर से कब आए अनिल ?"

"आज ही सुबह की ट्रेन से।"अनिल ने बतलाया।

"राव साहब की पत्नी के हत्यारो का कुछ पता चला ? रणधावा ने किसी को एरेस्ट किया ?" नारग ने पूछा।

"छानबीन कर रहे है बेचारे। राव साहब और उनके भाई भवानी सिह किसी पर सदेह ही प्रकट नही कर रहे। वे किसी का नाम ले तो वह उस व्यक्ति पर हाथ डाले।" अनिल ने बतलाया।

"केवल हत्या ही की गई है ना ! हत्यारे कुछ माल तो उठा कर नही ले गए ?" नारग ने पूछा।

"केवल हत्या और वह भी राव साहब की पत्नी की। राव साहब पर फायर तक नही किया गया। मानो हत्यारे मात्र उनकी पत्नी की ही हत्या करने आए थे। माल तो पहले ही काफी उठाकर ले जा चुके थे। सम्भव है राव साहब की पत्नी को माल उठा कर ले जाने वाले पर सदेह रहा हो और उसे उसका संकेत मिल गया। इसी लिए उनका मुह बन्द करने को उसने उनकी हत्या कर दी। लगता है कोई व्यक्ति राव साहब की सम्पूर्ण सम्पत्ति का अधिकारी बनने का स्वप्न देख रहा है।"

नारंग ने अनिल की बात पर विचार करके कहा, "तुम सही दिशा मे सोच रहे हो अनिल ! तुम्हारा अनुमान शतप्रतिशत सही निकलेगा।"

साधना इन बातों को सुनकर आश्चार्य मे डूब गई। उसकी समझ मे वह व्यक्ति न आया जिस पर उसकी मम्मी अपने हारों की चोरी का संदेह कर सकती थी। यदि उन्हे किसी पर संदेह होता तो निश्चित रूप से उसकी चर्चा डैडी से करती और अब मम्मी की हत्या होने पर डैडी को भी उस व्यक्ति पर संदेह हुआ होता। यह बात सच है तो डैडी ने उस व्यक्ति का नाम रणधावा साहब को क्यो नहीं बतलाया। यह रहस्य उसकी समझ में न आया।

नारंग कुछ देर अपने मस्तिष्क मे इस गुत्थी को सुलझाने का प्रयास करता रहा। फिर अचानक ही उसे कुछ ध्यान आया। उसने कहा, "अनिल! राव साहब के पिता जी की भी तो हत्या की गई थी ना! उस केस मे उनके एक चचा और उनके दो लडकों को दण्डित किया गया था। उनके वे लडके जेल से मुक्त हो चुके होंगे अब तक?"

अनिल ने बतलाया, 'वे दोनो कभी के मुक्त हो चुके।"

'तब तो सम्भव है इस हत्या मे उन लोगो का भी हाथ रहा हो।" नारग ने कहा।

अनिल ने कहा, "वे दोनो इस हत्या मे सम्मिलित अवश्य है नारंग, परन्तु मुख्य भूमिका उनकी नही है। नाटक का सूत्रधार कोई अन्य व्यक्ति है, जो पर्दे के पीछे रहकर नाटक का संचालन कर रहा है। उसकी सहायता के बिना यह घटना नही घट सकती थी। जब तक उस व्यक्ति का निश्चित रूप से पता न चल जाए, तब तक रणधावा साहब का किसी पर हाथ डालना व्यर्थ है।"

"तब तो राव साहब के लिए भी किसी क्षण सकट की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।" नारग ने सशंकित होकर कहा।

"इसका रणधावा साहब ने समुचित प्रबन्ध किया हुआ है। हत्यारा भी इस स्थिति से परिचित है। वह जानबूझ कर स्वयं को आग मे झोंकने के लिए उद्यत न होगा। वह जो भी है, समझदार व्यक्ति है और काफी सोच-समझ कर कदम बढा रहा है।"

साधना नरग के मुख से अपने परिवार के सम्बन्ध मे इतनी व्यापक जानकारी प्राप्त कर स्तम्भित सी रह गई। उसकी समझ मे न आया कि नारग को यह सब जानकारी कैसे थी। वह अनिल और नारंग की बाते समझने का प्रयास कर रही थी, परन्तु समझ मे कुछ आ न रहा था। विशेष रूप से अनिल की बात की गहराई मे जाने की उसमे क्षमता न थी, परन्तु यह स्पष्ट ही था कि अनिल जो कुछ कर रहा था वह उसके हित मे था। उसे अनिल से बडा अपना अन्य कोई हितैषी दिखलाई नही दे रहा था।

नारंग बोला, "अनिल! तुम आज मिल गए यह बहुत अच्छा हुआ। बम्बई मे फिलम-फेस्टीवल होने के कारण मेरे कुछ आर्टिस्ट दिल्ली नही आ पाए। मैं सोच रहा था कि कही मेरा आज का वेराइटी शो अपसेट न हो जाए। तुम्हारे आ जाने से सब ठीक हो जाएगा।"

अनिल बोला, "देखो भाई नारंग! अब हम अकेले स्टेज पर नही आ सकते। यदि तुम साधना जी को भी इनवाइट करो तो हम अवश्य आ सकते है।"

अनिल की बात सुनकर नारंग बोला, "मै तो भूल ही गया था अनिल! साधना तो तुमसे अच्छी आर्टिस्ट है। अब चिन्ता का कोई कारण ही नहीं रहा। चलो अब तुम्हे शकुन्तला की मौसी जी से मिला लाते है। वह बहुत याद करती हैं तुम्हें। तुम मे न मालूम ऐसी क्या जादू की कोशिश है कि जिससे एक बार मिल लेते हो, उसे सर्वदा के लिए अपना बना लेते हो।"

साधना संकोच से गड़ी जा रही थी। सोच रही थी कि अनिल ने आज अच्छा फसाया। आज उसे अनिल के साथ स्टेज पर जाना होगा। वह कैसे कर पाएगी यह सब? वह तो कभी इस प्रकार स्टेज पर गई नही। संतोष मन मे यही था कि अनिल उसके साथ होगा। मन मे कुछ संकोच सा भी था और प्रसन्नता भी। स्टेज पर वह पहले भी कई बार गई थी, परन्तु उस स्टेज मे और इस स्टेज मे आकाश-पाताल का

अन्तर था। वह प्रतियोगिताओं की स्टेज थी और यह नई दिल्ली रीगल सिनेमा की स्टेज, जिस पर सिद्धहस्त कलाकार ही आते हैं।

'क्या सोच रही हो साधना ?" अनिल ने पूछा।

"सोचने योग्य छोड़ी कहां है आपने ? आपने तो मुझे अचानक ही उठकर स्टेज पर पटक दिया।" साधना ने कहा।

"पानी मे तैरना ऐसे ही सिखाया जाता है साधना !" कहकर अनिल मुस्कुरा दिया।

नारंग ने कहा, "चलो भाई अनिल ! लौटना भी है फिर।"

सब लोग नीचे आए। शकुन्तला की गाड़ी सामने खड़ी थी। उसमें बैठ कर सब लोग सुन्दरनगर चले गए।

९

अनिल और साधना सुन्दरनगर मे शकुन्तला की मौसी से भेट करके अशोका होटल लौटे तो मार्ग में साधना ने अनिल से पूछा, "आपके मित्र नारंग डैडी के विषय में इतना सब कुछ कैसे जानते हैं अनिल ?"

"राव साहब कला-प्रेमी व्यक्ति है और नारंग एक श्रेष्ठ कलाकार। दोनों का काफी पुराना परिचय है। वह मेरा मित्र नारंग ही तो था जिसके साथ मैं तुम्हारी कोठी पर गया था साधना। नारंग राव साहब के विषय मे वह सब जानता है जो सम्भवत तुम्हारी मम्मी ही जानती होंगी। वह सब तुम भी नहीं जानती।"

"आपकी बात ठीक है अनिल ! बच्चे बडों के जीवन से पूर्णत: परिचित हो भी कैसे सकते है ? दोनों का पारस्परिक संकोच उन्हें उनके

निजी रहस्यों मे प्रविष्ट नहीं होने देता। वच्चों का उनमें प्रवेश करना उचित भी नही है।"

टैक्सी अशोका होटल पहुची। अनिल और साधना काउण्टर पर आए तो देखा वहां वीरेन्द्र और सितारा खडे थे। अनिल उन्हे अपने साथ ऊपर अपने कमरे में ले गया। वहाँ जाकर अनिल ने पूछा, "क्या वना उन लोगों का वीरेन्द्र ?"

"आपके आदेशानुसार उनका जयपुर के लिए टिकट कटा दिया गया। मैं स्वय उन्हे गाडी पर चढाकर आया हू। बेचारो के चोटें कुछ अधिक ही आ गई। धीरसिंह की अपेक्षा समरसिंह की पिटाई अधिक हो गई।" वीरेन्द्र ने कहा।

साधना को यह सुनकर हार्दिक संतोष हुआ, परन्तु वह भयभीत भी हुई कि कही वे लोग जयपुर जाकर कोई अनर्थ न कर डाले। उसे अपने डैडी की चिन्ता हर समय बनी रहती थी।

वीरेन्द्र और सितारा यह समाचार देकर जाने लगे तो अनिल ने कहा, "भिक्खीमल जैन के पास हो आना वीरेन्द्र! उसे बोल देना कि हमारा व्यापारी कल दिल्ली आ जाएगा। वह हार लेकर यहाँ आ जाए। रुपयां कश पेमेण्ट करा दिया जाएगा।"

"मैं उनके पास होता हुआ चला जाऊंगा।" वीरेन्द्र ने कहा।

नारंग के शो का समय छ: बजे का था। अनिल ने घडी देखी। पांच बज रहे थे। उसने कहा, "चलो साधना! नारंग के शो का समय हो गया। पाच बज रहे है।"

"आज आप मेरा मजाक बनवाकर रहेगे!" साधना ने कहा।

"नही-नही, ऐसी कोई बात नही है। चलो शीघ्रता करो।" अनिल ने कहा।

दोनों तैयार होकर रीगल पर पहुंचे तो देखा दर्शको की अपार भीड़ थी। भीड को देखकर साधना कुछ सकुचाई, परन्तु साहस से काम लिया। दोनों अन्दर पहुचे। नारंग और शकुन्तला उनकी प्रतीक्षा मे थे।

"शो का ओपिनिंग तुम्हारे गीत से होगा अनिल !" नारग ने अनिल से कहा।

"यह कैसे हो सकता है नारग ? तुम भी भाभी की तरह घर फोड़ने की बाते करने लगे। हमने साधना जी को वचन दिया है कि शो का ओपिनिंग इन्ही के गीत से होगा। चलो भई साधना। तैयार हो जाओ।"

नारग मुस्कुरा कर बोला, "जैसा तुम उचित समझो अनिल ! तुम्हारे वचन का निर्वाह तो हमें करना ही होगा। तुरन्त तैयारी करो। केवल दस मिनट शेष है।"

ठीक छै बजे शो आरम्भ हुआ। साधना के मधुर संगीत ने श्रोताओं को मन्त्र-मुग्द्ध कर दिया। हॉल मे पिन-ड्रॉप साईलेस थी। नारंग और शकुन्तला साधना का गीत सुनकर आश्चर्यचकित रह गए। उन्होने कल्पना भी न की थी कि साधना का परफार्मेन्स इतना कलात्मक होगा और प्रभावशाली होगा।

शकुन्तला अनिल के निकट आकर बोली, "साधना तो बहुत अच्छा गाती है अनिल ! मैं समझ रही थी तुम ऐसे ही प्रशंसा कर रहे हो।"

अनिल ने कहा, "साधना का स्वर वास्तव में बहुत मधुर है भाभी ! देख नही रही कितनी लोच है इसमे। इस समय तनिक चिन्तित है अपनी पारिवारिक परिस्थितियों के कारण। माँ की मृत्यु का शोक कम नही होता। यहाँ आकर इनका मन कुछ ठीक होगा, इस लिए मै अपने साथ ले आया था। कभी जब मूड में होगी, तब सुनना साधना का गाना। बहुत प्यारा गाती है। मीरा के गीत गाते समय प्रतीत होता है साक्षात मीरा सामने खडी है।" अनिल ने कहा।

नारंग निकट आकर बोला, "अनिल ! तुमने आज हमारा शो सफल बना दिया। साधना के स्वर-माधुर्य का वास्तव मे कोई जवाब नही। हमने कल्पना भी न की थी कि साधना इतना अच्छा परफार्मेन्स दे पाएगी।"

साधना का गीत समाप्त हुआ तो दर्शकों की तालियों की गड़गडा-हट से हॉल गूज उठा। श्रोताओ ने उसके सगीत की मुक्त कण्ठ से सराहना की।

उसके पश्चात नारग और शकुन्तला मंच पर आए। दोनों को पेयर-डांस प्रस्तुत करना था। साधना उसे देखने के लिए एक कोने मे जा खडी हुई। अनिल ने कहा, "चलो साधना ! अन्दर हॉल मे चल कर बैठते हैं। वहाँ से देखना नारंग और भाभी का डास। भाभी भी खूब नाचती है।"

अनिल साधना को अपने साथ लेकर अन्दर हॉल में गया और दोनो सोफे पर जा बैठे। नारंग का डास देखकर साधना ने कहा, "अनिल ! नारग श्रेष्ठ कलाकार है। जीजी भी बहुत सुन्दर नृत्य करती है। दोनों ही अद्वितीय कलाकार है।"

"नारंग माना हुआ डांसर है साधना ! भाभी के साथ नृत्य करते समय तन्मय हो जाता है, परन्तु अपनी जोडी भी कम नहीं रहेगी।" अनिल ने कहा।

"क्या आप मुझे नृत्य करने लिए भी बाध्य करेंगे ? परन्तु···।"

"परन्तु की क्या बात है साधना ? मेरे साथ स्टेज पर जाकर तो तुम एसे ही नाचने लगोगी। आज भाभी को मात देनी है तुम्हे। यह भी क्या याद रखें कि कोई ·····बस समझ गईं ना।"

साधना मुस्करा दी अनिल की बात सुनकर।

इण्टरवल तक दोनों हॉल मे बैठे शो देखते रहे। उसके पश्चात अन्दर स्टेज पर गए तो नारंग ने पूछा, "तुम कहाँ चले गये थे अनिल ? मै तो तुम्हे बधाई देने के लिए खोज रहा था। साधना के संगीत ने हमारे शो को चार चाँद लगा दिए। बहुत ही मधुर स्वर है साधना का।"

"हम लोग अन्दर बैठे तुम्हारा और भाभी का डास देख रहे थे नारंग !" अनिल ने कहा।

"आप और जी जी दोनो ही श्रेष्ठ कलाकार है। मैने ऐसा मनोहार नृत्य पहले कभी नही देखा। मन प्रसन्न हो गया आपका नृत्य देख-कर।" साधना ने सरल भाव से कहा।

"अब इण्टरवल के पश्चात तुम्हे और अनिल को हमारा मन प्रसन्न करना होगा साधना जी।" नारंग ने कहा।

"मैं तो कभी इस प्रकार के स्टेज पर आई नही नारंग जी। संकोच हो रहा है। भय सा लग रहा है कि कहीं मै जनता के उपहास की सामग्री न बन जाऊं।" साधना ने कहा।

"यह संकोच तभी तक रहता है जब तक कलाकार स्टेज पर नही जाता। स्टेज पर जाकर कला-प्रदर्शन की उमंग इस भय और संकोच को समाप्त कर देती। शकुन्तला को भी हम इसी प्रकार स्टेज पर लाए थे। क्यो शकुन्तला, याद है ना जब हम तुम्हारा हाथ पकडकर तुम्हे खीचते हुए स्टेज पर ले गए थे। फिर स्टेज पर जाकर तुमने कितना कलात्मक नृत्य प्रस्तुत किया था ?" नारंग ने कहा।

इण्टवरल के पश्चात शो आरम्भ हुआ। अनिल और साधना स्टेज पर आए। साधना का नृत्य देखकर नारग और शकुन्तला मुग्ध हो गए। मन प्रसन्न हो गया। नारग के मुख से अनायास ही निकला, "नृत्य और सगीत की की साक्षात प्रतिमा। अनिल को ऐसी ही पत्नी मिलनी चाहिए थी शकुन्तला!"

शो समाप्त होने पर नारग ने कहा, 'अनिल! तुम्हारी जोडी देख कर मन प्रसन्न हो गया। अब बतलाओ तुम साधना को अपने साथ लेकर बम्बई कब आ रहे हो ?"

"जब बुलाओगे तब आ जाएंगे नारंग! बम्बई आने मे क्या लगता है ? जरा इनका उन गुण्डो से पिण्ड छुडवा दू। कल जब यह जयपुर से आ रही थी तो दो गुण्डे इनके पीछे लग लिए। चौहान साहब से उनकी पिटाई कराके उनका आज ही जयपुर के लिए पार्सल कराया है।" अनिल ने कहा।

"चौहान बड़े काम का आदमी है अनिल ! इसने दिल्ली मे होने वाली सब गुण्डागर्दी समाप्त कर दी। बदमाश थर्राते है इसके नाम से। पुलिस ऑफीसर ऐसा ही होना चाहिए। तुम्हारा मित्र रणधावा भी ऐसा ही दबग ऑफीसर है।" नारंग ने कहा।

"अब हम चलते है नारंग !" अनिल बोला।

"क्या मतलब ? इस प्रकार कैसे जा सकते हो तुम ? हमारे साथ भोजन करके जाना। शकुन्तला की मौसी ने तुम दोनों को विशेष रूप से बुलाया है।" यह कहकर नारंग ने साधना की ओर देखा। उससे कहा, "साधना जी ! शकुन्तला की मौसी भी कुछ वर्ष पूर्व बहुत अच्छी डासर रही है। उन्होने हमारे साथ स्टेज पर नत्य किया है। अब उन्हों ने नत्य से सन्यास ले लिया है।"

नारंग ने अन्य कलाकारों को विदा किया और फिर शकुन्तला, अनिल और साधना को साथ लेकर सुन्दरनगर गया। शकुन्तला की मौसी ने भोजन का प्रबन्ध किया हुआ था। सबने एक साथ बैठकर भोजन किया।

भोजन के पश्चात नारंग और शकुन्तला अनिल और साधना को अशोका होटल छोडने गये। अनिल और साधना ऊपर अपने कमरे मे पहुचे तो साधना ने अपना पर्स खोलकर देखा। पर्स मे उसने देखा बहुत से रुपए भरे थे। उन्हे देखकर साधना आश्चर्य से बोली, "अनिल ! जरा देखना तो। मेरे पर्स में ये ढेर सारे नोट कहां से आगए। इतने नोट तो इसमे नही थे ?"

अनिल मुस्कुरा दिया साधना की बात सुनकर। उसने कहा, "इन्हे पर्स मे रख लो साधना ! ये रुपए तुम्हे भाभी ने मुह दिखाई के दिए होंगे। जरा गिन कर तो देखो कितने है।"

साधना ने रुपए गिनकर देखे। पूरे दो हजार थे। उसने अनिल को बतलाया तो अनिल बोला, "केवल दो हजार ! पाच हजार भी नही। यह तो भाभी ने कुछ भी नही दिए। मेरी साधना का मुंह केवल

दो हजार रुपए मे ही देख लिया। बड़ी कंजूस है भाभी। तुम बुरा न मानना साधना !"

"आप मजाक कर रहे है !" साधना ने कहा।

"मजाक की इसमे क्या बात है साधना ? क्रोध आने की बात है यह तो। जरा पहुच जाने दो उन्हें कोठी पर। फोन करके पूछूगा कि उन्होने यह कजूसी क्यों बरती। बहुत बुरी बात है यह तो। मैं सहन नही कर सकता इसे।" अनिल ने कहा।

"नही नहीं, फोन न करना अनिल ! लगता है भाभी ने भूल से मेरे पर्स को अपना पर्स समझ कर ये रुपए इसमे रख दिए है। उनसे ऐसे ही ज्ञात कर लेना कि यह कैसे हुआ।" साधना ने कहा।

साधना की बात सुनकर अनिल को हंसी आ गई। उसे साधना की गम्भीर मुख-मुद्रा बहुत प्यारी लगी। बोला, "तुम भाभी को अभी नही जानती हो साधना ! जितनी यह ऊपर से देखने मे भोली लग रही थी ना ! उतनी भोली नही है। यह अपने रुपए तो तुम्हारे पर्स में क्या रखतीं, यदि मौका लग जाता तो तुम्हे ही उठाकर अपनी झोली मे डाल लेती। बडी भयकर है भाभी। वह तो जरा डरती हैं मुझसे, इस लिए ऐसा कुछ करने का साहस न कर पाई।"

साधना मुस्कुरा दी अनिल की बात सुनकर। कुछ थक गई थी वह। इस लिए पलंग पर लेट गई। बोली, "अनिल ! तुम्हरी मक्कारी की बातों मे भी कितना आनन्द आता है। बड़ी मीठी बाते करते है आप।"

अनिल साधना के पास बैठकर बोला, "साधना ! आज का तुम्हारा परफार्मेन्स बहुत आकर्षक रहा। मुझे भय था कि कही तुम स्टेज पर जाकर नर्वस न हो जाओ, परन्तु हुई नही।"

"सच अनिल ! आपको पसद आया मेरा परफार्मेन्स !" साधना ने मुग्द्ध होकर पूछा।

"बहुत पसंद आया साधना !" यह कहकर अचानक तभी जैसे

अनिल को कुछ ध्यान हो आया। वह पलग से उठकर फोन के पास गया और एक नम्बर डायल करके बोला, "रणधावा साहब ! अनिल बोल रहा हू। आप रात्रि की गाडी से दिल्ली के लिए रवाना हो जाइए। अपने साथ सानियाल साहब को भी ले आए। यहा आकर चौहान साहब से मिलें और उन्हे अपने साथ लेकर कल ठीक ग्यारह बजे अशोका होटल आजाय। आपने जो काम मेरे सुपुर्द किया था, सम्भव है कल पूरा हो जाए।" यह कहकर रिसीवर रख दिया।

"रणधावा साहब ने आपके सुपुर्द क्या काम किथा था अनिल ?" साधना ने पूछा।

"वही तुम्हारी मम्मी के हारो का काम साधना ! वह बेचारे परेशान हो गए थे उनकी खोज करते-करते। कल हमारा व्यापारी आने वाला है। उससे दिखाने के लिए हमने कई हार मंगवाए है। सम्भक है उनमे वे हार निकल आएं।" अनिल ने कहा।

"आप फिर मक्कारी की बात कर रहे है अनिल ?"

'वह कैसे साधना ?" अनिल ने भोला बन कर पूछा।

"कैसे क्या ? यदि आपको इस बात का निश्चय न होता कि कल वे दोनो हार यहा आने वाले है तो क्या आप रणधावा और सानियाल साहब को जयपुर से दिल्ली बुलवाते ?".

अनिल साधना की कमर मे अपना स्नेह भरा हाथ डाल कर बोला, "साधना ! तुम तो बड़ी दूर की बाते समझने लगी। तुम्हे सरकार के गुप्तचर-विभाग मे रखवा दें सानियाल साहब से कहकर।"

"बनाइये नही मुझे। सचसच बतलाइए क्या आपने सचमच मम्मी के हारों की खोज कर ली है ? क्या वे हार जो आपने देखे है मम्मी के हारो से मिलते है ?"

"बहुत कुछ मिलते है साधना ! कभी-कभी जिस काम को पुलिस और उसके गुप्तचर नही कर पाते, वह हम कर देते है। हमारी इसी योग्यता के कारण पुलिस-अधिकारी हमारे मित्र बन गए है। यदि वे

हार तुम्हारी मम्मी के ही हुए तो इस षडयत्र के कई गुप्त रहस्य खुल जायंगे।" अनिल ने कहा।

साधना मुग्ध हो गई अनिल की यह वात सुनकर। फिर अनिल ने देखा अनायास ही उसका मन कुछ भारी हो गया। उसने अनिल की ओर देखकर कहा, "अनिल! यदि ये हार मम्मी के जीवित रहते मिल जाते तो उनके हर्ष का पारावार न रहता। उन्हे अपने ये दोनों हार बहुत प्यारे थे। इनकी चोरी होने पर वह अधीर हो गई थी।"

"स्त्रियों को अपने आभूषण होते ही वहुत प्यारे है साधना।" अनिल ने कहा।

"इन हारों का मूल्यवान होना मात्र उनकी उद्विग्नता का कारण न था अनिल! इन हारों का सम्वन्ध मम्मी की माता जी और बड़ी मां से था। ये दोनो हार उनके स्मृति-चिन्ह थे। मम्मी के निकट इस वात का मूल्य हारों के मूल्य से कही अधिक था।" साधना ने कहा।

दूसरे दिन चाय नाश्ता लेते समय अनिल साधना से वोला, "साधना! आज एक जौहरी यहा आएगा। उसके पास सम्भवतः तुम्हारी मम्मी के ही हार होगे। यदि वे हार वे ही हों तो जव मै तुमसे पूछू कि तुम्हे वे हार पसद है, तो तुम कह देना बहुत पसंद है। यदि वे हार वे न हो तो तुम कह देना कि तुम्हें पसंद नही है। समझ गई ना! मै तुम्हे अपने व्यापारी की सेक्रेट्री बतलाऊंगा। ध्यान रखना मै तुम्हारा कमीशन भी तै करूगा।"

"समझ गई।" साधना ने कहा।

अनिल ने फोन उठाकर एक नम्बर डायल करके बात की, "वीरेन्द्र, अनिल बोल रहा हू। तुम इसी समय भिक्खीमल जैन से जाकर कहो कि वह दोनो हार लेकर ठीक साडे दस बजे हमारे पास आ जाए। हमारा व्यापारी आ गया है। वह ग्यारह बजे तक यहा आ जाएगा। उससे कहना कि आने मे देर न करे क्योकि मैं सबसे पहले उसी के हारों का सौदा कराना चाहता हूं। उसके हार अधिक मूल्य के है। इस

लिए हमारा कमीशन भी अच्छा बनेगा। यदि उसने आने मे देर की और दूसरे व्यापारी अपने हार लेकर आ गए और व्यापारी ने उनके हार पसंद कर लिए तो उसके हार रह जायेंगे। पेमेण्ट हारो के पसद आते ही नकद कर दिया जाएगा।"

"यह भिक्खीमल जन कौन है अनिल ?" साधना ने पूछा।

"दिल्ली का माना हुआ जौहरी है साधना ! बहत बड़ा व्यापारी है।" अनिल ने कहा।

"क्या यह चोरी का माल खरीदता है ?" साधना ने पूछा।

"अभी इसके विषय मे हम कुछ नही कह सकते साधना ! इसके पास वे हार एक जयपुर के जौहरी ने भेजे है। हारो के पकड़े जाने पर इसका रहस्य खुलेगा कि जयपुर के व्यापारी के पास वे हार कहा से आये। इस प्रकार की चीरियो मे बहुत से लोग सम्मिलित होते है।'किस प्रकार कौन चीज कहा से कहा पहुची, इसकी पुलिस तह्कीकात करेगी। इसी लिये मैने रणधावा और सानियाल साहब को बुलवाया है।" अनिल ने कहा

भिक्खीमल जैन ठीक साड़े दस बजे दोनों हार लेकर अशोका होटल पहुचा। उसने काउण्टर पर जाकर अनिल का नाम लिया तो काउण्टर-गर्ल ने तुरन्त एक बैरे के साथ उसे ऊपर अनिल के कमरे पर भेज दिया।

अनिल ने भिक्खीमल जैन को बड़ी आवभगत के साथ सोफे पर बिठाया और बैर से उसके लिये चाय तथा कुछ खाने का सामान मंगाया। फिर पूछा, "हार ले आये भिक्खीमल जी ?"

भिक्खीमल ने दोनों हारो के डिब्बे अनिल की ओर बढा दिये। अनिल ने हार डिब्बे से बाहर निकाल कर साधना की ओर बढाते हुए कहा, "देखिये जरा ! हार तो लाजवाब मालूम देते है। आपने पसंद कर लिये तो साहब को पसंद आ ही जाएंगे।"

साधना ने दोनों हार हाथ में लेकर देखे। हार उसकी मम्मी के

ही थे। उसके अनेकों वार के देखे हुए।

अनिल साधना के पास से उठकर भिक्खीमल जैन के पास जा बैठा। उसने उसके कान मे धीरे से कहा, "यह सेक्रेट्री है हमारे व्यापारी की। इन्हे दो परसेण्ट बोल दू तो समझ लो कि काम बन गया। इनकी हा के बाद वह ना नही कर सकता।"

भिक्खीमल ने कहा, "बोल दीजिये बाबू ! तेल तो तिलों में से ही निकलना है।"

अनिल फिर उठकर साधना के पास जा बैठा। उसने साधना से कहा, "मेम साहब ! हमारे सेठ जी का सौदा बनवाना आपके हाथ मे है। सेठ जी आपकी भी सेवा करने को उद्यत है।"

साधना मुस्करा दी। उसने कहा, "मै दो पर्सेण्ट से कम नहीं लूगी।"

"यही हो जाएगा मेम साहब ! वैसे चीज पसद है ना आपको ?" अनिल ने पूछा।

"सेठ जी के हार हमें बहुत पसन्द आए मिस्टर अनिल ! लाजवाब हार है। हम सेठ जी को साहब से मुंह मागे दाम दिलाएंगे। आप फिकिर न करे। हमारा कमीशन फौरन मिलना चाहिए।"

"हाथ-के-हाथ। हमारे सेठ जी कभी कोई गलत बात नही करते। कमीशन आप मुझसे लेना। साहब को कानों कान पता न चलेगा। संध्या समय आकर ले जाना।"

अनिल समझ गया कि साधना ने हारों को पहिचान लिया। उन हारों के पेंडुलम फोटो के पेडुलमों से हू-ब-हू मिलते थे। उन्ही को देखकर उसने उन्हे पहचाना था।

बैरा चाय और कुछ खाने का सामान लेकर आ गया। तीनों ने चाय लेनी आरम्भ की। हार साधना ने अपने सामने मेज पर रख लिये। उसकी दृश्टि उन्हीं पर थी।

अनिल ने अपनी कलाई पर बधी घड़ी देखी। ग्यारह बजने में दो

मिनिट रह गए थे। उसके कान कैरीडोर पर लगे थे। तभी उसके कानो मे कुछ जूतों का शब्द पडा और एक ही क्षण पश्चात रणधावा, सानियाल और चौहान कमरे मे आ गए। उनके साथ चार पुलिस के बावर्दी सिपाही थे। उन्हे देखते ही भिक्खीमल जैन का चेहरा सफेद हो गया। उसके बदन को काटो तो रक्त न रहा ना। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उडने लगी।

रणधावा ने आगे बढकर मेज पर रखे हारों को देखा और अनिल से पूछा, "अनिल बाबू! ये हार कहाँ से आए आपके पास? इनकी तो हम काफी दिन से तालाश में है।"

"तशरीफ रखिए। आप भी बैठिए चौहान साहब! क्या कोई विशेप बात है इन हारो मे? इन हारो के मालिक भिक्खीमल जैन साहब आपके सामने बैठे है, दिल्ली के प्रसिद्ध जौहरी।"

सानियाल ने हारों को ध्यान से देखकर कहा, "ये हार चोरी के है। लगभग दो माह पूर्व इन्हे राव वीरेन्द्रसिह जी की कोठी से चुराया गया था। हमारे पास रिपोर्ट है इनकी चोरी की।"

अनिल ने हारो को उलट-पलट कर देखा। फिर कहा, "यह कैसे हुआ एस० पी० साहब? भिक्खीमल जैन साहब को मै बखूबी जानता हूं। यह चोरी का माल नही बेचते। सम्भव है यह माल किसी ऐसी जगह से इनके पास आया हो जिसका रहस्य इन्हे ज्ञात न हो।"

"यह सब बाद मे देखने की बात है अनिल बाबू! इस समय यह चोरी का माल इसके पास बरामद हुआ है और यह मुलजिम है कानून की दृष्टि मे।" यह कहकर चौहान ने सिपाहियों से कहा, "इन्हे कोतवाली ले जाओ। नीचे से चार सिपाही और ले लेना अपने साथ। अगर यह भागने की कोशिश करे तो इनके हाथो मे हथकड़ियाँ डाल देना।"

सिपाही भिक्खीमल जैन को अपने साथ लेकर नीचे चले गए।

रणधावा ने कहा, "अनिल बाबू! इन हारो के प्राप्त होने की सूचना अभी राव साहब को नही मिलनी चाहिए। यदि उन्हे सूचना मिल गई

तो मुख्य अपराधी सतर्क हो जाएगा ।"

"यह बात मै समझता हू रणधावा साहब ! साधना जी यह भूल कदापि नही करेंगी । यह पर्याप्त समझदार है । आपकी इन्वेस्टीगेशन मे कोई बाधा उपस्थित न होगी ।" अनिल ने कहा । फिर साधना की ओर देखकर पूछा, "रणधावा साहब तुम्हारे काम मे सुस्ती तो नही बरत रहे है ना साधना जी ? हमारे विचार से अब भाभी से इनके कान गर्म कराने की आवश्यकता नही रही ।"

अनिल की बात सुनकर सब लोग मुस्कुरा दिए । साधना कुछ सकुचा सी गई, परन्तु प्रसन्न थी ।

रणधावा, चौहान और सानियाल चाय पीकर चले गए । अनिल उन्हे नीचे तक छोड़कर ऊपर आया तो साधना ने पूछा, "अनिल ! क्या आप पुलिस की जासूसी का काम भी करते है ?"

"मात्र तुम्हारे लिए मैने यह काम किया है साधना ! मैने कहा न था तुमसे कि यदि मुझे तुम्हारे काम के लिए पुलिस की नौकरी भी करनी होगी तो वह भी करने मे सकोच नही करूगा । यह तो साधारण जासूसी का काम था । ये लोग इन हारो को खोजने की दिशा मे निराश हो चुके थे । ऐसी दशा मे मै पलिस की जासूसी न करता तो क्या ये हार मिलते ?"

साधाना का दिल गुदगुदा गया । उसने अनिल की ओर प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखा ।

अनिल बोला, "अब जरा मै कोतवाली जाकर भिक्खीमल जैन के हाल चाल देख आऊं साधना ! ज्ञात नही उस बेचारे पर वहाँ कैसी बीत रही होगी ।"

'वहा से कब तक लौटेगे आप ?" साधना ने पूछा ।

"अधिक समय नही लगेगा । अधिक-से-अधिक एक घंटा ।" अनिल ने कहा ।

"अधिक देर न करना । इन सब घटनाओं से मेरा मन जाने कैसा

हो रहा है। प्रसन्नता यह है कि रहस्य खुलते जा रहे है, परन्तु फिर भी मन भयभीत है।"

"भय किस बात का साधना? अनिल के रहते भय का क्या काम?"

"प्रत्यक्ष कारण कुछ नही है अनिल! फिर भी घटनाएं, इतनी भयंकर घटी है कि······।"

"नही नही, ऐसी कोई बात नहीं है! भयभीत होने का कोई कारण नही है अब। इन हारों के प्राप्त होने से पुलिस का काम पर्याप्त सरल हो गया है। अब हत्यारो को पकड़ने मे देर नहीं लगेगी।" यह कहता हुआ अनिल कमरे से निकल गया।

साधना ने अन्दर से द्वार बन्द कर लिया।

१०

अनिल होटल से कोतवाली पहुंचा तो उसने देखा चौहान अपने कार्यालय के सामने अकेला घूम रहा था। अनिल को अपनी ओर आते देखकर वह खड़ा हो गया। दोनो अन्दर कार्यालिल मे गए। अनिल ने पूछा, "क्या कहते हैं जैन साहब? कुछ काम की बात बतलाई।"

"कुछ बतला ही नहीं रहा बदमाश का बच्चा। कहता है यह उसके बिजनेस का सीक्रेट है। जयपुर के उस व्यापारी का नाम नहीं बतला रहा जिसने ये हार इसे लाकर दिये थे।" चौहान ने कहा।

"आपने इसे कुछ डराया धमकाया नही?"

"सब कुछ किया है। घबरा भी रहा है, परन्तु इसे विश्वास नही हो रहा हम पर कि यदि यह हमे सच बात बतैला देगा तो हम इसे मुक्त

क्रर देंगे । इसे भय है कि कही हम इससे सब बातें ज्ञात करके भी इसे मुक्त न करें ।" चौहान ने कहा ।

"आप उसे यहाँ भेजिए मेरे पास ।" अनिल ने कहा ।

चौहान ने आफिस से बाहर जाकर दो सिपाहियों को आज्ञा दी और वे भिक्खीमल जैन को चौहान के कार्यालय मे छोड आए ।

अनिल ने देखा भिक्खीमल बहुत भयभीत था । उसने उसे अपने पास कुर्सी पर बिठलाकर कहा, "देखिए भिक्खीमल जी ! यह काम आपने हमारे साथ बहुत गलत किया । आपके इस झमेले मे हमारी लाखों की पार्टी हाथ से निकल जाती । उससे मै वर्ष मे पचासी हजार रुपया कमाता हूं । वह तो यह अच्छा हुआ कि उसे आने मे देर हो गई और इस बीच एक जौहरी तीन चार हार लेकर आ गया । वे हार पार्टी को पसद आ गए और मेरी हानि न हुई ।"

भिक्खीमल जैन बोला, 'आप विश्वास करें अनिल बाबू ! मैंने कोई गलत काम नही किया । मुझे कतन पता नही था कि वे हार चोरी के थे । आप नानकचन्द जयपुर वालो को तो जानते ही हैं । वह चोरी का धन्धा नही करते । मैने उनका नाम पुलिस को अभी तक नही बतलाया क्योकि वह आपके भी विश्वासपात्र है । आप उन्हीं का पत्र लेकर मेरे पास आए थे । ये हार मुझे वही यहाँ लाकर दे गए थे ।" भिक्खीमल जैन ने कहा ।

"मैं जानता हूं भिक्खीमल जी! नानक चन्द्र जी का मैंने लाखो का माल बिकवाया है । कभी कोई ऐसी बात नही हुई । यह पहला मौका है जब ऐसी बात सामने आई है । आपकी मार्केट मे कैसी साख है, इसका भी मैंने इस बीच पता लगा लिया था । आपकी साख को बट्टा न लगे इसीलिए मै अपने व्यापारी काम करके सीधा इधर आया हूं । हम लोगो का आप लोगों से रोजाना काम रहता है ।

चौहान साहब मेरे दोस्त है । बहुत अच्छे आदमी है । वह कभी यह पसन्द नही करते कि किसी इज्जतदार आदमी की छीछालेदर हो । यदि

आप उन्हे हर बात साफ-साफ बतला देगे तो मै आपको विश्वास दिलाता हूं कि मै आपको अपनी जमानत पर बरी कराके अपने साथ ले चलूगा। पुलिस को सब-कुछ मालूम है । वह जानती है कि यह माल आपके पास नानकनन्द जौहरी की मार्फत आया है । उसे यह भी पता है कि यह उनके पास कहा से आया था । चौहान साहब के साथ जो दो अफसर थे, उनमे से एक जयपुर का एस० पी० था और दूसरा गुप्तचर विभाग का डी० एस० पी० । मैं नही चाहता कि मेरे सम्पर्क का कोई व्यापारी बदनाम हो, या उसे हानि सहन करनी पडे ।"

"आप विश्वास दिलाते है अनिल बाबू कि आप मुझे बरी करा के अपने साथ ले चलेगे ? ऐसा न हो कि मुझे सब कुछ स्पष्ट बतलाने के पश्चात भी हवालात में बन्द कर दिया जाए ।"

"नही नही, ऐसा कदापि नही होगा । मै वायदा करता हू कि मैं आपको अपने साथ ले चलूगा । लेकिन यह बात तभी सम्भव है जब आप जरा भी कोई बात छिपाये नहीं । सब कुछ साफ बतला दे । चौहान को झूठ से बेहद चिढ है ।" अनिल ने कहा ।

भिक्खीमल बोला, "सच बात यह है अनिल बाबू कि यह माल नानकचन्द जौहरी का भी नही है । उसकी तो इसमे केवल दस हजार की दलाली है । वह मेरे पास राजस्थान के एक ताल्लुकेदार को लाये थे । वह ये हार मुझे देकर मुझसे पच्चीस हजार रुपया पेशगी ले गया था । यह लगभग दो महीने पहले की बात है । उसने ये हार अपनी पत्नी के बतलाये थे । यदि मै जानता कि ये हार चोरी के है तो मै एक से लाख तक इन्हे अपने पास न रखता ।"

"आपने हर बात सही बतला दी जैन साहब! कुछ छिपाने का प्रयास नही किया । जयपुर के एस० पी० साहब का भी यही खयाल है । इसका मतलब उस ताल्लुकेदार ने आप और नानकचन्द जौहरी, दोनों को धोखा दिया है । उसने यह काम करके आपकी साख को मिट्टी मे मिलाने का प्रयास किया । आप चौहान साहब को यही लिखकर दे दीजिए । मैं

आपको अभी बरी कराकर अपने साथ ले चलता हूं। एक बात का ध्यान रखना। यदि आपने इस समय लिखकर दे दिया और वाद में आपने बयान बदले तो फिर मै आपका कभी साथ न दूगा। जब पुलिस आपके सामने उस ताल्लुकेदार को लाकर खडा करेगी तो आप उसकी शनाख्त करने मे आनाकानी नही करेंगे ?" अनिल ने कहा।

"शनाख्त क्यो नही करूंगा अनिल बाबू ! वह वदमाश मुझे चोरी की चीज देकर मुझसे पच्चीस हजार रुपया ठग कर ले गया। मै हजार आदमियों मे उसकी शनाख्त कर दूगा। मैं यह सब लिखकर देने को तैयार हूं। यदि आप मुझे मुक्त करा देगे तो मै आपका आजीवन आभारी रहूंगा।" भिक्खीमल जैन ने कहा।

अनिल कमरे से बाहर जाकर चौहान से बोला, "काम कर दिया आपका। आइए, मेरे साथ अन्दर आइए।"

अनिल और चौहान ने कमरे में प्रवेश किया तो भिक्खीमल जैन कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया। अनिल बोला "एस० पी० साहव ! हमे जैन साहब ने सब कुछ सच-सच बतला दिया है। यह बेचारे स्वय पच्चीस हजार के लिए इन हारो के मामले मे ठगे गए है। हारो का चोर ये हार इन्हे देकर इनसे एडवास मे पच्चीस हजार रुपया ले गया।"

"वह कैसे ?" चौहान ने त्यौरी चढ़ा कर पूछा।

अनिल ने वह सब चौहान को बतला दिया जो कुछ जैन ने उसे बतलाया था। उसने कहा, "जैन साहब इज्जतदार व्यापारी है। इनके यहा से चोरी का माल बिक ही नही सकता। मेरे साथ इनके पुराने सम्बन्ध है। आप इनका बयान अपने रोजनामचे मे लिखाकर इनके हस्ताक्षर ले ले। यह अदालत मे भी मुलजिम के खिलाफ यही बयान देगे और उसकी सही शनाख्त करेंगे।"

चौहान सब कुछ सुन कर बोला, "बात तो इनकी कुछ-कुछ सही प्रतीत होती है मिस्टर अनिल !"

"बिलकुल सही बयान कर रहा हूं हुजूर ! मेरी बात मे जरा भी

झूठ निकले तो मेरा आप वही हाल करे जो चोर का करेंगे ।" भिक्खी-मल जैन ने गिड़गिडाकर कहा ।

चौहान बोला, "अनिल बाबू ! आपकी बात हमे माननी पड़ जाती है । हमारे आपके सम्बन्ध कुछ ऐसे बन गए है कि हम किसी काम के लिए मना नही कर सकते । हमारा इरादा इन्हे इसी वक्त जेल भेजने का था, परन्तु अब आपके कहने से इन्हे छोडना पड़ेगा । यह आफिस में जाकर अपना बयान दर्ज करा दे । हम इन्हें आपकी जमानत पर मुक्त कर देंगे । अगर इन्होंने अदालत मे जाकर अपने बयान बदले तो आप जिम्मेदार होगे ।"

"आप चिन्ता न करे चौहान साहब ! मैं भिक्खीमल जैन की हर तरह की जमानत देने को तैयार हूं । इन्होने हमसे वायदा कर लिया है कि यह मुलजिम की शनाख्त करेंगे और अपना बयान न बदलेंगे ।" यह कहकर अनिल ने भिक्खीमल जैन की ओर देख कर कहा, "क्यों जैन साहब ! ठीक है ना ! ऐसा न हो कि मै चौहान साहब को मुह दिखलाने योग्य न रहूं । आप जानते है, यह पुलिस का मामला है । मै आपके लिए इतना बड़ा खतरा मोल ले रहा हू । यदि आपने बाद मे कोई गड़-बड़ की तो मैं मुसीबत मे फंस जाऊंगा ।"

भिक्खीमल जैन ने हाथ जोड कर कहा, "अनिल बाबू ! आप विश्वास रखें, मैं जो बयान दे रहा हूं उस पर अंत समय तक कायम रहूंगा ।" यह कहकर वह दीवान के कमरे मे गया और उसने अपना बयान रोजनामचे मे लिखाकर उस पर हस्ताक्षर कर दिए ।

अनिल भिक्खीमल जैन को अपने साथ लेकर अशोका होटल गया । ऊपर जाकर कमरे पर दस्तक दी । साधना ने द्वार खोला । अनिल और भिक्खीमल जैन ने कमरे मे प्रवेश किया । साधना ने आश्चर्य से देखा कि भिक्खीमल जैन ने अन्दर आकर अनिल के पैर पकड़ लिए । वह गिड़गिडाकर बोला, "अनिल बाबू ! आज आपने मुझ पर जो उपकार किया हैं, उसे मैं जीवन में कभी नही भुला सकता । आपने मेरे सम्मान

की रक्षा की है। पच्चीस हजार रुपया हाथ का मैल है। जीवन में लाखों कमाए हैं और लाखो खोए है, उनका कोई गम नही। इज्जत बच गई यही सब कुछ है। इज्जत चली जाती तो मैं कही का नही रहता। आप जानते है व्यापारी की आन मोती जैसी होती है। वह एक बार जाकर फिर लौटती नही।"

अनिल ने भिक्खीमल जैन को उठाकर छाती से लगाया। उसने कहा, "हमें इस बात की प्रसन्नता है जैन साहब कि आपने हर बात सच-सच बता दी। कोई बात छिपाने का प्रयत्न नही किया। चौहान साहब सच्चे आदमी की मदद करते हैं। हमें बहुत मानते है बेचारे! इस समय आपकी इज्जत बच गई। इज्जत है तो भविष्य में लाखों कमाएंगे। हमने देखा है, बुरा ससय आने पर बुद्धिमान व्यक्ति भी मूर्ख बन जाता है। धोखा खाना अपराध नही है, धोखा देना अपराध है। इसीलिए आपको हमने अपनी जमानत पर छुडवा दिया। आपने जो बयान दिया है उस पर कायम रहना।"

भिक्खीमल जैन ने कहा, "आप विश्वास रखे अनिल बाबू! मेरे बयान में कभी कोई अन्तर न आएगा। मैं अदालत मे वही बयान दूगा जो मैंने रोजनामचे मे दर्ज कराया है।"

भिक्खीमल जैन को अनिल नीचे तक छोड़ने गया। उसे विदा करके वह ऊपर आया तो साधना ने पूछा, "जैन साहब ने हारों के चोर के विषय मे कुछ बतलाया अनिल?"

अनिल साधना का प्रश्न सुनकर मुस्कुरा दिया। उसने साधना के दोनों हाथ अपने हाथो में लेकर कहा, "तुम कितनी प्यारी लग रही हो साधना! तुम हो ही बहुत सुन्दर।"

साधना अपने हाथ छुडाती हुई बोली, "छोडिए भी। जो पूछ रही हूं वह तो बतला नही रहे। मैं तो जैसी हूं, वैसी हूं। मैं पूछ रही हूं कि चोरी का कुछ रहस्य खुला? जैन साहब ने कुछ बतलाया कि ये हार इनके पास कहाँ से आए?"

तुम तो ऐसी बात कर रही हो साधना कि जैसे मै ही पुलिस का सब कुछ हूं। राज की बाते पुलिस वाले अपनी पत्नियो को भी नही बतलाते। इसी लिए तो रणधावा साहब की पत्नी उनसे कुढी-कुढ़ी रहती है। वह चाहती है कि रणधावा साहब अपने रोजनामचे की हर बात उन्हे नित्य जाकर बतलाएं और रणधावा साहब यह कर नहीं सकते।" कहकर अनिल हँस दिया।

"मक्कारी की बात कर रहे है आप! आपको सब कुछ मालूम है। आप बतलाना नही चाहते। रणधावा साहब पुलिस ऑफिसर है। आप तो पुलिस के ऑफीसर नही हो।" साधना ने कहा।

अनिल ने कहा, "यह बात तो तुम्हारी ठीक है साधना! परन्तु सोचो, यदि मुझे चोर का पता चल गया होता तो क्या मैने अब तक उसे एरेस्ट न करा दिया होता? ये काम जल्दबाजी के नही है। इनमे एक-एक कदम बहुत फूक-फूक कर रखना होता है। जितना हम अपने आपको होशियार और चालाक समझते है, हत्यारा उससे कही अधिक होशियार और चालाक है। वह खुल कर कही सामने नही आ रहा। भिक्खीमल जैन के पास उसने सीधे आकर कोई बात नही की। फिर भी हम अपने लक्ष्य की दिशा मे आगे बढ रहे है और विश्वास है कि बहुत शीघ्र अन्तिम सीढ़ी पर पहुच जाएंगे। हमे उस आदमी को खोजना है जिसने ये हार भिक्खीमल जैन को लाकर दिए। वह इन हारों को अपनी पत्नी के हार बतला गया है। उसे भिक्खीमल जैन ने पच्चीस हजार रुपया पेशगी दिया था। शेष रकम हारों के बिकने पर देने का वचन दिया था। इस लिए वह अपनी शेष राशि लेने इनके पास अवश्य आएगा। वह जिस आदमी की मार्फत इनके पास आया था, वह जयपुर का जौहरी है। उसे भी समझना होगा।"

साधना ने फिर अधिक विस्तार मे जाने का प्रयास न किया। वह जानती थी कि अनिल की सामर्थ्य मे जो कुछ है, वह उसके लिए कर रहा है। वह उतना कर रहा है जितना साधारणतः किसी के लिए करना सम्भव

नही है। उसने पूछा, "क्या रणधावा साहब जयपुर जाकर डैडी को इन हारों के प्राप्त होने की सूचना देंगे ?"

"इस विषय में हमे सिर दर्द मोल लेने की आवश्यकता नही है ? वह जो उचित समझेंगे करेंगे। राव साहब को सूचना देने से पूर्व उन्हें उस व्यक्ति से पूछताछ करनी होगी, जिसकी मार्फत ये हार भिक्खीमल जैन के पास आए और उस व्यक्ति का पता लगाना होगा जो इन्हें अपनी पत्नी के हार बतला कर यहाँ दे गया था। राव साहब से बातें करना खतरनाक हो सकता है क्यों कि वह किसी रहस्य को छिपा कर रखने मे असमर्थ हैं। चलो अब नारंग और भाभी से मिल आएं।"

"क्या वे अभी बम्बई नही गए ?" साधना ने पूछा।

"आज संध्या की ट्रेन से जाएंगे।" अनिल ने बतलाया।

दोनों ने वस्त्र बदले और नीचे आकर टैक्सी ली। अनिल ने ड्राइवर से कहा, "सुन्दर नगर।"

साधना ने कहा, "नारंग और जीजी तो ओबराय होटल मे ठहरे है अनिल ! आप सुन्दर नगर क्यो चल रहे है ?"

"ओबराय में ,वे केवल एक दिन के लिए ठहरे थे, क्योंकि उनके साथ अन्य आर्टिस्ट आए हुए थे। उनके ठहरने की व्यवस्था वही थी। सुन्दर नगर मे नारंग की ससुराल है। इस समय वे वही है।" अनिल ने बतलाया।

"ससुराल ! नारंग तो कह रहे थे कि सुन्दर नगर मे शकुन्तला जीजी की मौसी रहती है। क्या वह मौसी नही थी शकुन्तला जीजी की ?" साधना ने पूछा।

"साधना जी ! यदि राव साहब इस स्थिति में अपनी दूसरी शादी कर ले तो उनकी होने वाली पत्नी को तुम क्या कहोगी ?" कहकर अनिल मुस्कुरा दिया।

साधना लजाकर बोली, "अच्छा-अच्छा, यह मतलब है आपका। तो वह जीजी की इस प्रकार की मौसी है। तब तो वह घर है शकुन्तला

जीजी का। कल मै समझ नही पाई थी यह बात। मै उन्हें जीजी की मम्मी की बहन समझ रही थी।"

"अब समझ लो अच्छी तरह। भूल न करना आगे से।" अनिल ने कहा।

साधना हँस पडी अनिल की बात सुन कर।

"स्नेहलता जी शकुन्तला भाभी की ऐसी ही मौसी है साधना! वह भाभी को अपनी पुत्री के समान स्नेह देती है। मरी जीती है उनके लिए। भाभी उनका आँखो का तारा है और नारंग को वह अपने प्राणो से भी प्यारे पुत्र के समान मानती है।" अनिल ने कहा।

बातों-बातों मे गाड़ी सुन्दर नगर पहुच गई। अनिल ने ड्राइवर को कोठी नम्बर बतलाया और उसने टैक्सी कोठी के सामने ले जाकर खडी कर दी।

शकुन्तला, नारंग और स्नेहलता ड्राइङ्ग रूम में बैठे थे। उन्होने अनिल और साधना को टैक्सी से उतरते हुए देखा तो नारंग ने शकुन्तला से कहा, "शकुन्त! अनिल आ रहा है।" दोनों ने बाहर जाकर अनिल और साधना को रिसीव किया।

शकुन्तला बोली, "मैं अभी साधना के नृत्य के विषय मे बाते कर रही थी। बहुत सुन्दर नृत्य था। कुछ देर हो गई ना तुम्हे आने में?"

"बनिए नही भाभी! आप नारंग से कुछ बुराई कर रही होगी हमारी। आपको पीठ पीछे बुराई करने की बुरी आदत है।" अनिल ने सोफे पर बैठते हुए कहा।

"अच्छा यह बताओ अनिल, तुममे ऐसी क्या बुराई है जिसकी मैं इनसे तुम्हारी पीठ पीछे चर्चा करती? फिर तुम में कुछ बुरी आदते है भी, जिनकी बुराई की जा सकती है, साधना में तो कोई ऐसी बात है ही नही। साधना की मैं क्या बुराई कर सकती हूं इनसे?" शकुन्तला ने कहा।

"रहने दो भाभी! यह बात आप साधना को फुसलाने के लिए कह

रही है। पीठ पीछे आपने जाने क्या कहा होगा ? कहा होगा कि अनिल बड़ा चालाक है। बेचारी साधना को ही फंसा लाया।" कह कर अनिल मुस्कुरा दिया।

नारंग बोला, "अनिल ! मान गए तुम्हे। वे हार खूब पकडवाए तुमने। पुलिस परेशान थी उनके लिए।

अनिल बोला, "अपने काम तो ऐसे ही होते है नारंग ! यह काम हम साधना जी की सहायता के बिला नहीं कर सकते थे।"

नारंग बोला, "इन हारों के पकडे जाने से हत्यारों को पकडने मे सुविधा होगी। क्या विचार है तुम्हारा ? जिसने ये हार चुराये है, वही साधना की मम्मी का हत्यारा नहीं है ? जयपुर कब जाने का विचार है ?"

"मैं यहाँ इसी काम के लिए रुका हुआ था नारंग ! अब जयपुर का ही बाजार देखना है। अपने व्यापारियों के लिए माल तो एकत्रित करना ही है। सोच रहा हूं रात्रि की गाडी से निकल जाऊं।"

साधना यह सुनकर कुछ चिंतित दिखाई दी। वह सोच रही थी कि क्या अनिल सचमुच जयपुर चला जाएगा ? उसकी समझ मे यह न आया कि नारंग को हारों के पकड़े जाने की सूचना इतना शीघ्र कैसे मिल गई। सम्भव है इन्हें चौहान साहब ने बतला दिया हो।

नारंग बोला, "अनिल ! कल साधना ने हमारे शो को चार चाँद लगा दिए। वण्डरफुल परफार्मेन्स ! संगीत और नृत्य, दोनों पर कलापूर्ण अधिकार।"

नारंग के मुख से अपने नृत्य और संगीत की प्रशंसा सुनकर साधना का मन आलोढित हो उठा। उसने अपने मन में अपूर्व आनन्द अनुभव किया। उसका दिल गुदगुदा उठा।

अनिल बोला, "भाभी ! एक बात याद आ गई। कल जब हम अपने होटल गए तो साधना ने अपना पर्स खोल कर देखा। उसमे दो हजार रुपए थे। इनके विचार से वे रुपए आपने भूल से इनके पर्स को अपना पर्स समझ कर उसमे रख दिए। मैंने कहा, 'यह बात गलत

है। सम्भव है वे रुपए भाभी ने तुम्हे मुह दिखाई के दिए हो।' ठीक है ना यह बात ? परन्तु भाभी ! मुझे आप पर उस समय क्रोध बहुत आया।"

"क्रोध क्यों आया तुम्हें अनिल ?" शकुन्तला ने मुस्कुराकर पूछा।

"इसलिए भाभी कि क्या साधना की मुह दिखाई केवल दो हज़ार रुपये से ही होनी चाहिए थी ? इसीलिए तो मै आपको कृजूस कहता हूं।" अनिल ने कहा।

"इस बात पर तो क्रोध आना ही चाहिए था अनिल ! तुम्हारी भाभी है ही कजूस।" नारंग ने कहा।

शकुन्तला मुस्कुराकर बोली, "आप दोनों व्यर्थ क्रोध कर रहे है। वे रुपये न तो मैंने भूल से रखे थे और न ही मुह दिखाई के दिये थे। वे श्रीमती अनिल को नही कलाकार मिस साधना को इनके नृत्य और संगीत के उपलक्ष में दिये गये थे। मुह दिखाई पर मै अपनी साधना को वह चीज़ दूगी जिसे देखकर लालाजी की आँखे चौधिया जाए और भविष्य मे कभी अपनी भाभी को कंजूस कहने का साहस न कर सके।"

"लो साधनाजी ! मुह दिखाई रिजर्व और ये दो हजार बयाने के। अब तो तुम्हें कोई शिकायत नही है ना हमारी भाभी से ?" अनिल ने कहा।

अनिल की बात सुनकर सब लोग हँस दिये।

स्नेहलता साधना की कौली भरकर बोली, "मुह दिखाई तो मैं दूगी, अपनी बहू को। वह शुभ घड़ी आये तो।"

"घड़ी तो मौसीजी आप आ गई समझे। अब तो केवल फॉर्मेलिटी की बात शेष है। इस बार जब आपके दर्शन करने आएगे तो यह मिस साधना न होकर मिसेज अनिल होंगी। आप अपनी मुह दिखाई तैयार रखे। ठीक है ना साधनाजी ?" अनिल ने कहा।

"मक्कार कहीं का। बड़ा नटखट है अनिल।" स्नेहलता ने कहा।

"नटखट की बात नहीं है मौसी जी ! अनिल कच्ची गोलियाँ नहीं

खेलता। वह ऐसा दाना डालता है कि पंछी फंसे और फिर फंसे। भाभी, आप भी सुन लो यदि हमे मुह दिखाई वसूल करने के लिये बम्बई आना पडा तो बम्बई आने का खर्च आपका होगा।" अनिल ने कहा।

साधना अनिल की बात सुनकर मुस्कुरा रही थी। उसके मन मे जाने कैसी हिलोरे उठ रही थीं। अनिल उसके मन में बस गया था। उसके मुख से निकलने वाला एक-एक शब्द उसे रोमाचित कर रहा था। वह अर्ध निमीलित नेत्रों से अनिल की ओर देख रही थी।

नाश्ता लेकर अनिल और साधना होटल लौटे तो साधना ने पूछा, "क्या आपका विचार आज ही जयपुर जाने का है ?"

"क्या तुम नही चलोगी मेरे साथ ?" अनिल ने पूछा।

साधना अवाक् अनिल के मुख पर देखती रह गई। उसने धीरे से कहा, "जैसा आप कहे।"

"इसमे कहने की क्या बात है साधना ? इस समय मैं तुम्हें यहाँ अकेली छोड़कर नही जा सकता। ज्ञात नही हत्यारों ने क्या-क्या षडयत्र रचे हुए है।"

अनिल की बात सुनकर साधना आत्मविभोर हो गई। उसके नेत्रों मे स्नेह जल उमड आया। उसने अपना सिर अनिल की छाती से लगा दिया। अनिल ने उसे अपनी बाँहो मे आबद्ध करके कहा, "साधना ! मैं तुम्हे इस समय एक क्षण के लिए भी अपने से पृथक् करना सहन नही कर सकता। मैने दो सीटे रिजर्व करा ली है। हमे जयपुर जाकर हत्यारों को पकड़वाने में रणधावा साहब की सहायता करनी है। राव साहब की भी मुझे चिन्ता है।"

"तब तो खाना मँगवा लेना चाहिए।" साधना ने कहा।

"बैरे को बुलवाओ ! भूख तो कम ही है। फिर भी मँगवा लो। थोडा खा लेगे।" अनिल ने कहा।

भोजन करके दोनों समय पर स्टेशन पहुंच गए। सामान कम्पार्ट-

मेण्ट में रखवाकर बर्थ पर बिस्तर खोल दिया। साधना सोचने लगी कि वह जयपुर जाकर अपनी कोठी पर जाएगी तो उसके डैडी और चचा भवानीसिंह क्या कहेंगे ? वे उससे इस प्रकार जयपुर आने का कारण पूछेंगे तो वह उन्हें क्या उत्तर देगी ?

अनिल ने पूछा, "क्या सोच रही हो साधना ?"

"सोच रही हूं कि जयपुर जाकर मैं डैडी और चचा भवानीसिंह को अपने जयपुर आने का क्या कारण बतलाऊंगी।" साधना ने कहा।

"उन्हें कोई कारण बतलाने की आवश्यकता नहीं होगी साधना ! तुम इस विषय मे सोचो ही नही। यह सब मुझ पर छोड दो।"

साधना निश्चिन्त हो गई। उसे अब कुछ सोचने की आवश्यकता नही थी।

११

घाव कितना भी गहरा क्यो न हो, समय उसे भर ही देता है। पीडा समय के साथ-साथ कम होती जाती है। राव साहब अब हर समय अपनी पत्नी की याद मे पलंग पर नहीं पडे रहते थे। वह कोठी के बागीचे में घूम लेते थे। नियम से सोना, उठना, नाश्ता लेना और भोजन करना आरम्भ कर दिया था। साधना के दिल्ली चली जाने पर उनकी देखभाल का उत्तरदायित्व भवानी सिंह ने संभाल लिया था। वह फ़ारम से संध्या को लौट आता था और जाने से पूर्व उनकी सब व्यवस्था करके जाता था।

राव साहब भवानी सिंह से बोले, "भवानी सिह साधना को यहाँ से गए दो सप्ताह हो गए, उसका कोई पत्र नही आया ?"

भवानी सिंह ने कहा, "पत्र आ जाएगा भय्या ? कोई चिन्ता की बात नहीं है।"

राव साहब और भवानीसिंह नाश्ता ले रहे थे। तभी एक टैक्सी कोठी के सामने आकर रुकी। राव साहब ने देखा टैक्सी से कोई महिला उतर रही थी। उन्होने भवानी सिंह से कहा, "भवानीसिंह जरा देखो तो वह कौन है ?"

भवानीसिंह ने देखा वह निर्मला थी। उसने उसके निकट जाकर कहा, "कब आईं निर्मला ? हमें सूचना भी नहीं दी। सूचित कर देती तो क्या हम गाड़ी न भेज देते स्टेशन पर ?"

राव साहब नाश्ता ले चुके थे। वह कमरे से बाहर आए। उन्होंने भवानीसिंह और निर्मला को बाते करते देखा और अपनी पुरानी स्मृतियों में उसे कहीं खोजने का प्रयास किया, परन्तु समझ में न आया कि वह कौन थी ?

राव साहब दो कदम और आगे बढे। स्त्री रूपवती थी। उन्हे आकर्षक प्रतीत हुई। वह थोडा और आगे बढ गए।

भवानीसिंह ने चपरासी से कहा, "इनका सामान उठाकर अन्दर रखवाओ।"

चपरासी निर्मला का सामान उठाकर अन्दर ले गया।

निर्मला कोठी मे प्रवेश कर बरांडे में आगे बढी तो सामने राव साहब खडे थे। उन्होने ध्यान से निर्मला को देखा। भवानीसिंह ने बतलाया, "भय्या ! यह निर्मला जी है, सेठ रामदयाल की सुपुत्री। श्री रामदयालजी ट्रैक्टरों के व्यापारी। हमने अपना ट्रैक्टर उन्ही की दुकान से खरीदा था। एक महीना पूर्व जब मै दिल्ली गया था तो इन्होने जयपुर की सैर करने की इच्छा प्रकट की थी। मैने इनसे प्रार्थना की थी कि यह जयपुर आएं तो हमारी कोठी पर ठहरे।"

"कोठी का जो कमरा इन्हे पसन्द आए, इनके लिए खाली करा दो, और उसमे इनकी आवश्यकता का सामान जुटा दो। सैर करने जाना

चाहे तो इनके लिए गाडी निकलवा देना।" यह कहते हुए राव साहब की दृष्टि निर्मला पर थी। उन्हे वह बहुत आकर्षक लग रही थी।

निर्मला मुस्कुराकर बोली, "आपके मधुर व्यवहार और स्नेह-पूर्ण कृपा-दृष्टि की प्रशंसा मैं पहले ही भवानीसिंह जी से सुन चुकी हूं। इसी लिए इस कोठी को अपना घर समझ कर मै स्टेशन से सीधी यहाँ चली आई।"

"अन्दर आओ निर्मला! बाहर कैसे खड़ी रह गईं। सोफे पर बैठो, तब तक भवानीसिंह तुम्हारा कमरा सेट करा देता है।" राव साहब ने कहा।

निर्मला निःसंकोच भाव से राव साहब के कमरे में जाकर सोफे पर बैठ गई।

राव साहब ने कहा, "तुम जितने दिन यहाँ रहना चाहो, आनन्द-पूर्वक रहो। तुम्हें जिस चीज की आवश्यकता हो, हमसे कहना। हम उसकी व्यवस्था कर देंगे। तुम्हें हर प्रकार की सुविधा प्राप्त होगी।"

निर्मला का मुख कमल-पुष्प के समान खिल गया। उसे राव साहब के व्यवहार मे अपनापन दिखाई दिया। उसने कहा, "आपके व्यवहार की जैसी प्रशसा मैने भवानीसिह जी से सुनी थी ठीक वैसा ही आपको पाया। संकोच क्यों करूगी मै? मै यही सोचकर आई हूं कि मुझे आपसे अपने घर जैसा प्यार मिलेगा।"

निर्मला के मुख निकले 'प्यार' शब्द ने राव साहब के मन और मस्तिष्क को उद्वेलित कर दिया। भवानीसिह उनके मुख पर आने वाले प्रसन्नता के भाव को देखकर संतुष्ट हुआ। ऐसी मुद्रा मे उसने उन्हें अपनी भाभी की हत्या के पश्चात प्रथम बार देखा था।

भवानीसिंह बोला, "भय्या! निर्मला देवी बहुत सहृदय महिला है। इन्होने मुझे सारी दिल्ली की सैर कराई। यह नृत्य और संगीत-कला मे भी प्रवीण है। बहुत ही मधुर स्वर है इनका।"

राव साहब ने प्रसन्न मुद्रा में कहा, "तब तो तुम रूप और कला

दोनों की देवी हो निर्मला !"

निर्मला ने कहा, "भवानीसिंह जी व्यर्थ मेरी इतनी प्रशंसा कर रहे है राव साहब ! मै तो ऐसे ही मन बहलाने के लिए कभी-कभी कुछ गा-बजा लेती हूं ।"

भवानीसिंह ने दो नौकरों को लेकर निर्मला के लिए एक कमरा एरेंज कराया । उसमे एक पलंग, सोफा सेट, श्रृंगारदान तथा अन्य आवश्यक फर्नीचर फिट कराके पलंग पर बिस्तर लगवाया और निर्मला का सामान उसमे पहुंचा दिया । फिर निर्मला के पास आकर कहा, "आप का कमरा ठीक करा दिया है । मैं जरा कुछ काम से जा रहा हूं । लगभग दो घण्टे मे लौट आऊगा ।"

निर्मला उस कमरे मे जाकर आराम से पलंग पर लेट गई ।

भवानीसिंह के कोठी से चले जाने पर राव साहब ने कुछ मुक्त वातावरण का अनुभव किया और अपने कमरे से उठकर अनायास ही निर्मला के कमरे की ओर बढ गए ।

राव साहब बोले, "क्षमा करना निर्मला जी ! मै बिना पूछे तुम्हारे कमरे में चला आया ।"

"आप यह क्या कहने लगे राव साहब ! आइए, बैठिए । मुझसे पूछकर आने की क्या आवश्यकता थी यहाँ आपको ? क्षमा माँगकर मुझे लज्जित न करे । कोठी बहुत सुन्दर बनाई है आपने । स्टेशन-रोड पर इससे भव्य भवन अन्य कोई नही है ।" निर्मला ने कहा ।

राव साहब निर्मला के पास सोफे पर बैठ गए । उन्होने कहा, "अब तो केवल यह कोठी ही रह गई है निर्मला जी ! इसमे रहने वाली देवी हमें छोड़ कर चली गई । आज तुम्हे देखकर मेरे चेहरे पर कुछ प्रसन्नता का भाव उभर कर आया है, अन्यथा मैं इस चारदीवारी के बीच निर्जीव-सा पड़ा रहता था ।"

"क्या आपकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया राव साहब ? यह तो आपने बहुत दुखद समाचार दिया ।" निर्मला ने कहा ।

"स्वर्गवास क्या हो गया निर्मला जी! उनकी किसी ने हत्या कर दी।" यह कह कर राव साहब कुछ उदास से हो गए। उनकी आँखें डबडबा आईं।

निर्मला निश्वास छोडकर बोली, "आप के साथ विधाता ने भयंकर अन्याय किया। अभी आयु ही क्या है आपकी? पचास की भी सम्भवतः न होगी। हमारे लालाजी को मम्मी की मृत्यु के पश्चात् पचपन वर्ष की आयु मे शादी करनी पड़ी थी। न करते तो क्या करते बेचारे? विक्षिप्त से हो गए थे। शादी करने के पश्चात् ही उनकी दशा कुछ ठीक हुई थी। मैं तो अपनी मौसी की कृतज्ञ हूं कि उन्होंने आकर लालाजी की स्थिति ठीक कर दी, अन्यथा हमारा तो सारा कारोबार ही चौपट हो जाता। पुरुष के लिए स्त्री के बिना रहना कठिन है।"

"तुम सच कह रही हो निर्मला! वह थी तो हर काम मे मन लगता था। वह नही रहीं तो जीवन निस्सार हो गया। मन ही नही लगता किसी चीज़ मे। तुम्हे देख कर जरा बोलने बाते करने का मन हो आया। विश्वास करो निर्मला! तुम्हारे दो सहानुभूतिपूर्ण शब्द सुनकर मन इतना शान्त हो गया कि मै तुमसे बयान नही कर सकता। मन करता है तुमसे बातें ही करता रहूं।" राव साहब ने कहा।

निर्मला बोली, "आपको एक गीत सुनाऊँ राव साहब! उसे सुन कर आप कुछ हलकापन अनुभव करेंगे। मेरा मन जब कभी कुछ भारी होता है तो मैं इसी गीत को गाकर अपना मन शान्त कर लेती हूं। सम्भव है आपके उद्विग्न मन को भी उससे कुछ सात्वना मिले।"

"सुनाओ निर्मला! जब तुमसे दो बाते करके मेरे दिल को इतनी राहत मिली है तो तुम्हारा गीत सुनकर निश्चय ही मेरे मन का भार हलका होगा।" यह कहकर राव साहब ने मुग्ध दृष्टि से निर्मला की ओर देखा।

निर्मला ने एक गीत गाया। बिना साज के भी वह गीत बहुत मधुर था। राव साहब उस गीत को सुनकर आनन्द विभोर हो गए। उन्होंने कहा, "निर्मला! जब तुम बिना साज के इतना अच्छा गाती

हो तो साज से साथ तुम कितना अच्छा गाती होगी ? विधाता ने तुम्हे जितना सलौना रूप प्रदान किया है उतना ही तुमने मधुर स्वर पाया है। तुम्हारे स्वर मे दर्द भरा है। इस स्वर ने मेरे दिल की पीड़ा को छू दिया है।"

"राव साहब ! मेरे दिल मे दर्द के अतिरिक्त और है ही क्या ? मैं इसी दर्द को लेकर इधर-उधर घूमती रहती हूं, परन्तु मुझे कहीं कोई ऐसा सहृदय व्यक्ति नही मिला जो सहानुभूति पूर्वक मुझसे मेरे दिल की पीड़ा ज्ञात करता। दिल को दुखाने वाले हजार मिल जाते हैं राव साहब ! घाव पर मरहम लगाने वाला कोई नहीं मिलता। यह दुनिया बड़ी विचित्र है। इसका विश्वास नही किया जा सकता।" यह कहते हुए निर्मला का मन भारी हो गया।

"तुमने यह क्या कहा निर्मला ? इतनी कम आयु मे ही तुम पीड़ा के अथाह सागर मे कैसे डूब गई ? तुम्हारे साथ किस निष्ठुर ने विश्वासघात किया ? उस निर्दय को दया न आई ?" राव साहब ने निर्मला की बात से आहत होकर कहा।

राव साहब के सहानुभूतिपूर्ण शब्द सुनकर निर्मला का दिल भर आया। राव साहब को लगा जैसे निर्मला का दिल उनके अपने दिल से अधिक दुखा हुआ था। उन्होंने भावुक होकर अपने रूमाल से निर्मला के अश्रुपूर्ण नेत्र पोंछते हुए कहा, "रोओ नही निर्मला ! ज्ञात होता है किसी निर्मोही ने तुम्हें धोखा दिया है।"

"भयंकर धोखा दिया है राव साहब ! उस निर्दय ने मेरा दिल तोड़ दिया है। मैंने जिसे अपना सर्वस्व अर्पण किया, उसने मुझे खिलौना समझ लिया। मेरा जीवन निरर्थक कर दिया। इस जीवन मे है ही क्या अब ? निर्मला एक निराधार बेल है दुनिया की ठोकरे खाने के लिए। इसकी आशाओं पर तुषारापात हो चुका है। यह एक निर्जीव ढाँचा है, जो आपके सामने पड़ा है।" निर्मला ने दुखी मन से कहा।

राव साहब निर्मला की बात सुनकर उद्विग्न हो उठे। उनका मन

व्याकुल हो गया। उनका हाथ अनायास ही निर्मला की कमर पर जा गिरा। निर्मला सिमट कर उनके निकट आ गई। वह बोले, "यह तुमने क्या कहा निर्मला ? तुम आजीवन मेरे पास रहो। इस घर को अपना घर समझो। तुम्हारी व्यथापूर्ण कथा सुनकर हमे हार्दिक पीड़ा हुई।"

भवानीसिंह दो घण्टे मे लौट आया। वह निर्मला के कमरे में गया। उससे कुछ बाते की और फिर राव साहब के पास आकर बोला, "भय्या ! निर्मलाजी के यहाँ आ जाने से आप एकाकीपन अनुभव न करेंगे। आप कहे तो मै एक दो दिन फसल की कटाई का काम देख लू फरम पर।"

राव साहब बोले, "देख लो भवानीसिंह ! काम तो करना ही होगा। निर्मला को यहाँ कोई असुविधा न होगी। लड़की भले घराने की प्रतीत होती है।"

"बहुत बड़े घर की लड़की है भाई साहब ! इनके पिता का करोड़ों का कारोबार है। वह संकोचवश यदि आपसे कुछ न कहे आप उससे पूछते रहना।" भवानीसिंह ने कहा।

"तुम निश्चित होकर जाओ भवानीसिंह ! निर्मला की हर सुख सुविधा का हम ध्यान रखेगे।"

भवानीसिंह निश्चिन्त होकर फारम पर चला गया। उसके मस्तिष्क में अब शांति थी कि निर्मला राव साहब को प्रसन्न रख सकेगी।

राव साहब ने अपने कमरे से बाहर आकर देखा निर्मला आइने के सामने खड़ी अपने बाल सँवार रही थी। मन मे कहा, 'कितने लम्बे बाल है निर्मला के। वेणी नितम्बो पर मंडरा रही है।' कुछ देर द्वार पर खड़े रहे। निर्मला ने वेणी सँवार कर पीछे देखा तो राव साहब पर उसकी दृष्टि गई। उसका चेहरा अनायास ही खिल गया।

राव साहब ने कहा, "आओ निर्मला ! बागीचे मे चले।"

दोनों कोठी के बाहर बागीचे मे घूमते रहे कुछ देर। फिर दोनों

अन्दर आए और निर्मला अपने कमरे मे जाने लगी तो राव साहब ने कहा, 'इधर आओ निर्मला ! वहाँ अकेली बैठकर क्या करोगी ? यह कमरा भी तुम्हारा ही है। यहाँ अन्य कौन है ?"

निर्मला तनिक झिझकी। कुछ लज्जा अनुभव की।

राव साहब बोले, "झिझक रही हो निर्मला ! झिझकने की क्या बात है ?" कहकर राव साहब ने निर्मला का हाथ अपने हाथ मे ले लिया। निर्मला चुपचाप उनके साथ उनके कमरे मे चली गई। राव साहब ने कहा, "मन की पीडा को निकाल फेंको, निर्मला ! हम तुम दोनो एक जैसे ही है। तुम खुश रहोगी तो मुझे भी खुश रहने का सहारा मिलेगा।"

निर्मला ने राव साहब के मुख पर देखा और आँखे नीची कर लीं।

राव साहब बोले, "निर्मला ! जानती हो तुम्हे यहाँ मेरे पास कौन लाया है ?"

राव साहब की बात निर्मला की समझ में न आई। वह कुछ सशकित-सी होकर सहम-सी गई। उसका मन किसी अप्रत्याशित आशका से सिहर उठा। वह समझी नहीं कि राव साहब ने यह बात उससे क्यो पूछी।

राव साहब सरल भाव से निर्मला का हाथ अपने हाथ में लेकर बोले, "तम्हे यहाँ विधाता ने मेरा सहारा बनाकर भेजा है निर्मला ! तुम मेरे जीवन का आधार बनकर आई हो। तुमने यहाँ आकर मेरे दग्ध हृदय को कितनी शीतलता प्रदान की है, यह मैं इस समय तुम्हे बतला नही सकता।"

राव साहब की यह बात सुनकर निर्मला आश्वस्त हुई। उसके मुख पर मुस्कान खिल गई। उसके रूप मे निखार आ गया। उसने मधुर दृष्टि से राव साहब की ओर देखा। फिर कहा, "प्रतीत तो मुझे भी यही हो रहा है राव साहब ! आप से भेंट करके न जाने क्यों मैं शान्ति अनुभव कर रही हू। यह मैने इधर पाँच वर्ष मे प्रथम बार अनुभव

किया है।"

राव साहब ने कहा, "अपने विदग्ध जीवन को भुला दो निर्मला ! हम दोनो की स्थिति समान है। आओ हम तुम मिलकर अपने अभाव की पूर्ति कर ले। जीवन को वृथा नष्ट करने से क्या लाभ ? तुम मेरा सहारा बनो और मै तुम्हारा सहारा बन जाऊँ।"

निर्मला बोली, "आप तो मेरा सहारा बन सकते है राव साहब ! परन्तु मैं आपका सहारा बनने योग्य कैसे हूं ? मुझ मे ऐसा क्या है जो मैं आपका सहारा बन पाऊ। एक निराधार, निराश्रित स्त्री किसी का क्या सहारा बन सकती है ?" निर्मला ने कहा

राव साहब बोले, "यह बात नही है निर्मला ! पुरुष को भी स्त्री के सहारे की उतनी ही आवश्यकता है जितनी स्त्री को पुरुष के सहारे की। तुम यहाँ आ ही गई हो तो कुछ दिन रहकर देखो। इस घर को अपना घर समझो, अन्यथा विनाश के कगार पर तो मै खड़ा ही हूं। तुम चाहो तो मुझे विनाश से बचा सकती हो।"

उस दिन राव साहब और निर्मला ने एक थाल मे भोजन किया। भोजन के पश्चात् निर्मला अपने कमरे मे चली गई।

राव साहब का मन अब शान्त था। वह अपने प्राणहीन बदन में स्फूर्ति अनुभव कर रहे थे। उन्हें प्रतीत हो रहा था, जैसे उन्होंने अपना सर्वस्व खोकर भी कुछ प्राप्त कर लिया था। वह कुछ देर पलंग पर लेटे यही सब सोचते रहे, परन्तु अकेले में उनका मन न लगा। उन्होने सोचा कि जब हम दोनों एक होने की अभिलाषा रखते है तो पृथक्-पृथक् क्यों रहें ? क्यों न हम परस्पर घुल-मिलकर एक हो जाएं ? यह बातें मन में आते ही वह पलंग से उठे और निर्मला के कमरे की दिशा मे बढ़ गए। उन्होंने निर्मला के द्वार पर हलकी-सी दस्तक दी। निर्मला ने खडी होकर द्वार खोले और राव साहब को देख कर मधुर मुस्कान बिखेरती हुई बोली, "आपका अकेले में मन नहीं लगा। मेरा मन भी नहीं लग रहा था। यदि आप कुछ क्षण और न आते तो मैं आपके द्वार

पर होती। आपने स्वयं यहाँ आकर नारीसुलभ संकोच की रक्षा कर दी।"

राव साहब का मन मुग्ध हो गया। उन्होंने कहा, "संकोच की अब क्या बात रह गई है निर्मला? जब हम दोनों के मन ने तथ्य स्वीकार कर लिया है तो क्या हम अब भी दो है?"

निर्मला की मुह माँगी मुराद मिल गई। वह जिस कार्य को कठिन समझ रही थी वह उसे सरल प्रतीत हुआ। वह राव साहब के साथ उनके कमरे मे चली गई।

राव साहब बोले, "निर्मला! तुम जैसी रूपवती-सरल हृदया का दिल जिस निर्दय व्यक्ति ने तोडा था, वह आजीवन पश्चाताप की ज्वाला में जलेगा। उसे यह रूप अन्यत्र कहाँ प्राप्त होगा? वह नितान्त मूर्ख व्यक्ति निकला।"

"उसे जल-जल कर मरना होगा राव साहब! स्त्री की सबसे मूल्यवान वस्तु उसका रूप नही, उसकी निष्ठा और प्रेम परायणता होती है। मुझसे सुन्दर स्त्रियाँ तो एक नही लाख मिल जाएगी, परन्तु निष्ठा और प्रेम परायणता प्राप्त न होगी। उसका पाप यही है कि उसने मेरी निष्ठा और प्रेमपरायणता को ठुकरा दिया।" निर्मला ने कहा।

"सुन्दरता में भी तुम किस से कम हो निर्मला? अलौकिक रूप की रानी हो तुम। मैं तुम्हारे रूप को देखते ही इस पर मुग्ध हो गया था।"

"व्यर्थ प्रशसा न करिए इस रूप की राव साहब! मैने कभी स्वय को रूपवती नही गिना। यदि मैं रूपवती होती तो क्या मेरी यह दुर्दशा होती?" निर्मला ने कहा।

"नही-नही निर्मला! मैं व्यर्थ प्रशसा नही कर रहा। मुझे तुम अत्यन्त सुन्दर प्रतीत हो रही हो। मेरे मन में समा गई हो तुम।"

"जब तक कोई वस्तु प्राप्त नही होती तब तक वह बहुत सुन्दर प्रतीत होती है राव साहब! परन्तु जब प्राप्त हो जाती है तो उसमें अनेकों कमियाँ दिखाई देने लगती है। उस समय गुणों की अपेक्षा उसमें

दुर्गुण अधिक हो जाते है। पहले वह धूर्त भी मेरे रूप की प्रशंसा करता न अघाता था। वह मुझे विश्व-सुन्दरी कहा करता था।"

"वह मूर्ख निकला निर्मला! उसने अपनी दुर्बलताओं को तुम पर थोपने का प्रयास किया होगा।" राव साहब ने कहा।

"आपने सही दिशा में इंगित किया राव साहब! जब उसके झूठे आश्वासनो की पोल खुलने लगी तो उसने मेरी कमियाँ गिनानी आरम्भ कर दी। मै उसकी दुर्बलताओं पर पर्दा डालती रही और वह मेरी कमियाँ निकालता रहा। अब छोड़िए इन बातों को। मेरे लिए अब वह मर चुका। मुझे अब उसकी शक्ल से भी घृणा है।" निर्मला ने कहा

"वह पारखी नही निकला इस हीरे का।" राव साहब ने कहा।

निर्मला बोली, "राव साहब! आप इस हतभागिनी को अपनाकर क्या लेंगे? कही यह न हो कि बाद में आपको अपनी भूल नजर आए और मै कही की न रहूं। मै इस जीवन में दूसरा परीक्षण नही करना चाहती। यदि इस बार भी मुझे निराश होना पड़ा तो समझ लीजिए निर्मला इस संसार में न रहेगी।"

निर्मला की बात सुनकर राव साहब का भावुक मन व्याकुल हो उठा। उन्होने उसे स्नेह बन्धन में बाँधकर कहा, "यह बात भूल कर भी मन मे न लाना निर्मला! पुराने जीवन को भुलाकर नए जीवन में प्रवेश करो। मैंने तुम्हें अपने जीवन का सहारा मान लिया है। मै तुम्हे जीवन में कभी कोई कष्ट न होने दूगा, विश्वास रखो।"

निर्मला ने अपनी सुडौल बाँहे राव साहब के गले मे डाल दीं। राव साहब ने उसे आबद्ध कर लिया। निर्मला बोली, "मै अपने पुराने जीवन को एक शर्त पर भुला सकती हूं राव साहब!"

"किस शर्त पर?" राव साहब ने पूछा।

"शर्त मात्र यह है कि आप भी अपने दुःख को भूल जाएं। यदि आप दुःख मे डूबे रहे तो हमारा मिलन व्यर्थ हो जाएगा। मै घूमने-फिरने, सिनेमा जाने इत्यादि के लिए कहूंगी और आप उसमे मेरा साथ

न देगे तो बतलाइए मुझे अकेले घूमने-फिरने मे क्या आनन्द आएगा ?"

राव साहब बोले, "निर्मला ! मेरे दिल का घाव अभी ताजा है। तुम्हारे रूप के मरहम से मैं उसे भरने का प्रयास करूँगा, परन्तु समय तो इसमे कुछ लगेगा ही। फिर भी मै घूमते-फिरने मे तुम्हारा साथ अवश्य दूगा। तुम्हें निराश न करूँगा।"

"बस, मै इतना ही चाहती हू।" निर्मला ने कहा।

१२

अनिल और साधना जयपुर आए। अनिल साधना को अपनी कोठी पर ले गया। साधना ने पूछा, "अनिल! क्या आप डैडी को मेरे जयपुर आने की सूचना नही देगे ?"

"उन्हे सूचित करना होता तो मैं तुम्हें तुम्हारी कोठी पर छोडकर न आता? सीधा यहाँ क्यो लाता ?" अनिल ने कहा।

साधना ने अन्य कोई प्रश्न न किया।

दोनों चाय लेने बैठे तो फोन की घण्टी बजी। अनिल ने रिसीवर उठाकर फोन सुना। साधना ने देखा उसे सुनकर अनिल कुछ गम्भीर हो गया। उसने उत्तर मे मात्र इतना कहा, "मैं सब देख लूगा।" और रिसीवर रख दिया।

साधना ने पूछा, "किसका फोन था ?"

"वीरेन्द्र का। उसने दिल्ली से एक सूचना दी है। तुम्हारी मम्मी का हत्यारा बहुत भयकर खेल खेल रहा है।" अनिल ने कहा।

साधना ने पूछा, "वह क्या करना चाहता है अनिल ? डैडी पर तो कोई संकट नही आ जाएगा ?"

अनिल ने कहा, "रणधावा साहब ने तुम्हारी कोठी के इर्द-गिर्द गुप्तचरों की व्यवस्था कर उन्हे सुरक्षित कर दिया था। हत्यारे ने उन की इस व्यवस्था को भग करने का षडयंत्र रचा है।"

"वह कैसे अनिल ?" साधना ने उत्सुक होकर पूछा।

"मैंने तुमसे राव साहब को कहलवाया था कि वह अपनी कोठी से बाहर न जाए। वह इस बीच कही बाहर गए भी नही। इससे हत्यारे के कार्य में बाधा उपस्थित हुई, क्योंकि रणधावा साहब की व्यवस्था मे वह राव साहब की हत्या नहीं कर सकता और यदि करने का साहस करता तो तुरन्त पकड़ लिया जाता। अब उसने राव साहब के कोठी से बाहर जाने की स्थिति उत्पन्न कर दी है।" अनिल ने कहा।

"डैडी को कोठी से बाहर ले जाने की स्थिति हत्यारों ने कैसे उत्पन्न कर दी अनिल ? मैं तो उनसे यह स्पष्ट कह कर आई थी कि वह कोठी से बाहर कहीं न जाएं और उन्होने वचन दिया था कि वह कही नही जाएगे।" साधना ने कहा।

अनिल साधना का चितित और सशंकित मुख देखकर मुस्कुरा दिया। उसने कहा, "साधना ! दिल्ली मे हमने तुम्हारी शकुन्तला भाभी की मौसी स्नेहलता जी से भेट कराई थी। तुमने देखा था वह शकुन्तला भाभी को कितना स्नेह करती थीं ? यदि तुम्हे भी कोई ऐसी मौसी मिल जाए तो कैसा रहे ?"

साधना बोली, "एक क्षण पूर्व आप इतनी गम्भीर बात कर रहे थे और अब मजाक करने लगे। यह क्या बात है अनिल ?"

अनिल बोला, "मैं मजाक नही कर रहा साधना ! बात गम्भीर ही है। दिल्ली से एक महिला जयपुर आई है। मुझे वीरेन्द्र ने फोन पर सूचना दी है। उसका नाम निर्मला है। बहुत सुन्दर स्त्री है।"

"वह स्त्री यहाँ ठहरी कहाँ है ? क्या इस विषय में भी वीरेन्द्र जी ने कोई सूचना दी है ?" साधना ने पूछा।

"तुम्हें इसके विषय मे चिन्तित होने की आवश्यकता नही है।

वीरेन्द्र ने मुझे सब कुछ बतला दिया है। जानने को व्यग्र हो तो मैं तुम्हें बतला देता हूं कि वह इस समय तुम्हारी कोठी पर ठहरी हुई है।" अनिल ने बतलाया।

"अब आप क्या करेंगे अनिल ? यह तो बहुत बुरी बात हुई।" साधना ने कहा।

"मैं उसकी गतिविधियो पर दृष्टि रखकर देखूगा कि उसके यहाँ आने का क्या अभिप्राय है ? प्रतीक्षा करनी होगी। मैं तुम्हे बतला चुका हू कि यह शीघ्रता करने का काम नही है। हत्यारा बड़ी सावधानी से कार्य कर रहा है। वह राव साहब के स्वभाव से परिचित है। इसीलिए उसने यह प्रपंच रचा है। इस स्त्री के आने से केस काफी कौम्पलीकेटेड हो गया है। राव साहब की रूप लोलुप प्रवृत्ति ने उनके लिए खतरा पैदा कर दिया है। परन्तु विश्वास रखो हत्यारा बहुत शीघ्र पुलिस के चंगुल मे फस जाएगा। वह जल्दबाजी से काम ले रहा है। यदि वह दो चार महीने के लिए चुप होकर बैठ जाता तो पुलिस को उसे पकड़ने मे कठिनाई होती।" अनिल ने कहा।

"जरा रणधावा साहब को फोन करके ज्ञात करिए कि उन्हे इस नए डेवलपमेण्ट की सूचना मिली अथवा नही। सम्भव है उन्हें सूचना ही न मिली हो इसकी।" साधना ने कहा।

अनिल ने रणधावा को फोन किया तो ज्ञात हुआ कि उन्हे यह सूचना पहले ही मिल चुकी है, परन्तु वह अभी गये नही है राव साहब की कोठी पर। अनिल ने रणधावा से कहा कि वह राव साहब की कोठी पर उनसे मिलकर उसके पास आएं।

अनिल ने रिसीवर फोन पर रखकर साधना से कहा, "तुम्हारी आज्ञा का पालन कर दिया साधना ! अब रणधावा साहब पूरी इन्क्वायरी करके यहाँ आएंगे।"

साधना ने पूछा, "यह किस प्रकार की स्त्री है अनिल ?"

"तुम तो इस प्रकार पूछ रही हो साधना, जैसे उससे मेरा कोई

पूर्व सम्बन्ध रहा है।" कह कर अनिल मुस्कुरा दिया।

"जब आपने कहा कि वह सुन्दर है और उसका नाम निर्मला है तो निश्चय ही उसे आपने पहले कभी देखा होगा।" साधना ने कहा।

"यह सब तो मुझे वीरेन्द्र ने फोन पर बतलाया था।" अनिल ने कहा।

साधना बोली, "यह सब हो क्या रहा है अनिल! मेरी तो कुछ समझ मे नही आ रहा। क्या सचमुच डैडी उस स्त्री के जाल में फंस जाएगे? क्या डैडी मम्मी को इस प्रकार भूल जाएंगे? क्या डैडी इतने निर्मम हो जाएंगे?" यह कहते हुए साधना की आखें भर आई।

अनिल ने साधना की कमर पर हाथ रखकर उसे अपने निकट करते हुए कहा, "साधना, तुम अपने डैडी के स्वभाव से अपरिचित नहीं हो। यह उनकी पुरानी दुर्बलता है। मुझे नारग ने उनकी इस दुर्बलता के विषय मे काफी कुछ बतलाया था।"

अब साधना अनिल से कुछ भी गुप्त नही रख सकती थी। उसने दुखी मन से कहा, "आप ठीक कह रहे है अनिल! डैडी की इस दुर्बलता के कारण मम्मी सर्वदा दुखी रहती थी।"

"साधना! मनुष्य के जीवन की यह दुर्बलता कभी-कभी भयंकर रूप धारण कर लेती है। यह मनुष्य को अन्धा बना देती है और इस के वशीभूत होकर वह अपना सर्वनाश कर बैठता है, परन्तु तुम चिन्ता न करो। मैं सब ठीक कर लूंगा। राव साहब पर आँच न आने दूगा।" अनिल ने कहा।

जब ये बाते चल रही थी रणधावा साहब की जीप कोठी के सामने रुकी। अनिल ने ड्राइङ्ग-रूम से बाहर जाकर रणधावा साहब से हाथ मिलाया और उन्हे अन्दर लिवाकर लाया। उनके सोफे पर बैठने पर अनिल ने पूछा, "मिल आए राव साहब से रणधावा साहब? क्या कर रहे थे राव साहब?"

"अपने बैड-रूम मे बैठे हुए थे। बाते कर रहे थे उस महिला से।

हमे भी वही बुलवा लिया था उन्होने।" रणधावा ने बतलाया।

"वह महिला है कौन रणधावा साहब ? राव साहब ने कुछ परिचय तो दिया होगा उसका ?" अनिल ने पूछा।

"कह रहे थे कि किसी दिल्ली के सेठ की लडकी है। उसके पिता की दिल्ली में ट्रैक्टर्स की फर्म है। राव साहब ने अपने फारम के लिए ट्रैक्टर उन्ही की फर्म से खरीदा था। शक्ल-सूरत से लगती तो किसी बड़े घराने की सी ही है। फर्राटे की इङ्गलिश बोलती है। कम्बख्त मुस्कुराती इस करीने से है कि क्या कहूं ? गजब की शोख औरत है।"

"वह जयपुर किस लिए आई है ?" अनिल ने पूछा।

"कहती है जयपुर की सैर करने आई है।" रणधावा ने बतलाया।

"इसका मतलब राव साहब की पुरानी परिचिता है। नई मुलाकात नही है।" अनिल ने कहा।

"तभी तो सीधी आकर उनकी कोठी पर ठहरी है। राव साहब उसे जयपुर की सैर कराने मे संलग्न है। आज संध्या को पाँच बजे उनका जू जाने का प्रोग्राम है। लगता है वह स्त्री राव साहब के दिल और दिमाग मे पहिले से बसी हुई है। बातें ऐसी लच्छेदार करती है कि जाल सा बिछाती चली जाती है। उसने जादू कर दिया है राव साहब पर।" रणधावा ने कहा।

रणधावा की बात सुनकर साधना अन्दर-ही-अन्दर कुढ रही थी। उसे अनायास ही अपने डैडी की दुर्बलता पर क्रोध आ गया, परन्तु उस ने कहा कुछ नहीं। यदि अनिल ने उसे इस विषय मे मौन रहने को न कह दिया होता तो वह उसी समय अपनी कोठी पर जाकर तूफान खडा कर देती और उसे कोठी से बाहर निकाल देती।

"महिला पर्याप्त चतुर प्रतीत होती है रणधावा साहब ! देखभाल रखिए उसकी। मुझे यह स्त्री संदिग्ध प्रतीत होती है।" अनिल ने कहा।

"देख-भाल क्या रखी जा सकती है अनिल बाबू ? राव साहब उसे

घुमाने-फिराने इधर-उधर ले जायेंगे तो उनकी हर जगह सुरक्षा का प्रबन्ध कैसे किया जा सकेगा ? कोठी पर सुरक्षा का प्रबन्ध करना सम्भव है। इधर-उधर घूमने-फिरने जाते समय यह कैसे होगा ?" रणधावा ने कहा।

"आप कोठी का ध्यान रखें। अन्यत्र हम देखेंगे।" यह कहकर अनिल ने समरसिंह और धीरसिंह द्वारा साधना का पीछा किए जाने का वृतान्त सुनाया तो रणधावा उछल पड़ा।

"तो यह माजरा है तो इन लोगों की यह गत चौहान साहब ने बनवाई है। यहाँ उन्होंने जिन डाक्टर से पट्टियाँ कराईं, उससे कहा कि उनका एक्सीडेण्ड हो गया था।" रणधावा ने कहा।

"एक्सीडेण्ट तो हो ही गया बेचारों का। क्या सोचकर गए थे और क्या हो गया ? इन बदमाशों ने दिल्ली तक पीछा किया साधनाजी का। यदि अलवर से लौट आते तो यह गत न बनती। हत्यारे कार्य को तुरन्त सिद्ध कर लेने के फिराक मे है। इनकी यही जल्दबाजी इन्हे ले डूबेगी।" अनिल ने कहा।

'एक बात माननी होगी अनिल बाबू कि हत्यारे का काम निहायत योजनाबद्ध है। लगता है इस स्त्री को राव साहब के पास हत्यारो ने भेजा है। इसके द्वारा उनका राव साहब को पुलिस की सुरक्षा से बाहर ले जाने का प्लान है। क्या विचार है आपका ? इस स्त्री के जाल मे फंसकर राव साहब ने अपने भाई भवानीसिंह को भी फारम पर भेज दिया, जिससे उन्हे उससे घुलने-मिलने मे कोई बाधा न हो। ज्ञात नही राव साहब को इस आयु मे हो क्या गया है ?" रणधावा ने कहा।

रणधावा की यह बात अपने डैडी के विषय मे सुनकर साधना ने लज्जा से अपना सिर नीचा कर लिया। उसकी आँखों मे आँसू उभर आए।

अनिल बोला, "मेरे विचार से चचा भवानीसिंह इस स्त्री के आ जाने पर स्वयं ही फारम पर चले गए होगे, क्योंकि वह राव साहब को

पिता तुल्य मानते है। उन्हे वहाँ से चले ही जाना चाहिए था। क्यों साधनाजी ?"

"उस स्त्री के विषय मे जो आशंका आपके मन में है उसके अनुसार तो चचा का फारम पर चला जाना घातक सिद्ध होगा। उन्हे डैडी को असुरक्षित छोड़कर नही जाना चाहिए था। जिस समय हत्यारे मम्मी की हत्या करने आए थे, उस समय यदि वह कोठी पर होते तो सम्भव है, वह हत्या न होती। समरसिंह और धीरसिंह चाचाजी से बहुत डरते है।" साधना ने कहा।

अनिल रणधावा से बोला, "रणधावा साहब ! पर्सनेलिटी तो आपकी भी कुछ कम नही है। आपकी आयु भी कम है और पद् भी माकूल है। टैकल करके देखिए। फँस सकती है आपसे। कुछ अफसरी का रौब डालकर देखिए।"

रणधावा खडा होकर बोला, "वह पर्सनेलिटी के लिए नही आई है दिल्ली से अनिल बाबू ! वह आई है राव साहब की दौलत के लिए। दौलत तो नही है मेरे पास। आप जवाहिरात का काम करते हैं। पर्सनेलिटी भी आपकी मुझसे अच्छी है और आयु भी उसके लगभग बराबर है। आप ही ट्राई करके देखिए। सम्भव है आपको सफलता मिल जाए। राव साहब कह रहे थे कि वह गाने बजाने मे भी माहिर है। इस फन का आपको भी शौक है। काम बन जाए तो बहुत खूब जोड़ी रहेगी। चीज वाकई बेजोड है।"

"वैसे लगी कैसी आपको ? सुन्दर है ना ?" अनिल ने पूछा।

"केवल सुन्दर ही नही, पढी-लिखी भी कम नही लगती। कोई बात कहती है तो रुकना जानती ही नही बीच मे। मैं तो मुह देखता रह गया उसका। समझ मे ही न आया कि वह क्या कह रही थी।"

रणधावा को सीऑफ करके अनिल ने देखा साधना कुछ चितित सी प्रतीत हो रही थी। उसे अपने डैडी पर क्रोध भी आ रहा था और उनकी चिंता भी उसके मस्तिष्क मे थी।

अनिल बोला, "चलो कपडे बदलो साधना ! तुम्हे तुम्हारी मौसी को दिखा लाएँ।"

साधना ने मुस्कुरा कर पूछा, "कहाँ दिखला कर लाए गे ।"

रणधावा साहब बतला तो रहे थे कि वे लोग संध्या समय जू की सैर करने जाएंगे। हम भी चलते है उधर। वही देखलेना ।" अनिल ने कहा।

" यदि डैडी ने मुझे देख लिया और पूछा कि मै वहाँ कैसे आई तो मैं क्या उत्तर दूगी ?" साधना ने पूछा।

"यदि उन्होने तुम्हे पहिचान लिया तो हमारी खूबी ही क्या हुई ? तुम्हें मालूम नही है कि अनिल बेहतरीन मेकपमेन है। मै तुम्हे ऐसी बना दूंगा कि तुम उनके सामने खडी रहोगी और वह तुम्हे पहिचान नही पाए गे। आज आर्ट देखना हमारा। यदि उन्होने तुम्हे पहिचान लिया तो तुम जो जुर्माना कहोगी हम देगे। ठीक है ना ?" अनिल ने कहा।

साधना हँस पडी अनिल की बात सुनकर। बोली, "इसका मतलब आप मेरा तमाशा बनायेगे आज ? वेश बदलेंगे मेरा ?"

"यह तो करना ही होगा साधना ! हम लोग उनके साथ जू की सैर करेगे। कोई तुमसे कुछ कहे तो बोलना नही जरा भी। उनकी बातों का उत्तर मै स्वय देता रहूंगा। तुम सिर्फ मुस्कुराती रहना कभी-कभी।" अनिल ने कहा।

"मै उस चुडैल के साथ घूमना पसद नही करती अनिल ! क्या-करूँगी मैं उसे देखकर ?" साधना ने कहा।

"चुडैल न कहो अपनी मौसी को साधना ! रणधावा साहब और वीरेन्द्र दोनो ही उसके रूप की प्रशंसा कर रहे थे। एक बात और भी है साधना ! बुरा न मानो तो कहूं।"

"कहो अनिल ! आपकी बात का बुरा मानूगी तो अच्छी मुझे अन्य किसकी बात लगेगी ? मैं जानती हूं आप ऐसी कोई बात नही कह

सकते जो मेरे दिल को ठेस पहुचाए ।"

अनिल कुछ गम्भीर हो गया। उसने कहा, "साधना! तुम्हारे डैडी के विषय में तुम्हें कुछ बतलाने की मैं आवश्यकता नही समझता। तुम सब कुछ जानती हो। इस समय वह बेसहारा है। तुम्हारी मम्मी की मृत्यु ने उन्हे अन्धकार के गर्त मे धकेल दिया है। इस अन्धकार मे वह किसी भी ऐसी राह पर भटक सकते है जो उन्हे घोर पतन की दिशा मे ले जाए। वह संयमशील व्यक्ति नही है। बिना स्त्री के वह रह नही सकते। क्या यह सत्य नही है साधना ?"

"मैं आपके कहने का तात्पर्य नही समझ पाई अनिल !" साधना ने कहा।

"तात्पर्य मात्र यह है कि सेक्स के रोगी की सुन्दर स्त्री सर्वश्रेष्ठ औषधि है। क्या तुम यह नही चाहोगी कि तुम्हारे डैडी निराशा के गर्त मे न गिरकर विनाश से बच पाएं ? क्या तुम यह चाहोगी कि वह मदिरा और निकृष्ट युवतियो मे लिप्त होकर अपना जीवन नष्ट कर लें ?" अनिल ने कहा।

'आप तो कह रहे थे अनिल कि वह स्त्री डैडी को अपने जाल मे फंसाने के लिए हत्यारो की टूल बनकर जयपुर आई है। हत्यारे उसे इसी अभिप्राय से यहाँ लाए है।"

"इसमे कोई सन्देह नही है साधना कि उसे इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए यहाँ लाया गया है और वह आई भी इसी कार्य के लिए है, परन्तु यह भ्रम है उसका कि वह यह कर पाएगी। रणधावा साहव उसे यह सब नही करने देगे। मेरी इच्छा है कि हत्यारों के अस्त्र का उन्ही के विरुद्ध प्रयोग किया जाये। निर्मला हत्यारो को पकडवाने मे सहायक हो सकती है।"

"वह कैसे अनिल ?" साधना ने पूछा।

"अनिल से यह न पूछो साधना कि वह कैसे ? तुम देखती भर रहो कि वह कैसे मेरे संकेतों पर नाचती है। अन्य सब बातें तुम सोच लो।

तुम्हे अपने डैडी की दौलत या सम्पत्ति का कोई प्रलोभन हो तो तुम जानो। मुझे उसका कोई प्रलोभन नही है। मैं राव साहब को मात्र प्रसन्न और सुरक्षित देखना चाहता हूं।"

अनिल की बात सुनकर साधना की आँखें भर आईं। उनसे अश्रुओ की झड़ी लग गई। आँसू बहकर उसके कपोलो पर रुक गए। उसने कहा, "अनिल ! आप किसी प्रकार डैडी को हत्यारो से बचालो। मुझे उनका कुछ नही चाहिए। मै मात्र अपने डैडी की सुरक्षा चाहती हूं। मेरी यही आकांक्षा है।"

अनिल ने साधना का सिर अपनी छाती से लगाकर उसके नेत्र पोछते हुए कहा, "मै तुम्हारे मुख से ये ही शब्द सुनना चाहता था साधना ! इन्सान को कभी किसी दूसरे की दौलत पर नजर नही रखनी चाहिए। तुम्हारे डैडी की दौलत और जायदाद के पीछे लपकने वाले कुत्ते बहुत शीघ्र विनाश को प्राप्त होगे। वे स्वय को चाहे जितना भी बुद्धिमान क्यो न समझ रहे हों, उन्हे उनकी इच्छित वस्तु प्राप्त न होगी।"

अनिल के इन शब्दों ने साधना के आहत मन को सात्वना प्रदान की। उसने कहा, "अनिल ! मैने तुम्हे पाकर क्या नही पा लिया ? मुझे तुम्हारे अतिरिक्त अन्य किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। तुम जो उचित समझो करो।"

अनिल बोला, "साधना ! इन्सान दुर्बलताओं का पुतला है। ऐसा संसार मे कोई नहीं है जिसमे कोई दुर्बलताएँ न हो। इन दुर्बलताओं को बाँधकर सीमित किया जा सकता है, उनके प्रवाह को रोका नही जा सकता। रोकने का अर्थ होगा बाँध का टूट जाना, अर्थात् सम्पूर्ण विनाश। मैं तुम्हारे डैडी की दुर्बलता को बाँधने के लिए निर्मला को तुम्हारी मौसी के रूप मे देखना चाहता हूं। इसमे राव साहब का भी हित है और तुम्हारा भी। तुम्हारा मात्र इतना कि तुम अपने डैडी को प्रसन्न और सुरक्षित देख पाओगी। तुम्हारे डैडी को निर्मला जैसी स्त्री की

आवश्यकता है, जो उन्हे बाँधकर रख सके। निर्मला की दुर्बलता धन-लिप्सा है, जिसके लिए वह हत्यारों की टूल बनकर यहाँ आई है। उस की यह लिप्सा तुम्हारी मौसी बनकर पूर्ण हो जाएगी। उसे उसकी इच्छित वस्तु मिल जाएगी, जो हत्यारों का साथ देकर प्राप्त होनी सम्भव नही है। ये सब बातें मैं तुम्हें स्पष्ट करके इसलिए समझा रहा हूं कि जिससे तुम्हारे मन मे कोई भ्रम न हो और मेरे कार्य में बाधा न पड़े।"

"भ्रम ! आपके किसी कार्य के प्रति ? यह क्या कह रहे हैं आप ? आप जो उचित समझें करे। मुझे मात्र यह बतला दें कि मुझे क्या करना है। मुझे अपने डैडी चाहिए, उनकी सम्पत्ति नही।"

'मेरी साधना बहुत समझदार है। मुझे अपनी साधना से यही आशा थी। अब तुम निश्चिन्त होकर देखती रहो कि अनिल क्या करता है।" अनिल ने कहा।

"अनिल ! साधना यदि जीवन में कभी आपकी बात को भी अन्यथा लेगी तो फिर उचित समझने के लिए उसके पास क्या रहेगा ? आपको मुझे कुछ भी समझाने की आवश्यकता नही है।" साधना ने कहा।

अनिल ने अपनी कलाई पर बधी घड़ी देखकर कहा, "चला अब अन्दर चलो। समय हो रहा है। तुम्हे ठीक-ठाक कर दू।"

दोनों ड्राइङ्ग-रूम से उठकर अन्दर चले गए।

१३

अनिल ने साधना का मेकप किया। मेकप कराके साधना ने आइने के सामने जाकर अपनी सूरत देखी तो उसे अपनी शक्ल देखकर

हँसी आ गई । उसे अपनी शक्ल स्वयं ही पहिचानने में कठिनाई हुई । अनिल ने उसके गाल पर तिल बनाकर उसकी भवे तथा आँखों की डोरियाँ इस करीने से लम्बी कर दी थी कि उसे साधना कहना ही सम्भव न रहा था । उस मेकप के पश्चात् उसके रूप मे आश्चर्यजनक उभार और शोखी आ गई थी । यह देखकर उसने अनिल से कहा, "अनिल ! आपने यह क्या बना दिया मेरा ? आपने तो मुझे साधना ही नही रहने दिया । मै तो अब स्वयं ही अपने आपको नही पहचान पा रही ।"

साधना की बात सुनकर अनिल मुस्कुरा दिया । उसने साधना के दोनों कन्धो पर हाथ रखकर उसे अपने सामने करके कहा, "जानती हो मैंने तुम्हे क्या बना दिया है साधना ?"

"मैं क्या जानू आपने क्या बना दिया ? बतलाइए अब मै क्या बन गई ?" साधना ने पूछा ।

"तुम अब मिस साधना नही हो । अपने मस्तक पर लगी बिन्दी और माँग मे भरे सिन्दूर पर दृष्टि डालो । ये दोनो चीजें विवाहिता की शोभा है । यह कार्य मैने स्वय अपने हाथ से सम्पन्न किया है । अब तुम मिसेज अनिल बन गई हो । जब तुम मेरे साथ राव साहब के सामने जाओगी तो वह पूछेगे कि तुम कौन हो ?"

"आप क्या कहेगे उनसे ?" साधना ने मुग्ध होकर पूछा ।

"मैं कहूगा, यह मिसेज अनिल है । अच्छा लगेगा ना तुम्हे ?"

अनिल की बात सुनकर साधना के कपोलो पर रक्तिम आभा दमदमा उठी । उसकी आँखें चमकने लगी । उसने मधुर दृष्टि से अनिल की ओर देखकर आँखें नीची कर ली ।

"अब तो तुम्हें तुम्हारे डैडी नही पहिचान पाएगे ना साधना ?" अनिल ने पूछा ।

"ऊं हूं ।" साधना ने कहा ।

"चलो, अब चलते है । राव साहब और निर्मला जू के लिए

प्रस्थान कर चुके होंगे।" कह कर अनिल ने घड़ी देखी।

दोनों कोठी के बाहर आए और टैक्सी पर सवार हुए। अनिल ने कहा, "एक बात का ध्यान रखना साधना ! बोलना नही जरा भी।"

"बोलना मुझे आता ही कहाँ है अनिल !" साधना ने कहा।

जू के गेट पर गाड़ी से उतरे तो अनिल ने देखा राव साहब और निर्मला सामने अपनी गाड़ी से उतर रहे थे। अनिल ने साधना का हाथ दबा कर कहा, "रुक जाओ साधना। उन्हे अपने निकट आने दो।"

कुछ क्षण पश्चात् राव साहब और निर्मला अनिल और साधना के निकट आ गए। अनिल बोला, "अरे ! निर्मलाजी आप कब आईं जयपुर ?"

निर्मला अनिल को देखकर सिटपिटा-सी गई। साधना ने देखा निर्मला की पिंडलियाँ काँप रही थी और उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी थी। साधना उसकी यह दशा देखकर आश्चर्यचकित रह गई। उसकी समझ मे न आया कि अनिल को देखकर उसकी यह दशा क्यों हो गई।

निर्मला संभल कर बोली, "कल आई अनिल बाबू ! आप कब तशरीफ लाए ?"

"मुझे तो दिल्ली छोड़े लगभग बीस-पचीस दिन हो गए निर्मला जी ! मिसेज राजस्थान के शहरो की सैर करना चाहती थी। मैं इन्हे जयपुर, अजमेर, जोधपुर और उदयपुर की सैर कराने ले आया। आज ही अजमेर से लौटा हूं।" अनिल ने कहा।

राव साहब अनिल को बड़े ध्यान से देख रहे थे। उन्होंने पूछा, "आप एक दिन हमारी कोठी पर भी तो तशरीफ लाए थे अनिल बाबू ! आप वही है ना !"

"जी बिलकुल वही हूं राव साहब ! पहिचान लिया आपने ?" अनिल ने कहा।

उस दिन के पश्चात् फिर दर्शन नही दिए आपने। साधना तो

दिल्ली चली गई। पढ़ाई का अंतिम वर्ष है उसका। हमने सोचा, उसे वर्ष खराब नही करना चाहिए।" राव साहब ने कहा।

"आपने ठीक सोचा राव साहब! पढाई का क्रम एक बार टूट जाने पर फिर जुडना कठिन हो जाता है। मै जिस दिन आपके यहाँ आया था, उसी दिन रात्रि की गाडी से उदयपुर चला गया था। इसी लिए आपके दोबारा दर्शन न कर पाया। आज आपके दर्शन करने का विचार था, परन्तु मिसेज ने प्रात: से ही ऐसी घूमने की रट लगाई कि घूमते-फिरते यह समय हो गया। स्त्रियो में घूमने की कुछ बीमारी सी होती है! बीमारी न कह कर इसे आप शौक भी कह सकते है। हमारी मिसेज को घूमने का बेहद शौक है।" अनिल ने कहा।

अनिल की बात सुनकर राव साहब को हँसी आ गई। वह बोले, "बात किसी हद तक ठीक ही है आपकी। निर्मलाजी को भी घूमने का बहुत शौक है। दोपहर से तैयारी कर रही है जू आने की। अब आप कब तक है जयपुर में?"

"दो तीन दिन तो हूं ही। क्या निर्मलाजी आपकी ही कोठी पर ठहरी हुई है?"

"जी हाँ। यह जयपुर की सैर करने आई है।" राव साहब ने बतलाया।

अनिल ने निर्मला से कहा, "जयपुर भारत के बहुत सुन्दर नगरों में से है निर्मलाजी! जितनी आप सुन्दर है, उतना ही यह शहर सुन्दर है। राव साहब ने कुछ सैर कराई आपको?"

"सैर कराने ही तो लाए है इस समय।" नजर नीची करके निर्मला ने कहा।

"नजर नीची न करो निर्मला जी! इतनी सुन्दर आँखे क्या नीची करने के लिए है?" यह कहकर अनिल राव साहब से बोला, "राव साहब! आप राज्यसभा के सदस्य रहे हैं। भारतीय कलाकारों के मध्य आपकी सहृदयता की ख्याति है। आपके सम्पर्क में आज तक

अनेकों महिला कलाकार आई होगी, परन्तु जो गुण निर्मलाजी मे है वे अन्यत्र मिलने दुर्लभ है। रूप और कला की साक्षात देवी समझें इन्हे आप।"

राव साहब निर्मला के रूप और गुणों पर पहले ही मुग्ध थे। अनिल द्वारा उनकी प्रशसा किए जाने पर निर्मला उनके मन मंदिर की देवी बन गई। उन्होने कहा, "आपने तो बहुत प्रशंसा कर डाली हमारी निर्मलाजी की। वैसे प्रशसा ठीक ही की है आपने। इधर पन्द्रह-बीस दिन से हमारा मन बहुत खिन्न था। पत्नी की हत्या हो जाने कारण हम विक्षिप्त से हो गए थे। जब से यह हमारी कोठी पर आई है, हमे कुछ हँसने-बोलने और बाते करने का सहारा मिल गया है। यह हमारे निराशापूर्ण जीवन मे आशा की किरण बन गई है।"

अनिल ने कहा, "निर्मला जो की प्रशसा करने मे मैने अतिशयोक्ति से काम नही लिया है राव साहब! निर्मला जी जहाँ रहे, वहाँ उदासी का क्या काम ? इन्हे आप साक्षात वसंत ऋतु की बहार समझें, सुन्दर-तम पुष्पो की सुगंधि से भरपूर। आइए जू की सैर करते है। इसके पश्चात् हमे सिनेमा जाना है।"

"सिनेमा तो हम भी चलेंगे, अनिल बाबू! आप हमारे ही साथ चलिए सिनेमा।" राव साहब ने कहा।

"यह बात निर्मलाजी पसंद करे तो अवश्य चलेगे। हम जरा डरते है इनसे। कहीं यह यह न कहे कि हमने इनकी प्राइवेसी नष्ट कर दी।" अनिल ने कहा।

"नही-नही, यह क्या कहने लगे आप ? आपके साथ सिनेमा चलने में मुझे हार्दिक प्रसन्नता ही होगी।" निर्मला ने कहा।

साधना अनिल के वाकचातुर्य पर मुग्ध थी। उसका दिल अनिल के शब्द-शब्द पर गुदगुदा उठता था। अनिल और निर्मला की बातों से स्पष्ट था कि निर्मला उसकी परिचिता थी।

अनिल बोला, "निर्मलाजी की स्वीकृति प्राप्त कर आपके साथ

सिनेमा चलने मे हमे ही नहीं, मेरी मिसेज को भी अपार हर्ष होगा। आप बुरा न मानना कि हमने आपकी आज्ञा का पालन करने से पूर्व निर्मलाजी की स्वीकृति ली।"

"नही-नहीं, इसमे बुरा मानने की क्या बात है ? मुझे आपकी इस औपचारिकता से हार्दिक प्रसन्नता हुई। आप नारी-मनोविज्ञान के ज्ञाता प्रतीत होते है।" राव साहब ने कहा।

अनिल मुस्कुरा दिया राव साहब की बात सुनकर। बोला, "चलिए, यदि सिनेमा चलना है तो समय नष्ट क्यों करें ?"

निर्मला ने अब संकोच त्याग दिया था। वह अनिल से खुलकर बाते करने लगी थी। वह प्रसन्न थी कि अनिल ने उसकी प्रशसा करके उसे राव साहब की दृष्टि मे और ऊपर उठा दिया था। उसने पूछा, "आपने यह शादी कब की अनिल बाबू ? हमे सूचना भी नहीं दी। चुपके-ही-चुपके यह चाँद का टुकडा चुरा लाए कही से।"

"आपका कही पता ही नही रहता। कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, जाने कहाँ-कहाँ की यात्राएं करती रहती है ? यह शादी हमने अभी की है। शादी करके ही तो हम सैर करने निकले है।" अनिल ने कहा।

जू देखकर सब लोग बाहर आए तो सामने राव साहब की गाड़ी खड़ी थी। उन्होने कहा, "आप तीनों पीछे बैठे। मै आगे बैठता हूं।"

अनिल ने गाड़ी मे बैठकर निर्मला का हाथ दबाया और उसमे एक कागज का टुकड़ा चुपके से थमा दिया। फिर मुस्कुरा कर कहा, "निर्मलाजी ! आज आप बहुत सुन्दर लग रही है।"

"आप तो ऐसे ही बनाया करते है मुझे। कोई विशेष बात है क्या आज सुन्दरता की ?" निर्मला ने यह कह कर अनिल का हाथ दबा दिया।

अनिल बोला, "राव साहब ! निर्मलाजी बहुत सहृदय महिला है। आपके और इनके स्वभाव में बहुत बडा साम्य है। मुझ पर इनकी सर्वदा ही कृपा-दृष्टि रही है।"

"ऐसी आप पर क्या कृपा की है निर्मलाजी ने ?" राव साहब ने पूछा।

"एक नही अनेक राव साहब ! यह मेरे अनेकों बार काम आई है।" अनिल ने कहा।

"बस बस ! यह सब रहने दीजिए अनिल बाबू ! लज्जित न कीजिए मुझे।" निर्मला ने कहा।

"देखा आपने राव साहब ! निर्मलाजी अपनी प्रशंसा सुनना भी पसंद नही करतीं। यही तो इनकी महानता है। ऐसे बहुत कम व्यक्ति मिलेंगे आपको जो अपनी प्रशंसा सुनना भी पसंद न करे।" अनिल ने कहा।

अनिल की बात से राव साहब बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने निर्मला की ओर विशेष दृष्टि से देखा। उन्हे लगा निर्मला मात्र सुन्दर, मधुर भाषिणी और कोमल कण्ठी ही नही, उसमे चारित्रिक गुण भी है।

साधना अनिल की इन बातो का उन बातो से तारतम्य जोड़ रही थी, जो उसने पहले निर्मला के विषय मे कही थी। अनिल की बातो मे गम्भीर व्यंग्य की पुट थी।

गाड़ी सिनेमा हाउस के सामने जाकर रुकी। सब लोगों ने पिक्चर देखी। पिक्चर देखकर बाहर आए तो अनिल ने कहा, "अब आज्ञा दीजिए राव साहब ?"

गाड़ी मे बैठिये। हमे कोठी पर उतार कर ड्राइवर आपको आपके स्थान पर छोड़ आएगा।" राव साहब ने कहा।

सब लोग गाड़ी मे बैठ गए। राव साहब और निर्मला अपनी कोठी पर गाड़ी से उतर गए। राव साहब ने अनिल से कहा, "किसी दिन हमारे यहाँ आना। अपनी मिसेज को भी लाना। मुझे आप से कुछ बाते करनी हैं।"

"अवश्य आएगे राव साहब ! अब तो निर्मलाजी के आपकी कोठी पर आ जाने से हमारे लिए यह स्थान और भी आकर्षक हो गया

है। आपसे भेंट किए बिना हम दिल्ली नही लौटेंगे।" अनिल ने कहा।

साधना और अनिल अपनी कोठी पर गाड़ी से उतरे। साधना अन्दर चली गई। अनिल ने ड्राइवर से कहा, "मानसिंह ! मेरे साथ अन्दर आओ। कुछ आवश्यक काम है।"

अनिल ने ड्राइङ्गरूम मे आकर मानसिंह से पूछा, "मानसिंह ! अब तो राव साहब की तबियत ठीक चल रही है ना ?"

मानसिंह ने उदास मन से कहा, "ठीक ही है बाबूजी !"

तभी साधना ने ड्राइङ्ग-रूम मे प्रवेश किया। साधना को देखकर मानसिंह आश्चर्यचकित रह गया। उसने कहा, "आप यहाँ है ?"

"हाँ मानसिंह ! यह यही है। इनके यहाँ होने की बात किसी को ज्ञात न हो। राव साहब को भी नही।" अनिल ने कहा।

"नही नही बाबूजी ! बिटिया की खबर कानोंकान किसी को पता न चलेगी, परन्तु बाबूजी ! यह औरत कौन है, जो हमारी कोठी पर आई है। मुझे तो इसमे कुछ गोल-माल मालूम दे रहा है। कही यह साधना बिटिया की मम्मी के हत्यारो से मिली हुई न हो। राव-साहब इसके चगुल मे फँस गए है। कही कोई दूसरा अनर्थ न हो जाए।" मानसिंह ने कहा।

"चिन्ता न करो मानसिंह ! सब ठीक हो जाएगा। कल वह स्त्री तुमसे यहाँ आने को कहे तो तुम उसे चुपचाप यहाँ ले आना। किसी को उसकी सूचना न हो। वह किसी बहाने से आयेगी।" अनिल ने कहा।

"बाबूजी ! क्या आप जानते है उसे ? मुझे तो ठीक नही लग रही वह औरत।"

"सब ठीक हो जाएगी मानसिंह ! घबराओ नही। अच्छे-अच्छे ठीक हो जाते है।"

"अनिल बाबू की बात का ध्यान रखना मानसिंह !" साधना ने कहा।

"निसाखातिर रहो बिटिया !" मानसिंह ने कहा।

मानसिंह के जाने पर साधना और अनिल ने भोजन किया। अनिल बोला, "साधना ? देखी तुमने अपनी मौसी ? शकुन्तला भाभी की मौसी से कम सुन्दर नही है ना ? पसद आई तुम्हे ?"

साधना मुस्कुरा दी अनिल की बात सुनकर। पूछा, 'अनिल ! वह तुम्हारी शक्ल देखकर इतनी भयभीत क्यों हो गई थी ? उनकी पिंड-लियाँ काँपने लगी थी और चेहरे पर हवाइयाँ क्यो उड गई थी।"

"मेरी शक्ल भयानक लगी होगी उसे। तुम्हे तो नही लगती ना ? तुम तो नही डरतीं मुझसे साधना ?" अनिल ने कहा।

"नही, यह बात नही है। आप उन्हे पहले से जानते है। आप बतला नही रहे थे मुझे। कोई ऐसी बात अवश्य है जिसके कारण वह आप से भयभीत थी ?" साधना ने कहा।

"वह कल यहाँ आएगी तो ज्ञात कर लेना। मुझे तो ऐसी किसी बात का ज्ञान नही है जिसके कारण वह मुझसे भयभीत हो।" अनिल ने कहा।

साधना मुस्कुरा दी अनिल की बात सुनकर। बोली, "न बतलाए आप। ज्ञात तो हो ही जाएगा सब।"

भोजन करके दोनों बैड-रूम मे आ गए। अनिल ने कहा, 'तुमने मानसिंह की बात सुनी साधना ! कितने दुर्भाग्य की बात है कि जिस बात को यह साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी शका की दृष्टि से देख रहा है, उसे तुम्हारे डैडी नही समझ पा रहे। वह समझ रहे है कि यह इन्द्र के अखाड़े की परी परमात्मा ने उनको इस निराशा से उभारने के लिए भेजी है।"

साधना चुपचाप निराशापूर्ण दृष्टि से अनिल की ओर देख रही थी।

अनिल ने कहा, "चिन्ता न करो साधना ! अब तुम देखना यह नागिन तुम्हारे इस सपेरे की बीन पर कैसे नाचती है ? यदि हमने इससे हत्यारों को ही न डसवा दिया तो हमारा नाम भी अनिल नही। जरा मुस्कुरा तो इस बात पर।"

साधना का मन गुदगुदा उठा अनिल की बात सुनकर । उसके चेहरे पर अनायास ही मुस्कान बिखर गई । बोली, "आप वास्तव मे सपेरे है अनिल ! सपेरे ही नहीं, जादूगर भी । आपकी बाते मै समझने का प्रयास करने पर भी समझ नही पाती ।"

"तुम्हें पहिचाना तो नही तुम्हारे डैडी ने साधना ?" अनिल ने पूछा ।

"आपने मुझे साधना छोडा ही कब था जो वह पहिचान पाते । फिर उनके पास उस समय अवकाश कहाँ था अपनी साधना को पहिचानने का ? उन्होंने देखा ही नही मेरी ओर ।" साधना ने कहा ।

"मिसेज अनिल की ओर कोई देख भी कैसे सकता था साधना ? उनका ध्यान उस समय अपनी मिसेज पर था । प्रसन्न थे ना आज ? उनकी निराशा तो दूर हुई ।" अनिल ने कहा ।

साधना भारी मन से बोली, "वह निराशा ही क्या थी अनिल जो इस प्रकार समाप्त हो गई । क्या मम्मी से डैडी का यही प्रेम था ? क्या इसी के लिए इन्होंने दो दिन तक भोजन नही किया था ?"

"तुम्हारे मन के भाव को मै समझ रहा हूं साधना ! पत्नी की मृत्यु के पश्चात् उसके प्रेम का निर्वाह करने वाले व्यक्ति श्रद्धा के पात्र होते है, परन्तु जो नहीं है उनसे घृणा करना भी उचित नही । उन्हे तुम निर्वाह करने वाला नही बना सकती । व्यर्थ अपना मन भारी न करो । परिस्थिति को समझकर कर्त्तव्य पालन करना बुद्धिमान व्यक्ति का धर्म है । मैं उसी की तुमसे अपेक्षा रखता हूं ।" अनिल ने कहा ।

साधना ने दुखी मन से कहा, "क्या मम्मी की मृत्यु की मात्र इतनी ही पीडा थी डैडी के मन मे ?"

अनिल ने साधना को अपनी बाँहो मे आबद्ध कर उसे धैर्य बँधाया । उसकी आँखे पोंछते हुए कहा, "यह क्या बात हुई साधना ? तुम्हारा मन भारी करना मै सहन नही कर सकता । मैं तुम्हारे मन के मर्म और उसकी पीड़ा का अनुभव कर रहा हूं । फिर भी यह समझो

कि राव साहब तुम्हारे पिता है और उनके प्रति तुम्हारा कुछ कर्त्तव्य है। तुम्हे उनको हत्यारों के षडयन्त्र से मुक्त कराना है। तुम्हे उनकी सुरक्षा का ध्यान रखना है। तुम्हारे डैडी अपना कर्त्तव्य स्वयं समझे। तुम्हे अपना कर्त्तव्य समझना है। इस समय वह भयकर विपत्ति मे ग्रस्त है।"

साधना अनिल की गोद मैं अपना सिर रखकर लेट गई। उसने अपनी आँखे बन्द कर ली। अनिल की बात का कोई उत्तर न दिया।

अनिल बोला, "साधना! आज हम तुम्हे शकुन्तला भाभी की मौसी की कहानी सुनाते है। सुनोगी?"

साधना ने उसी प्रकार नेत्र बन्द किए-किए कहा, "सुनाइए।"

अनिल ने कहानी आरम्भ की, "भाभी की मौसी स्नेहलता जी कलकत्ते की प्रसिद्ध डासर थी। यह बम्बई के स्मगलर दिलबाग से प्रेम करने लगी, परन्तु दिलबाग ने इन्हे प्रेम न करके रुपया कमाने का साधन बना लिया। उसने इन्हे दिल्ली लाकर शकुन्तला भाभी के पिता की प्राइवेट सेक्रेटरी बनवा दिया। भाभी के पिता करोड़ो पति सेठ थे। उनकी दुर्बलता भी वही थी जो तुम्हारे डैडी की है। यह सब करके दिलबाग ने एक दिन भाभी की मम्मी की हत्या करा दी।"

"हत्या करा दी!" साधना उठकर बैठ गई।

"हाँ साधना! और फिर इनका भाभी के पिता जी से विवाह करा दिया। यह सब भाभी के पिताजी का धन लूटने के लिए किया गया था। दिलबाग की हविस यहीं पर समाप्त न हुई। उसने फिर भाभी के पिताजी की भी हत्या करा दी और सोचा इनके जरिए वह उनकी पूरी सम्पत्ति का मालिक बन जाये, परन्तु वह हो नहीं पाया। भाग्य से भाभी उसके चंगुल से निकल भागी।" अनिल ने कहा।

"जीजी उसके चंगुल से कैसे निकल आईं अनिल?" साधना ने आश्चर्य से पूछा।

"अपने पिताजी की हत्या के समय भाभी कोठी पर नही थी। यह

समाचार पाने पर यह कोठी न जाकर स्टेशन गई और बम्बई की गाड़ी मे बैठ गई। भाग्य से ट्रेन मे इनकी नारग से भेट हो गई। नारंग के पुलिस मे बहुत अच्छे सम्बन्ध है। उसने दिलबाग को पकडवा कर फॉसी पर लटकवा दिया।"

'क्या जीजी की मम्मी और उनके पिताजी की हत्याओ मे स्नेहलता मौसी का हाथ नही था ?" साधना ने पूछा।

वह जो कुछ भी हुआ सब स्नेहलता मौसी की नॉलेज मे अवश्य था, परन्तु उन षडयत्रो मे उनका हाथ नही था और बाद मे इन्ही के बयान पर दिलबाग को फॉसी हुई। इसीलिए भाभी ने इन्हे अपनी मौसी स्वीकार कर लिया। मै तुम्हे विश्वास दिलाता हूं कि यदि तुम निर्मला को अपनी मौसी स्वीकार कर लोगी तो यह तुम्हारी मम्मी के हत्यारों को पुलिस के चगुल मे फॅसवा देगी।"

साधना ने पूछा, "क्या वास्तव मे जीजी ने स्नेहलता मौसी को इस स्थिति मे अपनी मौसी स्वीकार किया था ?"

"इसी लिए तो दोनो मे मा-बेटी जैसा स्नेह बना हुआ है। यह तो तुम मानोगी ही कि निर्मला स्नेहलताजी से कम दोषी है। इसका तुम्हारी मम्मी की हत्या मे कोई हाथ नही है।"

"जीजी देवी है अनिल! आप जो उचित समझे करें। मम्मी की याद आने पर मन भारी हो जाता है। सोच रही थी कि डैडी……।"

"वह जैसे भी है, तुम्हारे डैडी है साधना। तुम्हारे प्रति स्नेह भी कम नही है उनके मन मे। उनमें एक दुर्बलता है तो हजार गुण भी है। राव साहब सहृदय और उदार व्यक्ति है। उनकी यही सहृदयता और उदारता उनके विनाश का कारण बन गई।" अनिल ने कहा।

साधना निर्निमेश नेत्रों से अनिल की ओर देख रही थी। बोली, "अनिल आप क्या है ? मै समझ नही पाई। क्या करना चाहते है यह भी समझने मे मैं असमर्थ हूं। मै मात्र इतना समझ पाई हूं कि आप मेरे रक्षक हैं। आपके सरक्षण मे मेरा कोई अहित होना सम्भव नही है।"

"चिन्ता न करो साधना! जिन दुष्टो ने तुम्हारा अहित करने की बात सोची है, वे बच नही पाएगे। उनका स्वप्न कभी सत्य न होगा।" अनिल ने कहा।

साधना ने संतोष की साँस लेकर अपने नेत्र बन्द कर लिए। वह जो कुछ चाहती थी उसे मिल चुका था। उसे अनिल के अतिरिक्त अन्य किसी चीज की आवश्यकता नहीं थी। उसके कहा, "अनिल! यदि निर्मला को आप उपयोगी बना ले तो मुझे उनको अपनी मौसी स्वीकार करने मे कोई आपत्ति न होगी। आप डैडी के हित मे जो उचित समझें करें।"

अनिल को साधना की बात सुनकर हार्दिक सतोष हुआ। उसने कहा, "सब ठीक हो जायेगा साधना! तुम निश्चिन्त होकर आराम से सो जाओ। कल नई सुबह नया रंग लेकर आएगी। हत्यारो की मन चाही नही होगी।"

साधना ने सतोष की साँस ली और आराम से अनिल के पास लेट गई। अब उसके मस्तिष्क में कोई चिन्ता न थी।

१४

साधना उस व्यक्ति के विषय मे सोच रही थी जिसने समरसिह और धीरसिह से उसकी मम्मी की हत्या कराई थी। अनिल का अनुमान था कि वह उसके डैडी का विश्वासपात्र व्यक्ति है। वह उसका नाम जानने को उत्सुक थी। वह अनिल से बोली, "अनिल! आप मुझसे एक बात छिपा रहे है।"

"सम्भव है साधना, परन्तु यदि ऐसा कर भी रहा हूं तो उसमे

तुम्हारा कोई हित ही होगा। मै तुम्हे व्यर्थ परेशान नही करना चाहता। बताओ ऐसी क्या बात है ?"

"आप मेरी उद्विग्नता का कारण जानते है अनिल ! आप बतलाना नही चाहते। क्या आप नही जानते कि मम्मी का वास्तविक हत्यारा कौन है, जो इस प्रकार के षडयंत्र रच रहा है। निर्मला को उसी ने हमारी कोठी पर लाकर रखा है।" साधना ने कहा।

"अभी कुछ देर मे निर्मला आने वाली है। वह सब कुछ बतला देगी। कल तुम्हारे डैडी के सामने उससे बाते करने का अवसर ही कहाँ मिला था यह बात मालूम करने का ? पहले निश्चय तो कर लू कि वह कौन है ?"

"यह बात नही है अनिल ! आप को मम्मी के वास्तविक हत्यारे का उसी दिन पता चल गया था जिस दिन दिल्ली मे मम्मी के हार पकडे गए थे।" साधना ने कहा।

अनिल मुस्कुरा दिया साधना की बात सुनकर। उसने अपने मन मे साधना की बुद्धिमत्ता की सराहना की। बोला, "बहुत उतावली हो रही हो उस आदमी का नाम जानने के लिए साधना ! क्या करोगी उसका नाम जानकर ? सच पूछो तो मैने वास्तविक हत्यारे को उसी दिन पहिचान लिया था जब मै प्रथम दिन तुम्हारी कोठी पर गया था, परन्तु उस समय उसे पकड़वाने के लिए कोई प्रमाण नही था मेरे पास। यदि प्रमाण होता तो मैं उसे रणधावा साहब से उसी दिन पकड़वा देता।"

"क्या आप मुझे उसका नाम नही बतला सकते अनिल ? क्या मै उसको नही जानती ?" साधना ने पूछा।

साधना की बात सुनकर अनिल कुछ गम्भीर हो गया। उसने कहा, "तुम जानना ही चाहती हो तो बतला देता हूं साधना ! तुम उस व्यक्ति को भली भाति जानती हो।" यह कहकर अनिल मौन हो गया।

"आप चुप क्यों हो गए अनिल ?" साधना ने पूछा।

"तुम जोर दे रही हो तो बतला देता हू तुम्हे। यदि मैं कहूं कि

वह व्यक्ति तुम्हारे चचा भवानीसिंह है तो तुम विश्वास करोगी ? भवानीसिह ने स्वय अपने हाथ से तुम्हारी मम्मी की हत्या की है ?" अनिल ने कहा।

"चचा भवानीसिह ने !" यह कहते हुए साधना का सिर चकरा गया। वह संज्ञाविहीन-सी अनिल की गोद मे गिर गई।

अनिल ने साधना को संभालकर कहा, "हाँ साधना ! वह नीच भवानीसिंह ही है जिसने यह जघन्य अपराध किया है और उसी ने समरसिंह और धीरसिह को ट्रेन में तुम्हारी हत्या कराने के लिए भेजा था। तुम्हारे उस ट्रेन से दिल्ली जाने की सूचना भवानीसिंह और राव साहब के अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं थी। तुम्हारी मम्मी के हार भी भवानीसिह ने ही चुराए थे।"

अनिल ने देखा साधना के वदन मे एक फरहरी-सी आई और वह उठकर बैठ गई। वह सम्पूर्ण घटना-क्रम को अपने मस्तिष्क के पटल पर उतार कर उसके विषय मे सोच रही थी। उसे स्थिति को समझने मे विलम्ब न हुआ।

अनिल ने बतलाया, "इसने तुम्हारी मम्मी के हार नानकचन्द जौहरी की मार्फत भिक्खीमल जैन के पास पहुचाए और उससे एडवांस के बतौर पच्चीस हजार रुपया प्राप्त किया। वही इसकी निर्मला से भेट हुई और इसने निर्मला को जयपुर आने की दावत दी। यह निर्मला को यहाँ छोड कर स्वयं फारम पर चला गया, जिससे निर्मला को राव साहब को मोहित करने का पूर्ण अवसर मिल जाए और निर्मला राव साहब को अपने रूप जाल मे फंसा ले।"

"क्या समरसिंह और धीरसिह का चचा भवानीसिह से मेल हो गया अनिल ?" साधना ने पूछा।

'निश्चित रूप से साधना ! दो-चार दिन में तुम्हारे सामने सब स्पष्ट हो जायेगा।" अनिल ने कहा।

उसी समय राव साहब की कार आकर रुकी। निर्मला कार से

उतर कर अन्दर आई तो साधना ने देखा वह बहुत भयभीत थी ।

अनिल ने कहा, "इधर आओ निर्मला ! सोफे पर बैठो। घबरा क्यो रही हो ? पसन्द आया जयपुर ?"

निर्मला अनिल के सामने सोफे पर बैठ गई । वह अनिल से आँखें मिलाने में असमर्थ थी ।

अनिल ने कहा, "निर्मला ! तुम जानती हो मुझे झूठ से घृणा है। तुम यह भी जानती हो कि सच बोलने वाले का मै बडे से बड़ा अपराध क्षमा कर देता हूं ।"

"मैंने पहले भी कभी आपसे झूठ नही बोला अनिल बाबू ! आज भी नही बोलूगी । आप जो पूछेगे, वह स्पष्ट बतला दूगी ।" निर्मला ने कहा।

निर्मला की बात सुनकर साधना आश्चर्यचकित रह गई ! उसने हतबुद्धि होकर अनिल की ओर देखा । वह नितान्त गम्भीर था उस समय । साधना की समझ में निर्मला के इतनी दीन होकर बाते करने का कारण न आया । वह समझ न पाई कि निर्मला अनिल से इतनी भयभीत क्यों थी ? अनिल ने अपराध क्षमा करने की बात क्यो कही ?

"तुम जयपुर किस अभिप्राय से आई हो निर्मला ?" अनिल ने सीधा प्रश्न किया ।

"मेरी दिल्ली मे राव साहब के भाई भवानीसिह से भेट हुई थी । उन्होंने मुझे जयपुर आने का निमत्रण दिया था । उन्ही के कहने पर मै जयपुर आई हू ।" निर्मला ने कहा ।

"मैं यह नही पूछ रहा तुमसे निर्मला कि तुम किसके कहने पर यहाँ आई हो । मै यह जानना चाहता हूं कि तुम क्यो आई , किस अभिप्राय से आईं, तुम्हारा यहाँ आकर क्या करने का इरादा है ? तुम जयपुर मे राव साहब पर डोरे डाल कर उन्हे फसाने के लिए आई हो ना ?"

"यह सच है अनिल बाबू ! मुझे इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए यहाँ बुलवाया गया है ।"

इसका मतलब तुम राव साहब को फँसाकर उनकी दौलत लूटने के लिए आई हो।" अनिल ने कहा।

"यही तात्पर्य है इसका। इसमे दो राय कैसे हो सकती है ?" निर्मला ने कहा।

"तात्पर्य समझना मुझे तुमसे नही सीखना है निर्मला ! वह मुझे खूब आता है। स्पष्ट बतलाओ कि भवानीसिंह तुम्हे यहाँ बुलवाकर तुमसे क्या कराना चाहता है ?" अनिल ने पूछा।

"राव साहब का धन जिस प्रकार भी प्राप्त हो सके प्राप्त करने के अभिप्राय से उसने मुझे यहाँ बुलाया है।" निर्मला ने कहा।

"चाहे राव साहब का धन प्राप्त करने के लिए तुम्हे राव साहब की हत्या ही क्यों न करनी पड़े। ठीक है ना ?" अनिल ने पूछा।

"यह बात आपसे किस ने कही ?" निर्मला ने भयभीत होकर पूछा। उसके मस्तक पर स्वेद-बिन्दु उभर आये।

"तुम्हे जिस प्रकार धन प्राप्त होगा, तुम वही काम करोगी। यही तो कहा है तुमने। यदि राव साहब का धन सीधी तरह प्राप्त न हो सका तो तुम्हे तिरछे अस्त्र-शस्त्रो का प्रयोग करना होगा।" अनिल ने कहा।

"नही, मै यह करने के लिए यहाँ नही आई।" निर्मला ने कहा।

"तुम्हे ज्ञात है कि राव साहब की पत्नी की हत्या की गई है ?" अनिल ने पूछा।

"मुझे भवानीसिंह ने बतलाया था कि कुछ दिन पूर्व कुछ डकैतों ने कोठी मे घुसकर उनकी पत्नी की हत्या कर दी थी। राव साहब ने भी मुझे यही बतलाया है।" निर्मला ने कहा।

"वे डकैत कौन थे, यह तुम्हे भवानीसिंह ने नही बतलाया और दूसरी उससे भी भयकर डकैती डालने के लिए तुम्हे अपने गिरोह मे शामिल कर लिया ?" अनिल ने कहा।

निर्मला अनिल के व्यंग्य से परास्त होकर उसके पैरो पर गिर गई।

उसके नेत्रो से अश्रुओं की झडी लग गई। साधना अवाक बैठी यह दृश्य देख रही थी।

अनिल ने कहा, "निर्मला ! ऊपर उठकर सामने सोफे पर बैठो। मुझे नाटक दिखाने की जरूरत नही है। इस नाटक का मुझ पर कोई प्रभाव नही होता। मैं स्वय तुमसे कही अच्छा नाटक करना जानता हूं। ठीक-ठीक बात बतलाओ।"

निर्मला ने कहा, "अनिल बाबू ! ईश्वर के लिए मेरा विश्वास करो। मैं इस रहस्य से नितान्त अनभिज्ञ हूं। मुझे हत्यारों के विषय में कोई ज्ञान नहीं है। भवानीसिंह ने मुझे उनके विषय मे कुछ नही बतलाया।"

"तब फिर तुमसे क्या कहा था भवानीसिह ने ?" अनिल ने पूछा।

"मुझसे उन्होने यही कहा था कि तुम राव साहब के पास रह कर ऐश करोगी। तुम उन्हें अपने प्रेम-पाश में फसा लोगी तो आजीवन दौलत में खेलोगी।" निर्मला ने कहा।

"तुम्हारे ऐश करने या आजीवन दौलत मे खेलने से भवानीसिंह को क्या लाभ होगा ? उसमे तुम्हारे प्रति यह सद्भावना क्यों जाग्रत हुई ?" अनिल ने पूछा।

"मेरे माध्यम से उसे भी लाभ होगा। मैं कुछ धन उसे भी देती रहूंगी।" निर्मला ने कहा।

अनिल ने कहा, "यदि इस स्थिति मे पुलिस ने तुम दोनों को पकड़ कर तुम पर यह अभियोग लगाया कि तुमने राव साहब की दौलत लूटने के लिए उनकी पत्नी की हत्या की है तो तुम अपना क्या बचाव करोगी उस समय ?"

अनिल की यह बात सुनकर निर्मला के पैर उखड़ गए। वह छट-पटाने लगी। भय से कॉपने लगी और उसने विस्फारित नेत्रों से अनिल की ओर देखा।

"मेरी ओर को आँखे फाडकर क्या देख रही है बेवकूफ औरत ?

अपनी बुद्धि पर जोर डाल कर देख कि तू क्या करने जा रही है। यदि तुझे हत्यारों की पंक्ति मे खडी होना स्वीकार है तो जाकर अपने काम से लग। राव साहब पर डोरे डाल और उनकी दौलत लूट। मुझे तुझसे कुछ नही कहना है। तुझे मैंने आगाह करने के लिए बुलाया है, आगाह कर दिया। मेरा अन्य कोई अभिप्राय नही है।" अनिल ने कहा।

"क्या मुझे राव साहब की पत्नी की हत्या के अपराव में सम्मिलित कर लिया जाएगा अनिल बाबू ? मेरा तो उससे किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है।" निर्मला ने कहा।

"यह मैं जानता हूं कि तेरा उससे कोई सम्बन्ध नही है, परन्तु उनके हत्यारों से सम्बद्ध होकर वही काम करने पर जिसके लिए उनकी पत्नी की हत्या की गई, पुलिस तुझे उनसे पृथक् नही रखेगी। तूने राव साहब की दौलत लूटने के काम को इतना सरल काम कैसे समझ लिया ? बीस वर्ष से कम की सजा नही होगी। यह भी तब जब न्यायाधीश को तेरे रूप पर दया आ जाए। यदि कोई कठोर दिल वाला न्यायाधीश हुआ तो सीधा फाँसी का दण्ड सुना देगा।" अनिल ने कहा।

अनिल की बात सुनकर साधना अन्यमनस्क सी रह गई। वह समझ नही पा रही थी कि अनिल निर्मला से कहना क्या चाहता है ? निर्मला के जयपुर आने की सूचना पाकर अनिल ने उसे हत्यारों से सम्बद्ध कर दिया था। फिर उसके डैडी के सामने उसकी भूरि प्रशंसा की थी। फिर उससे निर्मला को अपनी मौसी स्वीकार करने पर बल दिया और अब निर्मला के साथ वह इस प्रकार डाट-फटकार कर रहा है। आखिर वह करना क्या चाहते है ?

निर्मला को सिर से पैर तक पसीना आ गया। वह घबरा गई। उसने अनुभव किया कि वास्तव मे वह इस हत्या-काण्ड मे फँस चुकी है। उसने भयभीत होकर कहा, "अनिल बाबू! मुझे बचाइए! मैं निर्दोष हूं। जब मुझे भवानीसिंह ने यह बताया कि राव साहब रसिक व्यक्ति

है तो मैने सोचा कि मै उन्हे अपने वश मे कर लूगी। इसी लिए मै उन के कहने पर यहाँ चली आई। आप कहे तो मै इसी समय दिल्ली लौट जाऊँ।"

"अब दिल्ली लौटने से काम नही चलेगा निर्मलाजी! एस० पी० रणधावा ने तुम्हारा नाम राव साहब की पत्नी के हत्यारो की फाइल मे नोट कर लिया है। वह कल गए भी होगे राव साहब की कोठी पर। शायद तुमसे कुछ बाते भी की होगी उन्होने। यदि तुम इस समय यहाँ से चली गई तो तुम्हारा अपराध और गम्भीर हो जाएगा। फिर मै तुम्हारी कोई सहायता नही कर सकूगा।" अनिल ने कहा।

"फिर मैं क्या करूँ अनिल बाबू ?" निर्मला ने पूछा।

"इधर आओ मेरे पास।" अनिल ने कहा।

निर्मला अनिल के पास आकर बैठ गई। उसने निराश दृष्टि से अनिल की ओर देखकर पूछा, "बतलाइए, मुझे क्या करना चाहिए ?"

"वचन दो निर्मला कि तुम हर काम उसी प्रकार करोगी जिस प्रकार मै तुम्हे करने को कहूगा। तुम्हारी बुद्धिमत्ता पर मुझे विश्वास है। तुम्हे राव साहब की पत्नी के हत्यारे का पता लगाना है।" अनिल ने कहा।

"यह मै कैसे कर पाऊँगी अनिल बाबू ?" निर्मला ने कहा।

"तुम यह कैसे कर पायेगी, यह मैं बतलाऊँगा तुम्हें। तुम बहुत गलत आदमी के चक्कर मे फँस गई हो। राव साहब की पत्नी की हत्या उसी भवानीसिह ने की है जो तुम्हे यहाँ बुलाकर लाया है। अब वह तुम्हारे द्वारा राव साहब को कोठी से कही बाहर भिजवाकर उनकी हत्या करने का षडयन्त्र रच रहा है। कोठी के चारो ओर पुलिस के गुप्तचर लगे है, इस लिए वह कोठी मे उनकी हत्या नही कर सकता। रावसाहब के पश्चात् उनकी एक लडकी रह जायेगी, जिसे वह किसी भी समय समाप्त कर देगा। यह काम पूरा करके वह राव साहब की सम्पत्ति का मालिक बन जाएगा और तुम्हे लात मारकर कोठी से निकाल देगा। अब तुम समझ गई वह तुम्हें यहाँ किस लिए लाया है।"

अनिल की बात सुनकर निर्मला ने स्थिति पर विचार किया तो उसे अनिल की बात मे तथ्य दिखलाई दिया। उसके मुख से निकला, "इसका मतलब, भवानीसिंह मुझे मूर्ख बनाकर अपने हथियार के बतौर इस्तेमाल करना चाहता है।"

"फिर क्या तू यह समझ रही थी कि वह तुझे राव साहब की रानी बनाने और तेरे हाथ की दी हुई भीख प्राप्त करने के लिए यहाँ लाया है ? बुद्धि भ्रष्ट तो नही हो गई है तेरी। बुद्धि से काम ले। भवानीसिंह ने तुझे भयकर दलदल मे फँसा दिया है। तू इस दलदल से तभी बाहर आ सकती है, जब उस रास्ते पर चले जो मैं बतलाऊँ। तुझे राव साहब की पत्नी के हत्यारो को पुलिस के हवाले कराना होगा, अन्यथा फँस तो तू गई ही है। पुलिस के जासूस तेरी निगरानी कर रहे है। एस० पी० रणधावा मेरा मित्र है। तू उनकी सहायता करेगी तो मै तुझे साफ बरी करा दूगा। तुझे जरा आँच न आने दूंगा। यदि तूने धोखा देने का प्रयास किया तो दिल्ली लौटना सम्भव न होगा। तेरा यह रूप और राव साहब को अपने वश में करने का हुनर जेल के सीखचों मे नजर आएंगे।" अनिल ने कहा।

निर्मला बोली, "अनिल बाबू ! मैं आपको वचन देती हूं कि मुझे जो सूचना प्राप्त होगी मै आपको लाकर दूगी और आप जो रास्ता बत-लाएगे उस पर चलूगी। मैं आपके आदेश का पालन करूँगी, परन्तु वचन दीजिए कि आपका हाथ मेरे सिर पर रहेगा। मैने आपका पहले भी विश्वास किया था, अब भी करूँगी।"

निर्मला की बात सुनकर अनिल ने मुस्कुराते हुए अपना हाथ निर्मला की कमर पर रख कर कहा, "विश्वास रख निर्मला ! हम तेरे लिए वह सब करेंगे जिसकी तू कल्पना भी नही कर रही होगी। यदि तू राव साहब के काम आयेगी तो हम तुझे उनकी रानी बनवा देगे, परन्तु यदि तूने हमसे जरा भी झूठ बोला तो हम तेरी कोई सहायता न कर पाएंगे। इस बात को मस्तिष्क से बाहर न निकाल देना कि तू इस समय

बहुत बुरी तरह फँसी हुई है। भवानीसिंह कब लौट रहा है फारम से?"

"वह आज दोपहर मे किसी समय आएगा।" निर्मला ने बतलाया।

"तू उसके साथ फारम पर जाना। घूमने, सैर करने का बहाना बना लेना। वहाँ जाकर उसके मन का भाव जानने का प्रयास करना। उससे मालूम करना कि उसका क्या इरादा है और वह तुझसे क्या सहयोग प्राप्त करना चाहता है। उससे समरसिह और धीरसिह के विषय मे भी मालूम करना कि वे कहाँ है। सम्भव है उन्हे उसने वही कहीं पर छिपाया हुआ हो। यह सब सूचना मेरे पास कल तक आ जानी चाहिए। भवानीसिंह से सतर्क रहना। उसे तुझ पर किसी प्रकार का शक न हो जाए।" अनिल ने कहा।

साधना अब मन मे प्रसन्न थी। वह अनिल की बुद्धिमत्ता पर मुग्ध थी और कुछ-कुछ समझती जा रही थी कि अनिल निर्मला से इस उतार चढाव से बातें क्यों कर रहा था?

"मै कल यहाँ इसी समय आऊँगी।" निर्मला ने कहा।

अनिल मुस्कुराकर बोला, "राव साहब को प्रसन्न रखना। भवानी-सिह ताड न जाए तुम्हारी किसी हरकत को। तू पर्याप्त समझदार है। तुझे अधिक समझाने की आवश्यकता नही है।" यह कहकर अनिल ने एक छोटा-सा यन्त्र निर्मला को देकर कहा, "जब तू भवानीसिंह के साथ फारम पर जाए तो इसे अपने पास रखना। भवानीसिह को इसका आभास न मिले।"

साधना ने बाहर जाकर मानसिह से कहा, "मानसिंह! निर्मला के यहाँ आने की बात किसी को पता न चले। कोई कुछ पूछे तो कहना, कुछ सामान खरीदने बाजार गई थी।"

"बेफिकर रहो बिटिया!" मानसिंह ने कहा।

निर्मला चली गई। अनिल ने सतोष की श्वास ली। अब उसके चेहरे पर प्रसन्नता का भाव था।

साधना मुस्कुराकर बोली, "आप तो बहुत बुरे है अनिल! मुझे

आपसे कुछ बहुत बडी शिकायतें है ।"

"वे क्या ?" अनिल ने पूछा ।

"पहली शिकायत तो यह है कि आपने हमारा मौसीजी से परिचय नहीं कराया । दूसरी इससे भी गम्भीर शिकायत यह है कि आप ने उनकी चाय-पानी की भी बात नही पूछी । तीसरी उससे भी गम्भीर शिकायत है ।" साधना ने कहा ।

"उस सबसे गम्भीर शिकायत को भी वतला दो साधना !" अनिल ने पूछा ।

"वह यह कि आपने मौसीजी को डरा-डरा कर उनका आधा दम निकाल दिया ।" साधना ने कहा ।

अनिल बोला, "उत्तर एक ही है तुम्हारी तीनों शिकायतों का । निर्मला अभी दोगली औरत है । वह दोगला रोल अदा कर रही है । जब हमें यह विश्वास हो जाएगा कि वह भवानीसिंह के पहलू को छोड़कर राव साहब के पहलू मे पूरी आस्था से आ चुकी है, तो हम उसे प्रेमपूर्वक चाय पिलाएगे और तभी हम उसे तुम्हारी मौसी स्वीकार कर तुम्हारा उससे परिचय कराएंगे । समझ गई ना ?"

साधना ने मुस्कुरा कर कहा, "समझ गई । चलो अब भोजन कर लो । आप रणधावा साहब के पास जाने के लिए कह रहे थे ।"

दोनो ने डाइनिङ्ग-रूम मे जाकर भोजन किया । उसके पश्चात दोनो बैड-रूम मे आ गए । साधना ने अनिल का हाथ अपने हाथ मे लेकर कहा, "अनिल ! आप भी क्या सोचते होंगे कि एक लडकी ने आपका सारा काम-काज ठप्प कराके आपको अपने ही काम में उलझा लिया । क्या कभी झुंझलाहट नही होती आपके मन मे ?"

अनिल हँस पड़ा साधना की बात सुनकर । उसे उसकी यह भोली बात बहुत प्यारी लगी । बोला, "साधना ! न तुमने मुझे अपने काम मे उलझाया और न ही कभी यह कहा कि मैं अपना सब काम-काज छोड कर तुम्हारे झमेले मे पडू । मैंने तो स्वयं ही तुम्हारी विपत्ति को

अपनी विपत्ति समझा है। इससे मुक्ति प्राप्त किए बिना अन्य कार्य में मेरा मन कैसे लग सकता है ?"

साधना आत्मविभोर हो गई अनिल की बात सुनकर।

अनिल बोला, "साधना ! मै इस कार्य को करने मे कोई उलझन अनुभव नही कर रहा। यह तो साधना है मेरी, अपनी साधना को प्राप्त करने के लिए। वैसे मुझे आनन्द आता है इस प्रकार के भयकर काम करने में।"

"बड़े विचित्र है आप ! जिन कामों से अन्य लोग भय खाते है, उनमें आपको आनन्द आता है। ये भयंकर घटनाएं खेल होती है क्या ? मैं तो थरथरा उठती हूं इनका स्मरण करके भी।" साधना ने कहा।

"मेरे साथ रहकर भी तुम भयभीत हो उठती हो साधना ?" अनिल ने पूछा।

"आपका सामीप्य प्राप्त न होता तो क्या आज साधना का अस्तित्व होता अनिल ?" साधना ने कहा।

"यह बात न कहो साधना ! अब तुम आराम करो। मुझे कुछ आवश्यक काम है। हाँ एक बात और ज्ञात करनी थी तुमसे। तुम्हारी कोठी पर भवानीसिह का कोई फोटो तो नही है ?"

"फोटो तो उनके कई है। मैं दिल्ली जाते समय मम्मी का एलबम अपने साथ ले गई थी। वह मेरी अटैची मे रखा हुआ है। उसमे उनके कई चित्र है।" साधना ने कहा।

"जरा देखो तो एलबम निकाल कर।" अनिल ने कहा।

साधना ने अटैची से एलबम निकाल कर देखा। उसमे भवानीसिंह के कई चित्र थे। उनमें से एक चित्र अनिल ने निकाल लिया।

अनिल कुछ देर पश्चात् किसी काम से गया और संध्या को चार बजे के लगभग लौटा तो उसके कानों में साधना का मधुर स्वर पड़ा। साधना अन्दर कमरे में पलंग पर बैठी इकतारे पर तन्मय होकर गा रही थी, 'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।'

अनिल चुपचाप साधना के पीछे जाकर खड़ा हो गया। साधना गाती रही। जब साधना ने गाना बन्द किया तो अनिल ने पीछे से साधना की आँखों पर हाथ रख कर कहा, "क्यों साधना ! क्या मैं कुछ भी नही हूं तुम्हारा ? सब कुछ गिरिधर गोपाल ही है ?"

साधना मुग्ध हो गई। उसने उसी प्रकार नेत्र बन्द किए हुए कहा, 'अनिल ! तुम ही तो मेरे गिरिधर गोपाल हो। मैं तुम्हारी ही तो मीरा हूं।"

अनिल आनन्दविभोर हो गया। उसने साधना को बाँहों में भर कर कहा, "साधना ! तुम सचमुच बहुत मधुर गाती हो। तुम्हारे इसी गीत ने मेरे मन पर ठगोरी डाली थी। एक बार और सुनाओ यह गीत। वीणा उठा लाओ। मैं वीणा बजाऊंगा, तुम गाना।"

साधना ने वीणा लाकर अनिल को दे दी। अनिल ने वीणा पर स्वर साधा और साधना ने सगीत आरम्भ किया। संगीत सुनकर अनिल इतना मुग्ध हुआ कि उसने वीणा बजानी बन्द कर दी और वह एक टक साधना के मुख पर देखने लगा। साधना बोली, "आपने वीणा बजानी बन्द क्यो कर दी अनिल ?"

"ज्ञात नही ऐसा क्यों हुआ साधना ? तुम ही बतलाओ मुझे क्या हो गया ?" अनिल ने कहा।

"मै क्या जानू आपको क्या हो गया अनिल ?" साधना ने मुस्कुराकर कहा।

"तुम्हे कुछ भी नही हुआ साधना ?" अनिल ने पूछा।

"ऊं हूं। मुझे तो कुछ भी नही हुआ।" साधना ने कहा।

"झूठ…सरासर झूठ बोल रही हो तुम !" अनिल ने कहा।

"अच्छा बतलाओ मुझे क्या हुआ है ?" साधना ने पूछा।

"चलो नही बतलाता साधना कि तुम्हें मुझसे प्यार हो गया है।" अनिल ने कहा।

साधना आँखे बन्द करके गुनगुना उठी। उसके कण्ठ से फिर मधुर

संगीत फूट पडा। अनिल ने वीणा बजानी आरम्भ कर दी। उसका अपना स्वर भी साधना के स्वर मे मिल गया। वातावरण स्वरमय हो गया। संगीत की धारा बह चली। दोनों आनन्दविभोर होकर गा रहे थे, 'मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई।'

१५

निर्मला कोठी पर पहुची तो उसने देखा राव साहब बडी उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा मे थे। निर्मला के बिना उन्हे चैन नही आ रही थी। पूछा, "तुम कहाँ चली गई थीं निर्मला ? मै तुम्हारी प्रतीक्षा में था। तुमने ज्ञात नही मुझ पर कैसा जादू-सा कर दिया है कि तुम्हें अपने पास न पाकर मेरा मन छटपटाने सा लगता है।"

निर्मला प्रसन्न होकर बोली, "मै सोच तो रही थी कि आप चिंतित होगे, परन्तु सहेली ने आने ही नही दिया।"

"तुम ठीक कह रही हो निर्मला ! जाना अपने हाथ मे होता है, लौटना दूसरे के आधीन।" राव साहब ने कहा।

दोनों अन्दर जाकर राव साहब के कमरे मे सोफे पर बैठ गए। राव साहब ने कहा, "निर्मला कल जो वह अनिल बाबू मिले थे, उन्हे तुम कैसे जानती हो ? आदमी तो भला प्रतीत होता है। बहुत प्रशंसा कर रहा था तुम्हारी।"

"अनिल बाबू बहुत अच्छे कलाकार है राव साहब ! नृत्य और संगीत, दोनों मे प्रवीण। उनसे मेरी भेट एक म्यूजिक-कान्फ्रेंस मे हुई थी।" निर्मला ने बतलाया।

"अच्छा-अच्छा, तो यह म्यूजिक-कान्फ्रेंस की मुलाकात थी। तुम

भी तो बहुत अच्छा गाती हो निर्मला !" राव साहब ने कहा ।

दोनों ने एक साथ बठ कर भोजन किया । राव साहब बहुत प्रसन्न थे । बोले, "निर्मला ! तुमने हमें दूसरा जीवन प्रदान किया है । एक बार को तो हमे लगने लगा था कि हमारा शेष जीवन घोर अंधकार मे डूब जाएगा ।"

"यह क्या कहने लगे राव साहब ! आपको प्राप्त कर मुझे जीने का सहारा मिल गया । मैं तो वक्ष से टूटी हुई डाल की भाँति वायु के झोकों मे इधर-उधर ठोकरे खाती फिर रही थी । मुझे क्या पता था कि यहाँ आकर मुझे अपने जीवन का आधार प्राप्त हो जाएगा ?" निर्मला ने कहा ।

जब ये बाते चल रही थी, तभी पोर्टिको मे भवानीसिंह की जीप आकर रुकी । उसे देखकर निर्मला अपने कमरे मे चली गई और राव साहव अपने कमरे से बाहर निकलकर कोठी के लॉन मे चले गए ।

भवानीसिह निर्मला के कमरे मे गया तो निर्मला मुस्कुरा कर बोली, "आ गए भवानीसिंह ! मुझे दिल्ली से यहाँ बुलाकर तम इस प्रकार गायब हो जाओगे यह मुझे ज्ञात न था । तुम तो फारम पर ही जाकर रम गए । हमारी सुधि ही न रही तुम्हे ?"

भवानीसिह ने निर्मला के पास बैठ कर धीरे से कहा, "यह बात नही है निर्मला ! मैने तुम्हे अवसर दिया था भैया पर अपना जादू करने का । कुछ दिखाई तुमने अपनी कला ?"

निर्मला बोली, "यह एक हजार रुपए की साड़ी तुम्हारे भैया ने ही लाकर दी है । कहते है मेरे रूप पर ऐसी-वैसी साड़ी नही फबती । राव साहब पूरी तरह मेरे चंगुल में आगए है । अब मैं उन्हे जहाँ चाहूं अपने साथ ले जा सकती हूं ।"

"अरे वाह निर्मला, वाह ! तुमने तो कमाल कर दिया । क्या गए थे इस बीच भैया तुम्हारे साथ कही इस कोठी से बाहर ?" भवानी सिंह ने उत्सुकता से पूछा ।

"गए क्यों नही थे ? कल जू देखने गए और उसके पश्चात् सिनेमा । अब तुम बतलाओ मुझे क्या करना है ?" निर्मला ने पूछा ।

"इसी काम के लिए तो मैने तुम्हे दिल्ली से बुलाया था । आज तुम मेरे साथ फारम पर चलो । मै तुम्हें सब कुछ समझाकर यहाँ छोड जाऊंगा । यहाँ रणधावा के बच्चे ने साँस लेना भी हराम किया हुआ है । मैं इस बीच बहुत फूक-फूक कर कदम रख रहा हूं ।" भवानीसिह ने कहा ।

"तुम बाहर लॉन में अपने भैया के पास जाकर बाते करो । मै वहीं आ रही हूं ।" निर्मला ने कहा ।

भवानीसिह बाहर लॉन मे राव साहब के पास चला गया ।

राव साहब ने पूछा, "फारम से आ रहे हो भवानीसिंह ? कैसी फसल है इस बार ?"

"फसल की कुछ न पूछो भैया ! बहुत अच्छी फसल है । कटाई का काम आरम्भ करा दिया है । इस बार जितना अनाज निकलेगा उतना पहले कभी नही हुआ ।"

"पत्थरों का खुदाई का काम कैसा चल रहा है भवानीसिह ?" राव साहब ने पूछा ।

"बहुत अच्छा पत्थर निकल रहा है हमारे खदानो से भैया ! दिल्ली के कुछ व्यापारी आए हुए है पत्थर खरीदने के लिए । एक दो दिन में सौदा हो जाएगा । हमारी खदानें सोना उगल रही है ।"

तभी निर्मला वहाँ आ गई । उसने भवानीसिंह का अंतिम वाक्य सुनकर कहा, "हमारा कौन-सा खदाना सोना उगल रहा है भवानीसिंह जी ? वह सोना उगलने वाली जगह हमें भी तो दिखलाकर लाइए ।" निर्मला ने कहा ।

"आप अभी चले निर्मला जी ! भैया का फारम देखेंगी तो मन प्रसन्न हो जाएगा । हमने वहाँ शानदार बागीचा लगाया हुआ है । आप जिधर से निकल जाएंगी पुष्पों की सुगन्धि आपको आनन्दविभोर

कर देगी। आपकी नृत्य करने की इच्छा हो आएगी उस प्रकृति के पुष्पित और सुगंधित प्रांगण में। वन की मोरनी के समान नाच उठेंगी और कोकिला का मधुर स्वर आपके कण्ठ से फूट पड़ेगा वहाँ जाकर।" भवानीसिंह ने कहा।

"सच भवानीसिंह! इतना रमणीक स्थान है वह? तब तो मैं अभी चलती हूं तुम्हारे साथ।" कहकर निर्मला राव साहब से बोली, "आज्ञा दें तो मैं देख आऊं फारम को जाकर? मुझे ऐसे स्थान बहुत प्रिय हैं राव साहब!"

राव साहब का मन नहीं हो रहा था कि निर्मला कहीं जाए, परन्तु उसके आग्रह को वह टाल भी न सके। उन्होंने भवानीसिंह से कहा, "भवानीसिंह! निर्मला जी को अपने फारम की सैर करा लाओ। वहाँ प्रकृति की शोभा देखेंगी तो इनका मन प्रसन्न हो जाएगा।"

"आज्ञा है ना आपकी राव साहब? मैं सिनेमा के समय से पहले ही लौट आऊंगी।" निर्मला ने कहा।

भवानीसिंह बोला, "पिक्चर-टाइम से पहले आना है तो वस्त्र बदलने में अधिक समय नष्ट न करना निर्मलाजी!"

निर्मला मुस्कुराती हुई जीप पर जा बैठी। बोली, "आइए भवानीसिंह जी! मुझे कोई तैयारी नहीं करनी है।"

भवानीसिंह ने जीप स्टार्ट की। राव साहब वहीं खड़े रहकर जीप को जाती हुई देखते रहे और जब जीप आँखों से ओझल हो गई तो वह अपने कमरे में चले गए।

भवानीसिंह निर्मला के वाकचातुर्य पर मुग्ध था। उसने किस प्रकार एक क्षण में फारम पर चलने का प्रोग्राम निश्चित कर लिया और उसके साथ चल पड़ी, यह देखकर वह चकित रह गया। उसे विश्वास हो गया कि इस कार्य को सम्पन्न करने में निर्मला सफल भूमिका निभाएगी।

निर्मला ने कहा, "क्या सोच रहे हो भवानीसिंह? बड़े ही विचार-

विमग्न दिख रहे हो ?"

निर्मला की बात सुनकर भवानीसिंह बोला, "तुम्हे रानी बनाने की योजना बना रहा हू निर्मला ! मुझे और क्या सोचना है ? तुम बस गई हो ना मन में। लड़कियाँ इस जीवन मे न जाने कितनी आईं, परन्तु तुमने जिस प्रकार मेरे मन और मस्तिष्क पर अधिकार कर लिया है, वैसा अन्य कोई नहीं कर पाई।"

लगभग आधे घण्टे मे जीप फारम पर जा पहुची। निर्मला और भवानीसिंह जीप से उतरे। ठण्ड बहुत थी उस दिन। फिर जीप का सफर। ठिठुर गई थी निर्मला। बदन काँप रहा था। उसने कहा, "आज ठण्ड बहुत अधिक है भवानीसिंह ! तुमने तो यहाँ लाकर मेरी दशा ही खराब कर दी। हाथ पैर ठण्ड से ठिठुर गए।"

भवानीसिह ने कहा, "चिन्ता न करो निर्मला ! सब ठीक किए देता हूं अभी।" यह कहकर वह निर्मला को फारम मे बनी कोठी की ओर ले गया। दोनों ने कोठी मे प्रवेश किया तो निर्मला ने देखा अन्दर दो आदमी सोफे पर बैठे शराब पी रहे थे।

भवानीसिह ने उन दोनो से आँखों-ही-आँखो मे कुछ कहा और वे कमरे से उठकर बाहर चले गए। उनके जाने पर निर्मला ने पूछा, "ये कौन थे भवानीसिंह ?"

"छोटे भाई है अपने, समरसिह और धीरसिह। बड़े जीदार लड़के है निर्मला ! आँख के इशारे पर काम करते है। राव साहब के सामने नाम न आये इनका।" भवानीसिंह ने कहा।

निर्मला सोफे पर बैठती हुई बोली, "आज जितनी ठण्ड इस मौसम में पहले कभी नही पड़ी भवानीसिह !"

"अभी सब ठीक किए देता हूं निर्मला !" यह कर भवानीसिह ने हीटर जलाया और अलमारी से शराब की बोतल निकाली।

बोतल देखकर निर्मला की आधी ठण्ड दूर हो गई। उसने कहा, "अरे वाह भवानीसिह जी ! आपने तो वास्तव में जंगल में मंगल

किया हुआ है। लाओ बोतल इधर लाओ और दो गिलास उठा लो उधर से।"

भवानीसिंह ने दो गिलास और बोतल निर्मला के सामने मेज पर रखकर हॉल का दरवाजा बन्द कर दिया।

निर्मला ने दोनों गिलास भरकर कहा, "उठाओ भवानीसिंह! और लगाओ हमारे होठों से। मै तुम्हारे होठों से लगाती हूं।"

दोनों ने एक दूसरे के हाथ से एक-एक घूंट शराब पी और फिर अपने-अपने गिलास से पीने लगे। भवानीसिंह बोला, "निर्मला! आज तो तुम गजब कर रही हो। रूप बिखरा पड रहा है। क्या तुम वास्तव मे इतनी ही सुन्दर हो? मेरी आँखे धोखा नही खा सकती।"

निर्मला बोली, "मेरे इसी रूप ने राव साहब की आँखे चकाचौध कर दी है भवानीसिह! अब मै एक क्षण के लिए भी उनकी आँखों से ओझल हो जाती हूं तो वह छटपटाने लगते है।"

भवानीसिह ने पूरा गिलास पीकर दूसरा गिलास भर लिया। फिर कहा, "मैने सब कुछ समझ लिया निर्मला! मैं जानता था कि तुम बहुत शीघ्र उन्हे अपने वश मे कर लोगी।" वह निर्मला की कमर मे हाथ डाल कर बोला, "निर्मला! यह राव का बच्चा कितना बड़ा मूर्ख है? यह समझ रहा है कि भवानीसिह इस रूप की मलिका को उसके लिए लाया है।"

"फिर तुम मुझे किसके लिए लाए हो भवानीसिह?" निर्मला ने मुस्कुराकर पूछा।

"शेर का शिकार क्या गीदड़ के लिए होता है निर्मला?"

"हर्गिज नहीं भवानीसिह! शेर के शिकार पर गीदड कैसे नजर डाल सकता है?" निर्मला ने कहा।

"निर्मला! अगर मै न होता तो समरसिह और धीरसिह इस राव के बच्चे को कच्चा ही चबा जाते। अब यह समझता है कि मैं इसका नौकर हूं और यह मेरा मालिक। वह जो हमारी भाभी साहिबा मर

गईं ना ! वह कहती थी कि हमने उनके हार चुरा लिए ।" यह कह-कर वह खिलखिला कर हँस पडा ।

"फिर मैं रानी कैसे बनूगी भवानीसिह ? यह दौलत, सम्पत्ति, कोठी, फारम सब तो राव साहब के है । तुमने कहा था कि तुम मुझे रानी बनाओगे ।" निर्मला ने पूछा ।

भवानीसिंह बोला, "तुम जरा देखती जाओ निर्मला ! अभी चन्द दिन पश्चात् देखना यह दौलत और सम्पत्ति किसके कब्जे मे होगी । ये सब भवानीसिह की होंगी और तुम मेरी रानी बनोगी । मै तुम्हे राव की नही अपनी रानी बनाने के लिए यहाँ लाया हूं ।"

"तो यह बात है ।" निर्मला ने मुस्कुराकर कहा ।

भवानीसिंह ने निर्मला को अपनी बाँहों में भर कर कहा, "यह सम्पत्ति उसकी है जिसकी बाँहों मे मेरी निर्मला है । इस दौलत और सम्पत्ति को तुम अपनी समझो । यह राव का बच्चा चन्द दिनों में वही पहुच जाएगा, जहाँ मैने इस इसकी पत्नी को पहुचा दिया ।"

निर्मला बोली, "तुमने पहले राव साहब की पत्नी का सफाया कर के बहुत समझदारी से काम लिया भवानीसिह ! तुमने मेरे रास्ते का काटा साफ कर दिया ।"

"वह औरत बहुत चालाक थी निर्मला ! वह मुझे हाथ नही रखने देती थी राव पर । इसीलिए मैने पहले उसका सफाया किया । राव निहायत बेवकूफ आदमी है । इसे उल्लू बनाने मे तुम्हे कोई कठिनाई न होगी । अब मुझे इसका सफाया करना है । एक लडकी रह जाएगी इसके बाद । उसे भी देख लूगा ।" भवानीसिंह शराब की खुमारी में सब कुछ कह गया ।

"तब तो तुम बहुत बडे आदमी बन जाओगे भवानीसिह ! यह सब दौलत और सम्पत्ति तुम्हारी हो जाएगी ।"

"यह सब मेरी नहीं, तुम्हारी होगी निर्मला ! मै चाहता हूं इस काम मे अब देर न हो । जिन्दगी भर ऐश की छानना निर्मला !"

भवानीसिंह ने कहा।

"इसमे मुझे क्या कर करना होगा भवानीसिह ! चाकू या रिवाल्लर तो मैं चला नहीं सकती।" निर्मला ने कहा।

भवानीसिंह बोला, "पगली कही की। तेरे ये नाजुक हाथ क्या गोली या चाकू चलाने के लिए है ? क्या भवानीसिंह तुझसे यह काम लेगा ? इन कामों के लिए भवानीसिंह के अपने हाथ काफी मजबूत हैं। तेरी तो आँखें ही वह काम करेंगी जो हमारा रिवाल्वर और चाकू नहीं कर सकते।"

निर्मला बोली, "ये मजाक की बाते छोड़ो भवानीसिंह ! काम की बात बतलाओ, जो करनी है। व्यर्थ देर करने से क्या लाभ ? इस समय राव साहब पूरी तरह मेरे चंगुल मे हैं। आदमियों को फिसलने मे देर नही लगती। जो करना है फौरन कर डालो।"

"तुमने ठीक कहा निर्मला ! इस काम में देर नही करनी चाहिए। तुम कल उसे यहाँ ले आओ। दोपहर बाद ठीक तीन बजे लाना। तब तक मैं सब प्रबन्ध कर लूगा। यदि तुम उसे यहाँ ले आई तो कल ही काम खत्म समझना। किसी को कानोंकान पता न चलेगा। मैं कल फारम पर काम करने वालों की छुट्टी कर दूंगा। यहाँ उस समय मैं, समरसिंह और धीरसिह ही होंगे।" भवानीसिंह ने कहा।

निर्मला ने कहा, "मैं कल ठीक तीन बजे उन्हे यहाँ ले आऊँगी। शेष तुम जानो। चलो अब देर न करो। मुझे कोठी पर छोड़ आओ। विलम्ब होने पर कहीं वह कुछ संदेह न करने लगे। पुरुष आमतौर पर बड़े शक्की मिजाज होते है।"

भवानीसिंह बोला, "उसकी तू चिन्ता न कर। राव भवानीसिंह पर संदेह नही कर सकता।"

"फिर भी हम ऐसी स्थिति ही क्यो पैदा होने दें भवानीसिंह जी ! काम तो मुझे आपका करना ही है। मैं आई ही यहाँ आपके काम के लिए हूं, परन्तु ऐसा न हो कि काम निकल जाने के बाद मेरी छुट्टी कर दो।

मैं पहले भी इसी तरह एक बार धोखा खा चुकी हूं। मैंने एक बेईमान को करोडोपति बनवा दिया और उसने काम निकल जाने पर मुझे दूध की मक्खी की तरह निकाल कर बाहर फेंक दिया।"

भवानीसिंह बोला, "निर्मला ! वह कोई नीच आदमी होगा जिसने तुम्हे धोखा दिया। भवानीसिंह राजपूत है। राजपूत प्राण देकर भी अपने वचन का पालन करते है। हम लोग अपनी बात के धनी होते है। हम अन्य किसी के साथ कुछ भी करे औरत को धोखा देना पाप है हमारी दृष्टि मैं। फिर तुम्हे तो मैं अपने दिल मे स्थान दे चुका हू। तुम जैसी रूप की मलिका को प्राप्त करके कौन मूर्ख होगा जो सम्बन्ध विच्छेद करेगा ? तुम मेरी आँखो की पुतली और दिल की धड़कन बन चुकी हो। यह सब मै तुम्हारे लिए ही तो कर रहा हूं, तुम्हें रानी बनाने के लिए।"

भवानीसिंह और निर्मला कोठी से बाहर आए। निर्मला फारम की ओर देखकर बोली, "स्थान तो वास्तव में बहुत सुन्दर है भवानीसिंह जी ! बगीचा आपने खूब लगाया है। बहुत परिश्रम किया होगा इसे बनाने मे। राव साहब तो व्यर्थ ही इस सब पर सर्प के समान कुण्डली मार कर बैठ गए है।"

भवानीसिह ने बतलाया, "यह जंगल कौडियों मे खरीदा था निर्मला! आज यह करोड़ों की जायदाद है। किसकी बदौलत ?"

"जब आप कहते है कि राव साहब यहाँ आते हुए भी भय खाते है तो यदि आप न होते तो यहाँ यह लाखों की लहलहाती हुई खेती कैसे नजर आती ? इन खदानों से पत्थर निकलवाकर मिट्टी का सोना कौन बनाता ?" निर्मला ने कहा।

भवानीसिंह बोला, "राव की उस औरत ने जिसे हमने अपने रास्ते से हटा दिया, हमे चोर कहा, हमारा अपमान किया। तुम बतलाओ चोर भवानीसिंह है या यह राव का बच्चा ? मेहनत हम करें और मालिक वह बना रहे।"

जीप में बैठकर निर्मला ने कहा, "इस फारम पर तुम्हारा ही अधिकार होना चाहिए भवानीसिंह !"

जीप कोठी पर पहुची तो निर्मला ने देखा राव साहब कोठी के द्वार पर खड़े थे। निर्मला जीप से उतरी। राव साहब ने उसके निकट आकर पूछा, "हमारा फ़ारम पसन्द आया निर्मला जी ?"

"फारम आपका बहुत सुन्दर है। उसका प्राकृतिक सौंदर्य देखते ही बनता है। मैने ऐसा फारम अपने जीवन में प्रथम बार देखा है। वहाँ से आने का मन नही हो रहा था। भवानीसिंह जी ने उस स्थान को स्वर्ग बनाया हुआ है। कल मै और आप दोनों फारम पर चलेंगे।"

राव साहब बोले, "मै तो वहाँ कभी जाता नही हू निर्मला !"

"मेरे साथ तो आपको चलना ही होगा राव साहब ! बहुत आनन्द आएगा। पिकनिक के लिए आपके फारम से सुन्दर अन्य कोई स्थान नही हो सकता।" निर्मला ने कहा।

राव साहब बोले, "तुम जिद कर रही हो तो हम अवश्य चलेगे तुम्हारे साथ निर्मला ? तुम्हारे कहने पर हम ना कैसे कर सकते है ?"

भवानीसिंह राव साहब का उत्तर सुनकर अपने मन मे खिल उठा। उसने कहा, "अच्छा भैया ! मैं अब चल रहा हूं। कल आप दोनों आ रहे है ना ! पिकनिक का सब सामान ठीक करके रखूगा। आज अचानक ही निर्मला जी मेरे साथ चल दी, इस लिए इनकी वहाँ कोई विशेष आवभगत न हो पाई। आज की कमी कल पूरी कर दूंगा।"

"निर्मला को जिद तो पूरी करनी ही होगी भवानीसिंह ! हम अवश्य आएंगे। तीन बजे तक पहुंच जाएंगे और चार साढे चार तक लौट आएंगे।"

भवानीसिंह ने अपने मन मे कहा, 'लौटने का तो कष्ट ही सहन नहीं करना होगा राव साहब ! आपको वही सुलाने का प्रबन्ध कर दिया जाएगा।' यही सोचता हुआ वह जीप पर सवार होकर चला गया।

अन्दर जाकर राव साहब ने पूछा, "फारम अच्छा है ना निर्मलाजी?"

"कुछ पूछिए नही राव साहब ! बागीचे मे जिधर भी दृष्टि जाती है पुष्प-ही-पुष्प दिखाई देते है। उसमें घूमते समय बहुत आनन्द आता है।" निर्मला ने कहा।

"निर्मला ! मेरे पिताजी की हत्या इसी फारम की कोठी मे की गई थी। उस हत्या के पश्चात् मैं कभी वहाँ नही गया। कल तुम्हारे कहने पर वहाँ जाऊँगा।" राव साहब ने कहा।

निर्मला ने पूछा, "आपके पिताजी की हत्या किसने की थी राव साहब ?"

"कुछ खान्दानी लोग थे। उन्हे पकड़वाकर हमने उनकी सजाएं करा दी थी।" राव साहब ने बतलाया।

निर्मला ने इस विषय को आगे न बढ़ाते हुए अपनी कलाई पर बँधी घड़ी देखकर कहा, "पाँच बज रहे है राव साहब ! हमें सिनमा भी तो चलना है। मै साड़ी बदल कर आती हूं। आप भी वस्त्र बदल ले।"

निर्मला साडी बदल कर आई तो देखा राव साहब उसकी प्रतीक्षा में थे। उन्होंने कहा, "बडी देर कर दी साड़ी बदलने मे।"

निर्मला ने कहा, "जरा बाथ-रूम मे चली गई थीं।"

दोनों बाहर आए। गाडी तैयार खड़ी थी। उसमें बैठकर सिनेमा चले गए।

१६

साधना की आँखे खुली तो उसने देखा अनिल सूट पहले कहीं जाने को तैयार खड़ा था। साधना ने पूछा, "आज सवेरे-ही-सवेरे कहाँ जाने की तैयारी है ?"

"मै जरा स्टेशन जा रहा हूं साधना ! अपनी मौसी के लिए चाय-नाश्ते की व्यवस्था करके रखना । आज हम तुम्हे शिकायत का अवसर नही देगे ।" अनिल ने कहा ।

"मैंने तो ऐसे ही कह दी थी वह बात ।" साधना ने कहा ।

"कल वह भवानीसिंह के साथ तुम्हारे फारम पर गई थी । देखते है क्या समाचार लाती है । तुमने देखा साधना, हमारा मोहरा कितना फिट बैठा । पुलिस वाले यह भी काम नही कर सकते ।"

साधना मुस्कुरा कर बोली, "आपकी माया आप ही जाने अनिल ! मेरी समझ मे तो आता नही कि आप क्या और कैसे करते है । मैं तो मूक दर्शक हूं इस नाटक की । देख रही हू कि ससार कितना स्वार्थी है । जिन भवानीसिंह को डैडी पुत्रवत् समझते है, वही आप कहते है कि उनके प्राणो के ग्राहक बने है । मै तो स्वप्न मे भी यह कल्पना नही कर सकती कि वह यह षडयत्र रचकर मम्मी की हत्या करने का जघन्य अपराध कर सकते थे ।"

"कल की निर्मला की बाते सुनकर भी तुम्हे विश्वास नही हुआ साधना ! क्या तुम भी अपने डैडी के ही समान अन्धविश्वास की पुतली वनी रहना चाहती हो ? आज तुम्हारा शेष भ्रम भी दूर हो जाएगा ।"

उसी समय एक टैक्सी कोठी के सामने आकर रुकी । अनिल ने कहा, "मै जा रहा हूं साधना ! चाय-नाश्ता लौटकर तुम्हारी मौसी के साथ लूगा ।"

अनिल ने टैक्सी से स्टेशन जाकर भिक्खीमल जैन को रिसीव किया और उसे अपनी कोठी पर लाया । वह उसे सीधा अन्दर अपने बैड-रूम में ले गया । साधना भी वहीं थी ।

अनिल ने भवानीसिह का एक चित्र भिक्खीमल जैन को दिखाकर पूछा, "इस व्यक्ति को आपने पहले कभी देखा है जैन साहब ? ठीक से देख लीजिए । मैंने आपको इसी काम के लिए कष्ट दिया है ।"

भिक्खीमल जैन ने चित्र देखते ही कहा, "अनिल बाबू ! यही तो

वह बदमाश है जो मुझे चोरी के हार देकर मुझसे पच्चीस हजार रुपए ले गया था।"

अनिल ने भिक्खीमल को भवानीसिंह के दो अन्य चित्र दिखा कर कहा, "ठीक से पहिचान लीजिए जैन साहब !"

"मैंने पहिचान लिया अनिल बाबू !" भिक्खीमल जैन ने कहा।

साधना भिक्खीमल जैन की बात सुनकर चकित रह गई। अब उस के मन में कोई शंका न रही कि उसकी मम्मी की हत्या उसके चचा भवानीसिंह ने ही की थी।

भिक्खीमल जैन ने पूछा, "क्या इस आदमी को पुलिस ने पकड लिया है अनिल बाबू ? यदि पकड लिया हो तो मैं उसकी शनाख्त करने को उद्यत हूं।"

अनिल ने कहा, "नही, इस समय इसकी आवश्यकता नही है। मै आपका अधिक समय नष्ट न करूंगा। एरेस्ट होने पर यदि आवश्यकता हुई तो आपको एक बार फिर कष्ट करना होगा।"

"एक बार नही, सौ बार अनिल बाबू ! यह आपने क्या कहा ? उस दिन आपने मेरी जो सहायता की उस उपकार को मैं आजीवन नहीं भूल सकता। कल जब आपका फोन आया तो मै अजमेर जाने की तैयारी मे था। आपका फोन आने पर मै सीधा इधर चला आया। अब यदि मेरा अन्य कोई काम न हो तो मुझे आज्ञा दे। मै यहाँ से अजमेर चला जाऊंगा।" भिक्खीमल जैन ने कहा।

"कष्ट के लिए क्षमा करना जैन साहब ! आपसे एक प्रार्थना है कि आप जयपुर में किसी अन्य व्यक्ति से न मिले। विशेष रूप से नानकचन्द से।" अनिल ने कहा।

"मैं सीधा अजमेर जा रहा हू अनिल बाबू !" जैन ने कहा।

अनिल भिक्खीमल जैन को टैक्सी में बिठा कर अन्दर लौट आया। उसने देखा साधना भवानीसिंह के चित्र अपने हाथ मे लिए खडी थी।

अनिल ने कहा, "साधना ! देखा तुमने हमारा अनुमान कितना

सही था ? गलत तो नही था ना ?"

साधना अनिल की बात का कुछ उत्तर देती, तभी राव साहब की गाडी कोठी के सामने आकर रुकी। अनिल ने बाहर जाकर निर्मला को रिसीव किया। और उसे अपने ड्राइङ्ग-रूम में ले आया। साधना ने निर्मला को नमस्कार किया।

अनिल बोला, "निर्मला ! कल हमसे एक भयंकर भूल हुई।"

"वह क्या ?" निर्मला ने कुछ सशंकित होकर पूछा।

"तुम हमारे यहाँ आईं और हमने तुम्हारी चाय-पानी की बात न पूछी। जब तुम यहाँ से चली गईं तो हमसे हमारी श्रीमतीजी ने शिकायत की। इन्होने हमारी उस अशिष्टता के लिए हमे बहुत बुरा-भला कहा। इसलिए हमने आज तुम्हारे आने से पूर्व ही इनसे सब प्रबन्ध करने को कह दिया था।" अनिल ने कहा।

निर्मला ने मुस्कुराकर कहा, "आपने तो मुझे डरा ही दिया था अनिल बाबू ! मैने सोचा जाने ऐसी क्या भूल हो गई आपसे, क्योकि मै जानती हूं कि भयंकर तो क्या आप साधारण भूल भी करने वाले नही है। कल आपके मन मे मेरे प्रति भयकर आक्रोश था, इसलिए आपने यह औपचारिकता नही बरती। ठीक है ना मेरा अनुमान ?"

"तुम बहुत समझदार हो निर्मला ! तुमने हम से झूठ नही बोला। इसलिए हम भी झूठ बात नही कहेगे। कल निश्चय ही हमारे मन मे तुम्हारे प्रति क्रोध का भाव था। अब वह नही रहा।" अनिल ने कहा।

मेज पर चाय-नाश्ता आ गया। निर्मला ने प्यालियों मे चाय बनाई और तीनों ने पीनी आरम्भ की।

निर्मला ने साधना की ओर देखकर कहा, "अनिल बाबू ! आपकी श्रीमतीजी का रूप देखते ही बनता है। साक्षात् सरस्वती प्रतीत होती है आपकी पत्नी।"

"सो तो ठीक है निर्मला ! परन्तु इनमे वह बात नही है जो तुम मे है।" अनिल ने कहा।

"व्यर्थ मुझे बनाने का प्रयास न करे आप। सराहना करनी होगी आपकी सुरुचि की। आप कहाँ की रहने वाली है अनिल बाबू ?" निर्मला ने पूछा।

"बहुत दूर की रहने वाली है निर्मला! कलकत्ता तो तुम गई हो ना! बस इन्हे वही की समझ लो। बंगला की लडकियाँ जादूगरनी होती है। गत माह कलकत्ते मे एक म्यूजिक कांफ्रेस हुई थी न! समाचार-पत्रो मे पढ़ा होगा। उसी मे सयोगवश टकराव हो गया। यह हमसे बोली, 'आप मुझे बहुत अच्छे लग रहे है।' मैने भी कह दिया, 'आप भी मुझे बहुत अच्छी लग रही है।' मेरी बात सुनकर यह छूटते ही बोली, 'तो हो जाए हम दोनो की शादी।' मैने कह दिया, 'कोई आपत्ति नही? बस हो गई शादी। यानी मजाक-मजाक मे शादी हो गई। समय की बात है निर्मला जी! हम आ गए इनके जादू के चक्कर मे।" अनिल ने कहा।

निर्मला मुस्कुरा दी अनिल की बात सुनकर।

अनिल बोला, "कल क्या डेवलेपमेण्ट हुआ अब वह बतलाओ निर्मला? नाटक की कहानी क्लाइमेक्स पर पहुची या अभी कुछ देर है?"

निर्मला बोली, "यह सब समझना आपका काम है। मै वह बयान करती हू जो हुआ। मै कल भवानीसिह जी के साथ फारम पर गई। मैने वहाँ जाकर उनका रग-ढग देखा। आपका अनुमान सही था। राव साहब की पत्नी की हत्या स्वयं भवानीसिह ने ही की है। वह उन पर क्रुद्ध था क्योकि उन्होने उस पर अपने हारों की चोरी की शका की थी। गोलियों की आवाज सुनकर कोठी के नौकर-चाकर उधर दौड पडे। इसलिए उन्हें भागना पडा और राव साहब बच गए। अब उनका विचार राव साहब की हत्या करके राव साहब की सम्पत्ति का मालिक बनने का है। यह कार्य वह मेरी सहायता से करना चाहते है? इसी लिए उन्होने मुझे अपनी रानी बनाने का वचन दिया है।"

"भवानीसिह ने तुम्हे दिल्ली से अपना यही कार्य सिद्ध करने के

लिए बुलाया था। रानी तो खर वह क्या बना पाएगा, हाँ यह अवश्य है कि राजा के साथ उसकी रानी भी कारावास की एक कोठरी को सुशोभित करेगी। ऐसे राजा-रानियो के लिए सरकार ने काफी बड़े-बड़े महल बनवा छोड़े है। राव साहब की कोठी उनके सामने कुछ भी नही है।" अनिल ने कहा।

निर्मला मुस्कुराकर बोली, "अनिल बाबू ! इस प्रकार डरा-डरा कर तो आप मेरे प्राण ही ले लेगे। फिर मै आपको वतलाऊँगी क्या ?"

"यह बात मैने निर्मला के लिए नही कही। निर्मला तो राव वीरेन्द्र सिंह की रानी बन चुकी। उसे उनके हृदय और मस्तिष्क से अब कौन निकाल सकता है ? यह बात मैं भवानीसिह की रानी के विपय मे कह रहा था।" अनिल ने कहा।

"आप बहुत विचित्र व्यक्ति है अनिल बाबू ! इतनी गम्भीर बात को भी आप मजाक मे ले रहे है। भवानीसिह का इरादा बहुत खतरनाक है।" निर्मला ने कहा।

"क्या कुछ करने का इरादा है महाशय का ? क्या करना चाहते है वह ?" अनिल ने पूछा।

"अब उन्हे राव साहब का काँटा साफ करके उनकी सम्पत्ति पर अधिकार करना है। एक लडकी रह जाएगी उनकी, जिसे वह जब चाहेगे ठिकाने लगा देगे।" निर्मला ने बतलाया।

"अब क्या और कैसे करने का विचार है ? तुमसे वह अपने कार्य मे क्या सहयोग चाहते है ? क्या वह राव साहब को तुम्हारे द्वारा विष दिलवाकर उनकी हत्या कराना चाहते है ?" अनिल ने पूछा।

"मैने उनसे स्पष्ट कह दिया है कि मै इस प्रकार का कोई कार्य नही कर सकती। भवानीसिह मुझसे यह काम कराना भी पसन्द नही करते। इस शौर्यपूर्ण कार्य को करने के लिए वह स्वयं समर्थ है।"

"फिर वह तुम्हे यहाँ किस लिए बुलाकर लाए है ?" अनिल ने उससे पूछा।

"आप बतलाने तो दे ही नही रहे मुझे । बीच मे नया प्रश्न पूछ लेते है ।" निर्मला ते कहा ।

साधना यह सब सुनकर अत्यन्त भयभीत थी । वह जानती थी कि उसके डैडी का भवानीसिंह पर अटट विश्वास है और इस विश्वास का वह अनुचित लाभ उठाकर उनकी हत्या कर सकता है ।

"अच्छा बतलाओ निर्मला ! अब हम कोई नया प्रश्न नही करेगे ।" अनिल ने कहा ।

"सब प्रोग्राम निश्चित हो चुका है । आप मेरी घडी से अपनी घडी मिला ले । मै राव साहब को अपने साथ लेकर पिकनिक के लिए उनके फारम पर ठीक तीन बजे पहुच रही हू । भवानीसिह व उनके भाई समरसिह और धीरसिह वहाँ होगे । आज भी वे दोनों वही थे ।" यह कहकर उसने अपने पर्स से वह यत्र निकाल कर अनिल को दिया जो अनिल ने उसे दिया था ।

अनिल ने निर्मला की ओर देखकर कहा, "तो यह उनके षडयंत्र का अन्तिम दौर है निर्मला ! तुम ठीक समय पर वहाँ पहुचना । चिन्ता न करना किसी बात की । अब तुम जाओ । यहाँ समय नष्ट न करो । मुझे भी इसकी व्यवस्था करानी होगी ।"

अनिल निर्मला के साथ बाहर गया । उसने निर्मला से कुछ बातें की और निर्मला गाडी मे बैठकर चली गई ।

अनिल अन्दर आया तो साधना ने देखा वह पर्याप्त गम्भीर था । वह सोफे पर बैठ कर एक क्षण मुट्ठियो को खोलता-भीचता रहा और फिर एक जर्क के साथ खड़ा होकर फोन पर गया । उसने रिसीवर उठाकर एक नम्बर डायल किया । नम्बर मिलने पर बोला, "हलो रणधावा साहब ! कम इमिजियेटली विद मिस्टर सानियाल ।" यह कहकर उसने रिसीवर रख दिया और साधना के पास सोफे पर आकर बैठ गया । वह अभी भी कुछ सोच रहा था ।

साधना अनिल की बात सुनकर आश्चर्यचकित रह गई । उसने

फोन पर जो शब्द उच्चारण किए वे प्रार्थना न होकर आदेश था रणधावा को। अनिल से कुछ पूछने का उसमे साहस न था। स्थिति की गम्भीरता का वह अनुमान लगा चुकी थी। वह अपने मन मे निर्मला के विषय में सोचने लगी। अब उसके दिल मे उसके प्रति कोमल भाव उत्पन्न होने लगा था। तभी साधना ने देखा पुलिस की जीप कोठी के सामने आकर रुकी और उससे रणधावा तथा सानियाल उतर कर अन्दर आ गए।

अनिल ने उनसे हाथ मिला कर उन्हे अपने पास सोफे पर बिठाकर कहा, "कल मेरा विचार था कि इस कार्य मे कुछ विलम्ब होगा, परन्तु अपराधी इसे तुरन्त समाप्त करने की योजना बना चुके है। इसलिए सम्भव है यह कार्य आज समाप्त हो जाए।"

"कल मैंने आपको सूचना दी थी कि वह लडकी भवानीसिह के साथ फारम पर गई थी। मुझे एक गुप्तचर ने सूचना दी है कि समरसिह और धीरसिह भी इस समय वही है।" रणधावा ने बतलाया।

"यह सब मुझे मालूम है। निर्मला आज तीन बजे राव साहब को अपने साथ लेकर फारम पर जाएगी। इससे पूर्व आपको सब प्रबन्ध कर लेना है। मेरी घडी निर्मला की घड़ी से मिली हुई है। आप लोग अपनी घडियाँ मेरी घडी से मिला ले, जिससे समय मे अन्तर न आए।" अनिल ने कहा।

रणधावा और सानियाल ने अपनी घडियाँ अनिल की घड़ी से मिला ली। रणधावा ने कहा, "समुचित प्रबन्ध कर दिया जाएगा। राव साहब को आँच न आएगी। उस लड़की का क्या किया जाए?"

अनिल मुस्कुरा कर बोला, "इतनी सुन्दर चीजो पर भी कहीं हाथ डाला जाता है रणधावा साहब? स्त्री पर हाथ डालते आपको लज्जा न आएगी।"

रणधावा मुस्कुराकर बोला, "लगता है आपने उसे फॅसा लिया है।"

"शीघ्रता कीजिए रणधावा साहब! ग्यारह बज रहे है। आपको स्वयं मौके पर जाना है। हत्यारों को आपके पहुचने की खबर नही मिलनी

चाहिए ।"

रणधावा ने खडा होते हुए कहा, "अपराधियों को कोई सूचना न होगी । हमारे सिपाही मौके पर पहले ही पहुच जाएंगे ।"

"भवानीसिह को किसी प्रकार का सदेह नही होना चाहिए । बहुत चालाक आदमी है । वह अन्तिम समय मे भी अपना इरादा बदल कर समरसिह और धीरसिह को वहाँ से नौ दो ग्यारह कर सकता है । उस स्थिति मे राव साहब को उस पर सदेह नही होगा और वह उसके पक्ष मे बोलेगे ।" अनिल ने कहा ।

'हम दोनो मौके पर जाएगे । भवानीसिह के कानो में इसकी भनक भी नही जाने पाएगी ।" रणधावा ने कहा ।

रणधावा और सानियाल के चले जाने पर अनिल अन्दर आया तो साधना ने पूछा, "अनिल ! निर्मला जी ने यहाँ से जाते समय आपको जो एक छोटी सी डिबिया दी थी वह क्या है ?"

अनिल ने मुस्कुरा कर वह यत्र जेब से निकालकर सामने मेज पर रखते हुए कहा, "यह बडे काम की चीज है साधना ! इसमे वह रिकार्ड है जो भवानीसिंह ने निर्मला से फारम पर कहा था । सुनोगी, उसने क्या कहा ?" यह कहकर अनिल ने वह यंत्र खोला तो निर्मला और भवानीसिह के मध्य हुई बाते सुनाई देने लगी ।

उन्हे सुनकर साधना स्तम्भित-सी रह गई । उसने अनिल की ओर विस्मयपूर्ण दृष्टि से देखकर पूछा, "यह यन्त्र आपने कहाँ से प्राप्त किया अनिल ?"

"मेरे पास अनेकों विदेशी व्यापारी आते है साधना ! यह यन्त्र मुझे एक जर्मन व्यापारी ने दिया था । अच्छी चीज है ना ! यह टेप रणधावा साहब के काम आएगा ।"

साधना गद्गद् होकर बोली, "आपकी कौन-सी चीज अच्छी नही है अनिल ! आप स्वयं ही कितने अच्छे है । मेरे लिए तो आप विधाता का वरदान है ।"

"क्या मै सचमुच तुम्हे अच्छा लगता हूं साधना ?" अनिल ने कहा ।

"बहुत", कहकर साधना ने मुस्कुरा कर अपने हाथ अनिल की ओर बढ़ा दिए । अनिल ने साधना को बाँहों मे भर लिया ।

१७

भवानीसिंह बहुत प्रसन्न था । जब उसकी निर्मला से प्रथम भेट हुई थी, तभी उसने उसे अपने काम की चीज़ समझ लिया था ।

भवानीसिंह फारम पर लौटता हुआ अपनी सफलता पर प्रसन्न था । उसने निर्मला से वह कार्य सिद्ध करा लिया, जिसके लिए उसने उसे जयपुर बुलाया था । वह कोठी के सामने जीप खड़ी करके उससे नीचे उतरा । समरसिह और धीरसिह वही टहल रहे थे । समरसिह ने भवानीसिह का खिला हुआ चेहरा देखकर कहा, "आज बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहे हो भैया भवानीसिह ! कोई विशेष बात है क्या ? लगता है आज आपको कोई विशेष सफलता प्राप्त हुई है ।"

भवानीसिह बोला, "आज सब काम पूरा कर दिया । आज और और ऐश कर ले राव का बच्चा निर्मला के साथ, कल सफाया ।"

"क्या यह काम हमें वहीं कोठी पर जाकर करना होगा भैया भवानीसिंह ? कोठी के चारो ओर खुफिया पुलिस लगी है ।" समरसिह ने कहा ।

"भवानीसिह हर चीज को समझता है समरसिह ! मुझे मालूम है सब कुछ । यह स्थिति न होती तो यह काम कभी का पूरा हो गया होता । इस बार हमे रणधावा की भी होशियारी देखनी है । वह भी क्या याद रखेगा कि उसे कोई मिला था ।" भवानीसिंह ने कहा ।

"बात तो तब बने भवानीसिह ! यदि वीरेन्द्र का बच्चा किसी तरह यहाँ आ जाए।" धीरसिंह ने कहा।

भवानीसिह मुस्कुराकर बोला, "यही होगा धीरसिंह ! उसे यही लाया जाएगा। अपनी निर्मला क्या नही कर सकती ? इसी काम के लिए तो उसे हमने बुलाया है। लडकी ने ऐसा जादू किया है राव के बच्चे पर कि वह उसके कहने पर किसी काम के लिए ना नही कर सकता। एक ही बार मे उसे यहाँ आने के लिए राजी कर लिया।"

"लड़की तेज है भैया ! यह बात माननी होगी। यह काम उसने कमाल का किया।" समरसिह ने बोला।

भवानीसिंह ने दूसरे दिन की फारम पर काम करने वाले मजदूरों की छुट्टी कर दी और दूसरे दिन प्रात मालियो को भी छुट्टी देदी। वे सब शहर चले गए। वहाँ भवानीसिह, समरसिह और धीरसिह के अतिरिक्त अन्य कोई न रहा।

तीनों ने कोठी मे बैठकर शराब पी। धीरसिह बोला, "आज हमे वीरेन्द्र के बच्चे को उसके बाप के पास पहुचाना है। यह बहुत खून पी चुका है हमारा। आज इसके हलक से अपने खून की एक-एक बूद बाहर निकालनी है।"

भवानीसिह कोठी से बाहर निकल आया और गेट पर घूमने लगा। अब उसके लिए एक-एक मिनट घण्टो जैसी लम्बी हो रही थी। उसकी आँखे दूर सड़क पर फैली थी और कान कार के आने की आहट सुनने के लिए ब्याकुल थे।

भवानीसिह ने घड़ी देखी। पौने तीन बजे थे। उसने सडक पर दृष्टि डाली तो पर्याप्त दूरी पर उसे एक गाडी आती दिखलाई दी। उसने मन मे कहा, 'वही गाडी होगी।' फिर गाडी भवानीसिंह की आँखो के सामने आगई। राव वीरेन्द्रसिह की ही कार थी। वह उसे अच्छी तरह पहिचानता था।

भवानीसिंह के चेहरे पर प्रसन्नता झलकने लगी। वह धीरे-धीरे

आगे बढ़ गया और कार के आने की प्रतीक्षा करने लगा। उसके दिल -की धडकने तीव्र होती जा रही थी। उसे अपना इच्छित लक्ष्य नितान्त निकट दिखलाई दिया।

कुछ ही क्षण पश्चात् गाड़ी गेट से अन्दर आकर कोठी के निकट खड़ी हो गई। राव वीरेन्द्रसिह और निर्मला कार से उतरे। भवानी-सिह सामने खड़ा था। वह राव साहब के निकट पहुचा तो उन्होंने पूछा, "आज यहाँ सन्नाटा कैसे है भवानीसिह ? एक भी मजदूर दिख-लाई नहीं दे रहा। क्या आज अनाज की कटाई नही हो रही ?"

"मैने सब मजदूरों को भगा दिया भैया ! साले कहते थे कि दुगने पैसे लेगे। कल नए मजदूर भर्ती करूंगा।" भवानीसिह ने कहा।

राव साहब, निर्मला और भवानसिंह कोठी की ओर चल दिए। राव साहब बोले, "निर्मला ! हमारा बागीचा पसन्द आया तुम्हे ? वहुत सुन्दर बागीचा लगाया है भवानीसिह ने।"

"यह तो मैने कल ही देख लिया था राव साहब ! भवानीसिह ने सब घुमा-फिराकर दिखलाया था। बहुत सुन्दर है। मन खुश हो गया इसे देखकर।" निर्मला ने कहा।

"यह कोठी पिताजी ने बनवाई थी। वह इसी मे रहा करते थे। जयपुर की कोठी हमने बाद मे बनवाई थी। पिताजी की हत्या इसी कोठी मे हुई थी।" यह कहकर राव साहब का मन कुछ भारी हो गया।

"कल इसी कोठी मे बैठ कर मैने चाय पी थी राव साहब !" निर्मला ने कहा।

"चलिए भाई साहब ! चाय तैयार है। रास्ते में ठण्ड लगी होगी निर्मला जी को। बर्फीली हवा चल रही है। कल निर्मला जी बुरी तरह ठिठुर गई थी।" भवानीसिह ने कहा।

तीनो कोठी की ओर चल दिए। निर्मला मन मे भयभीत थी। पुलिस कही दिखलाई नही दे रही थी। सोचा, यह अनिल ने क्या किया ?

असावधानी बरतने वाला व्यक्ति तो वह है नही। उसका काम कभी अधूरा नही होता। फिर भी स्थिति की गम्भीरता से वह चिंतित थी।

राव साहब ने कोठी के हॉल मे प्रवेश किया तो देखा सामने समरसिंह और धीरसिंह खड़े थे। उन्हे देखकर राव साहब के बदन मे काटो तो खून नही था। उनका बदन सुन्न पड़ गया और आँखो के सामने अन्धकार छा गया। उनकी समझ मे न आया कि वे दोनों वहाँ कैसे आ गए ?

समरसिह और धीरसिह राव साहब को भयभीत देखकर अट्टहास कर उठे। कमरे का वायुमण्डल उनके अट्टहास से गूज उठा। समरसिंह ने कहा, "भैया भवानीसिह ! ले आए हमारे शिकार को ? आज इस बदजात को इसके बाप के पास पहुचाना है।"

समरसिंह के मुख से भवानीसिह द्वारा अपने आप को वहाँ लाए जाने की बात सुनकर राव साहब थरथरा उठे। उन्होने भवानीसिह की ओर देखकर कहा, "भवानीसिह ! क्या तुम मुझे धोखे से यहाँ लिवाकर लाए हो ? क्या तुमने इन लोगो को मेरी हत्या कराने को बुलाया है ?"

भवानीसिंह गरजकर बोला, "बकवास बन्द कर वीरेन्द्र ! तू धनाढ्य का बच्चा है और मैं तेरा चोर। हमने तेरी औरत के हार चुराए है ना ! जानता है तू आज तक किस की बदौलत बचा हुआ है ? मै तेरा साथ न देता तो समरसिंह और धीरसिंह तुझे कच्चा ही चबा जाते। मेरे अहसान का यह बदला कि तेरी औरत मुझे चोर कहे।"

राव साहब को अपने सिर पर मृत्यु मंडराती दिखलाई दी। उन्होने देखा भवानीसिंह की आँखे अंगारो के समान जल रही थी।

राव साहब की यह स्थिति देखकर निर्मला भयभीत होकर कमरे से बाहर भागी। उसके मस्तक पर पसीना झलक रहा था।

ड्राइवर मानसिंह ने यह शोर-सा सुना तो उसे शंका हुई कि राव साहब किसी विपत्ति मे फंस गए। वह अपनी गाडी का हैंडिल लेकर बंगले की ओर दौडा। उसने देखा राव साहब भवानीसिंह, समरसिह और

धीरसिंह के बीच घिरे खड़े थे। उसने भवानीसिंह के हाथ में रिवाल्वर देखा तो हॉल में घुसते ही गाडी के हैंडिल से भवानीसिंह के रिवाल्वर वाले हाथ पर भरपूर प्रहार किया।

यह दशा देखकर समरसिंह और धीरसिंह ने भागने की सोची, परन्तु भागने का कोई मार्ग न था। पुलिस के सिपाही वहाँ आगए थे।

मानसिंह ने गरज कर कहा, "समरसिंह भागने की कोशिश की तो यही ढेर कर दूगा।"

पुलिस का ध्यान समरसिंह पर गया। धीरसिंह ने उसके पीछे से बगली काटी और वह दरवाजे के बाहर निकल गया। वह भागना चाहता था कि तभी उसके मुह पर एक पत्थर आकर लगा। पत्थर निर्मला ने मारा था। वह खिलखिला कर हँसती हुई बोली, 'वह मारा पाजी को' और तब तक पुलिस ने उसे पकड लिया।

भवानीसिह, समरसिंह और धीरसिह बन्दी बना लिए गए। पुलिस ने उनके हाथो मे हथकडियाँ डालकर उन्हे पुलिस-वैन मे बिठा दिया। रणधावा ने उन्हे कोतवाली ले चलने का आदेश दिया।

भवानीसिह का रिवाल्वर, जो मानसिह के पास था, रणधावा ने अपने कब्जे मे लिया। उसने मानसिह के साहस की सराहना की।

रणधावा की बात सुनकर राव साहब ने मानसिह की ओर विशेष कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से देखा। उन्होने कहा, "रणधावा साहब! आज का भवानीसिह का रूप देखकर मै स्तब्ध रह गया। क्या मै स्वप्न मे भी कल्पना कर सकता था कि भवानीसिह अपनी भाभी का हत्यारा है? यदि यह प्रत्यक्ष काण्ड मेरी आँखों के समक्ष न आता तो मुझे किसी के भी कहने पर विश्वास न होता।"

"आपकी इसी भावुकता के कारण अपराधियों को पकडने मे हमे इतना विलम्ब हुआ।" रणधावा ने कहा।

रणधावा और सानियाल अपनी जीप पर सवार हुए। राव साहब और निर्मला कार में जा बैठे। जीप और कार शहर की दिशा में चल दी।

१८

अनिल रणधावा के फोन की प्रतीक्षा मे था। उसने घड़ी देखी, पौने चार बजे थे। सोचा, रणधावा को अब तक कोतवाली पहुंच जाना चाहिए था।

साधना ने कहा, "आज आपने चाय नहीं ली अनिल ?"

अनिल ने मुस्कुरा कर कहा, "आज की चाय अपनी ससुराल मे लेगे साधना ! आज तुम्हारी मौसी के हाथ की चाय पिएंगे।"

"क्या सचमुच आप वहाँ चलेगे अनिल ?" साधना ने पूछा।

"अवश्य चलेगे साधना ! चलेगे क्यो नहीं ?" अनिल ने कहा।

उसी समय फोन की घटी बजी। अनिल ने रिसीवर उठाकर फोन सुना तो चेहरे पर प्रसन्नता बिखर गई। उसने कहा, 'मै अभी आ रहा हू रणधावा साहब !'

साधना ने पूछा, "क्या हुआ अनिल ?"

"चलो अपने चाचा भवानीसिह जी के अन्तिम दर्शन कर लो।"

साधना तुरन्त तैयार हो गई। दोनों गाड़ी में बैठ कर कोतवाली पहुंचे। साधना ने आश्चर्य से देखा पुलिस का पूरा स्टाफ अनिल के लिए रास्ता छोड़ता जा रहा था। इसका कारण साधना की समझ मे न आया। वे आगे बढकर उस स्थान पर पहुंचे, जहाँ भवानीसिह, धीरसिह और समरसिह हथकड़ियाँ बेडियाँ लगे खड़े थे। रणधावा और सानियाल के निकट दो कुर्सियों पर राव साहब और निर्मला बैठे थे।

अनिल और साधना को आते देखकर रणधावा और सानियाल ने खड़े होकर उन्हें सेल्यूट दिया और कुर्सियों से एक ओर हट गए।

साधना को यह देखकर आश्चर्य और हर्ष हुआ। उसका दिल गुदगुदा

गया। उसे समझने मे विलम्ब न हुआ कि अनिल रणधावा और सानियाल से बडा पदाधिकारी है।

अनिल आगे बढकर कुर्सी पर जा बैठा और साधना को अपने पास की कुर्सी पर बिठा लिया।

रणधावा और सानियाल को कुर्सियों से उठते देखकर राव साहब और निर्मला भी उठने लगे तो अनिल ने कहा, "आप बैठे रहिए राव साहब! निर्मला जी आप भी बैठी रहे। रणधावा साहब आप अपने और सानियाल साहब के लिए दो कुर्सियाँ मँगवा लें।"

सब के बैठने पर अनिल ने भवानीसिंह, समरसिंह और धीरसिंह की ओर गम्भीर दृष्टि से देखा।

राव साहब को अनिल को पहिचानने में विलम्ब न हुआ।

अनिल ने रणधावा से कहा, "रणधावा साहब! राव साहब को अपनी पत्नी के हत्यारे पर सदेह न हुआ, परन्तु हमने प्रथम दृष्टि से भवानीसिंह को देखते ही समझ लिया था कि यह कार्य इस व्यक्ति के अतिरिक्त अन्य कोई नही कर सकता। जिस दिन हमने राव साहब की पत्नी के हार भिक्खीमल जैन से पकड़वाकर आपको दिए थे और भिक्खीमल जैन ने यह बतलाया था कि वे हार उन्हे कोई राजस्थान का ताल्लुकेदार दे गया था तो हमने समझ लिया था कि वह ताल्लुकेदार भवानीसिंह ही हो सकता है।

हमने आपसे कहकर राव साहब की कोठी की निगरानी आरम्भ कराई तो भवानीसिंह के लिए कोठी पर दूसरा काण्ड रचना सम्भव न रहा। तब भवानीसिंह ने निर्मला देवी को जयपुर बुलवाकर इनके द्वारा राव साहब को कोठी से बाहर लिवा ले जाने का प्रपच रचा। यह राव साहब की हत्या करके इनकी सम्पत्ति का मालिक बनना चाहता था, परन्तु निर्मला देवी ने यह घृणित कार्य नही किया और इसकी सूचना हमें लाकर दी। उसी के आधार पर आज ये हत्यारे बन्दी बना लिए गए। इसके लिये निर्मला देवी हमारे धन्यवाद की पात्री है।" यह कह

कर अनिल ने अपनी जेब से एक यंत्र निकालकर रणधावा को देते हुए कहा, "यह लीजिए रणधावा साहब ! इसमे भवानीसिह का टेप है, जिसमे इसने स्वयं यह स्वीकार किया है कि इसने अपने हाथ से राव साहब की पत्नी की हत्या की थी।"

रणधावा ने इन्सपेक्टर को चालान बनाने और बन्दियो को जेल भेजने की आज्ञा दी। चालान तैयार होने तक के लिए उन्हे हवालात मे बन्द करा दिया गया।

अनिल ने राव साहब से पूछा, "कहिए राव साहब ! अब तो आपको विश्वास हो गया कि आपकी पत्नी की हत्या इन्ही लोगो ने की है ? पुलिस आपके निरपराध भाइयों पर कोई गलत दोषारोपण तो नही कर रही है ?"

अनिल की बात सुनकर राव साहब की आँखो से आँसुओ की झड़ी लग गई। उनकी आँखो के सामने गत घटनाएं चलचित्र के समान आने लगी। वह विह्वल होकर बोले, "अनिल बाबू ! अब इस विषय मे संदेह करने का क्या कारण शेष है ? साधना की मम्मी के हार भवानीसिह ने चुराए और उन्हे इस पर संदेह हुआ। उन्होने यह बात हमसे कही, परन्तु हमने उनके संदेह को निराधार समझा। हमने अपनी मूर्खता से उसका जिक्र भवानीसिंह से कर दिया। परिणाम स्वरूप इसने उनकी हत्या कर दी। इस प्रकार उनकी हत्या का दोषी मै हू। उनकी हत्या मेरी मूर्खता के कारण हुई।"

"मुझे इस बात का संदेह था। मैने यह बात साधनाजी से कही भी थी कि इनकी मम्मी ने निश्चय ही भवानीसिह पर संदेह किया होगा और उन्होने यह बात राव साहब से कही होगी। मेरा सदेह सत्य साबित हुआ। इसी लिए भवानीसिंह आपसे अधिक उनका शत्रु बन गया। यह बात भवानीसिंह के टेप से भी स्पष्ट है। मैने इस बीच आपको आगाह करना उचित न समझा, क्योकि मुझे भय था कि कही आप भवानीसिह से वे बाते न कह डाले जो मैं आपसे कहूं।" अनिल ने कहा।

"यह आपने बहुत अच्छा किया अनिल बाबू ! मैं भवानीसिंह का इतना अधिक विश्वास करता था कि निश्चय ही आपकी बात इससे कह देता। जब मैंने अपनी पत्नी की बात इससे कह दी तो आपकी बात मैं इससे कैसे न कहता ?" यह कहकर राव साहब मौन हो गए।

अनिल ने रणधावा से कहा, "अच्छा रणधावा साहब ! अब आज्ञा है ना हमे ?"

"अभी तो आप रुकेंगे एक दो दिन जयपुर मे ?" रणधावा ने पूछा।

"कल तक तो हूं ही।" अनिल ने कहा।

"कल सुबह आपके दर्शन करूँगा।" रणधावा ने कहा।

अनिल और साधना राव साहब और निर्मला के साथ कोतवाली से बाहर आए तो राव साहब ने कहा, "अनिल बाबू ! परसों आपने हमारे यहाँ आने का वचन दिया था।"

"मुझे स्मरण है राव साहब ! चलिए अपना वचन आज पूरा किए देता हूं। सम्भव है फिर समय न मिले। हम लोग सरकारी नौकर ठहरे। ज्ञात नही कब कान पकडकर कहाँ भेज दिए जाए।" अनिल ने कहा।

सब लोग राव साहब की कार से उनकी कोठी पर गए। राव साहब ने सबको ड्राइङ्गरूम में बिठलाया। फिर बोले, "अनिल बाबू ! परसों जब आप हमारे साथ सिनेमा गए थे तो आपके साथ आपकी धर्मपत्नी भी तो थी।"

राव साहब की बात सुनकर अनिल हँस पड़ा। उसने कहा, "क्षमा करे राव साहब ! हमारा काम कुछ ऐसा है कि कभी-कभी हमे व्यर्थ झूठ बोलना पड जाता है। वह जो लड़की उस दिन मेरे साथ थी, वह पत्नी नही स्टाफ-गर्ल थी। मेरी तो अभी शादी भी नही हुई।"

"अच्छा-अच्छा, वह स्टाफ-गर्ल थी। आप अभी तक अविवाहित है ?" राव साहब ने कहा।

अनिल की बात सुनकर साधना को संतोष हुआ। उसके चेहरे पर मुस्कान बिखर गई। अनिल ने कितनी कुशलता से उसकी स्थिति की

रक्षा की। यह अनुभव कर वह मुग्ध हो गई।

निर्मला को यह सुनकर आश्चर्य हुआ। जिसे वह अनिल की पत्नी समझ रही थी वह राव साहब की लड़की साधना निकली। उसका मस्तिष्क चकरा-सा गया कुछ।

राव साहब ने पूछा, "आप रहने वाले कहाँ के है अनिल बाबू ?"

"इस समय तो दिल्ली का ही समझिए राव साहब ! परन्तु मूल निवासी अजमेर का हूं। मेरा जन्म दिल्ली मे ही हुआ था।" अनिल ने बतलाया।

"मै सोच रहा हू अनिल बाबू कि यदि आप हमारी साधना से विवाह करना स्वीकार करें तो कैसा रहे ? आपने रक्षा की है इसकी। मात्र इसकी ही नहीं, हमारी भी।" राव साहब ने कहा।

अनिल मुस्कुरा कर बोला, "मेरे अस्वीकार करने की तो इसमे बात ही क्या हो सकती है राव साहब ! साधना जी से पूछ लीजिए। वैसे फैमिली-स्टेटस की दृष्टि से मै स्वयं को इस योग्य नही पाता कि साधना जी के साथ मेरा विवाह हो। आप किसी बडे घराने में इनका विवाह करे तो आपकी प्रतिष्ठा के अनुरूप होगा।"

राव साहब ने कहा, "अनिल बाबू ! आपने हम पर बहुत बड़ा उपकार किया है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि आप हमारी प्रार्थना स्वीकार करे।"

"यह बात आप अपने मन से निकाल दे राव साहब कि मैंने आप पर कोई उपकार किया है। मैंने जो किया है, वह करना कर्त्तव्य था मेरा। सरकार मुझे इसी कार्य के लिए वेतन देती है।" अनिल ने कहा।

साधना अनिल की बाते सुनकर व्यग्र हो उठी और वहाँ से उठकर अन्दर चली गई। अनिल समझ गया कि साधना उसकी बातों पर क्रुध होकर अन्दर गई है। उसने राव साहब से कहा, "आपकी आज्ञा हो तो मैं एक मिनट के लिए अन्दर जाकर साधना जी से इस विषय मे बातें करके देख लूं। आपकी इच्छा होने पर भी इस विषय मे उनकी राय

जानना आवश्यक है। यह उनका व्यक्तिगत मामला है। मै नहीं चाहता कि मात्र आपकी इच्छा-पूर्ति के लिए उन्हे अपनी इच्छा और भावना के प्रतिकूल कार्य करने को बाध्य होना पड़े।"

"आज्ञा की इसमे क्या बात है अनिल बाबू! आप सहर्ष अन्दर जाकर साधना से बाते कर ले। साधना समझदार लड़की है।" राव साहब ने कहा।

अनिल राव साहब के पास से उठकर अन्दर उस कमरे मे गया जहाँ साधना पलंग पर पड़ी सुबकियाँ ले रही थी। उसने अपना हाथ साधना की कमर पर रखा तो वह तुरन्त उठकर बैठ गई। अनिल ने मुस्कुराकर कहा, "साधनाजी तुम्हारे डैडी से तुम्हारे पास आने की आज्ञा प्राप्त करके आया हूं। चोरी-छुपके नही आया हू तुम्हारे पास।"

"मै बात नही करती आपसे।" साधना ने कहा।

"किसी प्रकार तो कर लो साधना जी! हमसे ऐसा क्या अपराध हुआ है तुम्हारा जो इस कदर नाराज हो गईं। अपराध तो बड़े-बड़े क्षमा कर दिए जाते है। क्या हमारा अपराध इतना बडा है कि तुम उसे क्षमा ही नही कर सकती। हमने तो तुम्हारा चोरी का अपराध भी क्षमा कर दिया था।"

"पहले वचन दो कि फिर कभी ऐसी बात नहीं करोगे।"

"कैसी बाते साधना जी? मैने तो ऐसी कोई बात नही की।"

"जैसी अभी आप डैडी से कर रहे थे। ये भी कुछ आपकी करने की बाते थी?"

"डैडी से मै कैसी बाते कर रहा था साधना जी?" अनिल ने पूछा।

"बड़े भोले है ना आप। कुछ जानते ही नही कि डैडी से आपने कैसी बाते की। दुधमुहा बच्चा समझ लूं ना आपको? यही बात है ना?" कहकर साधना हँस पड़ी और अपना सिर अनिल की छाती से लगा कर आँखे बन्द कर ली।

"साधना! क्या अब भी तुम्हें मुझसे दूर करने की शक्ति किसी

मे है ? तुम मेरे जीवन की प्राण बन चुकी हो। तुम मुझसे अभिन्न हो। तुम्हे मुझसे कोई छीनना भी चाहे तो नही छीन सकता।" अनिल ने साधना के कपोलों को सहलाते हुए कहा।

"तब फिर ऐसी बात क्यो कर रहे थे आप ?" साधना ने पूछा।

"क्षमा कर दो देवी जी ! अब नही करेगे ऐसी बात। चलो बाहर चलते है राव साहब के पास।"

अनिल और साधना दोनों ड्राइङ्गरूम में आए तो राव साहब ने उनके चेहरों को देखकर उनका मनोभाव जान लिया। उन्होने कोई प्रश्न करना आवश्यक न समझा।

इधर जब अनिल की राव साहब से ये बाते चल रही थी तो निर्मला ने अनुमान लगाया कि अनिल उसे दिए गए अपने वचन को भूल गया। साधना से विवाह करके वह स्वयं राव साहब की दौलत और सम्पत्ति का स्वामी बनेगा। वह क्यों चाहेगा कि निर्मला उसके स्वार्थ के बीच दीवार बनकर खड़ी हो।

यह विचार मन मे आते ही वह निराश हो गई। उसे अब एक क्षण के लिए भी अपना वहाँ ठहरना कष्टप्रद प्रतीत होने लगा। वह चुपके से वहाँ से उठी और अपने कमरे मे चली गई। उसने राव साहब की उसे लाकर दी हुई साडियाँ तथा अन्य चीजे उठाकर एक ओर रख दी और अपनी वही साड़ी बाँधी जिसे पहन कर वह वहाँ आई थी। फिर अपना अन्य सब सामान अटैची मे रखकर उसमें ताला लगाया। होल-डोल में अपना बिस्तर बाँध कर तैयार किया और अटैची उस पर रख दी। यह सब करके वह चुपचाप सोफे पर बैठ गई।

अनिल ने ड्राइङ्गरूम मे इधर-उधर दृष्टि डाल कर देखा तो उसे निर्मला कही दिखलाई न दी। उसने साधना से पूछा, "साधना ! निर्मला जी कहीं दिखाई नही दे रही।"

साधना ने कहा, "अन्दर अपने कमरे में चली गई होगी। वह बहुत थक गई थीं आज। सारा दिन परेशान रही है।"

अनिल साधना की भोली बात सुनकर मुस्कुरा दिया। उसने कहा, "यह बात नही है साधना ! आओ अन्दर चलकर देखते है।"

साधना ने पूछा, "यह बात नही है तो क्या बात है अनिल ?"

अनिल ने साधना के कान मे कहा, "हम लोगों ने उनकी शादी की चर्चा न चलाकर अपनी शादी का किस्सा छेड़ दिया। इससे उनके मन में कुण्ठा उत्पन्न हुई होगी। चलो ठीक कर लेते है उसे। अब तुम यह नहीं कह सकती कि हमें तुम्हारी मौसी का ध्यान नहीं है।"

साधना मुस्कुरा दी अनिल की बात सुनकर।

दोनों निर्मला के कमरे मे गए और उनका सामान बँधा देखा तो अनिल ने पूछा, "यह सब क्या है निर्मला जी ? तुम यहाँ आकर क्यों बैठ गई ? क्या तुम्हे यह सब अच्छा नही लगा जो राव साहब ने करना चाहा ?"

निर्मला ने कहा, "यह सब मुझे बहुत अच्छा लगा अनिल बाबू ! मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं आपके और साधना देवी के सम्बन्ध से। राव साहब अपनी पुत्री का विवाह कही न कहीं तो करते ही। आपसे न करते तो कही अन्यत्र करते। मुझे आपने जो कार्य जिस प्रकार करने का आदेश दिया, मैंने अपनी योग्यता और बुद्धि के अनुसार पूरी ईमानदारी से कर दिया। मुझसे आज्ञा पालन मे कोई भूल हुई हो तो उसे आप क्षमा कर दें। मेरा कार्य समाप्त हुआ। अब मुझे आज्ञा दें।"

अनिल ने मुस्कुराकर कहा, "यदि तुम यहाँ से चली गई तो यह कार्य कौन सम्पन्न करेगा निर्मला ? यह सब तो तुम्ही को करना है।"

निर्मला अनिल की ओर आश्चर्यचकित दृष्टि से देखकर बोली, "मुझे इसमें क्या करना है अनिल ? मैं इस कार्य को सम्पन्न करने वाली कौन होती हूं ? मैं तो पापिष्ठा बनकर अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए यहाँ आई थी और यहाँ आकर बिना कुछ किए ही हत्या जैसे अपराध की दलदल में फस गई। आपसे भेंट न होती तो ज्ञात नहीं मेरे माध्यम से कितना बड़ा अनर्थ हो जाता और फिर मेरी क्या दुर्दशा होती ?

आपने मेरी रक्षा कर ली। इसके लिए आपका हजार बार धन्यवाद।"

अनिल ने कहा, "व्यर्थ बाते न करो निर्मला! हमने तुम्हें साधना की मौसी स्वीकार कर लिया है। मात्र हमने ही नही, स्वय साधनाजी ने भी। तुम साधना की मौसी बनकर साधना की मम्मी के अभाव की पूर्ति करो। हम तुम्हें साधना की ओर से विश्वास दिलाते है कि यह तुम्हे अपनी मम्मी जैसा आदर देगी। हमे हार्दिक प्रसन्नता है कि तुमने राव साहब की रक्षार्थ एक श्रेष्ठ स्त्री की भूमिका निभाई।"

अनिल की बात सुनकर निर्मला ने अनिल और साधना की ओर देखा। उसने देखा उनके मुख पर सरल गम्भीरता व्याप्त थी। उसमे बनावट या उपहास न था। यह देखकर अनायास ही उसके नेत्र डबडबा आए और अश्रुओं की झड़ी लग गई।

अनिल बोला, "निर्मला! मुझे या साधना को राव साहब की दौलत या सम्पत्ति नही चाहिए। मुझे जिस चीज की आवश्यकता थी वह मुझे आज से पूर्व प्राप्त हो चुकी थी। उसमे राव साहब की भी स्वीकृति प्राप्त हो गई यह हर्ष की बात है। राव साहब का जो कुछ भी है, वह सब तुम्हारा है। तुम उसकी अधिकारिणी हो, क्योकि तुमने उनकी रक्षा की है। साधना की मात्र यही इच्छा है कि इनके डैडी का शेष जीवन शातिपूर्वक व्यतीत हो। मुझे विश्वास है कि तुम उन्हे प्रसन्न रख पाओगी।"

निर्मला कुछ क्षण निर्निमेष नेत्रो से अनिल और साधना की ओर देखती रही। उसे उनकी बातों मे कही कुछ बनावट का अभास न मिला। उसने आगे बढ़ कर उन्हे अपनी बाँहों मे भर लिया और गद्‌गद् होकर बोली, "अनिल! मुझे राव साहब का कुछ नहीं चाहिए, उनकी सम्पूर्ण सम्पत्ति की अधिकारिणी साधना जी है। मै जीवन मे पर्याप्त भटक चुकी हूं। यदि तुम और साधना मुझे आदर और स्नेह प्रदान कर सको तो मैं इसको अपने जीवन की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि मानूगी। मुझे तुम पर पूर्ण विश्वास है।"

"तब ठीक है निर्मला ! आज से आप हमारी माता तुल्य मौसी हुई । तुम राव साहब के पास रहकर आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करो । राव साहब बहुत सरल प्रकृति के भावुक व्यक्ति है । तुम्हे उनके पास कभी कोई कष्ट न होगा ।" अनिल ने कहा ।

निर्मला के मुख पर प्रसन्नता बिखर गई । उसने साधना और अनिल का बारी-बारी से मस्तक चूमा । फिर तीनों राव साहब के पास गए । तीनों के मुख पर प्रसन्नता का भाव था । उसे देखकर राव साहब ने पूछा, "अनिल जी ! ऐसी क्या प्रसन्नता की बात हुई जिससे तुम तीनों के मुख-कमल खिले हुए है ?"

अनिल बोला, "राव साहब ! आपने मेरी और साधना जी की प्रसन्नता का साधन जुटाया तो हमने सोचा कि हमारा भी आपको प्रसन्न रखने के लिए कुछ कर्त्तव्य है ।"

"हमे प्रसन्न रखने के लिए तुम दोनों ने क्या सोचा अनिल ?" राव साहब ने पूछा ।

"हमने निर्मला जी को अपनी मौसी बना लिया है राव साहब ! अब यह आपके पास रहकर आपकी सुख-सुविधा का ध्यान रखेंगी ।"

अनिल की बात सुनकर राव साहब के मुख पर प्रसन्नता और सतोष का भाव उभर आया । वह बोले, "क्या साधना बेटी की भी इसमे स्वीकृति है अनिल जी ? निर्मलाजी यहाँ रहेगी तो मैं अकेलापन महसूस नही करूँगा । मै सोच रहा था कि जब साधना चली जाएगी तो मै अकेला कैसे रह पाऊंगा । तुमने सचमुच मेरी प्रसन्नता का साधन जुटा दिया ।"

अनिल बोला, "अच्छा राव साहब ! अब आज्ञा दीजिए । मेरा महाराज मेरी प्रतीक्षा मे होगा ।"

"क्यों ? फोन करके सूचना दे दो । अपने महाराज को अथवा गाडी लेकर हो आओ वहाँ ।" राव साहव ने कहा ।

अनिल ने साधना से कहा, "चलो साधना ! हो आते हैं जरा ।"

अनिल साधना के साथ अपनी कोठी पर गया। उसने महाराज को बुलाकर उससे कहा, "महाराज ! आज बात बिलकुल पक्की हो गई। इनके पिता जी ने भी हमारी बात मान ली। क्यो साधना जी ! अब तो संशय की कोई बात नही रही ना ?"

साधना ने मुस्कुराकर कहा, "मान तो ली आपकी बात पिताजी ने।"

महाराज प्रसन्न मन अन्दर चला गया। अनिल और साधना एक घण्टा पश्चात् साधना की कोठी पर लौटे तो निर्मला उन्हे एक कमरे मे ले गई। कमरा निर्मला ने स्वय सेट कराया था।

अनिल ने कहा, "देखा साधना ! मौसी जी न होतीं तो यह सब कौन कराता ?"

साधना मुंस्कुराकर बोली, "आपने अपने ससुर का कोई अहसान नही रहने दिया आपने ऊपर अनिल ! उन्होने आपकी शादी का प्रबन्ध किया तो आपने उनकी शादी करा दी। हिसाब-किताब बराबर।"

निर्मला बोली, "साधना बेटी ! अपने ससुर का इतना ध्यान रखने वाले बिरले ही मिलेगे दुनिया मे, अन्यथा शादी करने के पश्चात कौन पूछता है ससुर की सुख-सुविधा की बात ?"

तभी राव साहब वहाँ आए। उन्होंने कहा, "निर्मला जी ! खाना लगवाओ ना जाकर। कितनी देर कर दी तुमने। बच्चों को भूख लगी होगी। नौ बज रहे है।"

निर्मला प्रसन्नतापूर्वक रसोईघर की ओर दौड़ी चली गई।

"बहुत प्रसन्न है राव साहब।" अनिल ने कहा।

"तुम भी तो कम प्रसन्न नही हो।" साधना ने कहा।

अनिल ने साधना को बाँहों में भरकर कहा, "बहुत मक्कार है मेरी साधना।"

"तुम कुछ कम हो क्यों ?" साधना बोली।

दोनों मस्कराते हुए डाइनिंगरूम की ओर चल दिए।

समाप्त